मेरी ग्रामीण शाला की डायरी

यह पुस्तक जूलिया वेबर गॉर्डन द्वारा स्टोनी ग्रोव की ग्रामीण शाला में शिक्षिका के रूप में बिताए गए वर्षों का लेखा-जोखा है। यह हमें बताती है कि अवसर और थोड़ी सहायता मिलने पर एक शिक्षक क्या कर सकता है। मिस वेबर की स्थिति कठिन और नाउम्मीद थी। उनकी एक कमरे वाली शाला एक गरीब समुदाय में स्थित थी और उन बच्चों के लिए थी जो कई तरह की अक्षमताओं से ग्रसित थे। मिस वेबर के पास आठ कक्षाएँ थीं, फिर भी उन्होंने कई तरह के प्रयोग कर, कई नई तकनीकें अपनाकर न केवल स्कूल को बदल डाला बल्कि अपने भीतर भी परिवर्तन किया।

मेरी ग्रामीण शाला की डायरी पहली बार 1946 में प्रकाशित हुई और अब शिक्षा से जुड़े साहित्य में एक क्लासिक की तरह जानी जाती है। यह पुस्तक आज भी हमारे लिए एक गहरी प्रासंगिकता लिए हुए है तथा हर शिक्षक के लिए प्रेरणादायी साबित होगी।

मूल्य: ₹ 150.00
A0408H
ISBN: 978-81-89976-68-2
9 788189 976682

एकलव्य

[illegible] के विशेष सहयोग से विकसित

मेरी ग्रामीण शाला की डायरी
जूलिया वेबर गॉर्डन
एकलव्य

मेरी ग्रामीण शाला की डायरी

जूलिया वेबर गॉर्डन

अँग्रेज़ी से अनुवाद
पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एकलव्य का प्रकाशन

मेरी ग्रामीण शाला की डायरी

जूलिया वेबर गॉर्डन

अँग्रेज़ी से अनुवाद

पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एकलव्य का प्रकाशन

मेरी ग्रामीण शाला की डायरी

MERI GRAMEEN SHALA KEE DIARY

जूलिया वेबर गॉर्डन

My Country School Diary का अँग्रेज़ी से अनुवादः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

आवरणः परशुराम के.

© एकलव्य/ सितम्बर 2010/ 3000 प्रतियाँ

इस किताब की सामग्री का गैर-व्यावसायिक शैक्षणिक उद्देश्य से इसी या इसके समान कॉपीलेफ्ट चिह्न के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में किताब का उल्लेख अवश्य करें तथा एकलव्य को सूचित करें।

कागज़ः 80 gsm नेचुरल शेड व 300 gsm आर्ट कार्ड (कवर)

पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित

ISBN: 978-81-89976-68-2

मूल्यः ₹ 150.00

प्रकाशकः **एकलव्य**

ई-10, बी.डी.ए. कॉलोनी शंकर नगर

शिवाजी नगर, भोपाल- 462016 (मप्र.)

फोनः (0755) 267 1017, 255 1109

फैक्सः (0755) 255 1108

www.eklavya.in

सम्पादकीयः books@ eklavya.in

किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

मुद्रकः आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, भोपाल (म.प्र.) फोनः 255 5442

विषय सूची

भूमिका 5

प्रस्तावना 17

पहला वर्ष

1 मैंने बच्चों को जानना सीखा 25

2 बच्चों ने प्रगति की 59

3 हमने वृद्धि की पीड़ाएँ झेलीं 77

दूसरा वर्ष

4 हमने नई शुरुआत की 115

5 हमें रचनात्मक शक्ति का अनुभव हुआ 144

6 हमने अपने समुदाय का अध्ययन किया 154

तीसरा वर्ष

7 मैं अपना दर्शन लागू करने की कोशिश करती रही 191

8 मैंने सीखीं नई तकनीकें 212

चौथा वर्ष

9 हमने लोकतंत्र में जीना सीखा 249

उपसंहार 297

भूमिका

जॉन होल्ट

यद्यपि यह पुस्तक 1930 में लिखी और 1946 में प्रकाशित की गई थी, हमारे लिए यह आज भी सार्थक है। हम ऐसे शैक्षिक कार्यक्रमों पर काफी समय और धन खर्च रहे हैं जो किसी एक या दूसरे जातीय समुदाय के बच्चों की मदद के लिए चलाए जा रहे हैं। ये बच्चे गरीब हैं, पूर्वाग्रहों के शिकार हैं, भावनात्मक रूप से असन्तुलित हैं, और इन परिस्थितियों के कारण उनकी वृद्धि तथा उनके सीखने की प्रक्रिया अवरुद्ध हो गई है। हमारे इरादे नेक हैं। पर हम खास भला नहीं कर सकेंगे, और शायद भला करने के बदले नुकसान ही करेंगे, यदि हम कुछ बेहद ज़रूरी पाठ नहीं सीख लेते। इनमें से कई सीखें हमें मिस वेबर के अनुभव और उनकी पुस्तक में मिलेंगी......

......यह [पुस्तक] वर्णन करती है कि अवसर और थोड़ी सहायता मिलने पर एक शिक्षक क्या कर सकता है। बेशक [मिस वेबर की] स्थिति कठिन और नाउम्मीद थी। उनकी शाला एक छोटी, एक कमरे वाली ग्रामीण शाला थी जो एक गरीब और ह्रासोन्मुख ग्रामीण समुदाय में स्थित थी, और उन बच्चों के लिए थी जिनमें से अधिकांश गरीब थे और कई तो दूसरी तरह की अक्षमताओं से भी ग्रसित थे। उनके पास पैसों की कमी थी और वे केवल उन सामग्रियों को चुनती थीं जो वे या उनके छात्र या दोस्ताना बाहरी लोग बना सकते थे, या जो उन्हें विभिन्न शैक्षिक सेवाओं से मिल सकती थीं या उधार ली जा सकती थीं।

मिस वेबर उन बच्चों की "गुणवत्ता" की कोई शिकायत नहीं करती हैं जिन्हें वे पढ़ा रही थीं, जैसा कई शिक्षक करते हैं, इसलिए नहीं कि वे एक विनम्र नायिका की भूमिका अदा कर रही थीं, बल्कि इसलिए क्योंकि वे उन्हें किसी भी श्रेणी की "सामग्री" के रूप में नहीं देखती थीं। उनका काम कितना कठिन था इसे

बेहतर ढंग से समझने के लिए हमें उन आठों कक्षाओं के बच्चों की आयु सम्बन्धी आँकड़ों को देखना चाहिए जिनके साथ वे काम कर रही थीं:

आठवीं कक्षा: 13-5 (13 वर्ष 5 माह) और 15-8

सातवीं कक्षा: 13-7, 15-2 तथा 11-3

छठी कक्षा: 10-8, 11-3, 10-10 तथा 14-8

पाँचवीं कक्षा: 9-3, 9-7, 12-4 तथा 10-10

चौथी कक्षा: 8-0 तथा 12-2

तीसरी कक्षा: 8-3, 10-1, 8-9, 13-5, 11-2, 12-1 तथा 13-2

दूसरी कक्षा: 8-8, 7-1 तथा 7-8

प्रारम्भिक बच्चे: 8-6, 8-4 तथा 5-4

यह निश्चित रूप से एक अति-विषम समूह है। यह गौर करने लायक है कि 13 वर्ष 5 माह का जो बच्चा तीसरी कक्षा में था वह केवल स्कूल में ही पिछड़ा बच्चा नहीं था बल्कि गम्भीर रूप से विमन्दित व असामान्य भी था, इतना कि जब बाद में उसके माता-पिता उस इलाके को छोड़ गए तो उन्हें उसे इस प्रकार के बच्चों के लिए एक संस्थान में डालना पड़ा। फिर भी जब तक वह मिस वेबर की कक्षा में रहा, जो कुछ वे उसके लिए कर सकती थीं वह सब उन्होंने किया। एकाध बार यह टिप्पणी उन्होंने ज़रूर की कि उसका शोरगुल और अजीबोगरीब आचरण दूसरे बच्चों को परेशान, यहाँ तक कि दुखी भी कर देता था। उनके अध्यापन के दूसरे वर्ष पहली कक्षा में दो नौ वर्षीय बच्चे दो छह वर्षीय बच्चों के साथ थे। यह कहना अनावश्यक है कि ऐसे स्कूल या शिक्षक कम ही होंगे जो एक भी कक्षा में आयु और क्षमता की ऐसी विविधता की अनुमति देंगे जैसी उन्होंने अपनी आठों कक्षाओं में झेली थी, और उनके पास आठ कक्षाएँ थीं। फिर भी सभी बच्चे महत्वपूर्ण थे, सभी ने विकास किया, सभी ने सीखा।

उनका अनुभव कुछ और भी बताता है। शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए हमें भारी-भरकम केन्द्रीकृत शालाओं की दरकार नहीं है। यह उसके ठीक विपरीत है जो हमें बताया और बेचा जाता रहा है। . . . हमने छोटी शालाओं को नष्ट कर दिया है जिनमें शिक्षक सम्भवतः उनमें से कुछ चीज़ें कर पाते जो मिस वेबर ने कीं। उनके स्थान पर हमने विशालकाय स्कूली कारखाने गढ़े हैं, जिन्हें हम, ज़्यादातर, सेनाओं या कारागारों की तरह चलाते हैं क्योंकि किसी और तरह से चलाए जाने लायक वे लगते ही नहीं हैं। इसके पीछे विचार यह था कि छोटी शालाओं में हम उस किस्म के उपकरण, सामग्री और विशेष शिक्षक उपलब्ध नहीं करवा सकते जो हमें लगा हमें इसलिए चाहिए ताकि बच्चों के सीखने में पर्याप्त विविधता और गहराई लाई जा सके। मिस वेबर हमें दिखाती हैं कि तीस के दशक के अन्त तक भी ऐसा करना ज़रूरी नहीं था। एक माह से भी कम समय में वे और उनके छात्र-छात्राएँ एक विपन्न ग्रामीण समुदाय की अपनी नन्ही-सी शाला को एक अधिक सुन्दर और सीखने के लिए अधिक सम्पन्न वातावरण वाली शाला में बदल डालते हैं, जो देखने, काम करने और सोचने के लिए कई रोचक वस्तुओं से भरपूर थी। ऐसा वातावरण आजकल की शालाओं में भी कम ही होता है।

आज हम इससे कहीं बेहतर कर सकते हैं। कई व्यक्तियों और संस्थाओं ने हमें दिखाया है कि न्यूनतम लागत से हम कई तरह के उपकरण कैसे तलाश सकते हैं या बना सकते हैं या फिर उनका कामचलाऊ जुगाड़ कर सकते हैं...... मैंने एक प्रमुख शहर के सबसे विपन्न इलाकों में ऐसी "सीखने की प्रयोगशालाएँ" (learning laboratories) देखी हैं जिनमें तमाम तरह की चीज़ें थीं जो बच्चों और शिक्षकों को कबाड़ के ढेरों से या कचरा पात्रों में मिली थीं। अधिक महँगे उपकरणों को भी लें तो जितना खर्च बड़े केन्द्रीकृत स्कूलों को बनाने में और बच्चों को उन स्कूलों तक बसों से पहुँचाने में लगता है, उससे कहीं कम खर्च में हम ऐसे वितरण केन्द्र स्थापित कर सकते हैं जहाँ से आसपास के स्कूल ज़रूरत पड़ने पर सामग्री व उपकरण उधार ले सकें। या, जिस तरह देश के कम आबादी वाले इलाकों में सचल पुस्तकालय केन्द्रीय पुस्तकालयों से निकल उन कस्बों-गाँवों में जाते हैं जो इतने छोटे हैं कि पुस्तकालय का खर्च वहन नहीं कर सकते, उसी तर्ज़ पर हम खास तौर से लैस सचल प्रयोगशालाएँ बना सकते हैं जो छोटे ग्रामीण स्कूलों में जा सकें। पर, जैसा मैं पहले कह चुका हूँ, जिस तरह की मदद हम आज आसानी से दे सकते हैं, उसके बिना भी मिस वेबर एक ऐसा शैक्षिक वातावरण बना सकीं जिसमें भारी विविधता और सम्पन्नता थी।

जब उन्हें और उनके शिक्षार्थियों को कोई पुस्तक या कोई उपकरण चाहिए होता तो वे पता करते कि वह किसके पास होगा और तब उसे उधार लाने की

कोशिश करते। उन्होंने दूसरे स्कूलों, राज्य विश्वविद्यालय, राज्य कृषि प्रयोग स्टेशन तथा न्यू यॉर्क की औद्योगिक कला सहकारी सेवा का उपयोग किया। उन्होंने एक कुशल बढ़ई की मदद ली ताकि वह बड़े लड़कों को छोटे बच्चों के लिए एक खेलघर बनाने में मदद करें, जो किसी भी वर्ग के नन्हे बच्चों के लिए एक अत्यावश्यक उपकरण है। इस पुस्तक में ऐसा उल्लेख नहीं है, पर मुझे याद आता है कि मिस वेबर ने मुझे एक बार बताया था कि एक साल उनके तीस बच्चों ने काउंटी पुस्तकालय से सात सौ किताबें पढ़ने को ली थीं। बीस से अधिक पुस्तकें प्रति शिक्षार्थी! हमारे सम्पन्न केन्द्रीकृत स्कूलों में कुछ ही ऐसे होंगे जहाँ पुस्तकालयों का ऐसा उपयोग होता हो; सच तो यह है कि कई शालाओं में पुस्तकालय इतने नियमों और प्रतिबन्धों से घिरे होते हैं कि छात्र-छात्राएँ उनका शायद ही उपयोग कर पाते हैं।

हम शिक्षा में पैसे का रोना बहुत रोते हैं। सही है, और होता तो अच्छा रहता; पर मैंने जो श्रेष्ठतम कक्षाएँ या शालाएँ देखी हैं या जिनके बारे में सुना है, जिनमें मिस वेबर की शाला भी शामिल है, वे प्रति शिक्षार्थी हमारे आज के औसत व्यय से कहीं कम खर्चते हैं। जो पैसा हमारे पास होता है, अक्सर उसे भी हम सही तरह से नहीं खर्चते। हम बड़ी-बड़ी राशियाँ बेकार ही खर्च डालते हैं: दिखावे वाले भवनों पर; अनुत्पादक प्रशासकीय कर्मचारियों पर; निदान और उपचार करने वाले विशेषज्ञों पर जो उन बच्चों की खास मदद भी नहीं कर पाते जिन पर वे सहायता की ज़रूरत का ठप्पा चस्पाँ करते हैं; ऐसे महँगे उपकरणों पर जो या तो अनावश्यक हैं या कम इस्तेमाल होते हैं या जिनका गलत उपयोग होता है; टनों जितनी एक-सी और उबाऊ पाठ्यपुस्तकों, आधारभूत पाठमालाओं और कार्यपुस्तकों पर; और अब तो कैथोड स्क्रीन वाले कम्प्यूटरों जैसे चमत्कारिक उपकरणों पर जिन पर बच्चे अपने "सही" या "गलत" उत्तर लिख सकते हैं – जिन्हें किसी व्यक्ति ने "पाँच हज़ार डॉलर का फ्लैश कार्ड" का उपयुक्त नाम दिया है। ......हम जितना खर्चते हैं उससे कहीं कम में, मिस वेबर की तरह, अपनी कक्षाओं के सीखने के वातावरण को उससे कहीं बेहतर बना सकते हैं जैसा आज वह है।

पुस्तक में एक और महत्वपूर्ण सीख है। बच्चों को अपने से बड़े लोगों के ऐसे समुदाय में बढ़ने की ज़रूरत है, और बड़े होकर खुद ऐसा समुदाय बनने की

ज़रूरत है, जिसे वे कम से कम आंशिक रूप से देख सकें, जिसके बारे में वे सोच सकें और जिसे वे समझ सकें। वे तभी सबसे अच्छी तरह सीखते और पनपते हैं जब उनका स्कूल उनके समुदाय का हिस्सा हो, जब उनका समुदाय स्कूल में आता हो, जब उनका सीखना स्कूल भवन के बाहर के लोगों के जीवन, उनके कामों, उनकी ज़रूरतों और उनकी समस्याओं के कई बिन्दुओं को स्पर्श करता हो। यह मिस वेबर ने कहाँ सीखा? क्या वे उन चन्द लोगों, उन बिलकुल गिनती के लोगों में थीं जो वास्तव में वह सब समझते थे जो [जॉन] ड्यूई लिख और बोल रहे थे? या फिर उन्होंने यह सब खुद ब खुद समझा, जैसे उन्होंने कई दूसरी महत्वपूर्ण चीज़ें समझीं और सुलझाईं? जो भी हो, वे अपने बच्चों को उनके समुदाय में ले जा सकीं और उन्हें उसके इतिहास तथा काम के बारे में सोचने को प्रेरित कर सकीं। और वे बड़ों को स्कूल में ला सकीं, उन्हें यह महसूस करवा सकीं कि स्कूल भी उनके जीवन का हिस्सा है, न कि कोई डिब्बा जिसमें वे हर दिन कुछ घण्टों के लिए अपने बच्चों को छोड़ आते हैं।

पुस्तक से हमें यह आभास मिलता है कि इस सबने बच्चों के लिए, उनके सीखने के लिए, स्कूल के बारे में उनकी इस धारणा के लिए कितना कुछ किया कि स्कूल वास्तविक दुनिया का हिस्सा है, न कि मात्र एक ऐसी जगह है जहाँ आप आज कुछ निरर्थक काम करते हैं ताकि कल बाहर जाकर कहीं और कुछ अन्य निरर्थक काम कर सकें। हम केवल अनुमान मात्र लगा सकते हैं कि स्कूल ने, और उसमें मिस वेबर ने, और बच्चों पर इन दोनों के प्रभाव ने समुदाय के लिए कितना किया होगा। सम्भावना यह है कि यह समुदाय को जोड़ने में सबसे महत्वपूर्ण, जीवनदायी घटक रहा होगा, शायद एकमात्र ऐसा घटक। इस बारे में पढ़ते समय मुझे इलियट शैपिरो के काम की याद आ गई जो कई सालों बाद उन्होंने हारलेम के एक प्रारम्भिक स्कूल में किया था। उन्होंने स्कूल को कुछ यों जीवन्त बना दिया कि वह समूचे समुदाय का ऐसा केन्द्र बन गया जहाँ समुदाय अपनी ज़रूरतों और समस्याओं पर विचार कर सके, उनसे कैसे निपटा जाए इस पर विमर्श कर सके, और तब उनसे निपटे भी। सम्भावना यह लगती है कि ऐसे स्कूलों और शिक्षकों के अभाव या उनके लोप ने, जबरन उनके केन्द्रीकृत स्कूल ज़िलों में विलय ने हमारे कई ग्रामीण कस्बों के ह्रास और मृत्यु में योगदान दिया है जिनके युवक-युवतियाँ उन्हें जैसे ही छोड़ पाते हैं, छोड़ जाते हैं।

लगता यह है कि हमारी सारी समृद्धि और शक्ति के बावजूद हमने पिछले कुछ दशकों में एक उलटा चमत्कार कर डाला है: हमने अपने शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों दोनों में एक साथ ही अपनी सामुदायिक भावना को नष्ट कर डाला है या फिर उसे खो दिया है। इसके परिणाम हम अपने आसपास के स्कूलों में और उनसे बाहर देख सकते हैं। हमारे युग का एक बहुत ज़रूरी और महती सामाजिक कार्य है हमारे सड़ते-गलते शहरों और हमारे परित्यक्त गाँवों में ऐसे समुदायों का पुनर्निर्माण जिनके बारे में लोगों की भावना हो कि "मैं यहाँ का हूँ; यही मेरी जगह है; यहाँ जो हो रहा है उस बारे में मुझे भी कुछ कहना है; मैं अपने आसपास के लोगों की मदद कर सकता हूँ और उन पर निर्भर कर सकता हूँ; मैं इस जगह को जीने के लिए एक बेहतर स्थान बना सकता हूँ।" यह हासिल करने के लिए हमें मिस वेबर के स्कूल जैसे स्कूलों की ज़रूरत होगी। वास्तव में हम अपने कुछ शहरों में देख पा रहे हैं कि जब माता-पिता अपने बच्चों के लिए अच्छी और सार्थक शिक्षा के लिए प्रयास करते हैं तो वे उस सामुदायिक भावना के निर्माण की दिशा में पहला चरण उठाते हैं जो पहले नामौजूद थी, और यह उस समुदाय के निर्माण की दिशा में पहला कदम बन जाता है। और यही कारण है कि जब शिक्षक, शिक्षक संघ तथा शैक्षणिक संस्थान स्कूलों पर सामुदायिक नियंत्रण का जिस भी कारण से, जितना भी ज़ोरदार विरोध करते हैं, वह न केवल स्वार्थवश होता है बल्कि बेवकूफी भरा और निकटगामी दृष्टि से उठाया गया कदम होता है।

पुस्तक में शिक्षकों के प्रशिक्षण के सम्बन्ध में भी, जिस पर काफी कटु और निरर्थक बहस हो चुकी है, एक महत्वपूर्ण सन्देश है, यद्यपि वह अप्रत्यक्ष है। कुछ लोग कहते हैं, "शिक्षण एक विशेष कला या विज्ञान है, जिसमें अन्य किसी भी कला या विज्ञान की ही तरह कठिन तकनीकों की भरमार है, और कोई भी, चाहे वह कितना भी क्यों न जानता हो, प्रभावी रूप से तब तक पढ़ा नहीं सकता जब तक वह इन तकनीकों को न जान ले।" दूसरे कहते हैं, "बकवास, ये तकनीकें नगण्य हैं। कोई भी समझदार व्यक्ति उन्हें जानता है या उन्हें सीख सकता है। महत्वपूर्ण यह है कि जो भी विषय शिक्षक पढ़ाते हों, उन्हें उसका गहरा और पूरा ज्ञान हो।" और यों "विधि वाले" और "विषयवस्तु वाले" एक-दूसरे पर हमले करते हैं। मुझे लगता है कि दोनों ही सही बात को पकड़ नहीं पाते। जिन वयस्कों के साथ बच्चे काम करते हैं उनमें बच्चों को जो चाहिए और

जिसकी उन्हें ज़रूरत है, और जो वयस्क उनके साथ काम करते हैं उनमें सबसे पहले आवश्यक रूप से जो होना चाहिए, और किसी भी चीज़ से पहले, वह है क्षमता – चीज़ें कर पाने की क्षमता। मिस वेबर के बारे में एक असाधारण बात यह है कि वे कई विभिन्न तरह के काम कर पाती थीं और यों बच्चों को उन्हें करने में मदद कर पाती थीं। ज़रूरी नहीं कि वे उन सबमें दक्ष रही हों, शायद थीं भी नहीं। पर महत्वपूर्ण बात यह थी कि वे इतना जानती थीं कि बच्चों की रुचि उनमें जगा सकें, उनसे शुरुआत करवा सकें और उनकी कुछ मदद कर सकें।

इन चीज़ों की सूची मात्र ही बहुत कुछ कहती है। वे हार्मोनिका बजा सकती थीं; पियानो बजा सकती थीं; लोकनृत्य कर सकती थीं; गा सकती थीं; खेलघर का डिज़ाइन बनाने और उसके निर्माण में मदद कर सकती थीं; हाथ और रस्सियों से नचाई जाने वाली कठपुतलियों को चला सकती थीं और उन्हें बना सकती थीं; कई खेल खेल सकती थीं, खासकर ऐसे खेल जिनमें सीमित स्थान में और थोड़े से उपकरणों के साथ मिश्रित आयु के बच्चे रुचि ले सकें; कागज़ की पवन चक्कियाँ बना सकती थीं; नाप के अनुपात में चित्र बना सकती थीं; कई पेड़-पौधों को पहचान सकती थीं; रेड इण्डियन नृत्य कर सकती थीं; फूल उगा सकती थीं; रॉक गार्डन बना सकती थीं; भूविज्ञान के बारे में कुछ बता सकती थीं और चट्टानों को पहचान सकती थीं; इण्डियन आख्यान गाथाएँ सुना सकती थीं; सिलाई कर सकती थीं; खाना पका सकती थीं; नमक के स्फटिक बना सकती थीं; चीथड़ों से गमलों की लटकनें बुन सकती थीं; खेलघर के लिए मेज़-कुर्सी बना सकती थीं; चित्र-फलक (easels) डिज़ाइन कर उन्हें बना सकती थीं; कपड़ों को पहचान कर उनकी तुलना कर सकती थीं; मिट्टी से काम कर सकती थीं; मिट्टी के बरतन बना सकती थीं; विभिन्न माध्यमों से चित्र बना और रंग सकती थीं; जानवरों के खुरों के निशानों के प्लास्टर कास्ट (plaster cast) बना सकती थीं और कुछ निशान पहचान सकती थीं; कई भाषाओं में स्तुति गीत गा सकती थीं; सरल करघों पर बुन सकती थीं; सूत कात सकती थीं। आदि-इत्यादि।

ऐसी ही चीज़ें उन लोगों को आनी चाहिए जो बच्चों के साथ काम करते हैं। यह नहीं कि हम सब एक सी ही चीज़ें जानें; मेरी अपनी सूची मिस वेबर से छोटी है और काफी भिन्न भी। महत्वपूर्ण यह है कि उसमें पहले से अधिक चीज़ें

शामिल हैं, और कुछ समय बाद उसमें आज से अधिक चीज़ें होंगी। इससे भी ज़्यादा महत्वपूर्ण यह है कि मैं बच्चों के साथ-साथ किसी भी व्यक्ति से वे कौशल सीखने को तैयार और उत्सुक हूँ जिसके पास वे कौशल हैं और मैं बच्चों के बीच वे चीज़ें करने से नहीं डरता जो मैं अच्छी तरह नहीं जानता। करना ही महत्वपूर्ण है।

कुछ दिन पहले एक नौजवान ने मुझे यह कहने को फोन किया कि वह इस (बॉस्टन) क्षेत्र के किसी ऐसे स्कूल में काम करना चाहता है जो बच्चों को सीखने में अधिक आज़ादी, स्वतंत्रता, चयन और ज़िम्मेदारी देता है। मैंने उससे पूछा कि वह क्या कर सकता है, उसे क्या करना पसन्द है, वह बच्चों को क्या दिखा सकता है और क्या सीखने में मदद कर सकता है। वह किसी उलझन में फँस गया। मैंने कहा, "क्या तुम गा, नाच सकते हो, कोई विदेशी भाषा बोल सकते हो, खेल खेल सकते हो, कोई वाद्य बजा सकते हो? क्या तुम खेल-कूद जानते हो? क्या तुम्हें किसी कला, किसी शिल्प का ज्ञान है? क्या तुम चीज़ें बना, उन्हें चला सकते हो?" नहीं, ऐसा कुछ भी वह नहीं जानता था। शायद उसने सोचा हो, यद्यपि मैंने उसे बताया कि ऐसा नहीं था, कि मैं यह पूछ रहा हूँ कि क्या वह किसी चीज़ का विशेषज्ञ है। बहरहाल, उसने कहा कि वह ऐसी चीज़ें नहीं कर सकता। उसके पास जो था वह थी सदिच्छा और कुछ अकादमिक किताबी ज्ञान। खराब शुरुआत नहीं है शायद, पर पर्याप्त नहीं है, काफी से बहुत दूर।

इन कई गौण क्षमताओं और कौशलों के साथ छोटे बच्चों के किसी शिक्षक में, और शायद हर उम्र के शिक्षार्थियों के शिक्षक में, व्यापक व विविध ज्ञान, जिज्ञासा और रुचि होनी चाहिए। जिन चीज़ों के बारे में मिस वेबर जानती थीं, या उनके बारे में कैसे पता लगाया जाए यह जानती थीं, या जिन्हें सीखने में उनकी रुचि थी, उनको सूचीबद्ध करने लगें तो उतनी ही जगह चाहिए होगी जितनी उनके कौशलों को सूचीबद्ध करने में। इस तरह के ज्ञान के साथ शिक्षक को कक्षा में व्यापक अनुभव भी साथ लाना होगा। यह बेहद बुरा है कि कई लोग सीधे पढ़ाना शुरू करते हैं और सालों तक पढ़ाने के अलावा दूसरा कुछ किए बिना उसी में लगे रहते हैं। मैं बच्चे की दुनिया को जानने में भला तब कैसे मदद कर सकता हूँ जब मैंने सिर्फ स्कूल और कक्षा ही को जाना है? इन्हें तो वह भी उतनी ही अच्छी तरह जानता है जितना मैं।

दूसरी छवियाँ भी उभरती हैं और महत्वपूर्ण सीख देती हैं। स्कूल अच्छा ज़रूर था, पर वानिकी क्लब की पिकनिक या समुद्र यात्रा या आसपास की दुनिया को देखने के लिए की गई तमाम यात्राओं के दौरान बच्चे कहीं अधिक जीवन्त, सहज और वास्तविक लगते थे। आज कई स्कूली व्यवस्थाएँ प्रकृति शिक्षा और अपने आसपास के समुदायों के संसाधनों का अधिक उपयोग करने लगे हैं, पर इस दिशा में जितना हम बढ़े हैं उससे कहीं आगे हमें जाना है। उन बड़े बच्चों के लिए स्कूल खत्म करने से पहले ही काम तलाशना, नौकरियाँ पा लेना कितना ज़रूरी था, और हमने किसी युवा व्यक्ति के लिए ज़िन्दगी में कुछ करने से पहले हाई स्कूल डिप्लोमा पा लेने की जो शर्त लगा दी है वह कितनी भयानक और अनावश्यक भूल है। स्कूलों को इस मामले में घुसना ही नहीं चाहिए था और अब जल्द से जल्द इस मसले से दूर हट जाना चाहिए कि कोई युवक या युवती किसी काम को करने या किसी रुचि का अनुसरण करने के योग्य है या नहीं। वे ऐसे निर्णय विवेक या निष्पक्षता से कर ही नहीं सकते, और इस दिशा में जो कुछ भी वे करते हैं, यानी किसी प्रकार की श्रेणियों में डालना या लेबल चस्पाँ करना, वह शिक्षा के असली काम को बाधित और भ्रष्ट ही करता है।

अक्सर यह होता था कि जो सवाल बच्चे स्वयं से पूछते थे, वे सवाल ही ऐसे होते थे जिनके सहारे आगे खोजबीन और सीखने का काम चलता था। मिस वेबर के स्कूल ने, जैसे कई दूसरे स्कूलों ने भी, इस घिसीपिटी कहावत की छुट्टी कर दी कि बच्चे इसलिए सोच नहीं पाते क्योंकि उनके पास सोचने के लिए पर्याप्त तथ्य नहीं होते। चीज़ों का अर्थ समझने की इच्छा ने, आसपास की दुनिया कैसे चलती है और उस तरह क्यों चलने लगी, यह जानने की इच्छा ने उन्हें तथ्यों को तलाशने और इकट्ठा करने की प्रेरणा दी। यह कितना आवश्यक था कि मिस वेबर को यह आज़ादी थी कि वे पाठ्यचर्या को बच्चों की रुचियों, उनके सरोकारों के गिर्द बनाएँ, या, जो और भी बेहतर है, उसे उनके गिर्द विकसित होने दें। बेशक उन्होंने अपने विचार भी पेश किए, जिनमें से कुछ दूसरों से बेहतर सिद्ध हुए, कुछ केवल तब तक सफल रहे जब तक वे उन्हें धकियाती रहीं, और कुछ को बच्चों ने उठाया और अपना बना लिया। यह भी कितना ज़रूरी था कि उन्हें साल दर साल ठीक वही के वही काम नहीं दोहराने पड़े, न उन्हीं पुरानी पाठ्यपुस्तकों और शिक्षक मार्गदर्शिकाओं में उलझे रहना पड़ा। वे लगातार नई सीमाएँ तलाश सकीं जिससे उनकी रुचि और उत्साह हमेशा ज़िन्दा

रह सके, और क्योंकि वे जीवित रहे, उन्होंने बच्चों की रुचि और उत्साह को भी जगाया। यह बात कितनी निरर्थक है कि हम देश भर के शिक्षकों से उम्मीद करते हैं कि वे साल दर साल बच्चों को उसी पुरानी सामग्री से सीखने को "प्रेरित" कर सकेंगे, कि बच्चे ऐसी कक्षा में आगे बढ़ सकेंगे जहाँ शिक्षक को एक ही जगह स्थिर खड़े रहना हो।

यह बेईमानी और अन्याय होगा कि यह कहने से पहले अपनी बात खत्म कर दूँ कि मिस वेबर के दर्शन और कार्य के कुछ ऐसे भी बिन्दु हैं जिनके बारे में मेरी शंकाएँ हैं, कम से कम जिस तरह वे पुस्तक में सम्प्रेषित होते हैं। मुझे लगता है कि स्कूलों या किसी और को भी लोकतंत्र को एक लक्ष्य मान लेना भूल है। वास्तव में वह अधिक कठिन और महत्वपूर्ण मानवीय लक्ष्यों, जिनमें विकास और आज़ादी भी हैं, को हासिल करने के लिए अनेक माध्यमों में से एक है। और जब हम लोकतंत्र और मतदान को एक ही चीज़ मान लेते हैं, तब भी हम उतनी ही गम्भीर गलती करते हैं। यह मान लेना भूल है कि अगर आप स्कूलों या अन्यत्र यह व्यवस्था कर दें कि कोई भी काम तब तक न किया जाए जब तक उस पर सब मत न दे दें, और जो कुछ बहुमत तय करे वही किया जाए तो आप लोकतंत्र हासिल कर लेंगे। हमारी लोकतांत्रिक संस्थाएँ अभी भी मौजूद हैं, सिद्धान्त में और कागज़ों पर, परन्तु हमारे समय का एक कड़वा तथ्य यह है कि बहुत ही कम लोग ऐसे होंगे जिन्हें अपने जीवन की परिस्थितियों पर नियंत्रण का एहसास होगा। अधिकांश लोगों को यह लगता है कि जीवन, या जिसे वे "वास्तविकता" कहना पसन्द करते हैं, एक तरह की गुलामी है और वे स्वयं गुलाम हैं।

एक सिद्धान्त जो आज स्कूलों में मज़बूती से स्थापित है और जिसे लेकर मैं असहज महसूस करता हूँ, वह यह है कि बच्चों को लड़ने-झगड़ने की अनुमति नहीं देनी चाहिए, कि बैर और क्रोध की भावनाएँ खराब हैं, कि अगर बच्चों को बार-बार दयालु, उदार, क्षमाशील और सहनशील बनने को कहा जाएगा तो वे सच में वैसे बन जाएँगे। हम अपने स्कूलों में यह काफी समय से करते रहे हैं, और ज़ाहिर है कि यह दवा असरकार नहीं रही है, यद्यपि यह पूरी तरह से स्कूल का दोष नहीं है। इससे हमने ऐसे लोग पैदा नहीं किए हैं जो कभी लड़ना ही न चाहते हों, बल्कि ऐसे लोग जो कैसे लड़ना चाहिए यह नहीं जानते, जो न्यायोचित रूप से लड़ना नहीं जानते, जो टकराव से उनमें जो भावनाएँ जगती हैं उनसे सलटना नहीं जानते, जो नहीं जानते कि छोटे-मोटे टकरावों को बढ़ने से कैसे रोका जाए, जिन्हें यह मालूम ही नहीं कि किसी भी झगड़े में, यहाँ तक कि युद्ध में भी, आपका लक्ष्य विरोधी को नष्ट करना नहीं बल्कि उसे जीत लेना होता है। इस प्रकार हम हिंसा के तथा "बिना शर्त आत्मसमर्पण" और "किसी भी कीमत पर विजय" चाहने वाले स्वप्नदर्शी व हठधर्मी बन गए हैं।

दरअसल मैं सामान्यतः इस सिद्धान्त के प्रति असहज महसूस करता हूँ कि ज्ञान या समझ या चरित्र के क्षेत्रों में इन्सान का विकास आचरण के कुछ प्रतिरूपों, अच्छी आदतों से अधिक कुछ नहीं है। यह सिद्धान्त उस समय के फैशनेबुल आचरणवादी मनोविज्ञान से निकला था। पर हमें खुद को लगातार याद दिलाते रहना चाहिए कि जो जर्मन लोग हिटलर को सत्ता में लाए और उसके दानवी शासन का सोत्साह समर्थन करते रहे, वे सबसे अच्छी आदतों वाले लोग थे – और मैं जोड़ दूँ कि ये सभी आदतें वे हैं जिनका प्रशिक्षण हमारे स्कूल हमारे बच्चों को देना चाहते हैं। श्रेष्ठतम मानवीय सद्‌गुण – और अगर इन्सान को बचे रहना है तो हमें उनकी बेहद आवश्यकता है – आदतें नहीं हैं और उनका प्रशिक्षण नहीं दिया जा सकता। वे तो एक उफान हैं, एक व्यक्ति का अपने अस्तित्व के प्रति एक ऐसा सशक्त भाव जो बाहर व्यापक जगत् में विस्तार पाता हो; उसके आत्मसम्मान, क्षमता और कीमत का भाव; उसे अपने जीवन में मिले सन्तोष और आनन्द का भाव।

इसलिए मुझे यह देखना अच्छा लगता है कि बच्चों को जो कुछ भी करना सार्थक लगे उसे करने का उन्हें मौका मिले, क्योंकि इसी तरह के काम को करने पर उन्हें सन्तुष्टि मिलती है, अपने वजूद और क्षमता का भाव उनमें मज़बूत होता है। अतः मुझे लगता है कि मिस वेबर अपने बच्चों के साथ जो काम करती थीं वह अक्सर उन कारणों से बेहतर होता था जिनके लिए वे उन्हें करती थीं, मसलन मेहनतकश बनाने या लोकतांत्रिक आदतें डालने के लिए। बल्कि मैं सोचता हूँ, और शायद वे भी आज यही सोचें, कि जब वे "निठल्लेपन के अस्वास्थ्यकारी प्रभावों" की बात करती हैं तो वे गलत करती हैं। आगे वे जोड़ती हैं कि बच्चों ने वसन्त-रोग के निठल्ले दिन की एवज़ में अगले दिन और मेहनत की, मानो उन्होंने बही-खाते में कोई हिसाब बराबर कर डाला हो। मुझे

लगता है कि हमारे समय की एक भारी व्यक्तिगत और सार्वजनिक समस्या यह है कि न तो बच्चे, ना ही वयस्क ठाले बैठना जानते हैं, वे स्थिर कैसे रहना है यह नहीं जानते। हमें ऐसे उपाय सोचने चाहिए जिनके सहारे हम बच्चों को चुपचाप सोचने, ध्यान करने, मनन करने जैसे विषयों का अनुशासन और आनन्द सिखा सकें, ताकि वे अपने जीवन के छिद्रों को हमेशा शोरगुल, हड़बड़ी और गतिविधि से भरने की कोशिश न करते रहें, ताकि उनका विश्राम भी उतना ही उन्माद से न भरा हो जितना उनका काम। क्योंकि अगर हम जल्दी ही यह नहीं सीखते, तो हम अपनी व्यस्तता से धरती को ही नष्ट कर डालेंगे।

परन्तु तीस के दशक में जिस दुनिया की कोई भविष्यवाणी तक नहीं कर सकता था उसे देखकर पैदा हुआ यह संकोच या मतान्तर कुल मिलाकर गौण ही है। यह पुस्तक अपनी समग्रता में शिक्षकों के लिए, और वास्तव में हर उस व्यक्ति के लिए जिसका शिक्षा से कोई सरोकार है, प्रेरणा और कल्पनाशीलता का समृद्ध स्रोत है। हम इस तरह की चीज़ें शहरों और गाँवों में कर सकते हैं, अगर हम चाहें तो। और शिक्षकों के पत्रों, उनसे हुए अनेक वार्तालापों से मैं यह जानता हूँ कि हमारी कक्षाओं में तमाम ऐसे शिक्षक हैं जो इस तरह के कल्पनाशील, नवाचारी और इस सबसे भी अधिक मानवीय तरीके से हमारे स्कूलों में बच्चों के साथ काम करने को तैयार और आतुर हैं। इसी तरह, यदि हम उन्हें अनुमति दें तो शिक्षकों के अलावा भी बहुत से लोग यह सब करने के लिए इच्छुक हैं।

प्रस्तावना

> नियति की बात मुझसे मत करो! मानवीय बुद्धि नियति से भी मज़बूत संकल्प कर ले तो वह स्वयं नियति बन जाती है।
>
> थॉमस मान
>
> *द मैजिक माउंटेन*

यह अलग-थलग पड़े पहाड़ी इलाके की एकल-शिक्षक शाला में बिताए चार वर्षों की कथा है। आख़िरी कस्बा छोड़ सड़क लगातार ऊपर चढ़ती जाती है। अचानक वह शिख़र तक पहुँच जाती है और हम शिख़र से सटी एक छोटी, सँकरी घाटी को झाँककर देख सकते हैं। तब सड़क, जिसके दोनों ओर दर्जन भर मकान हैं, नीचे उतर आती है और घाटी में घूमने लगती है। सड़क के अन्त में जंगल का जो हिस्सा साफ किया हुआ है वहीं स्टोनी ग्रोव स्कूल है। सड़क के आख़िरी घुमाव पर मुड़ते ही वह दृश्य अचानक ही मुझे नज़र आता था, तब भी जब मैं उससे बाकायदा परिचित हो चुकी थी। सुबह-सुबह अलाव-पाख़ियों द्वारा "टीचर, टीचर!" कहकर स्वागत किया जाना मुझे सुखद लगता था।

मुझे पता था कि मैं यहीं की हूँ। जब मैं छोटी-सी थी तब से ही मेरी इच्छा थी कि मैं किसी ऐसी ही शाला में पढ़ाऊँ। यह सौभाग्य मुझे अब मिल गया था।

स्टोनी ग्रोव स्कूल में बिताए सालों के दौरान मैंने एक डायरी लिखी, ख़ास इस मकसद से कि मैं एक अच्छी टीचर बनना सीखूँ, क्योंकि मुझे लगा कि जो कुछ घट रहा हो उसे लिखने पर मेरा चिन्तन और साफ होगा। मेरे कुछ मित्रों को लगा कि इस डायरी को प्रकाशित करना चाहिए। मैं एक शिक्षिका हूँ लेख़िका नहीं, पर अपनी साहित्यिक सीमाओं के बावजूद मैंने डायरी को प्रकाशन के लिए तैयार करने का बीड़ा उठाया क्योंकि मुझे विश्वास था कि मेरे पास कहने को कुछ है। आगामी चन्द वर्षों में शिक्षा को गम्भीर निर्णय लेने हैं कि वह किस दिशा में बढ़ेगी। मैं यह कथा उन तमाम कथाओं में जोड़ना चाहती हूँ ताकि पलड़ा

ऐसी शिक्षा की ओर झुके जो लोगों के जीवन में कुछ अन्तर लाती हो। मेरा पक्का विश्वास है कि शिक्षा जीवन की गुणवत्ता में खासा सुधार कर सकती है।

पर ऐसा बदलाव पुराने तौर-तरीकों से नहीं लाया जा सकता। हमें किताबी ज्ञान से कुछ अधिक की ज़रूरत है। हमें बच्चों को जानना-समझना होगा, वे दरअसल कैसे हैं और उनकी क्या आवश्यकताएँ हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति का सबसे माकूल तरीका होगा उनकी रुचियों का फायदा उठाना, उनके परिवेश में आसपास उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करना, और जहाँ दरकार हो पूरक साधन जोड़ना। यों हम बच्चों की समग्र व्यक्तित्व का विकास करने और हमारी अनिश्चित-सी दुनिया की चुनौतियों का रचनात्मक तरीकों से सामना करने में मदद कर सकेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक मूल डायरी के आकार का लगभग एक-चौथाई है। ज़रूरी तौर पर यह एक तरह का सार-संक्षेप है। बच्चों को और उनकी पृष्ठभूमियों को भलीभाँति समझने सम्बन्धी जो संकेत मैं कर पाई हूँ, उससे भी अधिक बहुत कुछ घटता है। मुझे उम्मीद है कि हर वाक्य की तह में गहरे दबे बच्चों और उनके परिवेश के ज्ञान की अनुभूति आप तक सम्प्रेषित हो सकेगी। मैंने पठन जैसे विषयों को पढ़ाने की विधि की तकनीकी प्रस्तुति नहीं की है। तमाम अन्य लोग ऐसा पर्याप्त रूप से कर चुके हैं। इस पुस्तक में मैंने बच्चों के साथ जीने और काम करने की एक राह दर्शाने की कोशिश की है।

हमारा सामूहिक जीवन चौथे साल में अपनी श्रेष्ठता पर पहुँचा। पिछले तीन सालों के संघर्षों के बिना यह सम्भव नहीं हो सकता था। वृद्धि के इस स्तर तक पहुँचने में आई कठिनाइयों के बारे में पढ़ना सम्भवतः आपको कुछ रोचक लगे, उससे कोई मदद मिले और शायद कुछ प्रेरणा भी।

स्टोनी ग्रोव जाने से पहले मैं तीन सालों तक हमारी ही काउंटी के बड़े स्कूलों में पढ़ाती रही थी। इस दौरान मैंने कई कठिनाइयों से जूझना सीखा था, जिनका सभी शिक्षक प्रारम्भ में सामना करते हैं। पर इससे भी महत्वपूर्ण यह था कि मुझे काउंटी के काम से प्रेरणा मिली थी और मैंने यह तो सीख ही लिया था कि शिक्षण का क्या अर्थ हो सकता है।

हमारी काउंटी में शाला अधीक्षक होता है जिसे राज्य का सार्वजनिक शिक्षा

विभाग स्कूलों के कार्य को निर्देशित करने के लिए नियुक्त करता है। साथ ही तीन सहायक शिक्षक होते हैं। न्यू जर्सी में ग्रामीण निरीक्षकों को इसी नाम से बुलाया जाता है। ये शिक्षकों की मदद करते हैं। उक्त चार व्यक्तियों ने एक ठोस और भविष्योन्मुखी नेतृत्व उपलब्ध करवाया। उन्होंने अध्ययन किया, तमाम प्रयोग किए और बालक-बालिकाओं के समग्र विकास के बेहतर तरीके तलाशने में पहल की। काउंटी के बच्चों की सेवा करते समय उनके बीच घनिष्ठ सहकार रहा।

इस समूह का एक सदस्य विगत पच्चीस वर्षों से इस काउंटी में था। वह निरन्तर इस आस्था को सँजोए काम करता रहा था कि बच्चे महत्वपूर्ण हैं और उनके साथ जो कुछ भी होता है वह हमारा बड़ा सरोकार है। बच्चों के प्रति यह सरोकार ही हमारे शैक्षिक कार्यक्रम की बुनियाद है। इस दौरान हमारे राज्य का नेतृत्व भी ऐसा रहा कि सभी काउंटियाँ राज्य भर में एक बेहतर शिक्षा कार्यक्रम को गढ़ने के वास्ते एक-दूसरे के साथ मिलकर काम कर सकीं।

स्कूली कार्यक्रम को लागू करने में काउंटी में कई एजेंसियाँ परस्पर सहयोग करती हैं। ग्रामीण नर्सें हर सप्ताह स्कूलों में जाती हैं। एक प्रशिक्षित लाइब्रेरियन के नेतृत्व में एक काउंटी पुस्तकालय स्कूलों को ढेरों पठन सामग्री उपलब्ध करवाता है। एक घरेलू प्रदर्शन एजेंट व एक 4-एच क्लब एजेंट कृषि विस्तार के कार्य का मार्गदर्शन कर स्कूलों में 4-एच क्लबों के ज़रिए लड़के-लड़कियों और समुदाय के वयस्कों को ग्रामीण जीवन के गुण पहचानने व उसे सुधारने का महत्व बताते हैं।

जब मैं स्टोनी ग्रोव गई तो काउंटी की नीति व इन एजेंसियों के योगदान के सबूत मुझे मिले। बच्चे खुश थे और अपनी शिक्षिका के साथ उनका सम्बन्ध भी अच्छा था। उस शिक्षिका ने कई कमेटियों में काम किया था और काउंटी की शैक्षणिक नीतियों में हुई प्रगति में भाग लिया था। वह बच्चों को जानती-समझती थी और उनकी ज़रूरतों को पूरा करने की चेष्टा कर रही थी। दोपहरी के गर्म (मध्याह्न) भोजन का कार्यक्रम जम चुका था। उसके लिए उम्दा उपकरण थे और उसकी योजना घरेलू प्रदर्शन एजेंट, सहायक शिक्षक व शिक्षिका ने मिल-जुलकर बनाई थी। कस्बाई शिक्षा बोर्ड व काउंटी सार्वजनिक शिक्षा विभाग के बीच घनिष्ठ सहकार था।

स्टोनी ग्रोव किसी भी शिक्षिका के लिए बढ़िया स्थान था। मुझे किसी भी परिपाटी की अनुपालना की ज़रूरत नहीं थी। मैं ऐसे राज्य और काउंटी में थी जिनके शिक्षा कार्यक्रम ने सालों से बच्चों को ध्यान में रखा था। कार्यक्रम क्रमशः विकसित हो रहा था और मैं उसमें भागीदारी कर सकती थी। जब मैंने स्टोनी ग्रोव में पढ़ाना शुरू किया तो मैं भी सीखने को तैयार थी। मुझे यह आज़ादी भी थी कि स्वयं प्रयोग कर यह तलाश सकूँ कि बच्चों का एक समूह और उनकी शिक्षिका किस प्रकार रचनात्मक और लोकतांत्रिक जीवन की ऊँचाइयों तक पहुँच सकते हैं। अगर मुझे कुछ सफलता मिली तो वह इसलिए कि मेरे लिए सभी राहें खुली थीं। मानसिक स्वास्थ्यविद् हमें बताते रहे हैं कि जिस मानव स्वभाव व परिस्थिति में हम स्वयं को पाते हैं वह स्थायी नहीं है, बल्कि एक महत्वपूर्ण हद तक हमारे द्वारा ही बनाई गई होती है और उसे बदला जा सकता है। इस विचार को स्वयं जाँचने-परखने व तलाशने का मुझे हर समय मौका मिला और साथ ही मिली अमूल्य सहायता। हम ऐसी सामाजिक व्यवस्था बना सकते हैं जिसकी मदद से प्रत्येक व्यक्ति अपनी सम्भावनाओं को पूरी तरह हासिल कर सके और जिसके माध्यम से हम सब मिलकर मानव जीवन के उच्च स्तर का अनुभव कर सकें – अगर हम सच में ऐसा करना चाहें तो!

जिन लोगों का मैंने उल्लेख किया है उनके प्रति मैं अपना आभार जताना चाहती हूँ। मैं उनकी बेहद ऋणी हूँ। मैं अपने माता-पिता की भी ऋणी हूँ जो सीधे-सरल इन्सान होते हुए भी शिक्षा की शक्ति को पहचानते हैं। और मैं अपने अनेक अद्‌भुत मित्रों की आभारी हूँ जिन्होंने मेरे जीवन के दौरान जैसी मैं बन सकती थी उससे बेहतर इन्सान बनने में मेरी मदद की, और यों एक बेहतर शिक्षक बनने में भी।

डॉ. फ्रैंक सिर कोमलता से पर लगातार मुझ पर तब तक दबाव डालते रहे जब तक मैंने डायरी को प्रकाशन के लिए तैयार करने का वादा न कर डाला। और तब उन्होंने पाण्डुलिपि पढ़ी, उसकी आलोचना की और उसे प्रकाशक के समक्ष प्रस्तुत किया। डॉ. फैनी डन्न, ऐन्न हॉप्पॉक, ब्लांश मोरान व डॉ. पर्सी ह्यूज ने भी पाण्डुलिपि पढ़ी और मुझे कई अच्छे सुझाव दिए, टिप्पणियाँ कीं। मैं उनकी विशेष आभारी हूँ। श्री व श्रीमती वॉलास क्लार्क ने पाण्डुलिपि टाइप की और सम्पादकीय सलाह दी, उनको भी मैं धन्यवाद देती हूँ।

सबसे ज़्यादा मैं मार्सिया एवरेट की आभारी हूँ। उन्होंने मेरी निस्वार्थ व अपार मदद की ताकि मैं एक रचनात्मक शिक्षिका बन सकूँ। यह पुस्तक हमारे लम्बे व प्रेरणादायक वार्तालापों और चर्चाओं का ठोस नतीजा है जो स्कूल में और उनके घर पर आनन्ददायक खाने के साथ हुई थीं। उन्होंने उन चार सालों के दौरान लिखी गई मूल डायरी का एक-एक पृष्ठ पढ़ा। उन्होंने उस नन्ही-सी शाला में हमारे विकास पर लगातार नज़र रखी और संवेदनशील दिशा निर्देशन किया। उनकी समर्पित सहायता और मित्रता के बिना यह पुस्तक शायद कभी लिखी ही न जाती।

जूलिया वेबर गॉर्डन

इस वर्णन में बच्चों, अन्य लोगों व समुदाय के स्थानों के नाम काल्पनिक हैं। परन्तु काउंटी की विभिन्न एजेंसियों व समुदाय से बाहर के उन लोगों के नाम मैंने नहीं बदले हैं जिन्होंने हमारी मदद की।

– जूलिया वेबर गॉर्डन

पहला वर्ष

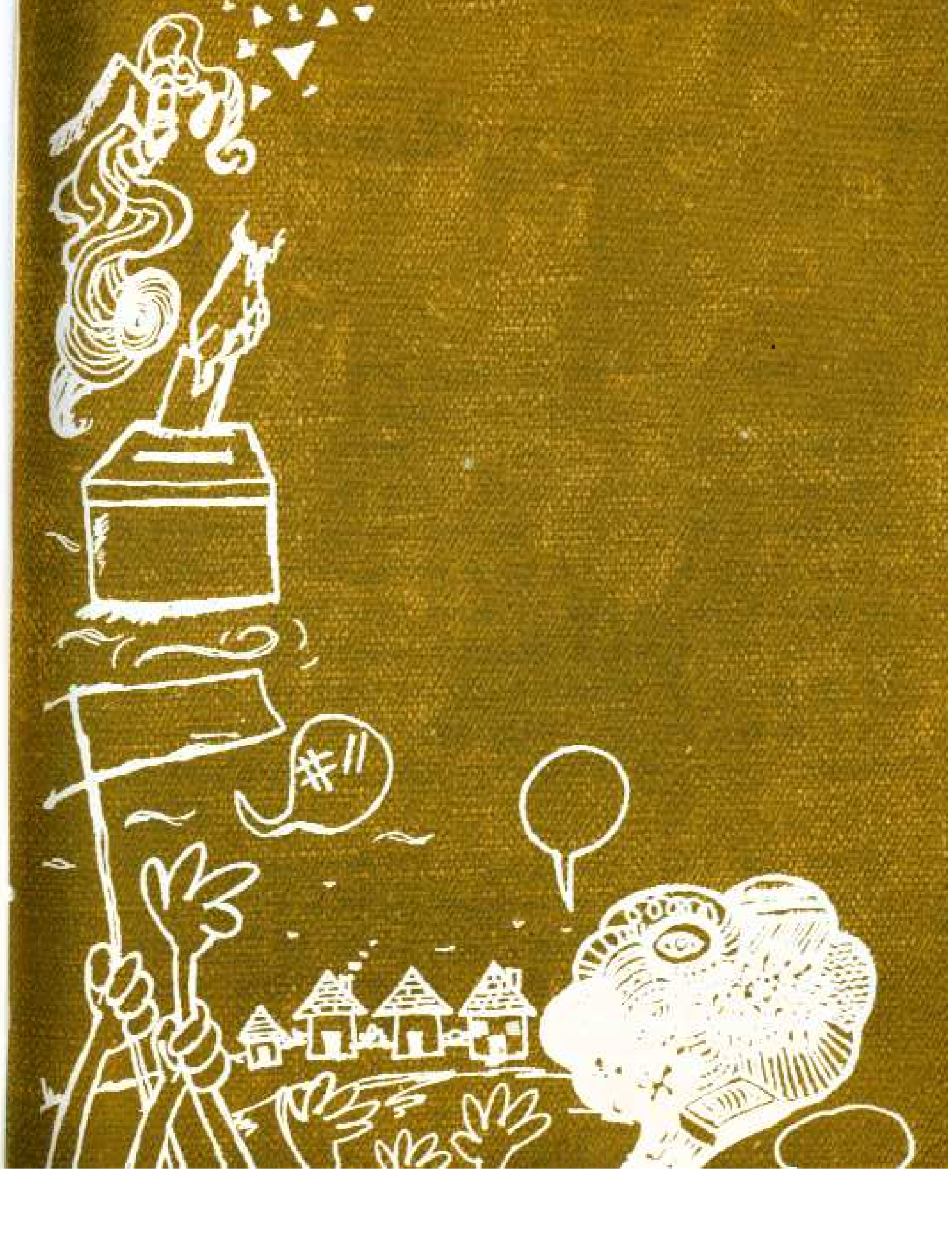

1

मैंने बच्चों को जानना सीखा

पहले दिन की तैयारी

शुक्रवार, 5 जून 1936

मैं आज उस नन्ही-सी शाला को देखने गई जहाँ मैं आगामी पतझड़ से पढ़ाने वाली हूँ। जब मैं धूप में चमचमाते उस सफेद, डिब्बेनुमा साफ-सुथरे भवन के द्वार तक पहुँची तो उसने मन में एक विचित्र-सी उत्तेजना जगाई। एकल-शिक्षक शालाओं तथा एक सतत विकसित होते हुए रचनात्मक व लोकतांत्रिक जीवन के लिए बच्चों को तैयार करने के जो अवसर वे देती हैं, उनमें मेरी गहरी आस्था है। यहाँ मुझे बच्चों के एक समूह के पास रहने और उन्हें घनिष्ठता से जानने का अवसर मिल सकेगा। मेरे पास वे उस अवधि तक रहेंगे कि मैं उन्हें एक यथासम्भव सम्पन्न वातावरण में दिशादर्शन के सहारे बड़े होते और अपनी क्षमताओं का विकास करते देख सकूँ। मैं दरवाज़े पर एक पल रुकी और मैंने शाला भवन के इर्द-गिर्द पसरे जंगल पर नज़र दौड़ाई। हाल में हुई वर्षा ने पत्तों को चमका दिया था और जंगल महक रहा था। "यह सब हमारी प्रयोगशाला होगी," मैंने सोचा।

जब मैं कक्षा में दाखिल हुई तो बच्चे अपने वार्षिक खेल दिवस के लिए एक सर्कस तैयार कर रहे थे। कुछ बच्चों ने मेरी ओर सँकुचाई-सी दृष्टि डाली, पर सभी काम में जुटे रहे। इस दौरान उनकी शिक्षिका ने उनकी पृष्ठभूमियों, योग्यताओं और भावनात्मक विकास से सम्बन्धित ज़रूरी बातें मुझे बताईं। इस वार्तालाप के दौरान मैंने जो नोट्स लिए थे और बच्चों के नाम, आयु और कक्षाओं की एक सूची के अलावा अन्य कोई रिकॉर्ड मुझे नहीं दिया गया।

कक्षा	नाम	आयु (वर्ष - माह)
8	एना ओल्सेउस्की	13 - 5
8	ओल्गा प्रिन्लैक	15 - 8
7	कैथरीन सामेटिस	13 - 7
7	रूथ थॉमसन	15 - 2
7	सोफिया सामेटिस	10 - 8
6	डॉरिस एण्ड्रयूस्	11 - 3
6	मेरी ओल्सेउस्की	10 - 10
6	फ्रैंक प्रिन्लैक	14 - 8
5	मे एण्ड्रयूस्	9 - 3
5	वॉरेन हिल	9 - 7
5	जॉर्ज प्रिन्लैक	12 - 4
5	एडवर्ड वैनिस्की	10 - 10
4	हेलेन ओल्सेउस्की	8 - 0
4	एण्ड्रयू डूलिओ	12 - 2
3	एल्बर्ट हिल	8 - 3
3	पर्ल प्रिन्लैक	10 - 1
3	मार्था जोन्स	8 - 9
3	जोसेफ डण्डर	13 - 5
3	वर्ना कार्टराइट	11 - 2
3	एलेक्स कार्टराइट	12 - 1
3	गस कार्टराइट	13 - 2
2	एलिस प्रिन्लैक	8 - 8
2	वॉल्टर विलियम्स	7 - 1
2	विलियम्स सामेटिस	7 - 8
प्रारम्भिक बच्चे		
	रिचर्ड कार्टराइट	8 - 6
	जॉन डण्डर	8 - 4
	जॉयस विलियम्स	5 - 4

सोमवार, 6 जुलाई

मैं शाला भवन में गई और अलमारी की सारी किताबें बाहर निकालीं। ज़्यादातर किताबें अच्छी हैं, यद्यपि उनकी संख्या कम है। अलमारी की ऊपरी टाँड में मैंने पुरानी अनुपयोगी किताबें जमा दीं जिनके बारे में मुझे पता है कि मैं उन्हें कभी काम में न लूँगी, पर उन्हें फाड़ने की मेरी हिम्मत न हुई। शेष किताबों में से एक-एक प्रति घर ले जाने के लिए अलग रखने के बाद, मैंने बाकी किताबें ताकों पर तरतीब से सहेज दीं ताकि सितम्बर में वे मुझे सुविधा से मिल जाएँ। जब तक मैं बच्चों के बारे में तथा एकल-शिक्षक शाला को चलाने के बारे में और नहीं जान लेती, मुझे इन्हीं किताबों के बुनियादी पाठों का सहारा लेना होगा।

पुस्तकालय किस्म की तकरीबन दर्जन भर किताबें भी हैं, और उनकी हालत से अन्दाज़ा लगा कि बच्चे उन्हें बारम्बार पढ़ चुके होंगे। स्कूल खुलने से पहले मैं काउंटी पुस्तकालय जाऊँगी और कुछ नई किताबें ले लूँगी। लगता है प्रथम वर्ष में मेरे दो उद्देश्य रहेंगे। पहला, बच्चों की आवश्यकताओं और उनकी योग्यताओं के बारे में यथासम्भव जान लेना। दूसरा, हमारे सामूहिक, रोज़मर्रा के जीवन से मिले अवसरों और आसपास के समुदाय के पास उपलब्ध संसाधनों के माध्यम से इन आवश्यकताओं की पूर्ति करना तथा बच्चों की योग्यताओं का विकास आरम्भ करना।

सोमवार, 7 सितम्बर

आज शाला भवन आसपास उगी खरपतवार के बीच बेहद अकेला लग रहा था। गर्मियों में भी शाला भवनों का इस्तेमाल होना चाहिए। मैं पहुँची तब श्री हार्ट खिड़कियाँ साफ कर रहे थे। उन्होंने बताया कि वे साल में एक बार अलाव व चिमनी, खिड़कियाँ व दीवारें साफ करने और फर्श को तेल से चमकाने आते हैं। बाकी समय हमें खुद सफाई रखनी होती है। मैंने आस्तीन चढ़ाई और मैं कमरे को व्यवस्थित करने लगी और वह सारा सामान जमाने लगी जिसकी हमें पहले दिन ज़रूरत होगी। मेज़-कुर्सियाँ अपने स्थान पर ठुकी नहीं हैं, उन्हें हटाया जा सकता है। इनके अलावा कमरे में किताबों की दो छोटी अलमारियाँ हैं, एक पुराना ऑर्गन, शिक्षक के लिए एक मेज़ और एक पहिएदार कुर्सी है। घर की बनी एक मेज़ और चार कुर्सियाँ भी मुझे विरासत में मिली हैं जो सन्तरे के क्रेटों से बनी हैं और जिनका उपयोग पिछले वर्षों में शायद पुस्तकालय कोने के रूप

में किया जाता था। कमरे के एक कोने में एक अलाव है। कमरे के प्रवेश दरवाज़े के बाहर एक छोटा-सा हॉल है जिसमें एक सिंक लगा है, पर चालू पानी नहीं है। यह हिस्सा कोट आदि टाँगने के लिए काम आता है। दूसरी ओर एक रसोई है। वहाँ दीवार में ही दो अलमारियाँ बनी हुई हैं, फर्श से छत तक। पकाने-खाने के सभी बरतन-भाँडे इनमें आराम से समा सकते हैं। वहाँ तेल का दो-मुँहा स्टोव भी है।

जब मैं और श्री हार्ट वहाँ से निकले तो शाला भवन साफ-सुथरा था, और वैसा नज़र भी आ रहा था। इस साल अन्दरूनी दीवारें हल्के मलाइया-पीले रंग से पोती गई हैं।

मंगलवार, 8 सितम्बर

गर्मियों के दौरान मैंने फैनी डन्न तथा मार्सिया एवरेट की किताब *फोर ईयर्स इन अ कंट्री स्कूल* फिर से पढ़ी और उन पाठ्यपुस्तकों को भी देखा जिनका इस्तेमाल मुझे करना है। आज मैं पहले दिन की तैयारी करने का महत्वपूर्ण काम करने बैठी हूँ। बच्चों को यह लगना चाहिए कि उन्होंने सच में कुछ हासिल किया, और जो समय यह सब करते गुज़ारा उसमें उन्हें मज़ा भी आया। तभी तो अगले दिन लौटकर आने की चाह जागेगी। जो कार्यक्रम मैं बनाऊँ वह मुझे बच्चों को काम करते देखने का मौका भी दे, ताकि मैं उन्हें जान सकूँ और उनके मनोभाव ताड़ सकूँ। पर साथ ही यह कार्यक्रम इतना तयशुदा तो हो ही कि मैं आत्मविश्वास से बच्चों के साथ हँस-खेल सकूँ और वे मुझे अपना दोस्त मान सकें। समूचे साल की सफलता और असफलता काफी हद तक इस पहले दिन पर टिकी हुई है। मेरी योजना की रूपरेखा यों है:

प्रातः 9 से 9:30: मेज़-कुर्सियों की ऊँचाई बच्चों के हिसाब से ठीक करना। किताबें और सामग्रियाँ बाँटना (इससे बच्चों को शुरू से ही सक्रिय रूप से कुछ करने को मिलेगा)।

9:30 से 10:30: सामाजिक अध्ययन। शुरू में दस मिनट बच्चों को कुछ बताना। सम्भव हो तो उन्हें अपने विषय में कुछ बताने को उकसाना।

बड़ी कक्षाओं (छठी, सातवीं, आठवीं) के समूह और बीच के (चौथी, पाँचवीं के) समूह को इतिहास की पाठ्यपुस्तक के कुछ पन्ने पढ़ने को कहना। जिन

सवालों के जवाब उन्हें देने हैं उन्हें ब्लैकबोर्ड पर लिख देना होगा। ये बच्चे खुद पढ़ेंगे और मैं अगले बीस मिनट प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों से बातचीत करूँगी।

प्राथमिक बच्चों से यह बात करूँगी कि गर्मियों में उन्होंने क्या-क्या मज़े किए। छोटे बच्चे अमूमन बात करते समय अपने पालतू जानवरों पर आ जाते हैं। कोशिश यह करनी होगी कि सभी बच्चे कुछ योगदान ज़रूर करें। उनके साथ छोटी-छोटी पुस्तकें बनाने की योजना बनाऊँगी, जो शायद उनके पालतू जानवरों पर होंगी। उनसे कहूँगी कि वे चित्र बनाएँ और जो कुछ उन्होंने चर्चा में कहा था उसे लिख डालें।

प्राथमिक बच्चे अपना काम जारी रखेंगे और मैं बिचले समूह के साथ पन्द्रह मिनट काम करूँगी। हम एक-एक कर सभी सवालों पर चर्चा करेंगे। तब प्राथमिक बच्चे बिचले समूह के एक बच्चे के नेतृत्व में बाहर चले जाएँगे। बिचले समूह के शेष बच्चे चर्चा के अनुसार काम जारी रखेंगे। मैं तब बड़ी कक्षाओं के बच्चों के साथ पन्द्रह मिनट की चर्चा करूँगी। बातचीत उसी तरह होगी जैसे बिचले समूह के साथ हुई थी।

10:30 से 10:50: शारीरिक शिक्षा। चौथी से आठवीं तक की कक्षाओं के बच्चों को डॉज बॉल खिलवाना शुरू कर प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के साथ खेलूँगी।

10:50 से 12:00: प्राथमिक बच्चों की "क्लार्क इंग्राहम पठन निदान परीक्षा" लूँगी। (इससे उनकी पठन क्षमता का कुछ पता चल सकेगा।) इस दौरान बड़े बच्चे अपनी-अपनी "रीडर" में से पहली कहानी पढ़ेंगे और उनकी समझ को जाँचने के लिए कुछ सवालों के जवाब देंगे। यह काम खत्म करने पर वे पुस्तकालय से लाई नई किताबें देख-पढ़ सकेंगे, जिन्हें मैं स्कूल ले जाऊँगी।

12:00 से 1:00: बीस मिनट का भोजन अवकाश और फिर मैदान में खेल-कूद।

1:00 से 1:30: प्रार्थना इत्यादि। बाइबल पढ़ना, अमरीकी ध्वज को सलाम। संगीतः बच्चों से *गोल्डन बुक ऑफ सॉन्ग्स* से चुनकर गीत गाने को कहना।

1:30 से 2:15: बड़े बच्चों का गणित निदान टेस्ट लूँगी। छोटे बच्चे पुस्तकालय की किताबें देख-पढ़ सकेंगे और बाहर खेलेंगे। यह पीरियड मुझे बच्चों के काम का अवलोकन करने का मौका देगा। सवा दो बजे प्राथमिक बच्चे घर लौट जाएँगे।

2:15 से 2:30: शारीरिक शिक्षा। बड़ी कक्षाओं के बच्चों के साथ कोई खेल खेलना।

2:30 से 2:45: वर्तनी। सातवीं व आठवीं कक्षाओं को मिलाकर आठवीं के शब्दों की परीक्षा। पाँचवीं-छठी को मिलाकर छठी के शब्द। चौथी कक्षा के लिए चौथी के शब्द। सभी बच्चों को एक साथ बैठाकर यह सिखाना होगा कि वे अपने-अपने शब्दों को स्वतंत्र और निपुण ढंग से कैसे पढ़ें और सीखें।

2:45 से 3:30: गणित। सभी बच्चे कमोबेश व्यक्तिगत स्तर पर काम करेंगे। वे अपनी किताबों की शुरुआत में दिए गए दोहराव के पाठ से प्रारम्भ करेंगे। मुझे उनकी काम करने की आदतों के अवलोकन का मौका फिर से मिलेगा।

यह योजना वैसे तो काफी औपचारिक-सी लग रही है, पर बच्चों के साथ मेरा बर्ताव अनौपचारिक और दोस्ताना भी हो सकता है।

बुधवार, 9 सितम्बर

सुबह घर से निकलते समय डर और थरथराहट-सी थी। मैं तैयार थी और जानती थी कि कक्षा व्यवस्थित है, सामग्रियाँ करीने से रखी हैं, और पूरे दिन की सावधानीपूर्वक योजना बना ली गई है, पर अपनी सारी अपर्याप्तताओं के बोझ का एहसास मुझे दबा रहा था। घर से शाला भवन की दूरी ग्यारह मील है, और रास्ते भर मैं अपने सम्बोधन को दोहराती रही। मैं बच्चों को बताऊँगी कि खुद को उनके बीच में पाकर मैं कितनी खुश हूँ; यह हमारा सौभाग्य है कि हम एक निहायत खूबसूरत जगह पर रहते हैं, और हम मिलजुलकर उसकी खोजबीन करेंगे। मैं उन्हें यह भी बताऊँगी कि यह साल कमोबेश वैसा ही बनेगा जैसा हम उसे बनाएँगे। हम अपनी समस्याओं के समाधान साथ-साथ तलाशेंगे और एक-दूसरे को समझने की कोशिश करेंगे।

पर यह भय मुझे सताने लगा कि बच्चे समझेंगे नहीं। शायद मुझे एक कहानी कहनी चाहिए, एक हास्यकथा, पर खूब सोचने पर भी एक भी उपयुक्त कहानी नहीं सूझी।

जब मैं स्कूल पहुँची तो बच्चे दरवाज़े के इर्द-गिर्द इकट्ठे खड़े थे और उसमें घुसना ही मुश्किल था। वे मेरे साथ ही दाखिल हुए और तब तक स्थान बदलते रहे जब तक उन्हें मन-माफिक जगह न मिल गई। अन्ततः कमरे में शान्ति-सी

छा गई और वे मुझे आतुरता से देखने लगे। स्कूल शुरू करने के अलावा कोई चारा न था। हमने मेज़-कुर्सियों की ऊँचाई सही की। रैल्फ और फ्रैंक ने इस काम की देख-रेख की। नौ बजते-बजते हम काम शुरू करने को तैयार थे। बच्चे आज चुप थे और अधिकतर वह सब करते रहे जो उन्हें कहा गया।

कुछ बच्चे समूह में अलग नज़र आते हैं। रैल्फ और फ्रैंक, दो बड़े लड़के, और एना व रूथ मौका पड़ते ही मदद को तैयार रहते हैं। मार्था की आँखें ज़ोर से चमकती हैं। हिल लड़कों की मुस्कान प्यारी-सी है। ओल्गा इतनी बड़ी और शर्मीली है और वह असहज-सी महसूस करती लगती है। दोनों नन्हे विलियम्स बच्चे घबराए-से लगते हैं। ढेरों कार्टराइट बच्चे हैं। जोसेफ डण्डर, जो मनौवैज्ञानिक क्लिनिक की रिपोर्ट के अनुसार लगभग मनोरोगी है, ने नाक में दम कर दिया। सभी बच्चे शर्मीले और संकोची लगे।

गुरुवार, 10 सितम्बर

आज की समय सारणी लगभग कल-सी थी और मेरा मुख्य उद्देश्य था बच्चों के बारे में और अधिक जानना। पठन की कक्षाओं में मैंने हरेक बच्चे को बोलकर पढ़ते सुना और मैंने यह तय कर लिया है कि मैं फिलहाल उनके अस्थायी समूह कैसे बनाऊँगी। मैंने पाया कि इतिहास के पाठ आठवीं के बच्चों के अलावा दोनों समूहों को समझने में बेहद कठिन लग रहे हैं। एण्ड्र्यू, जिसे दरअसल चौथी में होना चाहिए, प्रवेशिका तक नहीं पढ़ पाता है। प्राथमिक बच्चों ने अपनी पठन परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन किया, परन्तु चौथी और उसके बाद की कक्षाओं के बच्चों का पठन कौशल आम तौर पर कमज़ोर है। कुछ ही बच्चे हैं जिन्हें पढ़ना पसन्द है। सभी ने पुस्तकालय की किताबों के चित्र देखे, पर कुछ ही लड़कियों ने उन्हें पढ़ना शुरू किया है। इस सबसे लगता है कि मेरा सबसे बड़ा काम होगा इन बच्चों को छपे पन्नों से अधिकतम निकाल पाने में मदद करना और पढ़ने में आनन्द लेना सिखाना। मेरे ख़्याल में पढ़ने की क्षमता में कमी का एक कारण यह है कि यहाँ पढ़ने के अनुभव का ही अभाव है। मैंने गौर किया कि वे पढ़ते समय कई कठिन शब्दों की जगह चालू भाषा के शब्द रख काम चला लेते हैं।

आज बच्चों की दो अन्य आवश्यकताएँ भी सामने आईं। पहली तो यह कि इन बच्चों को न तो साथ-साथ खेलना आता है, न ही वे साथ खेलना चाहते हैं। कल

लड़कियों को लड़कों के साथ डॉजबॉल के खेल में दिक्कत हुई थी। लड़कियों ने कहा कि लड़के बड़े उजड्ड हैं। आज लड़कियों ने कहा कि वे छोटे बच्चों के साथ खेलना चाहती हैं। लड़कों के लिए जो खेल मैंने शुरू करवाया था वह जल्दी ही बन्द हो गया और वे हमें खेलते देखने लगे। मैंने उन्हें साथ खेलने को आमंत्रित किया और जवाब में वे हँस पड़े। मैंने देखा कि रैल्फ इनका नेता लग रहा था और मैंने मन में गाँठ बाँध ली कि उसे अपनी पाली में मिलाने का उपाय मुझे ढूँढना होगा।

दूसरा, अगर इन बच्चों से ऐसी किसी गतिविधि में हिस्सा लेने को कहा जाता है जिसे वे स्कूली काम नहीं मानते तो वे असुरक्षित महसूस करने लगते हैं। अधिकतर लड़के गाते नहीं हैं। वे मुझे कहते हैं कि वे गा नहीं सकते। मैंने जानना चाहा कि क्या वे हारमोनिका बजाना सीखना चाहेंगे। उनकी प्रतिक्रिया ठीक-ठाक थी। इससे इन अतिसंवेदनशील लड़कों को संगीत का कुछ अनुभव मिल सकेगा।

आज बच्चों से व्यक्तिगत स्तर पर थोड़ी निकटता आ पाई। वॉरेन दो बार अपना काम न कर पाने के कारण रो पड़ा। पहली बार मैंने अनदेखी की, पर दूसरी बार वह इतनी ज़ोर से रो रहा था कि मैं शारीरिक शिक्षा वाली कक्षा को खुद खेलने छोड़ उससे बात करने आई। मैंने कहा, "वॉरेन, हम अपनी समस्याओं पर रोते नहीं हैं, उन्हें सुलझाने की कोशिश करते हैं। मेरा काम यह भी है कि मैं तुम्हारी उन समस्याओं को सुलझाने में मदद करूँ जिन्हें तुम खुद नहीं सुलझा पाते। रोने के बदले क्या तुम मुझे यह नहीं बताओगे कि तुम्हारी परेशानी क्या है?" दो गहरी साँसों के बीच उसने कहा कि वह कोशिश करेगा।

जॉन और जोसेफ डण्डर आज अनुपस्थित थे। इससे मुझे मौका मिला कि मैं उनके घर जाऊँ और उनके माता-पिता से परिचय कर लूँ। वॉरेन ने कहा कि वह मुझे डण्डर परिवार का घर दिखा देगा और उसके कुछ और करीब आ पाने के इस अवसर का मैंने स्वागत किया। वॉरेन का भाई एल्बर्ट और वॉल्टर विलियम्स भी साथ चलना चाहते थे। स्कूल के बाद मैं पहले वॉरेन और फिर वॉल्टर के घर उन्हें साथ ले जाने की अनुमति लेने गई। हम जब पहुँचे तो श्रीमती हिल ब्रेड बना रही थीं। हिल परिवार ने अपना छोटा-सा खेत तीन साल पहले खरीदा था और अब वे घर की मरम्मत करवा रहे हैं। वॉरेन ने खुशी से गमकते

हुए मुझे घर में हुआ हर सुधार दिखाया। मुझे पत्थरों से बना बड़ा अलाव खास तौर पर पसन्द आया जो उन्होंने अपनी बैठक में बनवाया है। श्री हिल शिक्षक हैं और हर हफ्ते शनि और रविवार को घर आते हैं।

विलियम्स परिवार के यहाँ मैं वॉल्टर की माँ और दो छोटे बच्चों से मिली जो अभी स्कूल आने लायक नहीं हुए हैं। श्री विलियम्स कस्बे के लिए सड़कों का काम करते हैं। विलियम्स परिवार का फूल और सब्ज़ियों का बेहद सुन्दर बाग है। श्रीमती विलियम्स ने मुझे वे सारे डिब्बे दिखाए जिनमें उन्होंने पिछले सप्ताह फल भरे थे।

डण्डर परिवार एक छोटी-सी झोंपड़ी में रहता है। श्री डण्डर उस सम्पत्ति के दरबान हैं जिसके मालिक न्यू यॉर्क में रहते हैं। श्रीमती डण्डर ने बताया कि लड़कों की आज स्कूल आने की इच्छा ही नहीं हुई। मैंने उन्हें बताने की कोशिश की कि नियमित उपस्थिति कितनी महत्वपूर्ण है, पर उनका कहना था कि अगर लड़के आना ही न चाहें तो वे भला क्या कर सकती हैं। मैं उन पर कोई खास असर न डाल सकी।

आज रात अपने दैनिक कार्यक्रम की योजना मैंने सावधानी से बनाई। ज़ाहिर है जैसे ही इसमें कमी लगेगी वह फिर से बदल दी जाएगी। अब मैं कक्षाओं के विभाजन छोड़कर बच्चों को उन समूहों में रखने वाली हूँ जो उनके अनुकूल हों। इसका मतलब यह भी होगा कि समूहों की संख्या घटेगी और मैं प्रत्येक समूह के साथ अधिक समय बिता पाऊँगी। बड़े समूहों में काम करने से बच्चों को चर्चा के मौके मिलेंगे, वैचारिक आदान-प्रदान होगा और उनका सामाजिक विकास भी होगा, जो अकेले या छोटे समूहों में काम करने पर सम्भव नहीं होता।

शुक्रवार, 11 सितम्बर

हमारा उजाड़ खेल मैदान आसपास के खूबसूरत नज़ारों से बिलकुल विपरीत दिखता है। मुझे लगा कि स्कूल मैदान का सौन्दर्यीकरण हमारे प्रकृति और विज्ञान के अध्ययन के लिए सही शुरुआत रहेगा क्योंकि यह हमारे अध्ययन को एक व्यावहारिक उद्देश्य भी देगा। मैंने बच्चों को सुझाया कि हम अपने स्कूल परिसर के कुछ चित्र बनाएँ जिसमें हम वे बदलाव भी दर्ज करें जो हम भविष्य में करना चाहेंगे। हमने ब्लैकबोर्ड पर वे सारे क्षेत्र और स्थिर वस्तुएँ नोट कर

लीं जिनको हमें नापना था। तब हमने चौथी से आठवीं तक के सभी बच्चों को दो-दो की जोड़ियों में बाँट लिया। बच्चे नापने की टेप और गज़-फुट्टे लेकर बाहर चले गए और मैंने अपना ध्यान नन्हे-मुन्नों की ओर लगाया।

प्राथमिक समूह पतझड़ के लक्षणों की बात कर रहा था। बच्चे दबाने-सुखाने के लिए रंगीन पत्ते, तरह-तरह के बीज, कृमिकोश और पतझड़ के जंगली फूल लाएँगे। एलेक्स और गस काँच की शीशी में चींटियों की बाँबी लाना चाहते हैं, जैसा हमारी विज्ञान की किताब में सुझाया गया है, ताकि वे देख सकें कि चींटियाँ दरअसल शीतनिद्रा करती हैं या नहीं। यह सब हमारे विज्ञान संग्रहालय में जाएगा। हमें कागज़ की पवन-चक्कियाँ बनाने के लिए भी समय मिल पाया।

जब नन्हे बच्चे अपनी कागज़ की चक्कियों के साथ खेल में जुट गए तो मैंने स्कूल परिसर का चित्र बनाने में बड़े बच्चों की मदद की। हमने बोर्ड पर एक कच्चा-सा नक्शा बनाया जिसमें लम्बाई, चौड़ाई और दूरियाँ लिखीं, और फिर मिलजुलकर यह हिसाब लगाया कि कागज़ के आकार के अनुसार उनका नाप-जोख क्या रहेगा। बातचीत के दौरान बच्चों ने सुझाया कि स्कूल भवन के सामने फूलों की एक छोटी क्यारी बनानी चाहिए।

पुस्तकालय पठन के लिए मैं कुछ समय अलग से तय करती हूँ ताकि बच्चों को पढ़ने में दिशा दे सकूँ। इससे बच्चों को यह बताने का मौका भी मिलेगा कि वे क्या पढ़ रहे हैं। बच्चे पढ़ना पसन्द करने लगें इसका एक ही उपाय मुझे आता है। वह यह कि उन्हें पढ़ने दिया जाए, पर सन्तोषजनक स्थितियों में। आग्रह करने पर प्राथमिक समूह के चार बच्चे सबको यह बताने के लिए स्वेच्छा से आगे आए कि वे कौन सी किताबें पढ़ रहे हैं। मार्था ने अपनी बात बड़ी सिफत से रखी और समूह को मज़ा आया। विलियम और वॉल्टर कुछ संकोच से बोले, वह भी इतने धीमे कि सुनने में कठिनाई हुई।

स्वास्थ्य सम्बन्धी अच्छी आदतों की ज़रूरत ज़ाहिर ही है। मैंने सोचा कि इन आदतों को सुधारने में यथासम्भव व्यावहारिक उपाय ही अपनाने होंगे। रोज़मर्रा के जीवन में स्वास्थ्य के महत्व के बारे में कुछ प्रारम्भिक टिप्पणियों के बाद मैंने बच्चों से ही पूछा कि वे सुबह उठने के बाद रात को सोने तक कौन-कौन से ऐसे काम करते हैं जिनका रिश्ता स्वास्थ्य से है। हमारे ब्लैकबोर्ड पर एक लम्बी सूची बन गई। तब मैंने रेखांकित किया कि क्योंकि हम जो कुछ भी करते हैं

लगभग उन सभी कामों में स्वास्थ्यप्रद आदतें जुड़ी होती हैं, इसलिए स्वास्थ्य का ज्ञान अच्छा जीवन जी पाने के लिए ज़रूरी है। हमने सोचा है कि हम सूची में आने वाले प्रत्येक बिन्दु पर बात करेंगे ताकि हम नए स्वास्थ्य आचरणों के बारे में "क्यों" के उत्तर तक पहुँच सकें।

आज खेल के पीरियड बेहतर रहे। आज दोनों एण्ड्र्यूस् बालिकाओं के अलावा सभी बच्चे खेले। डॉरिस ने कहा कि उसका दिल कमज़ोर है।

स्कूल के बाद मैंने हमारे 4-एच वानिकी क्लब को व्यवस्थित किया। यह इलाका प्राकृतिक संसाधनों से सम्पन्न है। बच्चे जहाँ रहते हैं उसके बारे में उन्हें काफी कुछ जानना चाहिए। इससे उनकी जड़ें मज़बूत होती हैं, उनमें सुरक्षा और किसी स्थान विशेष से होने की भावना पनपती है। क्लब में इस इलाके में रहने वाले हाई स्कूल के विद्यार्थी भी होंगे। वे सब स्कूल के बाद कुछ समय शाला भवन में बिताते रहे हैं। शहर चार मील दूर है और स्कूल के अलावा कोई सामुदायिक संस्था है ही नहीं। इसलिए उनके लिए मनोरंजन का कोई दूसरा ठिकाना भी तो नहीं है।

इस पहली बैठक में हम ग्यारह जन थे और हाई स्कूल की पाँच लड़कियाँ। हमने "खज़ाने की खोज" का खेल खेला क्योंकि मैं जानना चाहती थी कि ये बच्चे अपने प्राकृतिक वातावरण के बारे में दरअसल कितना जानते हैं। हरेक सहभागी को किसी ऐसे प्राकृतिक नमूने की पहचान करनी थी जिसका नाम उसे पता हो, और तब वहीं खड़े रहना था, क्योंकि उसे नुकसान पहुँचाने से उसे दल से निकाल दिए जाने की शर्त थी। हाई स्कूल की दो लड़कियों के नेतृत्व में दो टोलियाँ बनीं। हमने अट्ठानवे नमूनों की पहचान की। ये बच्चे अपनी प्रकृति से सच में वाकिफ हैं!

डॉरिस प्रायः बस से घर जाती है, सो मैंने वादा किया कि आज रात अगर वह क्लब के लिए रुकती है तो मैं उसे घर छोड़ दूँगी। मैं उसकी माँ से मिली। वे एक शान्त महिला हैं जो घर से बिरले ही निकलती हैं। मुझे पता चला कि डॉरिस का दिल कमज़ोर नहीं है। उसकी माँ कहती हैं कि डॉरिस बहुत स्वस्थ बच्ची नहीं है। वह घर में लगातार टैप-नृत्य करती है और थक जाती है! मुझे डॉरिस को दूसरे बच्चों के साथ खेलने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। उसे दूसरों से मेलजोल के अनुभव की दरकार है। श्री एण्ड्र्यूस् की मृत्यु हो चुकी है और

श्रीमती एण्ड्र्यूस् को बच्चों के लिए सरकारी पेंशन मिलती है।

सोमवार, 14 सितम्बर

एकल-शिक्षक विद्यालय में पढ़ाने सम्बन्धी इतनी बारीकियाँ हैं कि मुझे लगता है मैं ढंग से कोई भी काम करना तब तक नहीं सीख पाऊँगी जब तक मैं उनमें से कुछ पर ध्यान केन्द्रित न कर लूँ। अगले कुछ समय तक मैं पठन और प्रबन्धन पर ही ध्यान केन्द्रित रखूँगी। मैं इन बच्चों को दिन में कई बार निर्देशित पठन अनुभव देने की कोशिश करूँगी।

इस तरह की शाला का प्रबन्धन कोई बड़ी समस्या नहीं होनी चाहिए। अगर कुछ रोज़मर्रा के काम व्यवस्थित हो जाएँ और कुशलता से निपटा लिए जाएँ, जैसे कमरे और परिसर की सफाई, तो हम दूसरे कामों पर ध्यान दे सकते हैं। पर एक दूसरी समस्या भी है। वह है खेल मैदान का प्रबन्ध जहाँ कुछ समय तक तो सावधानी से नज़र रखना ज़रूरी होगा। बच्चे दोपहरी के समय इधर-उधर भटकते रहते थे। सो उन्हें लग रहा है कि मैं उनका मध्यावकाश छीन ले रही हूँ क्योंकि मैं शारीरिक शिक्षा के पीरियड में उन्हें खेलने को कहती हूँ। स्कूल दरअसल छोटे-छोटे गुटों में बँटा हुआ है और एक-दूसरे में उनकी खास रुचि नहीं है। उनमें सामूहिक चेतना का अभाव है।

गस अपने पालतू सफेद चूहे को स्कूल लाया और हमने उस पर एक कहानी लिखी। प्राथमिक समूह अब उसे पढ़ना सीख रहा है। कहानी बनाना कठिन काम था और मुझे बच्चों से कई सवाल पूछने पड़े और तमाम सुझाव भी देने पड़े।

मैंने दो बड़े समूहों को इतिहास की दूसरी किताबें दी हैं जो इतनी कठिन नहीं हैं। बच्चे उन सवालों के जवाब भी लिखने लगे हैं जो मैं बोर्ड पर लिखती हूँ, परन्तु हम चर्चाओं के दौरान उन पर्चों को इस्तेमाल नहीं करते। जब बच्चों को किसी प्रश्न का उत्तर नहीं आता तब हम किताब में उत्तर तलाशते हैं और उसे बोलकर पढ़ते हैं। तब वह जवाब हम अपने शब्दों में लिखते हैं। यह प्रक्रिया उबाऊ है, पर इन बच्चों के लिए यह पहला कदम है। वे ऐतिहासिक सामग्री पढ़ना सीख रहे हैं, और अपने लेखन में तथ्यात्मकता और स्पष्टता लाने की कोशिश कर रहे हैं। इसमें काफी समय लग रहा है, लेकिन बाद में इसी कारण समय बचेगा भी।

मंगलवार, 15 सितम्बर

बच्चे ज़िम्मेदारियाँ लेकर जवाबदेह बनना सीखते हैं। अगर उन्हें बुद्धिमान नागरिक बनना है तो एक नागरिक की ज़िम्मेदारियों को निभाने का अभ्यास तो उन्हें करना ही होगा। दिन खत्म होने पर मैंने एक विज्ञान क्लब बनाने की चर्चा बच्चों से की। उन्हें ऐसे क्लब की गतिविधियों का कोई अन्दाज़ ही नहीं था, अतः ज़्यादातर बातचीत मुझे ही करनी पड़ी। मैंने समझाया कि समूह के समक्ष आने वाली समस्याओं का उन्हें साझा समाधान करना होगा और हम अपने स्कूल को रहने-जीने का एक बेहतर स्थान बनाने की कोशिश करेंगे। हमने क्लब का गठन किया और पदाधिकारी चुने। जब मैंने बच्चों से पूछा कि उनका अध्यक्ष कैसा होना चाहिए तो उनका जवाब था कि उसे दयालु, अच्छा और बड़ा होना चाहिए। उनका कहना था कि उपाध्यक्ष की भी ठीक यही योग्यताएँ होनी चाहिए और सचिव को लिखने में माहिर होना चाहिए। एना हमारी पहली अध्यक्ष है, रैल्फ हमारा उपाध्यक्ष, और मेरी हमारी सचिव। चुनाव के बाद हमने बोर्ड पर उन ज़िम्मेदारियों की सूची बनाई जिन्हें प्रतिदिन निभाना होगा और हमने यह भी तय किया कि ये काम कौन-कौन करेगा।

सामान्य प्रबन्धक – ओल्गा
कमरे की सफाई – रैल्फ और एडवर्ड
लड़कियों के टॉयलेट की सफाई – रूथ
लड़कों के टॉयलेट की सफाई – जॉर्ज
झाड़-पोंछ – कैथरीन व एलिस
हॉल प्रबन्धक – एना
पुस्तकालय प्रभारी – सोफिया
संग्रहालय प्रभारी – मे
हाथों की धुलाई – एण्ड्र्यू
अलाव और कमरे का तापमान – फ्रैंक
मेज़ों का निरीक्षण – वॉरेन
झण्डे को चढ़ाना-उतारना – डॉरिस
खिड़कियाँ – मेरी

फूलों को पानी देना – हेलन
अलमारियों का निरीक्षण – वर्ना
बाहरी जूते और खाने के डिब्बे – रिचर्ड और वॉल्टर
खेल सामग्री – गस
कागज़ जलाना – एलेक्स
मेज़बान – एल्बर्ट
मेज़बान – मार्था

क्लब के कई नाम सुझाए गए और अन्ततः हमने उसे "सहायक क्लब" का नाम देना तय किया।

आज मैं ओल्सेउस्की परिवार के यहाँ गई। एना की माँ बड़ी खुश थीं कि उनकी बेटी को कक्षा का "हैड" चुना गया है। उनका रसोईघर बिलकुल सादा है, रगड़कर साफ किए गए फर्श पर लाइनोलियम तक नहीं है। बच्चे घर के सिले साधारण, तंग-ढीले कपड़े पहने थे, पर सबके कपड़े एकदम साफ थे। श्री ओल्सेउस्की की मृत्यु हो चुकी है और श्रीमती ओल्सेउस्की को बच्चों के लिए सरकारी पेंशन मिलती है। उन्होंने बताया कि उनके बच्चों को नई शिक्षिका अच्छी लग रही हैं और उम्मीद ज़ाहिर की कि मैं अक्सर उनके यहाँ आऊँगी। लड़कियों ने पहले तो अपनी माँ से पोलिश भाषा में बात करने से ही इन्कार कर दिया। उन्होंने माँ को कहा था कि वे मेरे सामने अपनी भाषा का प्रयोग न करें। उन्हें डर था कि मुझे ऐसा करना अच्छा नहीं लगेगा। जब मैंने उन्हें बताया कि मैं अपनी मातृभाषा न केवल बोल बल्कि पढ़ और लिख भी सकती हूँ तो वातावरण एकदम हल्का हो गया।

प्रिन्लैक परिवार के यहाँ मुझे ढेरों फूल दिए गए। इस परिवार में ग्यारह बच्चे हैं। दो काम करते हैं, पाँच पढ़ रहे हैं, और चार स्कूल जाने लायक आयु के नहीं हुए हैं। परिवार की आय सीमित है क्योंकि वह मात्र चार गायों के दूध पर निर्भर है। श्रीमती प्रिन्लैक कुपोषित और काम के बोझ से दबी लगती हैं।

बुधवार, 16 सितम्बर

गस के चूहे पर चर्चा आज बेहतर रही और जल्दी ही एक कहानी बन गई। बच्चों को लिखने के लिए कुछ मिल गया था।

हम जम्बो को देख रहे हैं।
वह सेब और रोटी खाता है।
वह जाली पर चढ़ जाता है।
वह अपना बिल बनाता है।
वह हमसे डरता है।
हम शोर कम करेंगे।

दोपहर बाद के सत्र में शान्ति-सी पसर आई। गणित कम-से-कम शरीर को तो शान्त करता है। मैं गणित का पीरियड दिन के आखिरी हिस्से में रखना पसन्द करती हूँ। आज मैंने वॉरेन को जोड़ना सीखने में मदद की। उसे पता था कि यह काम दूसरी कक्षा का था, पर उसने मेरी मदद स्वीकारी और रोया नहीं।

लौटते समय मैं श्रीमती सामेटिस से मिलने रुकी। श्री सामेटिस की शहर में दुकान है और वे महीने में एक बार घर आते हैं। घर अस्त-व्यस्त था और बहुत साफ भी नहीं था। उनकी एक बड़ी बेटी है जो हाई स्कूल में पढ़ती है और बड़ी चतुर लगती है। बाकी बच्चे भी शालीन और मज़ेदार हैं। मैं उनकी पृष्ठभूमि को ठीक से जानना चाहूँगी।

घर लौटने से पहले मैं हिल परिवार के यहाँ भी रुकी। हमने वॉरेन के बारे में लम्बी बातचीत की। वॉरेन जब शिशु शाला में जाने लगा तो उसमें संवेदनशीलता के लक्षण नज़र आने लगे थे। जब हिल परिवार ने यह खेत खरीद लिया तो वॉरेन को स्कूल बदलना पड़ा। शिक्षण के तौर-तरीके बदलने पर उसे परेशानी होने लगी। उसे जब यह लगने लगा कि वह पीछे रह जाएगा तो वह भावनात्मक रूप से इतना उद्वेलित हो गया कि उसके लिए आगे सीखना और कठिन बन गया। लड़कों को पता चल गया कि वह आसानी से बुरा मान जाता है। फिर क्या था, उन्होंने उसका जीना हराम कर डाला। एल्बर्ट छेड़छाड़ से इतना परेशान नहीं होता था, सो उसने नई परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको आसानी से बदल लिया। शायद श्रीमती हिल और मैं मिलकर वॉरेन की मदद कर सकें।

गुरुवार, 17 सितम्बर

आज सुबह स्कूल शुरू होने से पहले कुछ लड़के चोर-सिपाही खेल रहे थे कि रैल्फ ने सुझाया "चलो डॉजबॉल खेलते हैं।" नौ बजे से पहले सब के सब ज़ोर-

शोर से खेलने में जुट चुके थे! उन्हें एक-साथ खेलने में मज़ा आने लगा है।

वॉल्टर अपने कुत्ते को स्कूल ले आया और हमने उसके बारे में एक कहानी लिखी जो पालतू जानवरों की किताब का हिस्सा बनेगी। बड़े बच्चों का सामाजिक अध्ययन अब भी धीमी रफ्तार से चल रहा है। मैं बच्चों के सामाजिक अध्ययन के पर्चों का अँग्रेज़ी भाषा के लिए उपयोग कर रही हूँ। हम सामाजिक अध्ययन के पीरियड के कुछ हिस्से का उपयोग कुछ ज़रूरी भूल-सुधार के लिए करते हैं और यह जानने के लिए भी कि वे सुधार ज़रूरी क्यों हैं। किसी-किसी दिन हर बच्चा खुद अपना पर्चा पढ़ता है ताकि भूल पकड़ सके। जो बच्चे इसमें मदद चाहते हैं उनकी सहायता मैं करती हूँ। अन्य दिन अगर कई बच्चे एक-सी गलतियाँ करते हैं तो मैं उन पर पूरे समूह से बात करती हूँ। कभी-कभार अँग्रेज़ी की पुस्तकों में दिए गए अभ्यास भी करने पड़ते हैं ताकि बच्चों को कुछ ज़रूरी कौशलों का अभ्यास मिले। इसके लिए हम अँग्रेज़ी भाषा के नियमित पीरियड का इस्तेमाल करते हैं।

बच्चों द्वारा लिखे पर्चों को मैं जहाँ तक सम्भव है उनके साथ ही पढ़ना पसन्द करती हूँ। स्कूल के बाद उनके पर्चे जाँचना समय ज़ाया करने जैसा लगता है, क्योंकि जाँचने के बाद बच्चे उन्हें बिरले ही देखते हैं, सिवाय यह देखने के कि उन्हें कौन-सी श्रेणी मिली है। सो मैंने उनके पर्चों को श्रेणियाँ देना बन्द कर दिया है ताकि गलतियाँ ठीक करने पर ध्यान केन्द्रित किया जा सके। बच्चों के साथ मिलकर करीब से काम करना अधिक कारगर है, और स्कूल के बाद का समय बच्चों और उनके समुदाय के बारे में जानने में, क्लब के द्वारा उनकी ज़रूरतें पूरी करने में और स्कूल कार्यक्रम के मूल्यांकन में लगाया जा सकता है।

पुस्तकालय के पीरियड में एल्बर्ट हिल ने "लिटिल ब्लैक सैम्बो" (नन्हा काला सैम्बो) की कहानी बड़े रोचक और मनोरंजक अन्दाज़ में सुनाई। दो बड़े बच्चों ने उन किताबों पर स्वेच्छा से बातचीत की जो वे पढ़ रहे हैं। यह पहली मर्तबा है कि बड़े बच्चों ने कुछ सुनाने की पहल की है। इन बच्चों को खूब बोलने की ज़रूरत है।

स्वास्थ्य के पीरियड में हमने स्कूल आने की तैयारी करते समय स्वस्थ आदतों की बात की। कुछ बच्चे बिना नाश्ता किए स्कूल आ जाते हैं। ज़्यादातर मंजन करना भूल जाते हैं। रूमाल लाना कुछ ही बच्चों को याद रहता है, क्योंकि

उनका कहना है कि रूमाल की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। मैंने सुझाया कि हम अच्छी आदतों की एक सूची बना सकते हैं ताकि हम उन्हें याद रख सकें। हर बच्चे ने अपनी कॉपी में एक चार्ट बनाया और उसके सामने चौकोर खाने भी ताकि हर दिन उन पर निशान लगाए जा सकें। बड़े बच्चे छोटे बच्चों के लिए ठीक ऐसा ही चार्ट बनाएँगे। बड़े बच्चे प्रतिदिन अपने चार्ट में निशान लगाएँगे और उनमें से कोई छोटे बच्चों की मदद करेगा ताकि जाँच करने के बाद उनमें निशान लगाए जा सकें। मैं चुपचाप इस समूची गतिविधि को देखूँगी। मुझे उन्हें प्रोत्साहित करना होगा कि वे अच्छा नाश्ता खाया करें।

आज हमारी पहली क्लब बैठक हुई। एना बिलकुल सहज थी और उसने अच्छी तरह अध्यक्षता की। जहाँ तक संसदीय प्रक्रियाओं का प्रश्न था, मुझे बच्चों को काफी उकसाना पड़ा और चर्चा के विषय भी सुझाने पड़े। बच्चों ने कहा कि वे डॉजबॉल खेल-खेलकर उकता गए हैं। मैंने सुझाया कि वे अपनी इच्छानुसार खेल सारिणी बनाएँ। उन्होंने रैल्फ, रूथ और मेरी को चुन एक समिति बनाई ताकि वे अगले सप्ताह की खेल योजना बना लें। बच्चों ने ईमानदारी से खेलने और धक्कमपेल कम करने का मुद्दा भी उठाया और उस पर बात की।

स्कूल के बाद मैंने विलियम्स परिवार के घर रात का खाना खाया। बच्चे कुछ शर्माए और घबराए से रहते हैं। वे अपनी माँ को प्यार करते हैं। श्रीमती विलियम्स शिक्षा के नए तौर-तरीकों के पक्ष में हैं।

शनिवार, 19 सितम्बर

मैंने बड़े बच्चों की निदानात्मक जाँच के जो टेस्ट लिए थे, उनके नतीजे देख लिए हैं। नतीजों के अनुसार छह बच्चे (एना, ओल्गा, सोफिया, मे, हेलेन और मेरी) अच्छी तरह काम कर रहे हैं, और शेष आठ (रैल्फ, रूथ, कैथरीन, फ्रैंक, डॉरिस, वॉरेन, एडवर्ड और जॉर्ज) कुछ पिछड़े हुए हैं। ओल्गा और एना ने बहुत ही अच्छा काम किया था। बच्चों को सबसे ज़्यादा दिक्कत भाषा और पठन में है। वॉरेन अपवाद रहा; उसने इन दोनों विषयों में खूब अच्छा परिणाम दिया। जो अधिक कुशाग्र बच्चे हैं गणित उनका सबसे कमज़ोर विषय है। मैं इन बच्चों को लेकर जो सोच रही थी उसकी पुष्टि इन जाँचों से भी हुई है।

सोमवार, 21 सितम्बर

बच्चों को एक-साथ खिलाने में मुझे अभी भी काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। सप्ताह की खेल योजना बनाने के लिए खेल समिति ने स्कूल से पहले अपनी बैठक की। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था, जब शारीरिक शिक्षा के दोपहर बाद के पीरियड में फ्रैंक और जॉर्ज ने खेलने से इन्कार कर दिया, और कुछ समय तक माहौल तनावपूर्ण बना रहा। रैल्फ और एना ने समझदारी दिखाते हुए उन दोनों के बिना खेलने का निर्णय लेकर स्थिति सम्हाल ली। शेष बच्चों ने उनके सुझाव को मान लिया और खेल बढ़िया रहा। खेल मैदान में रैल्फ बच्चों के नेता के रूप में तेज़ी से उभर रहा है। मैंने फ्रैंक और जॉर्ज से बात की और उन्हें समझाया कि इतने बड़े समूह में हर समय, हर बच्चे को खुश करना सम्भव नहीं होता और कभी-कभार हमें ऐसे खेल भी खेलने पड़ते हैं जो हमें नापसन्द हों। अगर हरेक केवल वही खेल खेले जो उसे पसन्द हो तो कोई भी खेल खेलने के लिए पर्याप्त खिलाड़ी ही नहीं मिलेंगे। इन बच्चों को अल्पसंख्यकों के अधिकारों का सम्मान करना सीखना होगा। पर उपदेश का कोई खास असर उन पर शायद नहीं हुआ। मेरी बात समझने से पहले उन्हें उसका अनुभव करना होगा। आशा है समय के साथ यह अनुभव उन्हें मिलेगा।

दोपहर को एना और रूथ छोटे बच्चों को सैर के लिए ले गईं। उन्होंने बीज, पत्ते और फूल इकट्ठे किए। लड़कों ने मैदान में क्यारी बनाने की तैयारी की। दोपहर का पीरियड कितना शान्त था!

छोटे बच्चे बड़े बच्चों की तरह अच्छे से काम नहीं कर पाते। सुबह का पीरियड अकेले काम करने के लिए उन्हें बेहद लम्बा लगता है। मार्था और पर्ल अपना काम खत्म करने के बाद कुछ रोचक गतिविधि चुन लेती हैं। एल्बर्ट और विलियम अपना काम कभी समय से पूरा नहीं कर पाते हैं। वे एक-दूसरे की ओर मुँह बिचकाने में ही बहुत-सा समय बिता देते हैं।

मैं सोच रही थी कि पालतू जानवरों की पुस्तिकाएँ आज पूरी हो जाएँगी। जब मैंने यह सुझाया तो बच्चों ने प्रतिवाद किया, "नहीं, हमने अभी अपने मेंढक और गिलहरी के बारे में कुछ लिखा ही नहीं है।" पर्ल और मार्था आत्मनिर्भर हो गई हैं और वे मौलिक कहानियाँ लिखने लगी हैं। शेष बच्चे सामूहिक कहानियों को पढ़ना सीख लेने पर अपनी कॉपियों में उतार लेते हैं। प्रारम्भिक बच्चे सिर्फ चित्र ही बना रहे हैं।

मंगलवार, 22 सितम्बर

वॉरेन आज सुबह फिर दुखी था। किसी ने उसे "छोकरी" कहा और वह ऐसे रोया मानो उसका दिल ही टूट गया हो। मैंने उससे अलग से बात की और कहा कि अगर उसकी प्रतिक्रिया यही रही तो लड़के उसे छेड़ते ही रहेंगे। उसने कहा कि वह कोशिश करेगा कि वह न रोए, पर उसे लगता है कि कोई भी उसे पसन्द नहीं करता। मैंने कहा कि ऐसी बात नहीं है कि लड़के उसे पसन्द नहीं करते, पर वे उसकी कीमत पर थोड़ा मज़ा ले रहे हैं। उसने मुझे अपनी टिकटों का संग्रह दिखाया और पूछा कि क्या वह उसे स्कूल में रख सकता है। आज पहली बार वॉरेन ने अपना काम पूरा किया और दोपहर को वह किसी वास्तविक लड़के की तरह खेला।

आज मैं वैनिस्की परिवार से मिलने गई। श्री वैनिस्की ने टूटी-फूटी अँग्रेज़ी में बताया कि पिछले पन्द्रह सालों में अपने खेत को जमाने में उन्हें कितनी परेशानियाँ झेलनी पड़ी हैं, पर अब उनके चार बड़े बेटे काम सम्हालने को तैयार हैं। एडवर्ड परिवार में सबसे छोटा है। इस परिवार में आपसी रिश्ते घनिष्ठ हैं और समूचा परिवार बेहद मेहनती है।

बुधवार, 23 सितम्बर

छोटे बच्चों के सुबह के लम्बे पीरियड को मैंने दो पन्द्रह-पन्द्रह मिनट के कहानी सत्रों में बाँटने की कोशिश की। ओल्गा ने पहले सत्र में आधे बच्चों की ज़िम्मेदारी ली और फिर एना ने शेष बच्चों की। उन्होंने बच्चों को पढ़कर सुनाया। 11:40 पर वे बाहर खेलने चले गए। यह कारगर रहा। लौटकर वे फिर से काम में जुटे, जो कुछ काम करना था किया, और कल से अधिक सफाई से भी किया।

गुरुवार, 24 सितम्बर

बच्चों को यह बात अच्छी नहीं लगी कि हमारे जानवर हॉल में रखे गए हैं, क्योंकि तब वे उन्हें देख नहीं पाते। उन्होंने सुझाया कि हम अपने कमरे में ही एक कोना संग्रहालय के लिए बना लें। इसका मतलब था कि कुछ बदलाव किया जाए। अतः हमने दोपहर में कमरे को नई तरह से व्यवस्थित करने का निर्णय लिया। कमरे में जहाँ सबसे अधिक रोशनी है वहाँ हम पढ़ने का काम

करेंगे और हमारा पुस्तकालय भी वहीं रहेगा। विज्ञान संग्रहालय के लिए हमने सामने की ओर एक जगह ढूँढ ली है जहाँ वह किसी के आड़े न आए। कुछ जगह हमने छोटे बच्चों के खेलने के लिए छोड़ी है जिससे वे तब भी खेल सकें जब बाहर जाना सम्भव न हो। मेरी मेज़ कमरे में पीछे की ओर रख दी गई है क्योंकि उसको मैं वैसे भी कम ही काम में लेती हूँ। इसके बाद कमरा इतना अच्छा लगने लगा कि कुछ बड़ी लड़कियों ने स्कूल के बाद रुककर हमारी किताबों और सामग्रियों की अलमारी को भी साफ कर डाला। उनका कहना था कि एक सुन्दर, व्यवस्थित कमरे में वह बुरी लग रही थी।

स्कूल के बाद श्रीमती डूलियो ने मुझे बताया कि जब एण्ड्रयू सात साल का था तो उसके सिर पर गम्भीर चोट लगी थी। उसके ज़िन्दा बचने की उम्मीद नहीं थी। उन्हें लगता है कि इस घटना का उसके दिमाग पर असर पड़ा है। डूलियो परिवार यहाँ चन्द महीने पहले ही आया है। वे शहर से यहाँ आ गए हैं क्योंकि वहाँ रहना बड़ा खर्चीला था। वे मेहनती लोग हैं। अपने परिवार की देखभाल करने के साथ-साथ श्री डूलियो एक छोटी जागीर की देखभाल भी करते हैं।

शुक्रवार, 25 सितम्बर

बच्चों ने जो फूल-पत्तियाँ इकट्ठी की थीं उन्हें अब वे चिपका रहे हैं। बड़े बच्चे शान्ति से आधे घण्टे तक काम में जुटे रहे और इस दौरान मैंने पालतू जानवरों की पुस्तिकाओं पर जिल्द चढ़ाने में छोटे बच्चों की मदद की। तब एना ने अक्षर काट-काटकर उन्हें चिपकाने में इन नन्हों की मदद की और मैं बड़े बच्चों के साथ स्कूल परिसर की योजना बनाने बाहर चली गई। एना इन नन्हे-मुन्नों के साथ बड़ी शान्ति और सहजता से काम करती है। वह शिक्षिका बनना चाहती है। हमने इस बारे में बात की कि हमारा स्कूल मैदान कैसा दिखना चाहिए। कमरे में लौटने पर हम अपनी योजना के विभिन्न पक्षों पर कुछ पढ़ने के लिए समितियों में बँट गए। चार समितियाँ बनाई गईं जो सदाबहार पौधों, झाड़ियों, मिट्टी और जंगली फूलों के रॉक गार्डन के बारे में जानकारी इकट्ठी करेंगी। ये समितियाँ तय करेंगी कि कौन-कौन से पौधे हमें कहाँ लगाने चाहिए।

सहायक क्लब की बैठक अच्छी नहीं हुई। बच्चे काफी असहज हैं और जब "अध्यक्ष महोदया" कहते हैं तो घबराहट से हँस पड़ते हैं। मैं कोशिश करती हूँ कि बैठकें छोटी हों और बच्चे त्वरित कार्रवाई करें। आज हमने दो नियम बनाए: हमें बिना अनुमति स्कूल परिसर से बाहर नहीं निकलना चाहिए, और हमें शाला भवन में घुसते समय शोर नहीं करना चाहिए।

दिन का काम अब आराम से होने लगा है और समय भी कम बर्बाद होता है। बड़े बच्चे महाद्वीप के इण्डियन बाशिन्दों के बारे में पढ़ रहे हैं और उत्तरी अमरीका के विभिन्न हिस्सों में उनके रहन-सहन पर एक चित्रवल्लरी बना रहे हैं। बिचला समूह सामाजिक अध्ययन की कक्षाओं में "इतिहास की झलकियों" की नाटकीय प्रस्तुतियाँ स्वतः ही करता रहा है और अब बच्चे कोलम्बस के जीवन पर एक नाटक लिखना चाहते हैं। यह काम करने, प्राकृतिक नमूनों की पहचान करने और पुस्तकालय की किताबें पढ़ने में बच्चों का खाली समय गुज़र रहा है। पर छोटे बच्चों के साथ मुझे इतनी सफलता नहीं मिल पाई है। उनके पास ज़ाया करने के लिए अब भी बहुत समय है।

खेल मैदान में और परेशानियाँ! शारीरिक शिक्षा के पीरियड के अन्तिम दौर में बेस बॉल का खेल चल रहा था। रैल्फ होम-प्लेट की ओर फिसलता हुआ बढ़ रहा था कि फ्रैंक ने उससे पल भर पहले ही गेंद से उसे छू दिया। मैं अम्पायर थी, मुझे कहना पड़ा "आउट"। रैल्फ यह कहकर पैर पटकता चल दिया कि वह और नहीं खेलेगा और सच में इसके बाद वह दिन भर नहीं खेला। स्कूल के बाद मैंने उससे बात की। उसकी शिकायत थी कि टोलियाँ सही नहीं हैं और सारे बड़े बच्चे फ्रैंक की टोली में हैं। मैंने उसे याद दिलाया कि वह भी उसी खेल समिति का सदस्य था जिसने मेरी बनाई टोलियों को सही ठहराया था। मैंने पूछा कि क्या उसे लगता है कि खेलने से मना करने पर समस्या सलट गई। मैंने सुझाया कि वह यह मसला खेल समिति में उठाकर टोलियों को अधिक न्यायपूर्ण बनाने की कोशिश कर सकता है।

हमारे वानिकी क्लब में हमने एक सरल-सा संविधान बनाया, पदाधिकारी चुने और प्रकृति हॉबी समितियों की योजना बनाई। सभी सदस्य भूविज्ञान में रुचि रखते हैं और मिलजुलकर उसका अध्ययन करना चाहते हैं। पशुओं की आदतों में भी उनकी रुचि है।

हाई स्कूल में जोन्स परिवार की दो लड़कियाँ हैं। मैं उनके साथ उनकी सबसे बड़ी बहन से मिलने गई जो उनकी देखभाल करती है। दो साल पहले उनकी माँ की मृत्यु हो गई थी, तब से वे दादी के साथ रहती हैं। श्री जोन्स कस्बे में

मैकेनिक हैं। मार्था ने पियानो पर मुझे कुछ प्रार्थनाएँ बजाकर सुनाईं। उसने उन्हें सुनकर बजाना सीखा है। रैल्फ ने पुराने कपड़े पहने और खेलने निकल गया। वह लड़कियों के साथ और समय नहीं बिताना चाहता था! मुझे लड़कियों के प्रति उसकी नापसन्दगी की पृष्ठभूमि अचानक समझ आने लगी। वह पाँच बहनों के बीच अकेला लड़का है और चार बहनें उससे बड़ी हैं।

सोमवार, 28 सितम्बर

आज सुबह खेल समिति की बैठक होनी थी ताकि दोनों टोलियाँ बराबरी की बनाई जा सकें। समिति बैठी, पर रैल्फ कहाँ था? जब वह आया तो उसने समिति का साथ नहीं दिया। समूह के हरेक सुझाव पर कहता रहा, "मेरी बला से। जो चाहो कर लो।" समिति ने मुझसे मदद चाही। मैंने सुझाया कि बैठक तब तक के लिए मुल्तवी कर दी जाए जब तक रैल्फ शान्त नहीं हो जाता। जब स्कूल शुरू हुआ तो अचानक बादल छँट गए और दोपहर को जब समिति फिर से मिली तो रैल्फ ने सक्रिय हिस्सेदारी की। इस पर फ्रैंक असन्तुष्ट हो गया। उसने कहा कि उसकी टोली कमज़ोर है। रैल्फ ने बड़ी उदारता से सुझाया कि वह टोली की अदला-बदली को तैयार है। तब कहीं मामला शान्त हुआ।

बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए मैंने बोर्ड पर दिन की योजना लिखनी शुरू कर दी है। इससे कुछ बच्चे समय का बेहतर उपयोग कर पा रहे हैं। पर उन्हें इन योजनाओं के उपयोग का अभ्यास चाहिए। मुझे लगता है कि हर सुबह योजना पर बातचीत करना बेहतर होगा। बाद में शायद हम दिन का कार्यक्रम साथ मिलकर बना सकें।

आज खाना खाने बाहर जाने से पहले मैंने बच्चों से इधर-उधर खाना और कागज़ बिखरने पर बात की। शाम तक हमारी कक्षा और खेल मैदान काफी गन्दे हो जाते हैं। मैंने प्रबन्धक के रूप में ओल्गा को सफाई की ज़िम्मेदारी इस उम्मीद से सौंपी कि उसका आत्मविश्वास और समूह में उसकी कद्र बढ़ेगी। पर वह ठीक से काम नहीं कर पाती है, वह बच्चों को बेतरतीब काम करने देती है और कभी-कभार तो वे बिलकुल ही डण्डी मार देते हैं। समस्या आंशिक रूप से यह भी है कि बच्चे अपना काम करना जानते ही नहीं हैं। कैथरीन यह तो जानती है कि झाड़ने की ज़िम्मेदारी उसकी है, पर किस चीज़ को और कैसे झाड़ना है यह उसे पता नहीं है। जब बच्चे अपने आप गणित का काम कर रहे

थे तो मैं उन्हें एक-एक कर ले गई और उन्हें यह समझने में मदद की कि उनकी व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी क्या है और उन्हें वह काम कैसे करना है। मैंने ओल्गा की अपने लिए एक जाँच-सूची बनाने में मदद की ताकि वह यह देख सके कि सब काम पूरे हुए हैं या नहीं। मैं जानबूझकर व्यक्ति के बदले काम को रेखांकित करती रही। इस तरह बच्चे एक-दूसरे की आलोचना करने के बदले शायद कुछ समय बाद एक-दूसरे की मदद करने लगेंगे ताकि काम ठीक से हो जाए।

मंगलवार, 29 सितम्बर

आज इतनी ठण्ड थी कि आग जलानी पड़ी। फ्रैंक ने दिन भर अलाव का ध्यान रखा। वह ज़िम्मेदार है और अलाव के बारे में मुझसे कहीं ज़्यादा जानता है। वह कमरे का तापमान नियंत्रित करने के लिए खिड़कियाँ भी उठाता-गिराता रहा ताकि हवा कम या ज़्यादा आए।

क्योंकि आज बरसाती दिन था, हमें अन्दर ही खेलना पड़ा। हमने "फलों की टोकरी का गिरना" और "रूथ और जेकब" के खेल खेले। हेलेन और मार्था बेहद शोर मचाती हैं। वे हर बात पर चीखती-चिल्लाती हैं। पर जोसेफ तो इनका भी बाप है। जब भी समूह सक्रिय होता है वह आपा ही खो बैठता है। पर बच्चों ने उसे नज़रअन्दाज़ करना सीख लिया है, सो वह जितनी बड़ी समस्या बन सकता है उतनी है नहीं। बच्चे शायद यह समझते हैं कि वह दरअसल अपने कृत्यों के लिए ज़िम्मेदार नहीं है। एक सामान्य कक्षा की स्थिति में मैं जोसेफ के लिए बहुत कुछ कर नहीं सकती। उसे शायद किसी ऐसे संस्थान में होना चाहिए जहाँ उसे आवश्यक ध्यान मिल पाए।

आज सुबह पहली बार मैंने बच्चों से दिन के कार्यक्रम पर बात की और इससे काफी मदद मिली, क्योंकि उन्हें समझ आ गया कि उन्हें दिन भर में क्या-क्या करना है। मैंने बोर्ड पर सिर्फ बड़े बच्चों का कार्यक्रम ही लिखा।

आज की योजना

8:55 से 9:05: दिन की योजना बनाना।

9:05 से 9:20: समूह "अ" मेमोग्राफ से पढ़ेगा। हमारे देश के इण्डियन आदिवासियों के आवास और पाठों में दिए गए स्थायी और अस्थायी आवासों के बारे में भी पढ़ेगा। पुस्तिकाओं के लिए आवासों पर एक कहानी लिखना शुरू करेगा।

समूह "ब" कोलम्बस व रानी इसाबेला के वार्तालाप वाले दृश्य की योजना बनाएगा। वे क्या कहेंगे इसे लिख डालेगा।

9:20 से 9:40: समूह "ब" शिक्षिका के साथ, दृश्य पर बात करेगा। समूह "अ" ऊपर बताया काम जारी रखेगा।

9:40 से 10:00: समूह "अ" शिक्षिका के साथ, इण्डियनों के आवासों की चर्चा करेगा। समूह "ब" चर्चित हिस्से के लिए दृश्य की परिकल्पना करेगा।

10:00 से 10:20: खेल "जेकब और रूथ"।

10:10 से 11:20: समूह V पृष्ठ 87 से शुरू होने वाली कहानी पढ़ेगा और सामने वाले बोर्ड पर लिखे सवालों के उत्तर देगा। समूह VI पृष्ठ 92 से प्रारम्भ होने वाली कहानी पढ़ेगा और बगल वाले बोर्ड पर लिखे सवालों के उत्तर देगा। पढ़ने के बाद दोनों समूह किए जाने वाले काम की सूची देखेंगे।

11:20 से 11:40: समूह VI शिक्षिका के साथ, पठन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देगा। समूह V पढ़ना जारी रखेगा।

11:40 से 12:40: शिक्षिका के साथ, अँग्रेज़ी भाषा। इण्डियनों के आवासों और नाट्य प्रस्तुति की भूल सुधार।

1:00 से 1:30: शिक्षिका के साथ, हार्मोनिका का पाठ।

1:30 से 2:15: किए जाने वाले काम को देखना।

2:15 से 2:30: खेल।

2:30 से 2:45: वर्तनी, समूह IV शिक्षिका के साथ। शेष बच्चे कल की आरम्भिक परीक्षा में हुई भूल वाले शब्दों को पढ़ेंगे।

2:45 से 3:20: गणित, व्यक्तिगत काम की पर्चियों से। हेलेन और मेरी शिक्षिका के साथ काम करेंगी।

3:20 से 3:30: सफाई।

एक अन्य बोर्ड पर किए जाने वाले काम की सूची इस प्रकार थी:

परीक्षा में वर्तनी में भूल वाले शब्दों को कॉपी में उतारना।

गणित का काम पूरा करना।

चित्रवल्लरी पर काम करना।

पत्तियों व फूलों की पहचान करना।

फूलों की क्यारी की योजना बनाना।

शाला परिसर को सुन्दर बनाने वाली समिति का काम करना।

सामाजिक अध्ययन की जो कहानियाँ अधूरी हैं उन पर काम करना।

स्वास्थ्य सम्बन्धी बिन्दुओं को अपनी नोटबुक के लिए साफ कागज़ पर उतारना।

बुधवार, 30 सितम्बर

बारिश ने फिर हमें अन्दर रखा, पर हार्मोनिका ने हमें बचा लिया। संगीत के पीरियड में हमने अभ्यास किया। हालाँकि छोटे बच्चे बजाना नहीं सीख रहे, पर वे भी आज सुनना चाहते थे। बच्चों को इसमें इतना मज़ा आया कि शारीरिक शिक्षा के पीरियड में बाहर न जा पाने के कारण हमने फिर से संगीत का अभ्यास किया।

समूह "अ" के बच्चे सामाजिक अध्ययन में तेज़ी से प्रगति कर रहे हैं, और आज पहली बार एक स्वतःस्फूर्त चर्चा हो सकी। सभी बच्चों ने हिस्सा लिया। इण्डियनों के बारे में जानने की जिज्ञासा उनमें है। अब तक इस विषय पर खास गतिविधियाँ नहीं हो सकी हैं। बच्चे अपनी-अपनी कुर्सियों पर जमे रहते हैं। वे चित्रवल्लरी के अपने-अपने हिस्सों पर काम कर रहे हैं और बाद में उन्हें एक साथ जोड़ेंगे। प्रत्येक बच्चा एक सचित्र नोटबुक भी बना रहा है जिसमें कहानियाँ हैं। ये कहानियाँ हर पाठ के प्रश्नों के उत्तरों पर आधारित हैं।

सप्ताह के बीच की वर्तनी परीक्षा में वॉल्टर बिलकुल टूट गया क्योंकि उसे लगा कि वह शब्दों के सही हिज्जे नहीं लिख पा रहा। मैंने उससे कहा कि वह परीक्षा के बारे में भूल जाए और परीक्षा दे रहे दूसरे बच्चों को सुने। जब शेष बच्चे अपनी गलतियाँ सुधार रहे थे और शब्दों की वर्तनी पर ध्यान दे रहे थे, मैंने वॉल्टर को धीमी गति से शब्द पढ़कर सुनाए और उससे उन्हें लिखने को कहा। वह यह जान खुशी से पगला गया कि वह उन्हें लिख सकता था। "अगली बार दूसरों के साथ परीक्षा देने में तुम्हें दिक्कत नहीं होगी, है ना?" मैंने पूछा। उसने जवाब नहीं दिया पर उसके चेहरे की मुस्कान ने बहुत कुछ कह दिया।

गुरुवार, 1 अक्तूबर

दोपहर बाद शारीरिक शिक्षा के पीरियड में मैं बड़े बच्चों को एक इण्डियन नृत्य सिखाने लगी और यह देख चकित रह गई कि एक भी बड़े लड़के ने इस पर कोई आपत्ति नहीं उठाई। उन्हें अपनी काउंटी के इण्डियनों के बारे में पढ़ने में मज़ा आ रहा है। हमने पाठ्यपुस्तकें किनारे रख दी हैं और कुछ समय के लिए स्टेन्सिल की गई उस सामग्री को देख रहे हैं जो मैंने तैयार की है।

शुक्रवार, 2 अक्तूबर

आज सुबह तैयार की गई क्यारियों में हमने फूलों के बीस कन्द बोए, यह तय करने के बाद कि उन्हें कैसे और कहाँ बोना है। लड़कों ने उनके इर्द-गिर्द तारों का बाड़ा बना दिया ताकि उन्हें पड़ोसियों की भेड़ों से बचाया जा सके। जंगली फूलों वाले रॉक गार्डन की समिति ने उन जंगली फूलों की सूची बनाना शुरू कर दिया है जो हमारे इलाके में उगते हैं। भू-समिति ने विभिन्न प्रकार की मिट्टी और जल निकास के बारे में कुछ पढ़ा। वे अपनी सामग्री काउंटी पुस्तकालय की किताबों से ले रहे हैं। शेष दो समितियों ने कैटेलॉग मँगवाने के लिए बीज कम्पनियों को पत्र लिखे हैं।

स्वास्थ्य का पीरियड हमने स्वास्थ्य पुस्तिकाओं के आवरण बनाने में बिताया। मैंने बच्चों को चौकोर खाने वाले कागज़ों पर अक्षर लिखना सिखाया। छोटे बच्चों के लिए स्वास्थ्य के विषय पर कोई औपचारिक पाठ नहीं हैं। पर हाँ, कभी-कभार हम आदतें सुधारने के मकसद से कुछ बातें ज़रूर करते हैं। फिर भी दिन भर में स्वास्थ्य शिक्षा के तमाम मौके मिलते हैं। स्वास्थ्य निरीक्षण के समय मैं उन्हें कुछ सुझाव देती हूँ। पठन के पीरियड में किताबें कैसे पकड़नी चाहिए, उनके काम पर रोशनी कैसे पड़नी चाहिए, पढ़ने बैठते समय रीढ़ की हड्डी क्यों सीधी होनी चाहिए आदि पर बात होती है। खुली हवा में खेल-कूद, बीमारियों, खासकर ज़ुकाम, पेंसिलों और कैंचियों जैसे उपकरणों के इस्तेमाल आदि के दौरान स्वास्थ्य शिक्षा और स्वस्थ आचरण के तमाम मौके निकल ही आते हैं।

हरेक बच्चा अपने हार्मोनिका पर सारे स्वर बजा लेता है और अब मैं उन्हें "अमेरिका", हमारी राष्ट्रीय धुन, सिखा सकती हूँ।

वानिकी क्लब की बैठक में हमने कोलम्बस दिवस पर एक पिकनिक की योजना बनाई। शेष समय हम बाहर थे और मैंने समूह को प्लास्टर ऑफ पेरिस से जानवरों के खुरों के निशानों के साँचे बनाना सिखाया। पर हमारे पास केवल नेगेटिव बनाने का ही समय था।

क्लब की बैठक के बाद मैं कार्टराइट परिवार से मिलने गई। श्रीमती कार्टराइट घर के दरवाज़े पर ही मिलीं जिसे सच में मरम्मत की ज़रूरत है। सालों से घर में रंग-रोगन नहीं हुआ है। खिड़कियों में से काँच गायब हैं और उन की जगह पर गन्दे चीथड़े घुसेड़े हुए हैं। छत में बड़े-बड़े सुराख हैं जिससे छहतीर नज़र आते हैं। दरवाज़ा खाँचे में ठीक से नहीं समाता है। मेरे पहुँचने पर सभी बच्चे छिप गए और झाँक-झाँककर मुझे देखते रहे। श्रीमती कार्टराइट के खुद के छह बच्चे हैं और छह सौतेले बच्चे हैं। मैं अब सभी बच्चों के घर जा चुकी हूँ और इससे उनके स्कूली आचरण पर सच में काफी रोशनी पड़ी है।

सोमवार, 5 अक्तूबर

आज मैंने ओल्गा के साथ बैठक की। यह किसी अकेले बच्चे के साथ मेरी पहली नियमित बैठक थी। यद्यपि मैं ज़रूरत पड़ने पर किसी भी बच्चे के साथ अकेले बातचीत करती हूँ, पर अब तय किया है कि मैं प्रत्येक बच्चे के साथ माह में कम-से-कम एक बार नियमित बैठक करूँगी । इस बैठक में हम उसके काम का साझा आकलन कर सकते हैं और आगामी माह में उसमें सुधार की योजना बना सकते हैं। उम्मीद है कि मैं उन्हें अपने बारे में बात करने की प्रेरणा दे सकूँगी ताकि वे मुझे बताएँ कि उन्हें क्या पसन्द है और क्या पसन्द नहीं है, उनकी महत्वाकांक्षाएँ और दुष्चिन्ताएँ क्या हैं और उन्हें किन चीज़ों में मज़ा आता है। इसके अलावा भी वे जो कुछ भी मुझसे कहना चाहें कह सकेंगे। ओल्गा बेहद शर्माई हुई थी और "हाँ" और "ना" से ज़्यादा बोल नहीं पाई। उसकी कॉपियाँ बड़ी तरतीब से व्यवस्थित थीं और उसका काम पूरा था। मैंने उसकी मेहनत की प्रशंसा की तो वह शर्माकर मुस्कुराई। मैंने पूछा कि वह अगले महीने क्या करना चाहती है। उसे पता नहीं था। मैंने सुझाया कि वह पुस्तकालय के पीरियड के लिए एक अच्छी-सी रपट तैयार करे।

मंगलवार, 6 अक्तूबर

ओल्गा और एना अपने समूह के लिए तय किए गए काम से अधिक काम कर पाती हैं। क्योंकि शेष बच्चों के साथ मुझे रफ्तार कम रखनी पड़ती है, मैं इन लड़कियों को और सुझाव भी देती हूँ ताकि वे दूसरों से कुछ अधिक पठन या लेखन का काम करें। फिलहाल वे एक मौलिक नाटक पर काम कर रही हैं। आज उन्होंने यह नाटक समूह को पढ़कर सुनाया। बच्चों को लगा कि वे इसका उपयोग अपने माता-पिता और मित्रों के मनोरंजन के लिए कर सकते हैं। इस कार्यक्रम से वे स्कूल में दोपहर के गर्म भोजन की परियोजना के लिए पैसे जुटाना चाहेंगे। लेकिन आम राय यह थी कि नाटक एक रंगारंग संध्या के लिए कुछ छोटा था। सोफिया ने सुझाया कि हम अपने इण्डियन लोगों के बारे में चित्रवल्लरी को समझाने के लिए उस पर भाषण भी दे सकते हैं। हम अपने इण्डियन अवशेषों के संग्रह को भी दिखा सकते हैं। एडवर्ड, जो इस चर्चा को सुन रहा था, ने कहा, "हम कोलम्बस वाला नाटक भी पेश क्यों नहीं कर सकते हैं?" इस पर सामाजिक अध्ययन के दो समूह जुड़ गए और दोनों ने मिलजुलकर मनोरंजन संध्या की योजना बनाई।

आज सुबह के खेल घण्टे में वॉरेन और लड़कों के बीच फिर से झड़प हुई। मैंने वॉरेन से अपने आँसू पोंछने को कहा और उसे किसी काम से पड़ोस में भेजा ताकि मैं दूसरे बच्चों से बात कर सकूँ। मैंने समूह को समझाया कि अगर वॉरेन बड़ा होकर ऐसा इन्सान बन जाए जिसे आहत होने पर हर बार रोना पड़े तो बहुत बुरा होगा, और हम उसकी मदद के लिए कुछ भी नहीं कर रहे। मैंने सुझाया, "अगर तुम सब उसके साथ भी वैसा ही आचरण करो जैसा एक-दूसरे के साथ करते हो, तो शायद तुम देखोगे कि वह बुरा लड़का नहीं है।" बच्चे जिस तरह मुझे देख रहे थे उससे यह लगा कि उन्हें स्थिति को इस नज़र से देखना नई बात लग रही थी। उन्होंने अब तक यह नहीं सीखा है कि दूसरे इन्सानों के प्रति भी हमारा कोई दायित्व होता है। जब वॉरेन लौटा तो सब अपने-अपने काम में लगे हुए थे और किसी ने उसकी ओर देखा तक नहीं।

आज सुबह स्कूल शुरू होने से पहले मैं लड़कों से उनके द्वारा पढ़ी किताबों के बारे में बात कर रही थी। फ्रैंक ने कहा कि उसने *पिनोकिओ* पढ़ी थी। उसे वह पुस्तक इतनी पसन्द आई कि वह उसे फिर से पढ़ना चाहता था। कई और बच्चों

को भी ठीक ऐसा ही लगा था, सो रैल्फ ने पूछा, "आप क्या उसे पढ़कर हमें नहीं सुना सकतीं?" तब फ्रैंक ने बताया कि पिछले साल कैसे उसने लकड़ी का पिनोकिओ बनाया था।

बच्चे कठपुतली प्रदर्शन के बारे में जानते थे पर उन्होंने कोई प्रदर्शन देखा नहीं था। मुझे लग रहा है कि इन शर्मीले बच्चों के लिए यह एक बढ़िया गतिविधि हो सकती है। वे एक-दूसरे के लिए नाटक तैयार कर सकते हैं और इन नाटकों के कई स्वतःस्फूर्त प्रदर्शन भी। अगर वे इन कठपुतलियों में खो सकें तो वे मुक्त हो जाएँगे, उनमें सन्तुलन आएगा और उनकी भाषा में प्रवाह भी। वे नाटक की तैयारी के माध्यम से सहकार करना और दायित्व उठाना सीख सकेंगे। पर पहले मुझे खुद कठपुतली बनाना और उसे नचाना सीखना होगा।

आज रात मैंने एना के साथ बैठक की। उसका काम भी उतना ही उम्दा है जितना ओल्गा का। एना ने अपनी दो बहनों के बारे में काफी कुछ बताया। वे दोनों न्यू यॉर्क शहर में हाऊसकीपर हैं। हाई स्कूल में न पढ़ पाने का उन्हें आज तक मलाल है। उन्होंने तय किया है कि उनके शेष भाई-बहनों को यह मौका ज़रूर मिले। एना को आगामी माह के काम के बारे में कोई इल्म नहीं था। मैंने सुझाया कि जब वह अपनी छोटी बहन की भूल सुधारे तो अपने गुस्से पर काबू रखने की कोशिश करे। हमने अच्छे दोस्तों की तरह एक-दूसरे से विदा ली।

बुधवार, 7 अक्तूबर

शारीरिक शिक्षा के पीरियड में गज़ब की बहसबाज़ी चलती है! जैसे ही एक टीम हारने लगती है, उसके सदस्य दूसरी टीम पर चालबाज़ी का आरोप लगाते हैं। बड़े बच्चों ने छोटे बच्चों के साथ मेरे खेल में दो बार रुकावट डाली और अन्ततः मुझे कहना पड़ा, "अगर हम इकट्ठे खेल ही नहीं सकते तो शायद हमें खेलना ही नहीं चाहिए।" जब हम अन्दर लौटे तो मैंने उन्हें यह गौर करने को कहा कि वे सब बिना सोचे-समझे कही और की गई बातों से कितने दुखी हैं। उन्हें लगता है कि खेल के स्कोर ही सबसे महत्वपूर्ण हैं, पर असल में खेलने के आनन्द का कहीं अधिक महत्व है। मन में भरे गुस्से और ऐंठन के चलते शारीरिक अभ्यास ने भला क्या लाभ पहुँचाया होगा?

गुरुवार, 8 अक्तूबर

कल के भाषण का कोई फायदा नहीं हुआ क्योंकि खेल का समय और भी गुस्से से भरा था, और रैल्फ, फ्रैंक और जॉर्ज खेल छोड़ गए। जब बाकी बच्चे खेल रहे थे तो हम चारों ने बातचीत की। "लड़को," मैंने कहा, "हमें इस समस्या को सिरे से सुलझाना होगा। तुम्हारे क्या सुझाव हैं?" फ्रैंक ने सुझाया कि वह और रैल्फ बारी-बारी अपनी टोलियाँ चुनें, इससे दोनों टोलियाँ बराबर रहेंगी। मैंने फ्रैंक से कहा कि मेरी तरह वह भी जानता है कि दोनों टोलियाँ कभी भी बिलकुल बराबर की नहीं हो सकतीं। "पर अगर हम खुद अपनी टोली चुनते हैं तो कमज़ोर टोली के लिए हम खुद ज़िम्मेदार होंगे, सो हमें उसे झेलना होगा," फ्रैंक ने प्रतिवाद किया। उसने यह सुझाव भी दिया कि हर सप्ताह नई टोलियाँ बनाई जाएँ ताकि सबके साथ न्याय हो। खैर, नतीजा तो समय ही बताएगा।

स्कूल के बाद माताओं के साथ मेरी पहली बैठक हुई। उन्हें बैठक के लिए शाला भवन आने का अभ्यास नहीं है। ग्यारह में से मात्र पाँच माताएँ आईं: श्रीमती ओल्सेउस्की, श्रीमती विलियम्स, श्रीमती कार्टराइट, श्रीमती थॉमसन और मार्था की सबसे बड़ी बहन जो जोन्स परिवार का घर सम्हालती है। हमने लंच कार्यक्रम के लिए वित्त जुटाने की बात की। मैंने उन्हें रंगारंग कार्यक्रम के बारे में भी बताया जिसकी योजना हम बना रहे हैं। उन्होंने बिक्री के लिए केक और रवे की मिठाई बनाने का प्रस्ताव रखा। कई बच्चे रुक गए थे, उन्होंने अपनी माँओं को वह काम दिखाया जो वे कर रहे थे। बैठक संक्षिप्त और दोस्ताना थी।

शुक्रवार, 9 अक्तूबर

शारीरिक शिक्षा के पीरियड आज ठीक रहे। रैल्फ और फ्रैंक ने बारी-बारी टोलियों को चुना और बच्चों ने बेसबॉल खेला। मैंने छोटे बच्चों के साथ "घेरे में खरगोश" खेला। पीरियड के बाद फ्रैंक मेरे पास आया और बोला, "हमें मज़ा आया, मिस वेबर।" रैल्फ की टोली जीती और दिन भर जीतती रही। इससे फ्रैंक को अपनी बात सिद्ध करने का मौका मिला और वह जाँच में खरा भी सिद्ध हुआ।

मैंने वानिकी क्लब को प्लास्टर ऑफ पेरिस के नेगेटिव साँचे को पॉजिटिव बनाना सिखाया। अन्तिम आधे घण्टे में मैंने यथासम्भव सरल भाषा में पृथ्वी की

रचना और पत्थरों के बनने और टूटने की कथा सुनाई। यह पत्थरों और खनिजों के हमारे अध्ययन की भूमिका थी। हाई स्कूल की कुछ लड़कियों ने स्वेच्छा से नोट्स लिखे। उनकी रुचि गहरी थी।

स्कूल के पहले दिन से आज ठीक एक महीना हो चुका है, और मुझे लगता है कि यह आकलन के लिए सही समय है।

इस माह सबसे पहले तो मैंने इस छोटे-से स्कूल के बच्चों से परिचित होने, उनकी पृष्ठभूमि का पता लगाने, उनकी ज़रूरतों और क्षमताओं को जानने की कोशिश की। बारह परिवारों के अट्ठाईस बच्चे हैं। तीन परिवार पोलिश हैं, एक इतालवी, एक यूनानी और सात अमरीकी। वैनिस्की परिवार को छोड़ दें तो शेष सभी आर्थिक दृष्टि से असुरक्षित हैं। ज़्यादातर परिवारों के जीवन का भौतिक स्तर काफी कमज़ोर है। परन्तु मैंने पाया कि हिल, थॉमसन व ओल्सेउस्की परिवारों का आध्यात्मिक स्तर ऊँचा है और पारिवारिक जीवन भी समृद्ध है। सामेटिस परिवार के बच्चों में ऐसी शाइस्तगी है कि मुझे लगता है कि इस घर में ऐसे मूल्य हैं जो उनके रोज़मर्रा के अनगढ़ से जीवन में नज़र नहीं आ सकते।

मोटे रूप से सभी बच्चे शोर-शराबा करते हैं। वे पढ़ने में कमज़ोर हैं। वे कुछ व्यक्तिवादी भी हैं। वे बहुत साफ नहीं हैं और अपने कमरे और आसपास की स्थिति के प्रति लापरवाह हैं। वे संकोची हैं। पर उन्हें चीज़ें इकट्ठी करने का शौक है, वे प्रकृति को जानते हैं, गीत गाना पसन्द करते हैं, सुझावों को खुले मन से स्वीकारते हैं और खुशमिज़ाज हैं।

उनके व्यक्तित्वों में भारी अन्तर है, जैसा हमेशा होता ही है। सभी ओल्सेउस्की बच्चे तेज़, कुशाग्र और योग्य हैं। हेलेन खिलन्दड़ छोकरे-सी है और पूरी तरह बहिर्मुखी। वह हमेशा किसी-न-किसी से बहस में उलझी रहती है। एना हेलेन के आचरण को नापसन्द करती है क्योंकि वह खुद बाकायदा एक सुशील महिला है। मेरी इन दोनों का सुखद मिश्रण है और उसे शायद समूह में सबसे ज़्यादा पसन्द किया जाता है।

प्रिन्लैक बच्चे सबसे शर्मीले हैं। वे दूसरों से तब तक कोई वास्ता नहीं रखते जब तक उपेक्षा करना असम्भव न हो जाए। प्रिन्लैक बच्चों में एलिस और फ्रैंक सबसे कम शर्माते हैं। पर्ल अक्सर यों व्यवहार करती है मानो किसी ने उससे

दुर्व्यवहार किया हो और वह बदला ले रही हो।

सामेटिस बच्चे हरेक गतिविधि के लिए प्रस्तुत रहते हैं। उनकी भाषाई अभिव्यक्ति बेहद सुन्दर है। वे सब दुबले-पतले हैं और उनके बैठने-खड़े होने का अन्दाज़ समूह में सबसे खराब है। विलियम की आँखें बेहद काली हैं और उनमें हास्य दमकता है।

रैल्फ और मार्था जोन्स को वास्तव में एक माँ की दरकार है। उनकी बड़ी बहन और दादी इस कमी को पूरा करने की भरसक कोशिश करती हैं, पर प्यार और सर्मर्पित सेवा तो सिर्फ माँ ही दे सकती है। दादी के साथ उनकी अक्सर झड़प हो जाती है। वे यह नहीं समझ पाते कि एक बढ़िया घर उन्हें दादी के कारण ही मिल पाया है। ये दोनों बच्चे बुद्धिमान हैं। मार्था में अपनी ओर से पहल करने की बहुत क्षमता है।

रूथ थॉमसन हमेशा ठिठियाती रहने वाली शर्मीली लड़की है, पर वह सबको पसन्द भी आती है। चर्चा में उसका योगदान कम रहता है क्योंकि काम में उसकी गति कुछ सुस्त है और वह उसे कठिन भी लगता है। उसकी माँ समुदाय के साथ मेरे काम में मदद करने वाली हैं ताकि मैं गलतियाँ न करूँ। बड़े सलीके से वे मुझे समझा देती हैं कि मुझे क्या करना या नहीं करना चाहिए।

एण्ड्रयूस् लड़कियों को समझना कठिन है। उन्हें देखकर मुझे लगता है कि मेरा हर काम उन्हें नापसन्द है। वे मुझे सवालिया नज़र से घूरती रहती हैं। उनसे दोस्ती करने के लिए मुझे विशेष प्रयास करने होंगे। दोनों लड़कियाँ अभिनेत्रियाँ, खासकर नृत्यांगनाएँ बनना चाहती हैं।

एलबर्ट हिल मस्तमौला है, कुछ आलसी और लापरवाह पर अन्यथा सन्तुलित है। वॉरेन कुशाग्र और अतिसंवेदनशील बच्चा है जो भावनात्मक रूप से असन्तुलित है। वॉरेन की माँ समझदार हैं। हम दोनों सन्तुलित होने में उसकी मदद करना चाहती हैं ताकि वह अपनी क्षमताओं का विकास कर सके।

एडवर्ड वैनिस्की एक गदराया-सा, आराम-पसन्द लड़का है। उसका पसन्दीदा जुमला है "मैं नहीं करना चाहता।" वह चुपचाप रहता है और अब तक उसके बारे में मैं कुछ खास नहीं जान पाई हूँ, जैसा शान्त रहने वाले बच्चों के साथ अक्सर होता है। उसका काम अमूमन घटिया होता है।

घुँघराले बालों वाले एण्ड्रयू डूलियो को समूह में सब पसन्द करते हैं। अपनी उम्र के हिसाब से उसका आकार छोटा है और सब उसे नन्हा ही समझते हैं। एण्ड्रयू रूथ का खास दोस्त है।

डण्डर बच्चे कठिन समस्या हैं। मैंने जोसेफ को उसका नाम लिखना सिखाने की बहुतेरी कोशिशें की हैं, पर यह असम्भव काम लग रहा है। वह बेहद शोर-शराबा करता है। उसे व्यस्त रखने के लिए काम तलाशना मुश्किल है क्योंकि समूह में उसका ध्यान ही सबसे कम अवधि के लिए केन्द्रित हो पाता है। अधिकतर समय हम उसके गुल-गपाड़े की उपेक्षा करते हैं। जब छोटे बच्चे बाहर नहीं होते तो मैं उसे जितना हो सके उतना खेलने देती हूँ। लगता है कि जॉन पढ़ना सीखने लगा है। उसका व्यवहार सामान्य बच्चों-सा है।

कार्टराइट बच्चों की उम्र समूह के लिहाज़ से काफी हो चुकी है और वे बेहद सुस्त हैं। वे शान्त हैं और दिए गए काम को मेहनत से करते हैं। वे सफाई में हिस्सेदारी करते हैं और कमरे के साफ-सुथरे होने में दूसरे बच्चों से अधिक गर्व लेते हैं।

विलियम्स बच्चे बिलकुल साफ और बढ़िया कपड़े पहने रहते हैं। श्रीमती विलियम्स की बहन उन्हें कपड़े देती रहती हैं। दोनों बच्चे स्कूल में लोकप्रिय हैं और उनसे सब जलते भी हैं। बड़ी लड़कियाँ जॉयस को लाड़ लड़ाती हैं और उसके कपड़े सँवारती रहती हैं। वे ऐसा व्यवहार करती हैं मानो वह एक विशेष गुड़िया हो। वॉल्टर से दोस्ती करना ज़रा कठिन है। ऐसा नहीं कि वह दोस्ती करना नहीं चाहता है, पर वह एक नन्हे खरगोश-सा संकोची है।

बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति की कुछ चेष्टाएँ मैंने इस माह की हैं। दैनिक गतिविधियों में बदलाव किए हैं और उन्हें और समृद्ध बनाने की कोशिश की है।

हमारे कमरे का रूप बदल गया है और अब वह हमारी गतिविधियों के अनुरूप लगता है। बैठने की व्यवस्था अभी भी औपचारिक है। कमरे के पिछवाड़े दाहिने कोने में हमारा पुस्तकालय है जिसमें एक अलमारी, लाइनोलियम की फर्श, एक कार्ड-टेबल और क्रेट की चार नारंगी कुर्सियाँ हैं। मेज़ पर एक सुन्दर मेज़पोश और कुछ रंगीन किताबें हैं। पीछे बाएँ कोने में मेरी मेज़ है। कमरे के सामने की ओर दाहिने हाथ पर हमारा प्रकृति कोना है, जिसमें शीतनिद्रा में लिप्त चीटियों की बाँबी है, एक एक्वेरियम में कछुआ है, सेलोफेन के नीचे रूई पर मढ़े जंगली

फूल हैं, मोम लगी पतझड़ की पत्तियों की एक पुस्तिका है और एक पुस्तिका पत्तियों के छापों की है। इसके अलावा, पत्थरों, फफूँद और चिड़ियों के घोंसलों का एक संग्रह है, और एक तश्तरी में काई व बेरियाँ हैं। कमरे के सामने की ओर बाएँ कोने में पठन कोना है जहाँ मैं पठन समूहों के साथ काम करती हूँ। और बीचों-बीच है नन्हे-मुन्नों का खेल कोना। बच्चे घर से कुछ गुड़ियाएँ, उनके कपड़े, एक पलंग, कुछ गुटके, कुछ जिग-सॉ पहेलियाँ और कुछ टूटी-फूटी गाड़ियाँ ले आए हैं। हमारे सूचना-पट्ट और उसके नीचे वाली टाँड पर हमने इण्डियन लोगों के अवशेष सजाए हैं। इनमें पच्चीसेक बाणों के शिर, एक कुल्हाड़ी, एक सिल-लोढ़ा, कुछ चिकने पत्थर और बरतनों के टुकड़े हैं। हमारे पास इण्डियन लोगों के कई चित्र और उनसे सम्बन्धित कहानियाँ भी हैं। इस सूचना-पट्ट के ऊपर इण्डियन आवासों की चित्रवल्लरी है।

दूसरे सूचना-पट्ट पर हमारे खेल-चार्ट हैं। सूचना-पट्टों के नीचे वे पुस्तिकाएँ हैं जो प्राथमिक समूहों ने बनाई हैं। इनमें स्कूल में लाए गए पालतू जानवरों की कहानियाँ और उनके चित्र हैं। एक चार्ट प्राथमिक रंगों का है। प्राथमिक समूह के बड़े बच्चों द्वारा बनाई गई किताबें भी हैं जो उन्होंने अपनी रीडर में छपी कहानियों पर बनाई हैं। ठीक सामने वाली दीवार पर खिड़कियों के नीचे सामाजिक अध्ययन से सम्बन्धित समस्याओं व प्रश्नों के चार्ट हैं जो बिचले और बड़े समूह के लिए हैं। साथ हैं बड़े बच्चों द्वारा बनाई इण्डियन लोगों पर किताबें। कमरे के सामने वाले ब्लैकबोर्ड के नीचे वे पुस्तिकाएँ हैं जो प्राथमिक समूह ने पशुओं के आवासों पर बनाई हैं। बिचले समूह द्वारा बनाया गया एक नक्शा भी है जो दर्शाता है कि कोलम्बस द्वारा अमरीका की खोज से पहले दुनिया के बारे में लोग कितना जानते थे।

आगामी महीनों में मैं इन लड़के व लड़कियों को समझने की कोशिश जारी रखूँगी और उनकी क्षमताओं को सामाजिक रूप से वांछनीय तरीकों से विकसित करने की चेष्टा करूँगी।

2

बच्चों ने प्रगति की

शनिवार, 10 अक्तूबर

सभी बच्चों को, और खासकर इन बच्चों को जिनके अनुभव बेहद सीमित हैं, कई तरह की रुचियों से जुड़ने की ज़रूरत है ताकि उनके जीवन समृद्ध हों और वे अपना समय सार्थक कार्यों में बिता सकें। मैंने अब तक यह कोशिश की है कि हम मिलजुलकर अपने स्कूल भवन और उसके मैदान को सुन्दर बनाएँ, पुस्तकालय के पीरियड में पढ़ने का आनन्द लें और वानिकी क्लब के माध्यम से अपने आसपास के प्राकृतिक परिवेश के बारे में और जानें। इस समुदाय का एक और समृद्ध संसाधन है स्थानीय इण्डियन लोगों का इतिहास। यह भण्डार मैंने बच्चों के लिए खोल दिया है, पर इस अनुभव को ज़्यादा वास्तविक बनाने के लिए मुझे उन्हें एक इण्डियन-यात्रा पर ले जाना होगा। आज मैं कैथरीन, फ्रैंक, रूथ और सोफिया को ले गई। हम एक शैलाश्रय तक गए और तब "रिवर रोड" पर बढ़े जो किसी जमाने में इण्डियनों का रास्ता हुआ करता था। मैंने उन्हें इस रास्ते के बारे में बताया, इण्डियनों के पुराने मुखिया चीफ टामेनुण्ड् की बात की, तथा उनकी बस्ती और उस वृक्ष की बात बताई जिसके नीचे वे अपनी बैठक करते थे। मिन्सी कबीला, जो कभी यहाँ बसता था, के बारे में जो कुछ बच्चों ने पढ़ा था, उस पर भी हमने चर्चा की।

सोमवार, 12 अक्तूबर

आज छुट्टी वाले दिन की सुबह मैं "अ" समूह के शेष बच्चों (रैल्फ, एना, ओल्गा और डॉरिस) को भी इण्डियन-यात्रा पर ले गई। वे प्रथम समूह से अधिक चुप थे। ओल्गा के लिए इतनी पास की यात्रा करना भी नया अनुभव था। बातचीत इण्डियनों और प्रकृति की ओर मुड़ी। जब से वानिकी क्लब में मैंने

पृथ्वी के इस भाग की रचना की कहानी सुनाई है, रैल्फ जीवाश्म ढूँढने में खास रुचि ले रहा है। रैल्फ ने गौर किया कि रिवर रोड के पत्थरों की परतें खास तरह की हैं, और उसने इस बारे में पूछा। मैंने बच्चों से ही उत्तर निकलवाने की कोशिश की और पाया कि वे भू-विकास के बारे में काफी समझते हैं।

आज शाम वानिकी क्लब के हम बीस सदस्य पिकनिक पर गए। बच्चों ने खाने के बाद सफाई में मदद की और हमने कूड़ा-कचरा जला दिया। रैल्फ और फ्रैंक ने आग पर एक बड़ी-सी लकड़ी डाल दी और हम आग के इर्द-गिर्द आराम से बैठ गए। कुछ देर चुप्पी रही। चीड़ के जंगल की खुशबू हवा में तैर रही थी। हम उसे सूँघते रहे और झरने की कलकल सुनते रहे। हाई स्कूल की एक लड़की ने कुछ मज़ेदार किस्से सुनाए। तब मैंने समूह को इण्डियनों के आख्यान सुनाए और स्कनी वुण्डी की कहानियाँ भी। इन कथाओं के लिए इससे उपयुक्त पृष्ठभूमि हो नहीं सकती थी, और लगा मानो मेरे अन्तस में इण्डियन कथावाचक की आत्मा समा गई हो: "सुनो, मेरे बच्चो, मैं नायक स्कनी वुण्डी की शौर्य गाथाएँ कहती हूँ जिसने दलदल की डाकनियों का नाश किया और उन्हें नरकट के टीलों में बदल डाला।"

इसके बाद हमने कई तरह के गीत गाए – शिविर गीत, काउबॉय गीत, पुराने पसन्दीदा गीत, कई बढ़िया लोकप्रिय धुनें। पर जल्दी ही घर लौटने का समय हो गया। श्री थॉमसन अपना बड़ा ट्रक लाए और बच्चों को उनके घरों तक पहुँचा आए।

मंगलवार, 13 अक्तूबर

आज दिन भर बार-बार "पिकनिक" शब्द कानों में पड़ता रहा। सभी एक-दूसरे के प्रति नेह जताते रहे। उस पहले दिन से हम काफी दूर निकल आए हैं जब हरेक अपनी निजी राह पकड़ता था!

बिचले समूह ने अपनी इतिहास पुस्तकों की दूसरी इकाई प्रारम्भ की। हमने समस्याओं के अर्थ पर चर्चा की। प्रारम्भिक उपनिवेशियों की इस इकाई में तीन मुख्य समस्याएँ हैं। प्रत्येक मुख्य समस्या सुलझाने के लिए उन्हें अधिक विस्तृत प्रश्न दिए जाएँगे। जब इन सवालों के जवाब मिल जाएँगे तब वे उनके सहारे एक कहानी लिखेंगे जो संक्षेप में समस्या का समाधान रखेगी। मैं कोशिश कर रही हूँ कि बच्चे किसी एक सवाल का जवाब ढूँढने के बदले उस समस्या को पहचानें जिसका समाधान उन्हें पाना है। बच्चों के लिए यह दूसरा कदम होगा।

बुधवार, 14 अक्तूबर

जितनी बार आँखें काम से ऊपर उठाईं मुझे कई खाली कुर्सियाँ नज़र आईं। सामने वाले आँगन में छोटे लड़के नारंगियों के खाली खोखों से एक खेलघर बना रहे थे। यह सब सुबह योजना बनाने के बाद हो रहा था। नन्ही लड़कियाँ अपनी गुड़ियों के लिए कपड़े बना रही थीं। कुछ बड़े बच्चे मनोरंजन कार्यक्रम के विज्ञापन पोस्टर बना रहे थे या चित्रवल्लरी के शीर्षक लिख रहे थे। जो मेज़ों पर जमे थे वे गणित, वर्तनी या पठन का काम कर रहे थे।

शारीरिक शिक्षा में सब ठीक चल रहा है। अब हम दैनिक स्कोर की बजाय साप्ताहिक स्कोर रखने लगे हैं ताकि हारने वालों को अगले दिन फिर से मौका मिले। कल जो टोली बेसबॉल में हारी थी आज लॉन्ग बॉल में जीत गई है, सो दोनों टोलियों में मात्र एक अंक का अन्तर है।

गुरुवार, 15 अक्तूबर

दिन भर इतनी व्यस्तता रहती है कि हमें नाटक का अभ्यास करने का समय नहीं मिल पा रहा। बच्चों ने बखुशी दोपहर का समय इसमें लगाना शुरू किया है। रिहर्सल खराब चल रहे हैं। इण्डियन नृत्य में बच्चों को मज़ा आता है, पर वे उसे अनगढ़ तरीके से करते हैं। वे इतने शर्मीले हैं कि हर बार असहज हो ठिठियाने लगते हैं। ऐसे वक्त हमें रुककर धीरज से दोबारा शुरुआत करने का इन्तज़ार करना पड़ता है। मैं तो इस रंगारंग संध्या को लेकर भयभीत हूँ।

शुक्रवार, 16 अक्तूबर

आज सुबह विज्ञान के पीरियड में मैं बच्चों को पैदल घुमाने ले गई ताकि वे पतझड़ के पत्ते देख लें इससे पहले कि पेड़ नंगे हो जाएँ। हमने कई वृक्षों को पहचाना और "क्वेकिंग एस्पेन" को अपने वृक्ष मित्रों की सूची में जोड़ा। हमने देखा कि भिन्न-भिन्न प्रकार के बलूत के वृक्षों के रंग एक-दूसरे से भिन्न हैं। पहाड़ी के ऊपर एण्ड्रयूस् के घर के पास के पेड़ों को हमने दूर से ही आकार और रंग के आधार पर पहचानने की कोशिश की। ट्यूलिप के पौधे अलग से नज़र

आ रहे थे। सदाबहार वृक्ष समूह में नीले स्प्रूस, सरल वृक्ष, देवदारु व पीली चीड़ के वृक्षों को हमने पहचान लिया।

स्वास्थ्य के पीरियड में हमने व्यक्तिगत साफ-सफाई की आवश्यकता पर बात की और इस पर भी कि कैसे साफ रहा जाए। बड़े बच्चे त्वचा की संरचना के बारे में कुछ सीख सके। इस सबके बाद इतना ही समय बचा था कि वे चर्चा का सार-संक्षेप अपनी कॉपियों में दर्ज कर लें। यद्यपि चर्चा में सब बच्चे भाग लेते हैं, पर लिखने की उम्मीद उनसे उनकी योग्यता के अनुपात में ही रखी जाती है। छोटे बच्चे चित्र-पुस्तकें बना रहे हैं।

हमारे सहायक क्लब की बैठक साधारण पर अच्छी थी। हमने अगले चार सप्ताहों के लिए नए पदाधिकारी चुने। हम हर माह नए पदाधिकारी चुनेंगे ताकि ज़्यादा से ज़्यादा बच्चों को नेतृत्व करने का मौका मिले। इस बार रैल्फ अध्यक्ष बना है, ओल्गा उपाध्यक्ष और एना सचिव। रैल्फ ने चुनाव के बाद बैठक की कार्यवाही सम्हाली और उसमें नेतृत्व की सम्भावना नज़र आती है। हमने इस बात पर चर्चा की कि वे अपने द्वारा बनाए गए नियमों का स्वयं कितना पालन करते हैं। रैल्फ को लगा कि हमने पुराने नियम अच्छी तरह सीख लिए हैं सो हमें नए नियम बनाने चाहिए, खासकर साथ-साथ खेलने के सम्बन्ध में। एक पूरा सप्ताह गुज़र चुका है और कोई झगड़ा नहीं हुआ है। मैंने सुझाया कि हम जो अच्छी आदतें सीख रहे हैं उनकी सूची बना लें और कुछ समय उन पर ध्यान दें: हम और शान्ति से काम करें ताकि दूसरों के काम में कोई खलल न पड़े और हम अपनी कक्षा और अपने काम को साफ तथा व्यवस्थित रखें।

सोमवार, 19 अक्तूबर

छोटे बच्चे घरों पर पुस्तिकाएँ बना रहे हैं जिनमें विभिन्न प्रकार के घरों के बारे में कहानियाँ होंगी। आज उन्होंने अपनी पहली कहानी लिखी और पहला चित्र बनाया। हमने पहले कहानियाँ "कहीं" और मैंने ब्लैकबोर्ड पर वे शब्द लिखे जिनकी वर्तनी उन्हें जाननी थी। मैं कोशिश कर रही हूँ कि वे लेखन में अधिक आत्मनिर्भर हो जाएँ।

बुधवार, 21 अक्तूबर

आज सुबह रूथ ने शुक्रवार की हमारी सैर पर लिखी कविता मुझे दी।

सैर

हम सैर पर गए और हमने खूब बातें कीं।
हमने पत्तों को देखा ताकि पेड़ों को समझ सकें।
हमने मोड़ीं अपनी हड्डियाँ पत्थरों की खोज में।

मैं रूथ की कविता को एक बड़े कागज़ पर लिख, चित्रों से सजा, सूचना-पट्ट पर लगा दूँगी। सम्भव है दूसरे भी इससे प्रेरित हों। बाद में शायद हम एक अखबार की बात भी सोच सकते हैं जिसमें ऐसी रचनात्मक चेष्टाएँ शामिल हों।

गुरुवार, 22 अक्तूबर

आज मार्था सभी प्राथमिक बच्चों को बाहर ले गई और कुछ देर उन्हें पढ़कर सुनाती रही। एक बार जब मैं यह देखने बाहर गई कि सब ठीक-ठाक तो चल रहा है, मैंने पाया कि वह जो कुछ पढ़कर सुनाया था उस पर प्रश्न पूछ रही है। मैं कुछ देर सुनती रही और मैंने पाया कि जैसी चर्चा मैं करवा पाती हूँ उससे कहीं जीवन्त चर्चा यहाँ चल रही थी!

सुबह के शारीरिक शिक्षा पीरियड में विलियम ने पूछा कि क्या वह हमें एक खेल सिखा सकता है। उसने खेल अच्छी तरह समझाया और हमने कई सवाल पूछे। खेल था "लोमड़ी, क्या तुम तैयार हो?" सच, हमें बड़ा मज़ा आया। पिछले कुछ समय से बड़ी कक्षाओं के बच्चे स्कूल से पहले ही कोई खेल शुरू कर देते हैं।

शुक्रवार, 23 अक्तूबर

आज सुबह एना एक कविता लाई और उसने जानना चाहा कि क्या वह रूथ की कविता की तरह उसे चित्रों से सजाने के लिए कागज़ घर ले जा सकती है?

आज सुबह रुक-रुककर बरसात होती रही। पर लड़कों ने फिर भी लकड़ियाँ, ठूँठ, रंगीन पत्तों की टहनियाँ, काई और पत्थर इकट्ठे किए ताकि इण्डियन लोगों वाले नाटक के दृश्य बनाए जा सकें। कई बच्चों ने कहा कि इतना सुन्दर मंच उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। बिचले समूह ने अपने नाटक को "हमारी इतिहास पुस्तक में से कोलम्बस के जीवन के चित्र" शीर्षक दिया है। उन्होंने भूर्ज की लकड़ी से एक बड़ा-सा चित्र-फ्रेम बनाया है जिसके अन्दर ही नाटक खेला जाएगा। यह फ्रेम मंच में सामने वाले हिस्से में रखा गया है और उसे पर्दे से ढक

दिया गया है। नाटक खत्म होने पर बच्चे इस फ्रेम को हटा देंगे ताकि इण्डियन लोगों वाले नाटक के लिए मंच खाली हो जाए। लड़कियाँ फ्रेम के पर्दे व्यवस्थित कर रही थीं कि वॉरेन आया और कहने लगा कि वे काम को कठिन बना रही हैं। उसने बड़े उम्दा सुझाव दिए। एक झटके में समूह में वॉरेन की साख में इज़ाफा हो गया।

नाटक वाले पीरियड के बाद हम अनौपचारिक तरीके से बैठ गए और मैंने उन्हें मिल्ने की "वेन वी वर वेरी यंग" (जब हम बहुत छोटे थे) से पढ़कर कविताएँ सुनाईं। उन्होंने कई कविताएँ दोहराने को कहा, खासकर वह जिसमें एक छोटा लड़का है जिसके पास एक पाई है और जो उससे एक खरगोश खरीदना चाहता है। यह कविता मुझे चार बार पढ़नी पड़ी और बच्चे टेक को मेरे साथ दोहराने लगे।

नन्हे-मुन्ने घर लौटते उससे पहले मैंने उन्हें "उपदेश" दिया कि आम तौर पर हम किसी कार्यक्रम के दौरान कैसा आचरण करते हैं। जब मैं उनसे गम्भीरता से कोई बात करती हूँ तो वे मुझे ऐसे घूरते हैं कि मेरा दिल उन्हें गले से लिपटाने का हो आता है।

आज शाम के रंगारंग कार्यक्रम के लिए तकरीबन पचास लोग इकट्ठे हुए, जिनमें बच्चे भी शामिल थे। हमने कार्यक्रम समूह गान से आरम्भ किया, और इन लोगों को गाना कितना पसन्द है! हमने पुराने लोकप्रिय गीत गाए और वह गीत भी जो मैंने सिखाया है, "स्वीटली सिंग्स द डॉन्की" (मधुर गीत गाता है गधा)। प्राथमिक बच्चों ने एक समूह गीत गाया और खूब तालियाँ बजीं। वे बाग-बाग हो गए। कार्यक्रम खत्म होने के बाद भी लोग देर तक रुके रहे। बच्चों ने अपने अभिभावकों और दोस्तों को हमारे कक्ष में रखी रोचक वस्तुएँ दिखाईं और उन्हें हमारे काम के बारे में बताया। श्रीमती हिल को यह जान सुखद आश्चर्य हुआ कि बच्चे यह सब कुछ करने को आतुर थे। घर के बने केक और चॉकलेट से हमने दस डॉलर कमाए।

पिछले सप्ताह भर कई बच्चों और कुछ अभिभावकों ने मुझे चेतावनी दी थी कि कुछ उजड्ड नवयुवक स्कूल के मनोरंजन कार्यक्रम में बाधा डालते रहे हैं। इनमें से दो मुख्य लड़के एडवर्ड के भाई हैं। आज शाम कार्यक्रम प्रारम्भ करने से पहले मैंने उनसे बात की और उन्हें बताया कि आज के नाटक हमारे लड़के-लड़कियों

के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने इसके लिए दिनों-दिन मेहनत की है ताकि वे सबको प्रभावित कर सकें। पर उनकी आवाज़ें कोमल हैं। इसलिए क्या वे मेहरबानी करके दरवाज़े के पास खड़े होकर यह सुनिश्चित कर सकेंगे कि कोई बीच में ज़ोर से न बोले। सौभाग्य से मेरा उपाय कारगर रहा और हमारा कार्यक्रम शान्ति और आनन्द से हो सका।

सोमवार, 26 अक्तूबर

आज बाहर मौसम ठण्डा था, तेज़ हवाएँ भी चल रही थीं, पर इसके विपरीत अन्दर बड़ा सुहाना लग रहा था। थोड़ी देर हमने बारिश को पेड़ों से पत्तियाँ "नोचते" देखा और आसपास के जंगल में हवा का संगीत सुना। सब इतना अच्छा लग रहा था। कक्षाएँ शुरू होने से पहले हमने शुक्रवार के फैलावे को समेटा और नौ बजे तक हम एक साफ-सुथरे कमरे में पढ़ाई के लिए तैयार थे।

सामेटिस बच्चे शहर में अपने पिता के पास रहने जाने वाले हैं और मैं बहुत दुखी हूँ। वे अब जाकर मुक्त और सहज अनुभव करने लगे हैं और उन्हें फिर से नई जगह जाकर तालमेल बैठाना होगा।

अपने रोज़मर्रा के कामों पर लौटना जहाँ एक ओर शान्त और व्यवस्थित लग रहा था, वहीं कुछ उबाऊ भी।

बुधवार, 28 अक्तूबर

बच्चों को काम करते देखने के लिए जब-तब कुछ पल निकाल पाना मुझे लाभदायक लग रहा है। खासकर उन बच्चों के प्रति मैं अधिक सचेत हो पाती हूँ जो सामान्यतः बिना दूसरों का ध्यान आकृष्ट किए चुपचाप अपना काम करते हैं। उदाहरण के लिए, एडवर्ड कोई शरारत नहीं करता, पर किताबों को घूरते हुए काफी समय बर्बाद करता है क्योंकि वह ठीक से पढ़ नहीं पाता। मुझे उसे पढ़ने को आसान किताबें देनी चाहिए। रैल्फ भी घर से लाई "चीज़ों" से खेलने में समय ज़ाया करता है, वह उन्हें अपनी मेज़ में रखता है। ज़ाहिर है कि उसे ये चीज़ें स्कूल के काम से अधिक चुनौतीपूर्ण लगती हैं। मेरी और ओल्गा दिल लगाकर मेहनत करती हैं, और हमेशा ही उम्मीद से अधिक काम करती हैं। फ्रैंक भी ठीक यही करता है, यद्यपि उसके काम में इतनी सफाई नहीं होती। हेलेन अपने सभी पड़ोसियों से उलझती रहती है। रूथ का ठिठियाना रुकता ही नहीं।

मैं जब भी अवलोकन करने बैठती हूँ तो शुरुआती नन्हों को देख सदा मुझमें अपराध बोध जगता है। मैं उनके साथ कम समय बिता पाती हूँ, अतः वे कितने कुछ से वंचित रह जाते हैं। नतीजा यह होता है कि वे काफी समय सिर्फ बैठे रहते हैं। उन्हें गाना, खेलना, नाटक करना, चित्र बनाना चाहिए। जितना वे कर पाते हैं मुझे उससे कहीं अधिक अनुभव उपलब्ध करवाने के रास्ते तलाशने होंगे।

आज स्कूल के बाद 4-एच सिलाई क्लब की पहली बैठक हुई। बिचले और बड़े समूह की सभी लड़कियाँ और चार हाई स्कूल की लड़कियाँ उपस्थित थीं। हमने काम से सम्बन्धित छोटी-सी बैठक की और पदाधिकारी चुने। हमने अपनी परियोजनाएँ बनाईं। छोटी लड़कियाँ मशीन से सीकर गमलों की लटकनें बनाएँगी ताकि वे मशीन चलाना सीख सकें। शेष लड़कियाँ शमीज़ें बनाएँगी जिनके नमूने हमें काउंटी गृह प्रदर्शिका मिस मून ने उपलब्ध करवाए हैं।

गुरुवार, 29 अक्तूबर

आज स्कूल के बाद माताओं के साथ दूसरी बैठक हुई। केवल श्रीमती हिल, श्रीमती ओल्सेउस्की, श्रीमती कार्टराइट और श्रीमती थॉमसन ही आईं। मुझे कुछ निराशा हुई, पर उन्होंने बताया कि यह उनके लिए बेहद व्यस्तता का समय है। हमने शिक्षा सप्ताह की योजना बनाई। उस सप्ताह माताएँ गुरुवार को दोपहर बारह बजे स्कूल आ जाएँगी, जब बच्चों की छुट्टी कर दी जाएगी, और शाम तीन बजे तक रुकेंगी। बच्चों के घर चले जाने के बाद हम उनके अवलोकनों पर चर्चा करेंगे।

शुक्रवार, 30 अक्तूबर

आज बड़े बच्चों ने नई कॉपियाँ बनाईं जिनमें वे भाषा और वर्तनी की अपनी गलतियों का रिकार्ड रखेंगे और सही वर्तनी दर्ज करेंगे। इस कॉपी में वे उन नए शब्दों को भी दर्ज करेंगे जिनका उपयोग करना वे सीख रहे हैं और उन किताबों के नाम भी लिखेंगे जो उन्होंने पढ़ ली हैं। वे जिस उत्साह से काम में जुटे उससे मेरा मन खिल उठा।

वानिकी क्लब की बैठक में बच्चों ने अपनी कॉपी में शिलाखण्डों की वह कुंजी उतार ली जो मैंने उनके लिए तैयार की थी। फिर अभ्यास सत्र में उन्होंने कुंजी का उपयोग सीखा। हमने अपने संग्रहालय में रखे शिलाखण्डों की पहचान की।

सोमवार, 2 नवम्बर

नया माह हम सब के लिए भी नई शुरुआत लाता है। हमने महीने का स्वागत बढ़िया साफ-सफाई से किया। बच्चों ने अपनी मेज़ों को झाड़-पोंछकर चमकाया, इकट्ठे हुए रद्दी कागज़ों की छँटनी की और अपनी किताबों, कॉपियों और उपकरणों को तरतीब से रखा। इससे हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली। "तो हम अलमारियाँ भी क्यों नहीं साफ कर देते?" आधा दर्जन बच्चों ने एक साथ पूछा। पता नहीं क्यों, उन्हें अलमारियाँ साफ करने में मज़ा आता है। पर इसके बाद भी सफाई से उनका मन नहीं भरा। रूथ को लगा कि हमें लगे हाथ रसोई के आलों को भी साफ कर डालना चाहिए ताकि जब गर्म भोजन का कार्यक्रम शुरू हो तो सब व्यवस्थित हो। फ्रैंक ने ऐन खाँटी परिपाटी के अनुसार रगड़-रगड़कर टाँडें धोईं, वॉरेन ने उन्हें पूरी तरह सुखाया तथा एना और रूथ ने कपों पर बच्चों के नाम लिखकर नए लेबल चिपकाए। तब उन्होंने सारी थालियाँ, भगोने-पतीले, चावल-आटा आदि रखने के डिब्बे उबालकर धोए और उन्हें पोंछकर आलों में सजा दिया। जब हम यह सब कर चुके तो वॉरेन और फ्रैंक ने ज़ोर देकर कहा कि इन सर्दियों के दौरान वे ही रसोइए रहेंगे।

आज हमने जो कुछ किया वॉरेन उसे "कठिन खेल" कहता है। सफाई में पूरा दिन निकल गया, पर अब हमारा कमरा सफाई से महक और दमक रहा है।

साफ कक्षा और आकर्षक खेल मैदान पर ज़ोर देने के कारण बच्चे भी अब कुछ ज़्यादा साफ दिखने लगे हैं।

बुधवार, 4 नवम्बर

बच्चों की शब्दावली हौले-हौले बढ़ रही है। हम नए शब्दों का मज़ा उठा रहे हैं, हर अवसर पर उनका प्रयोग करते हैं। उनका ताज़ा सीखा शब्द है "बेतुका"। हम पढ़ने, लिखने और गणित में फिलहाल ज़्यादा समय लगा रहे हैं क्योंकि सबसे अधिक मदद बच्चों को इन्हीं में चाहिए। इन विषयों में दक्षता केवल इसलिए आवश्यक नहीं है कि वे जीवन के लिए उपयोगी हैं बल्कि इसलिए भी कि इनमें लगातार असफलता पाने से बच्चों में भावनात्मक समस्याएँ उपजती हैं। वॉरेन इसका उम्दा उदाहरण है। जब से गणित और वर्तनी में सुधार से उसे कुछ सन्तोष मिला है, वह समूह में अधिक सहज महसूस करने लगा है।

पठन के लिए मैं शिक्षक मार्गदर्शिका का अनुसरण करती हूँ, क्योंकि पठन विशेषज्ञ मुझसे बेहतर यह समझते होंगे कि बच्चे दरअसल पढ़ना कैसे सीखते हैं और कौन सी कहानी से किस उद्देश्य की प्राप्ति में मदद मिलती है। पर मैं फिर भी अपने हिसाब से कई तब्दीलियाँ करती हूँ क्योंकि अपनी कक्षा की स्थिति को और इन लड़कियों और लड़कों को मैं किसी भी पठन विशेषज्ञ से बेहतर जानती हूँ।

हमारी शाला में गणित, वर्तनी, भाषा और लेखन व्यक्तिगत मसले हैं। प्रत्येक बच्चे की अपनी कॉपी है जिसमें उसकी ज़रूरतें दर्ज हैं। मैं कोशिश कर रही हूँ कि प्रत्येक को उसकी निजी आवश्यकताओं का एहसास हो और उनमें सुधार की इच्छा मज़बूत होती जाए। बच्चों के साथ व्यक्तिगत बैठकें इस मामले में कारगर सिद्ध होती हैं।

कुछ समय पहले तक दोपहर का अभ्यास पीरियड तीन घेरों वाले सर्कस-सा लगता था। बच्चे खुद ईमानदारी के साथ कोशिश करने से पहले ही मेरे पास भागे आते थे। मैं बारी-बारी छोटे समूहों में बच्चों के साथ बैठी और उनका परिचय गणित की पाठ्यपुस्तकों से करवाया। उन्हें समझाया कि हर नए काम के पहले पाठ में गणित की क्रिया के प्रत्येक चरण को सिलसिलेवार समझाया गया है। इन स्पष्टीकरणों का उपयोग कैसे किया जा सकता है, यह मैंने उन्हें क्रमशः दिखाया। अब उनका ध्यान सही जवाब पाने से हटकर समस्या को समझने पर केन्द्रित होने लगा है। रूथ आज बोली, "जवाब तो सही आ गया, पर मुझे समझ नहीं आया कि वह सही क्यों है।"

अब क्योंकि बच्चे स्वतंत्र रूप से काम करने लगे हैं, मैं हर दिन बच्चों के साथ व्यक्तिगत बैठकों के लिए समय निकाल पाती हूँ। आज मैंने रूथ की कॉपियाँ सावधानी से देखीं। ज़्यादातर काम लापरवाही के साथ किया हुआ था। अगले एक माह तक रूथ अपने लिखे हुए को फिर से पढ़ेगी और अगर गलतियाँ नज़र आएँ तो उन्हें सुधारेगी। इससे पहले वह काम खत्म हो गया है, ऐसा नहीं मान लेगी। हमने लोगों के प्रति उसके दृष्टिकोण पर भी बात की, खासकर समुदाय के उन वयस्कों के प्रति जिन्हें वह जानती है। मैंने समझाया कि हम जानते हैं कि वह किसी का अपमान नहीं करना चाहती, पर यह आदत अच्छी नहीं है।

शुक्रवार, 6 नवम्बर

आज स्कूल के बाद हमारी वानिकी क्लब की बैठक हुई। हाज़िरी के समय हमें अपना नाम पुकारे जाने पर उपस्थिति दर्ज करवाने के लिए एक जानवर का नाम बोलना था। रूथ ने हाई स्कूल की एक लड़की का नाम बोला। इससे एक लम्बी चर्चा छिड़ गई कि इन्सान पशु होता है या नहीं। हमने कुंजी की मदद से कुछ और शिलाखण्डों को जाँचा। इस सप्ताहान्त वॉरेन, रैल्फ और एडवर्ड आसपास घूमेंगे और शिलाखण्डों के टूटकर मिट्टी में बदलने के जितने प्रमाण मिल सकें उन्हें तलाशेंगे। अगले सप्ताह वे हमें उन स्थानों पर ले जाएँगे। मैंने बच्चों को 4-एच क्लब का एक नया गीत भी सिखाया।

सोमवार, 9 नवम्बर

आज दोपहर हमने अपने दरवाज़े पर एक तख्ती लटका दी: "पिकनिक पर गए हैं। एक बजे लौटेंगे।" इतना खुशनुमा दिन था कि हम उसे यों ही ज़ाया नहीं करना चाहते थे। हम पहाड़ की ओर बढ़े और एक बल खाती धारा के किनारे बैठ हमने अपना खाना खाया। लौटते समय मैं बच्चों को बतियाते सुनती रही और मुझे बड़ी शिद्दत से उनकी ज़रूरतों का एहसास होने लगा और उतनी ही शिद्दत से अपनी कमियों की चेतना भी जगी। मैं उनसे ठीक उसी तरह बात करना चाहती थी जैसे हमारे राज्य के वन अधिकारी श्री स्कोवल करते हैं ताकि प्रकृति की दुनिया के चमत्कार उनके सामने खोलकर रख सकूँ। पर मैं कितना कम जानती हूँ। सप्ताह के दौरान जब तक मैं बच्चों की कॉपियाँ सावधानी से देखती हूँ, अपने छह पठन समूहों की तैयारी करती हूँ, सामाजिक अध्ययन की सामग्री पढ़ती हूँ और अपने काम से जुड़ी बारीकियों से जूझती हूँ, तब तक सोने का समय हो जाता है। इतना थक गई होती हूँ कि जिन बातों की विस्तृत योजना बनानी होती है उनके बारे में सोच भी नहीं पाती। इस तरह जैसे कर रही हूँ वैसे ही करती जाती हूँ। इच्छा होती है कि काश मैं एक की जगह चार होती ताकि हरेक बच्चे के दिल-दिमाग में जो कुछ हो रहा है उसे समझ पाती और उस बारे में कुछ कर पाती।

गुरुवार, 12 नवम्बर

यह शिक्षा सप्ताह है। हमने अपनी समय सारिणी उलट दी है ताकि माताएँ बच्चों

को सामाजिक अध्ययन पर काम करते देख सकें। सिर्फ श्रीमती थॉमसन, श्रीमती विलियम्स और श्रीमती डूलियो आईं। चार माताओं ने लिखित माफी माँग ली। न आने के सबके जायज़ कारण थे। श्रीमती डूलियो के आने की मुझे बेहद खुशी हुई। वे पहली बार स्कूल आई थीं। तीन बजे बड़ी लड़कियों ने माताओं को चाय परोसी और हमने गपशप की। श्रीमती विलियम्स दक्षिण कैरोलीना में अपने रिश्तेदारों के पास समय बिताकर लौटी हैं। उन्होंने अपनी यात्रा के बारे में बताया।

शुक्रवार, 13 नवम्बर

हमने अखबार की सम्भावनाओं पर बात शुरू की, उसकी व्यवस्था कैसे की जाती है और हम उसमें क्या-क्या डाल सकते हैं। वॉरेन को मुख्य सम्पादक और ओल्गा को सह-सम्पादक चुना गया।

सोमवार, 16 नवम्बर

आज खासी ठण्ड थी, सो दोपहर को एक गर्म व्यंजन परोसना उचित लगा। रूथ और मेरी ने कुशलता से पकाया और सफाई का ध्यान रखा। पर खाना खाने के दौरान काफी शोर मचा और उलझन हुई। खाने के बाद का सत्र आरम्भ करने से पहले कुछ मिनट खाने के पीरियड की बात हुई। अब से जिन्हें बारह बजे काम में जुटना है, वे 11:50 पर हाथ धो लेंगे। वे डेस्कें जोड़कर बड़ी मेज़ बनाएँगे, उस पर मोमजामे की पट्टियाँ लगा रूमाल, चम्मच आदि रखेंगे। इस बीच समूह के बाकी लोग हाथ साफ कर लेंगे। जब तक सब हाथ धो अपने-अपने स्थान पर बैठ नहीं जाते, परोसगारी नहीं होगी। जब सबको भोजन परोस दिया जाएगा, हम प्रार्थना करेंगे। खाना पकाने वालों को यह ध्यान रखना होगा कि तश्तरियों को धोने के लिए गर्म पानी तैयार हो और रसोई फिर से व्यवस्थित की जाए। जब तक थालियाँ उठाकर, धो-पोंछकर वापस नहीं रख दी जातीं, सब बैठे रहेंगे। बरतन धोने वाला साबुन घुला गर्म पानी और धोने के लिए उबलता पानी तैयार रखेगा। जब बच्चे बाहर खेलने चले जाएँगे तो कुछ बच्चे मोमजामे की पट्टियाँ धो-पोंछकर रख देंगे और फर्श की सफाई भी कर देंगे ताकि दोपहर की पढ़ाई के काम में कोई दिक्कत न आए। थालियाँ धोने वाला बच्चा और उन्हें पोंछकर रखने वाला बच्चा रसोईघर में काम करेंगे। सामान्य देखभाल करने

वाला बच्चा यह सुनिश्चित करेगा कि सब काम हुए हैं या नहीं। वह चूल्हे की सफाई भी करेगा और रसोईघर को व्यवस्थित करना भी उसकी ज़िम्मेदारी होगी। हमने अखबार के आलेखों का काम शुरू कर दिया। हमने बोर्ड पर उन चीज़ों की सूची बनाई जिन पर हम लिखना चाहते थे और सब बच्चों ने अपनी पसन्द के विषय चुन लिए। इस काम के लिए फिलहाल कुछ समय तक हम अँग्रेज़ी के पीरियडों का उपयोग करेंगे।

मंगलवार, 17 नवम्बर

आज मध्याह्न भोजन पकाने, परोसने, और उसके बाद सफाई में काफी सुधार रहा। यह सुधार सायास था क्योंकि कई बच्चों ने कहा, "आज हम कल से बेहतर थे, है ना?"

बुधवार, 18 नवम्बर

आज फ्रैंक के कारण मेरा दिल खुश रहा। वह लड़का सच में मुझे अज़ीज़ लगता है। आज उसने तय किया कि वह पाँच नन्हे लड़कों के साथ खाना खाएगा। उसने उन्हें ढंग से चम्मच पकड़ना सिखाया। उसने आलू के शोरबे की आखिरी बूँद तक उन्हें खिलाई। उसने शोर करने वालों को चुप कराया। लड़के फ्रैंक को पसन्द करते हैं। उसका उन पर अच्छा असर पड़ता है, खासकर एल्बर्ट पर।

शुक्रवार, 20 नवम्बर

आज तीनों लड़के वानिकी क्लब के सदस्यों को घुमाने ले गए। उन्होंने हमें हवा, पाले, बढ़ते वृक्षों और पानी से टूटकर मिट्टी बनते शिलाखण्ड दिखाए। लौटने पर हमने नमक के क्रिस्टल बनाए ताकि समझ सकें कि प्रकृति में यह प्रक्रिया कैसे होती है। कई बच्चों को स्फटिक के टुकड़े मिले हैं और वे यह सोचने पर मजबूर हुए हैं कि जो आकृति इन स्फटिकों की बनी वह क्योंकर बनी होगी!

गुरुवार, 26 नवम्बर

आज सुबह का काफी समय अखबार के आलेखों पर लगा। हमने लेख व्यवस्थित किए और बोर्ड पर यह योजना बनाई कि वे अखबार में कहाँ छापे जाएँगे। मैं छपाई के लिए उन्हें टाइप करवाऊँगी।

सोमवार, 30 नवम्बर

रैल्फ अगले दो सप्ताहों के लिए थालियाँ साफ करने वाला रहेगा। वह कुशलता से काम करता है और आज पहली बार दोपहर के सत्र से पहले उनसे सलटकर उसने रसोई भी व्यवस्थित कर दी थी। एण्ड्रयूस् बहनों पर खाना पकाने की ज़िम्मेदारी है और उन्होंने हर छोटी-छोटी बात पर बार-बार पूछताछ की। मुझे सुबह स्कूल शुरू होने से पहले उनके साथ अधिक समय बिताना होगा ताकि वे स्वतंत्र रूप से काम कर सकें।

मंगलवार, 1 दिसम्बर

आज एक नया लड़का आया। उसके साथ उसकी माँ भी आई, जिसने मुझे चेता दिया कि वह शरारती है और मुझे उसे सीधा करना होगा। फ्रेड लुत्ज़ तीसरी कक्षा में है। उसकी सुबह ठीक-ठाक कटी और उसने आसानी से दोस्त बना लिए। जोसेफ ने खराब व्यवहार किया। वह नए लड़के के सामने शान बघारने लगा, क्योंकि फ्रेड चुपचाप सुन रहा था। बाद में मैंने फ्रेड से बात की और कहा कि वह जोसेफ पर ध्यान न दे, क्योंकि वह जो कुछ भी करता-कहता है उसके लिए खुद ज़िम्मेदार नहीं है। पर हम समझदार हैं और वह सब नहीं कर सकते जो जोसेफ करता है।

बुधवार, 2 दिसम्बर

ओल्गा और एना ने आज अखबार की प्रतियाँ छापीं। जब वे छाप चुकीं तो हमें काम बन्द कर उसे पढ़ना पड़ा। बच्चे अपनी मेहनत के नतीजे से बड़े खुश थे। हमने अभिभावकों और दोस्तों के लिए क्रिसमस कार्ड बनाए। बच्चे ये कार्ड मोटे कागज़ पर बना रहे हैं। मैंने बच्चों को दो भागों में "निस्तब्ध रात्रि" गाना सिखाया। उन्होंने गीत को हार्मोनिका पर बजाना भी सीखा।

शुक्रवार, 4 दिसम्बर

इन बच्चों को खुद अपनी गतिविधियों की योजना बनानी चाहिए क्योंकि रुचि और उद्देश्य दोनों ही समग्र विकास के लिए आवश्यक हैं। सहायक क्लब व व्यक्तिगत बैठकों की मदद से वे उद्देश्य सहित योजना बनाने भी लगे हैं। आज हमने इस दिशा में एक और कदम बढ़ाया। हर सुबह मैं बोर्ड पर दिन की योजना

लिखती हूँ। इसके बाद हम उस पर चर्चा कर सबसे पहले क्या करेंगे यह भी तय कर लेते हैं। पर आज मैंने उन्हें खुद अपने दिन की योजना बनाने को कहा। जो किया जाना है उसकी हमने मौखिक रूप से सूची बनाई और तब उसे ब्लैकबोर्ड पर व्यवस्थित किया। बच्चों को लगा कि सुबह कमरा बेहद ठण्डा रहता है, इसलिए वही समय क्रिसमस पर गाए जाने वाले गीतों के अभ्यास के लिए सही है। सामाजिक अध्ययन के पीरियड में हम अपना क्रिसमस का नाटक तैयार कर रहे हैं। हमारा नाटक बाइबल में "ल्यूक" खण्ड के दूसरे अध्याय में दी गई क्रिसमस की कथा पर आधारित है। इस नाटक के बीच जगह-जगह हम उपयुक्त गीत गाएँगे।

सोमवार, 7 दिसम्बर

बच्चों ने अपना दिन सफलतापूर्वक नियोजित किया। अपने समूहों की योजना लेने के बाद बच्चों ने अपनी व्यक्तिगत गतिविधियों की सूची बनाई। एना ने एण्ड्रयूस् के साथ क्रिसमस नाटक की मंच सज्जा पर बात कर यह तय किया कि वे तैयारी कब से करेंगे। पोशाक समिति ने यह तय किया कि वे कब-कब मिलेंगे। रैल्फ और वॉरेन ने समय निकाला ताकि वे लकड़ी के कोठार को साफ कर दें क्योंकि कल नई लकड़ी आने वाली है। बच्चों ने अपने स्तर पर भी सूचियाँ बनाईं, जैसे "पृष्ठ 72 के गणित के सवाल करो . . . शुक्रवार के श्रुतिलेखों की भूलें सुधारो . . . एक क्रिसमस कार्ड बनाओ . . . लाइब्रेरी पुस्तक से एक अध्याय पढ़ना है।" काम पूरा करते ही वे सूची में दर्ज काम के सामने निशान लगाते जाएँगे। कई बच्चों ने इतनी लम्बी-चौड़ी सूची बना ली थी कि काम दिन भर में पूरा हो ही नहीं सकता था, सो नहीं हुआ। शाम को हमने इस बात पर चर्चा की कि हमने नियोजित काम कैसा किया।

मंगलवार, 8 दिसम्बर

आज हमने नाटक का अभ्यास किया। गायक टोली को अब नाटक में अपनी भूमिका समझ आने लगी है। अब इस टोली के बच्चे इस दुख से उबरने लगे हैं कि नाटक में उनकी संवाद बोलने की भूमिका नहीं है। सामान्यतः जिस समय हम पठन का काम करते हैं उस समय हमने अपने उपहार बनाने शुरू किए। बड़े बच्चे काँच पर आकृतियाँ बना रहे हैं, जिसे वे बाद में फ्रेम में मढ़ देंगे। छोटे बच्चे कपड़ों की लीरियों से गमले लटकाने वाले छींके बुन रहे हैं।

शुक्रवार, 11 दिसम्बर

इन बच्चों को ऐसा सामाजिक आचरण व दृष्टिकोण सीखना है कि वे अपने संगी-साथियों से सही बर्ताव करें और आत्मविश्वास और सन्तुलन से नई परिस्थितियों का सामना करें। हमने शारीरिक शिक्षा और पुस्तकालय के पीरियडों में इस पर खूब मेहनत की है। आज हमें यह अभ्यास करने का एक और मौका मिला। कोलम्बिया विश्वविद्यालय के दो शिक्षक हमसे मिलने आए। मैं बच्चों की प्रतिक्रिया देखने के लिए उन पर नज़र गड़ाए थी। वे न तो इससे परेशान थे न उत्तेजित और कई बार तो मुझे लगा कि उन्हें आगन्तुकों का भान तक नहीं था। कुछ ऐसे भी मौके आए जब वे शर्माए। क्लब की बैठक के समय रैल्फ की बोलती बन्द हो गई। मैंने उसकी कुछ मदद की, पहले सदमे के बाद शेष कार्यवाही बिना व्यवधान चली। ओल्गा ने न तो मेहमाननवाज़ी में भाग लिया, न चर्चा में शिरकत की। सहायक क्लब की बैठक में मेरी को कई सुझाव देने थे पर वह कुछ सँकुचा गई। इस पर वॉरेन को उसकी ओर से सुझाव रखने पड़े। बाद में मेरी ने मेहमानों से दोस्ती कर ली और हमारे काम के बारे में बताया। मार्था, हेलेन, रूथ और एण्ड्रयूस् बहनों ने उनसे सहजता व बेतकल्लुफी से बातचीत की। मेहमानों ने हमारे गर्म खाने की योजना में रुचि जताई और काफी समय रसोई में हमारे खानसामों को देखते हुए बिताया। जब मैं वहाँ झाँकने गई तो मे स्पैगेटी और टमाटरों में मनोयोग से मसाले डाल रही थी। उसने सिर उठा मुझे देखा और मुस्काई। मे में कुछ बेहद आकर्षक चीज़ है। उसमें हल्का-सा हास्यबोध भी है जिसे पोषित किया जाना चाहिए। डॉरिस भी स्वावलम्बी बनने लगी है। वह टमाटरों का एक डिब्बा खोल रही थी और डिब्बा खोलने के उपकरण को ठीक से चला नहीं पा रही थी। रूथ ने डिब्बा खोलने में मदद की पेशकश की। डोरिस ने जवाब दिया, "ना! बस मुझे बता दो कि कैसे करना है, फिर मुझे ही खोलने दो।" हमारे मेहमान सीखने-समझने की प्रक्रिया में सन्तुष्टि के महत्व को गहराई से समझते थे। उन्होंने कहा कि इतना बढ़िया स्पैगेटी व टमाटर उन्होंने पहले कभी नहीं खाए और इनमें मसालों की मात्रा बिलकुल सही थी। हमारी लड़कियाँ बेहद खुश हो गईं।

हमारे सहायक क्लब के नए पदाधिकारी चुने गए। वॉरेन अध्यक्ष है, एडवर्ड उपाध्यक्ष और ओल्गा सचिव। एडवर्ड के चुने जाने से मुझे खुशी हुई। वह इतने

कम काम अच्छी तरह से कर पाता है। उपाध्यक्ष का पदभार कठिन नहीं है, पर उसके साथ कुछ सम्मान जुड़ा हुआ है और वह सहायता करते हुए काफी कुछ सीख सकेगा। मुझे खुशी है कि समूह ओल्गा के महत्व को पहचान रहा है। और वॉरेन! तीन माह पहले वह अकेला और अतिसंवेदनशील बच्चा था जिसके कोई दोस्त नहीं थे। उसने न केवल अपने काम में खूब प्रगति की है बल्कि वह समूह का सबसे लोकप्रिय लड़का भी बन गया है।

सोमवार, 14 दिसम्बर

सामेटिस बच्चे शहर से लौट आए हैं, सब इससे बेहद खुश हैं। श्रीमती सामेटिस ने कहा कि शहर बच्चों को बड़ा करने के लिए ठीक जगह नहीं है। वे उन पर नज़र नहीं रख पाती थीं। जब हम दिन की योजना बना रहे थे तो बच्चों ने कहा कि वे सामेटिस बच्चों से उनके शहर के उस स्कूल के बारे में सुनना चाहेंगे जहाँ वे जाते रहे थे। वॉरेन ने न्यू ब्रनस्विक में शुक्रवार को जो कठपुतली नाटक देखा था उसके बारे में भी वे जानना चाहते थे। सोफिया ने अपनी बात काफी व्यवस्थित तरीके से रखी, पर वॉरेन ने समूचे समूह को पूरी तरह बाँध लिया। जब उसने बात खत्म की तो मेरी बोल पड़ी, "वाह! किस्सा सुनाना तो इसे आता है।"

मैंने आज जाना कि श्रीमति सामेटिस के चार भाई हैं। एक यूनान में डॉक्टर है, एक कायरो विश्वविद्यालय में प्रोफेसर है, तीसरा यरूशलम में पादरी है, और चौथा न्यू यॉर्क में सेल्समैन। श्रीमती सामेटिस अपने परिवार की अकेली ऐसी सन्तान थीं जिन्हें लड़की होने के कारण पढ़ाया-लिखाया नहीं गया। पर उन्होंने खुद को न केवल अपनी मातृभाषा यूनानी पढ़ना सिखा लिया, बल्कि अँग्रेज़ी पढ़ना भी। मुझे सामेटिस बच्चों की दक्षता अब समझ आने लगी है।

बुधवार, 23 दिसम्बर

पिछले कुछ दिन बेहद व्यस्त रहे हैं। हमने उपहार बनाकर पैक कर दिए हैं और कार्ड भी बन चुके हैं। हमारे क्रिसमस ट्री और मंच की जो कुछ सजावट करनी थी वह पूरी कर दी गई है। पर्दे टाँग दिए गए हैं और पोशाकें जाँच ली गई हैं। हमने नाटक का अभ्यास किया और गीत गाए। हरेक बच्चा मदद कर रहा था और खुश था। आखिरकार वह दिन आ गया है।

आज रात हमारा छोटा-सा कमरा मेहमानों से अटा पड़ा था। दो को छोड़ सभी माता-पिता आए। श्री हिल भी कोशिश कर समय से पहुँच गए। श्रीमती एण्ड्रयूस् भी आईं! वे इतने सालों से पास ही रहती हैं पर अब तक कभी स्कूल नहीं आई थीं। एण्ड्रयूस् बहनों को इससे बड़ी खुशी हुई।

ब्लेयर अकादमी के प्राचार्य डॉ. ब्रीड और उनकी पत्नी भी आईं। उन्हें नाटक अच्छा लगा और गायन भी पसन्द आया। डॉ. व श्रीमती ब्रीड हमारी मदद करना चाहते थे, सो उन्होंने पियानो के लिए कुछ पैसे दिए। पियानो की हमें सख्त ज़रूरत है।

मेरे पिता सैंटा क्लॉज़ बने और उन्होंने बच्चों को सन्तरे, मिठाइयाँ और खिलौने और अभिभावकों को उपहार बाँटे। बेहद खुशनुमा शाम गुज़री। दर्शकों को देख महसूस हुआ कि दोस्ताना वातावरण चारों ओर छाया है। हम अच्छे दोस्त बन चुके हैं, ये लोग और मैं।

गुरुवार, 24 दिसम्बर

सफाई में पूरी सुबह निकल गई। एक बजे बच्चे छुट्टियों के लिए घर लौट गए और स्कूल भवन सुनसान हो गया।

गुज़रे महीनों में कितना कुछ हुआ है। मैंने इन बच्चों के व्यक्तित्व को क्रमशः उभरते और कुछ आज़ाद होते देखा है। योजना बनाने, उन्हें सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने, समस्याओं को पहचानने और उन्हें सुलझाने की क्षमता उनमें पनपती देखी है। एक-दूसरे के साथ रहने व एक-दूसरे का सम्मान करने की काबिलियत उनमें आई है। मैंने कई तरह की गतिविधियों को प्रोत्साहित किया है ताकि हरेक बच्चे को कम से कम एक तरह की गतिविधि चुनौतीपूर्ण लगे और वह उसके ज़रिए हमारे समूह में अपना स्थान बना सके।

3

हमने वृद्धि की पीड़ाएँ झेलीं

सोमवार, 4 जनवरी 1937

आगामी कुछ माह मैं हरेक बच्चे का सहकार पाने की कोशिश करूँगी ताकि उसके काम के उद्देश्य तय हो सकें। छुट्टियों से पहले कई दिनों तक मैंने बच्चों की उपलब्धि परीक्षा लेने में आधा-आधा दिन लगाया था। इस पिछले सप्ताह मैंने उनकी परीक्षा पुस्तिकाओं को जाँचा और नतीजों के व्यक्तिगत ग्राफ बनाए। ये ग्राफ बच्चों की पहली परीक्षा के नतीजों के ग्राफ के ऊपर चिपके हैं ताकि हरेक बच्चा अपने व्यक्तिगत सुधार और तरक्की को देख सके। मैंने इनमें प्राप्तांक नहीं दर्शाए हैं। ग्राफ केवल यह बताते हैं कि विभिन्न विषयों में बच्चा ऊपर गया है या नीचे। बच्चों ने काफी प्रगति की है। रैल्फ ने तो हर विषय में महत्वपूर्ण तरक्की की है।

आज सुबह जब बच्चे स्वतंत्र रूप से काम कर रहे थे, मैंने एक-एक कर उनके साथ व्यक्तिगत सत्र किए ताकि मैं उनसे उनकी प्रगति और सुधार के उपायों पर बातचीत कर सकूँ। बच्चों को रंगीन ग्राफ पसन्द आए, खासकर इसलिए क्योंकि उनमें से ज़्यादातर ग्राफ सुधार इंगित कर रहे थे। निरन्तर प्रयत्न के लिए सुधार बड़ा भारी प्रोत्साहन सिद्ध होता है। इन सत्रों के बाद बच्चों ने अपनी प्रगति पुस्तकें बनाईं जिनमें वे ये ग्राफ और सुधार सम्बन्धी कामों के बारे में मेरे सुझाव दर्ज करेंगे। इन पुस्तकों में वे एक पन्ना ऐसा भी रखेंगे जिसका शीर्षक होगा "चीज़ें जिनको मैंने खुद किया"। इस माह वे इसमें कुछ छोटी-मोटी बातें भी दर्ज करेंगे जैसे खेलने के बाद बिना किसी के कहे खुद खिलौने को यथास्थान रखना। जैसे-जैसे उनकी प्रबन्धन क्षमता बढ़ेगी वे केवल उन बातों को दर्ज

करेंगे जिनमें वास्तव में प्रबन्ध शामिल हो, जैसे किसी समिति की अध्यक्षता।

क्रिसमस से पहले कस्बे में रहने वाली हमारे समुदाय की मित्र श्रीमती विल्सन ने कहा कि वे हमारे लिए मात्र दस डॉलर में पियानो की व्यवस्था कर सकती हैं। हम यह देख प्रसन्न थे कि उन्होंने एक अच्छा-सा पियानो भिजवा दिया था, जिसे दुरुस्त भी करवा दिया गया था। ज़ाहिर था कि हमें एक छोटा-सा संगीत सत्र भी करना पड़ा।

मंगलवार, 5 जनवरी

आज अद्‌भुत और रहस्यमय चीज़ें होती रहीं। खाना बनाने वालों ने सफाई का खास ध्यान रखा। रैल्फ ने दो बार उठकर दरवाज़ा बन्द किया, जिसे कोई लापरवाहीवश खुला छोड़ गया था। उसने पहले ऐसा कभी नहीं किया था, चाहे वह ठिठुरने क्यों न लगा हो। एडवर्ड ने अपने आप गुणा के कुछ संयोजन करने सीखे। कैथरीन ने पियानो को पॉलिश से चमकाया। क्यों भला? बात अचानक तब साफ हुई जब मैंने कैथरीन को अपनी प्रगति पुस्तक खोल उसमें यह दर्ज करते देखा, "जनवरी 5, जब कोको की ट्रे भर गई तो मैंने उसे परोसने में डॉरिस की मदद की।" वे सब जुटे हुए हैं कि अपनी सूची में कुछ जोड़ सकें। यही इन बच्चों का अगला कदम है।

शुक्रवार, 8 जनवरी

वॉरेन ने सहायक क्लब की बैठक की अच्छी अध्यक्षता की। वह आत्मविश्वास से भरा था और उसने चर्चा प्रोत्साहित की। एल्बर्ट बोला, "अध्यक्ष महोदय, हमें शारीरिक शिक्षा के पीरियड के बारे में कुछ करना चाहिए। इतना शोर मचता है कि हमारा सिर दुखने लगता है।" ठण्ड के कारण हमें अक्सर अन्दर ही खेलना पड़ता है। सुबह तो हम उस पीरियड में नाच लेते हैं, पर दोपहर बाद हर बच्चा कोई न कोई खेल खेलने लगता है, और तब मचता है शोर। सुझाव दिया गया कि खेल समिति कुछ समूह बनाए और उनके लिए खेल तय कर दे। हर समूह हर दिन खेल बदल सकेगा और समूह का स्वरूप सप्ताह भर बाद बदलेगा। मुझे नहीं पता कि इससे मदद मिलेगी या नहीं। कमरा बेहद छोटा पड़ता है, और हमारी संख्या इतनी है कि जब खेल में मज़ा आने लगता है तो अनचाहे ही शोरगुल मच जाता है।

सोमवार, 11 जनवरी

बच्चों को खेल समिति द्वारा बनाए समूह बिलकुल भी पसन्द नहीं आए। उनका कहना था कि टोलियों में बँटना उन्हें अच्छा नहीं लग रहा क्योंकि इससे कुछ लोग बड़े दुखी हो जाते हैं। अतः सुझाव यह आया कि हम रोज़ अपने समूह खुद बना लें। हरेक यह सुनिश्चित कर ले कि वह इधर-उधर न भटके और किसी न किसी समूह से वास्तव में जुड़ जाए। हमने सम्भावित खेलों की सूची बनाई। मेरी उनका चार्ट बना सूचना-पट्ट पर लगा देगी। जैसे-जैसे खेल समिति को नए खेल मिलेंगे, बच्चे उन्हें सूची में जोड़ते जाएँगे।

मंगलवार, 12 जनवरी

ग्राफ तथा काम सुधारने सम्बन्धी उपचारात्मक सुझावों से बच्चे अपनी मदद खुद कर पा रहे हैं। एडवर्ड कक्षाकार्य को बेहतर करने में जुटा है और प्रतिदिन यह बताता जाता है कि उसने कितना कर लिया है। वह संगीत के सभी पीरियडों में गाता है, और उनके अलावा भी। वह रोज़ कोयला लाता है और जो कुछ उसके हाथों गिरता है उसे उठाता भी है। रैल्फ भी सुधरने के सचेत प्रयास कर रहा है। वह चर्चाओं को ध्यान से सुनता है और उनमें सक्रिय हिस्सेदारी करता है। शब्दकोष लगातार काम में लिए जाते हैं। इन सर्दियों में अपना काफी समय हम अपने सीखने के तरीकों और उपकरणों को बेहतर बनाने के प्रयास में लगाएँगे।

बुधवार, 13 जनवरी

जब से मैंने पिनोकिओ की कहानी पढ़कर सुनाना समाप्त किया है हम लगातार उसे एक नाटक के रूप में प्रस्तुत करने की सम्भावनाओं पर विचार कर रहे हैं। हमने पन्द्रह दृश्यों की सूची बनाई है जिन्हें नाट्य रूप दिया जा सकता है। ज़ाहिर था कि हम इतना सब नहीं कर पाएँगे, अतः हम इनमें से छह ही चुनेंगे। मैंने बड़े बच्चों को छह समूहों में बाँट दिया है ताकि वे पटकथा लिख सकें। छोटे बच्चे अभी भी अपना घर बना रहे हैं और उसके बारे में कहानियाँ लिख रहे हैं। उनकी शब्द सूची इतनी लम्बी हो चुकी है कि आज हमें यह सुनिश्चित करने के लिए उसकी समीक्षा करनी पड़ी कि बच्चों को वे शब्द याद भी हैं या नहीं।

शुक्रवार, 15 जनवरी

आज वानिकी क्लब की बैठक के बाद जब हम घर लौटने की तैयारी कर रहे थे, तो मैंने पाया कि जिस क्यारी में हमने फूलदार कन्द बोए थे उसका बाड़ा नीचे गिरा पड़ा है और क्यारी में हर ओर पैरों के छाप हैं। कैथरीन और सोफिया ने बताया कि बड़े लड़के बाड़े का उपयोग ऊँची कुदान के लिए कर रहे थे। यह सुन मेरा तो दिन ही मटियामेट हो गया। दिन भर जो अच्छा हुआ था दिमाग से गायब हो गया। इन लड़कों ने ठीक इसी क्यारी को बनाने में कितना समय लगाया था, फिर वे ऐसा भला कैसे कर सकते हैं? वह काम उन पर लादा नहीं गया था और उन्होंने उसे स्वेच्छा से, मज़े से किया था।

सोमवार, 18 जनवरी

आज सुबह रैल्फ से मैंने अनुरोध किया कि वह कुछ देर मेरे पास बैठे। मैंने उसे बताया कि शुक्रवार को मैंने क्या देखा था। पर इससे आगे सवाल करती उससे पहले ही रैल्फ बोल पड़ा, "मुझे पता है वह किसने किया था। जॉर्ज, एण्ड्रयू, हेलेन, एल्बर्ट और फ्रेड।" "और तुम, तुम नहीं थे उनके साथ?" मैंने सवाल किया। उसने बताया कि न उसने न फ्रैंक ने इसमें हिस्सा लिया था। "रैल्फ, तुमने मुझे यह सब पहले क्यों नहीं बताया?" उसके उत्तर से मुझे लगा कि अच्छा हुआ जो यह घटना घटी। "फ्रैंक और मैंने उन्हें क्यारी में कूदते देखा था, और हमें लगा था कि उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए, सो हमने उन्हें कूदना बन्द करने को कहा। वे बात मान गए, सो मुझे लगा कि आपको बताने की कोई ज़रूरत नहीं है।" उन्होंने ठीक वही किया था जो उन्हें सिखाने की कोशिश मैं कर रही थी, कि वे अपनी समस्याएँ खुद सुलझाएँ। मैंने पाँचों बच्चों से कहा कि वे बाड़े की मरम्मत कर दें।

आज जब मेरी सहायक शिक्षिका आई तो मैंने उसे पूरा किस्सा सुनाया। उसका कहना था कि बच्चों को अब तक क्यारी में लगाए अपने श्रम से कोई सन्तुष्टि नहीं मिली थी। कोई परिपक्व व्यक्ति ही तात्कालिक आनन्द को दूर भविष्य के आनन्द के लिए मुल्तवी कर सकता है। यह बच्चों ने अभी सीखा नहीं है। साल भर बाद ही वे क्यारी के फूलों की सुन्दरता का आनन्द पाएँगे तथा आगन्तुक उनके मैदान की प्रशंसा करेंगे। तब शायद वे ऐसी विवेकहीन हरकतें नहीं करेंगे।

मंगलवार, 19 जनवरी

आज दोपहर वॉरेन, जॉर्ज और फ्रैंक ने चारों ओर पानी बिखेर दिया। बीच-बीच में मध्याह्न भोजन से सम्बन्धित अपने काम कोई भी नहीं करना चाहता; आज ठीक ऐसा ही दिन था। एल्बर्ट को चटाइयाँ उठाने को कहना पड़ा। मेरी ने उन्हें इतनी खराब तरह से साफ किया कि उसे फिर से सफाई करनी पड़ी। कैथरीन लगातार वॉरेन और फ्रैंक की शिकायत करती रही। अलमारियाँ अव्यवस्थित छोड़ दी गईं, तौलिए धोए नहीं गए, और चूल्हे पर से खाने के अवशेष साफ नहीं हुए। मैंने इस सब पर आज कोई बात नहीं की। मुझे लगता है कि कभी-कभार ज़्यादा टोकाटाकी ठीक नहीं रहती।

बुधवार, 20 जनवरी

आज मैंने रसोई में बच्चों की मदद की, उन्हें काम करने के अधिक आसान तरीके बताए। तौलिए धोने में दिक्कत इसलिए आती है क्योंकि गर्म पानी पूरा नहीं होता। आज जब तश्तरियाँ धोने का पानी तैयार हो गया तो हमने एक पुरानी बाल्टी में पानी गर्म किया ताकि तश्तरियाँ धोने वाले टब भी साफ किए जा सकें। इससे थोड़ी मदद मिली पर तब भी फ्रैंक ने कहा, "मुझसे यह काम नहीं होता। और मुझे यह अच्छा भी नहीं लगता है।"

कार्टराइट बच्चे पिछले कुछ दिनों से नहीं आए थे और आज पता चला कि उन्हें इनफ्लुएन्ज़ा हुआ है। असल में आज उनतीस में से सिर्फ सत्रह बच्चे ही उपस्थित थे। इस कारण भी गर्म खाने को लेकर परेशानियाँ पैदा हो रही हैं। बच्चे दो सप्ताह के लिए अपने-अपने काम करते हैं। दो सप्ताह शुरू होने के प्रारम्भ में मैं काम का सावधानी से निरीक्षण करती हूँ, ताकि बच्चे उन्हें ढंग से करने लगें। पर इतने बच्चे अनुपस्थित हो जाते हैं तो बच्चों को अपने काम के अलावा दूसरे काम भी करने पड़ते हैं और मैं चाहकर भी सबकी मदद नहीं कर पाती। इस कारण बच्चों को काम कठिन और अरुचिकर लगने लगता है। फिर हमारी कोई प्रभावी कार्य योजना भी नहीं है। सच यह है कि मुझे भी उतना ही सीखना है जितना बच्चों को।

शुक्रवार, 22 जनवरी

जब हम अपनी दैनिक योजना बनाने लगे तो कई बच्चों ने कहा कि आज संगीत

सुबह सबसे पहले रखना चाहिए, क्योंकि पिछले कई दिनों से दूसरे कामों के दबाव में संगीत छूटता रहा है। मैंने समूह को छपी लिपि देखकर पढ़ने के बारे में कुछ मूल बातें सिखाईं। इसमें सबको मज़ा आया, शायद इसलिए कि यह कुछ नया था। यहाँ तक कि लड़कों ने भी गाया।

सोमवार, 25 जनवरी

हमें फ्रेड के साथ कुछ परेशानी होती रही है। वह किसी न किसी से लड़ता रहता है। फ्रेड अपनी उम्र से अधिक परिपक्व है। उसके घर जाने पर मैंने जाना कि वह सुबह स्कूल आने से पहले छह गायों को दुहता है। वह काम के बाद कपड़े नहीं बदलता, सो उससे गौशाला की गन्ध आती है। ये लोग कड़ी मेहनत में डूबे रहते हैं। उन्हें उस दुनिया को देखने की फुर्सत तक नहीं मिलती जिसमें वे जीते हैं। परिवार का प्रबन्धन अच्छा नहीं है। श्रीमती लुत्ज़ ने बताया था कि उन्हें यह खेत पसन्द नहीं है और वे शायद ज़्यादा नहीं रहेंगी। मैंने बाद में सुना कि श्रीमती लुत्ज़ लगातार स्थान बदलती रहती हैं। जब खेत बिक्रियाँ होती हैं तो अपने बिखरे बालों, पुरुषों के जूतों और उजड्ड भाषा के कारण वे अजीब-सा दृश्य पेश करती हैं। बच्चे फ्रेड की पृष्ठभूमि को मुझसे बेहतर जानते थे और यही कारण है कि उसे समूह द्वारा स्वीकार किए जाने में दिक्कतें आ रही हैं।

मंगलवार, 26 जनवरी

दिन समाप्त होने को था जब मैंने सप्ताहान्त पर बनाई कठपुतली "मसखरे विलफ्रेड" को पेश किया। कठपुतली कैसे चलाई जाती है, यह दिखाने और हरेक को कुछ अभ्यांस का मौका देने के बाद मैंने पूछा कि कौन स्वेच्छा से दो मिनट उसका खेल दिखाएगा। कुछ बहादुर बच्चों – हेलेन, मेरी, वॉरेन, रूथ और एण्ड्रयू ने कोशिश की। हम सब खूब हँसे। हमें यह नन्हा जोकर बड़ा प्यारा लगता है! सभी बच्चे अब कठपुतलियाँ बनाना चाहते हैं। उन्होंने डोरियों वाली कठपुतलियों की किताब बड़े ध्यान से देखी जो मैंने पुस्तकालय वाली मेज़ पर रख दी थी।

बुधवार, 27 जनवरी

गर्म खाने की व्यवस्था में मैं काफी वक्त लगाने लगी हूँ और यह मुझे थका देता है। मुझे लगता है मानो मैं तीन घेरों वाला सर्कस संचालित कर रही हूँ।

मिसमॉरन ने पहले ही कहा था कि इस साल गर्म खाना देने में काफी दिक्कत आएगी क्योंकि पिछले दो सालों से जो लड़कियाँ कुशलता से यह कार्यक्रम चला रही थीं वे हाई स्कूल चली गई हैं। लगता है अब कुशल कार्यकर्त्ताओं का समूह गढ़ना मेरा काम है।

इस महीने हमने सीखा कि कैसे हमें कई चीज़ें नहीं करनी हैं। आज एना हमारी उन पड़ोसन के यहाँ जाना चाहती थी जिनकी मशीन हम सिलाई के लिए काम में ले रहे हैं। वह अपनी सिलाई पिछली रात क्लब के समय पूरी नहीं कर पाई थी। मैंने उसे याद दिलाया कि उसे भोजन में रूथ की मदद करनी है, तो वह बोली, "अब खास करने को बचा ही नहीं है। जो करना है रूथ कर लेगी।" तब भी वे दोनों खड़ी रहीं जबकि चावल जलकर पेंदे से चिपक गए और कैथरीन को आधे घण्टे तक रगड़-रगड़कर भगोना माँजना पड़ा। बच्चों ने दोनों लड़कियों को साफ-साफ सुना दिया कि वे उनकी पाककला के बारे में क्या सोचते हैं।

गुरुवार, 28 जनवरी

हार्मोनिका का अभ्यास तेज़ी से बढ़ रहा है। आज हमने "यैंकी डूडल" बजाना सीखा। मैं बच्चों को यह भी सिखा रही हूँ कि संगीत निर्देशन कैसे दिया जाता है। कई बच्चों ने वाद्य वृन्द निर्देशन किया और अच्छा ही किया।

शुक्रवार, 29 जनवरी

बिचले समूह ने अपनी इतिहास की पुस्तक *दोज़ हू डेयर्ड* (जिन्होंने साहस किया) पूरी की। बच्चों को यह किताब इतनी अच्छी लगी कि उन्होंने अन्तिम कुछ अध्याय पढ़कर सुनाने को कहा था। जब मैंने आखिरी वाक्य पढ़ किताब बन्द की तो मेरी भावुक हो बोली, "यह बेहद खूबसूरत किताब थी।"

बच्चों की प्रगति पुस्तिका के "चीज़ें जिनको मैंने खुद किया" वाले पृष्ठों में मेरी खास रुचि रही। बच्चों ने जो चीज़ें लिखी हैं उनमें से कुछ ये हैं:

मेरी की गणित में मदद की।

पर्दा खींचा ताकि कैथरीन की आँखों पर धूप न आए।

रसोई साफ की।

मैंने पर्ल से कहा कि वह बुदबुदाकर न पढ़े।

पुस्तकालय से रद्दी कागज़ हटाए।

पकाने में खूब मेहनत की।

अलाव का निचला दरवाज़ा बन्द किया ताकि कमरा बहुत गर्म न हो जाए।

बरतन धोने के लिए गर्म पानी हो, यह सुनिश्चित किया।

जब हम टेन-पिन्स खेल रहे थे उस वक्त फ्रेड को लड़ने से रोका।

जब खेल में कोई भी "वह" नहीं बनना चाह रहा था तो मैं उदारता से "वह" बना।

मैंने क्लब बैठक की कार्यवाही लिखना याद रखा।

खेल के समय खेल शुरू करवाया।

पिनोकिओ नाटक में अपना हिस्सा मेहनत से लिखा।

दरी बुनने में प्राथमिक समूह के बच्चों की मदद की।

हेलेन से कहा कि वह पियानो पर न खेले और उसी समय हेलेन से कहा कि वह अपनी किताब में न लिखे।

शब्दकोष का जो पन्ना निकल गया था उसे वापस रखा।

खुद को व्यस्त रखा।

दरवाज़े से कोट उठाकर टाँगे।

सोमवार, 1 फरवरी

जैसे-जैसे बच्चों ने अपना काम खत्म किया हरेक ने *वीकली रीडर* के अपने संकलन के लिए मोटे कागज़ की जिल्द बनाना शुरू किया। हम भूगोल का कोई खास औपचारिक अध्ययन नहीं कर रहे। मुझे लगा कि हम इस अखबार के माध्यम से बच्चों के लिए सार्थक भूगोल का कुछ अध्ययन कर पाएँगे। मैंने यह भी सुझाया कि अगर हमारे पास दुनिया का बड़ा नक्शा हो तो हम उन स्थानों की पहचान कर सकते हैं जिनके बारे में हम पढ़ रहे हैं। मेरे पास एक फटा-पुराना 4' x 9' आकार का दुनिया का नक्शा था। सोफिया, हेलेन और रूथ ने कहा कि वे उसे मोटे ब्राउन पेपर पर ट्रेस कर देंगी।

आज रैल्फ ने कोई भी काम करने से इन्कार कर दिया। मैंने उसे एडवर्ड से कहते सुना, "यह उसका काम है, उसे इसके पैसे मिलते हैं। मिस हैनसन (किसी दूसरे स्कूल में उसकी शिक्षिका) हमेशा अपना काम खुद करती थीं।" मुझे

काफी समय से पता था कि कुछ बच्चे ऐसा सोचते हैं। मुझे पता नहीं कि इस बारे में मुझे क्या करना चाहिए। मैं यह भी नहीं जानती कि तत्काल कुछ किया जा भी सकता है या नहीं। दृष्टिकोण में बदलाव लाने में समय लगता है और ऐसा धीरे-धीरे ही होता है।

मंगलवार, 2 फरवरी

रैल्फ, फ्रैंक और एडवर्ड ने अपने काम करने से खुल्लम-खुल्ला इन्कार कर दिया। सो स्कूल के बाद मुझे बड़े लड़कों से बात करनी पड़ी। मैंने उन्हें यह समझाने की कोशिश की कि हमारे जैसे स्कूल में सबको काम में हाथ क्यों बँटाना पड़ता है। मैंने उन्हें यह विचार करने को कहा कि शाला को साफ और व्यवस्थित रखने में पूरे समूह को कितना समय लगता है और अगर एक ही व्यक्ति यह सब करे तो कितना समय लगेगा। गन्दगी और अव्यवस्था के लिए मैं खुद ज़िम्मेदार नहीं, पर फिर भी सफाई में हर दिन हाथ बँटाती हूँ। अगर मैं अकेले ही सफाई करूँगी तो हमें अपनी अधिकांश गतिविधियाँ बन्द करनी होंगी क्योंकि सब कुछ करना एक इन्सान के लिए असम्भव हो जाएगा। अगर हम दिन भर अपनी मेज़-कुर्सियों पर बैठे रहें तो सफाई करना भी काफी आसान होगा। "यह स्कूल तो अन्ततः तुम्हारा है, और मेरे जाने के बाद भी कई सालों तक तुम्हारा ही रहेगा। जो चीज़ें तुम्हारी हैं उन पर तुम्हें गर्व होना चाहिए, क्योंकि ये आखिर यह भी तो बताती हैं कि तुम किस तरह के व्यक्ति हो।" इस समय तक उनकी गर्दनें झुक गई थीं, और मुझे खुद पर शर्म आने लगी थी। सच, कभी-कभी लगता है कि मैं कुछ ज़्यादा ही बोलती हूँ।

बुधवार, 3 फरवरी

फ्रैंक के मुँह से फिर से "जी, बिलकुल" सुनना अच्छा लगा। उसने आज अपने तयशुदा कामों से कहीं अधिक काम किए, और दूसरे लड़कों ने भी यही किया। आज स्कूल की आत्मा ही बदली-बदली नज़र आ रही थी। और जब भी किसी लड़के ने मुस्कुराकर मेरी ओर देखा, मुझे लगा मानो हमारी आपसी समझ और भी गहरा गई हो। और जब से गर्म खाना परोसा जाने लगा है, तब से आज पहली बार लगा कि सब कुछ मैं ही संचालित नहीं कर रही।

नव वर्ष के बाद आज माताओं के साथ हमारी दूसरी बैठक हुई। पिछली बैठक

में मैंने उन्हें बच्चों की प्रगति परीक्षाओं के नतीजों के ग्राफ दिखाए थे और उन्हें समझाया था कि हम उनका उपयोग कैसे कर रहे हैं। वे बच्चों के काम में हुए सुधार से प्रसन्न थीं और उसमें रुचि दिखा रही थीं। उन्होंने प्रगति पुस्तिकाओं के शेष पन्ने पलटकर देखे। तब हमारे गर्म भोजन पर चर्चा की। उन्होंने विमर्श किया कि इसके लिए और पैसे कैसे जुटाए जा सकते हैं। श्रीमती विलियम्स ने कहा कि अगर कोई नाटक खेला जाए तो उन्हें उसमें भूमिका करना अच्छा लगेगा। वे जब हाई स्कूल में पढ़ती थीं उसके बाद से उन्होंने किसी नाटक में हिस्सा नहीं लिया था। "कितना मज़ा करते थे हम, याद है ना!" उन्होंने पूछा।

काउंटी पुस्तकालय में लाइब्रेरियन की मदद से हमने एक हलका-फुलका हास्य नाटक लिया। नाटक था *हाउ द स्टोरी ग्रू* (कहानी कैसे बढ़ती गई)। आज रात हम श्रीमती थॉमसन के घर मिले और श्रीमती हिल ने हमें नाटक पढ़कर सुनाया। हम इतना हँसे कि आँखों से आँसू निकल आए। क्योंकि हमारे पास नाटक खेलने वाली माताओं की संख्या पर्याप्त नहीं थी, हमने दो हाई स्कूल छात्राओं को भी आमंत्रित किया।

गुरुवार, 4 फरवरी

आज सिलाई क्लब की बैठक के लिए लड़कों ने भी रुकना चाहा। कुछ लड़कियों ने अपने फ्रॉक काटे, और कुछ ने अपने शमीज़ों पर सिलाई की, लड़कों ने कठपुतलियों की सिलाई की; उनका आग्रह था कि वे उसी मशीन पर सिएँगे जो श्रीमती मून ने हमारे लिए जुगाड़ दी थी। बड़ी गड़बड़ी मची क्योंकि हमें पर्याप्त संख्या में सूइयाँ और पिनें नहीं मिलीं और हमारी संख्या इतनी अधिक थी कि हम एक-दूसरे के काम में बाधा डालते रहे। बच्चों को बेहद मज़ा आया।

आज रात मैं श्रीमती ब्रीड से मिली और वे जानना चाहती थीं कि वे हमारे लिए और क्या कर सकती हैं। अचानक मुझे सूझा . . . एक नौजवान बढ़ई . . . भला पहले क्यों नहीं सूझा! "क्या आपकी अकादमी में कोई ऐसा लड़का है जो हमारे लिए कठपुतली नाटक के लिए लकड़ी का मंच बना दे?" मैंने पूछा। श्रीमती ब्रीड ने वादा किया कि वे पता करेंगी। घर लौटते समय मैं सोच रही थी, "हाँ, किसी एकल-शिक्षक शाला की अध्यापिका को ठीक यही तो करना चाहिए – जो वह स्वयं नहीं जानती उसे सिखाने-पढ़ाने के लिए दूसरों को आमंत्रित करना चाहिए।"

कल शाम मैंने अपनी सहायक शिक्षिका मिस एवरेट के साथ बिताई – यह विचार करने के लिए कि इन बच्चों के लिए अगला चरण, खासकर सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम में, क्या होना चाहिए। अब तक यह अध्ययन औपचारिक रहा है और हम अपनी पाठ्यपुस्तकों के हिसाब से चलते रहे हैं। उपलब्ध सामग्री का श्रेष्ठतम उपयोग हो सके, इसकी चेष्टा भी करती रही हूँ। पर बच्चों के समक्ष कोई वास्तविक उद्देश्य नहीं रहा है। बच्चों ने न तो सवाल ही पूछे, न ही योजना बनाने में भागीदारी की। हमने स्वयं से पूछा, "हम इन बच्चों को सवाल पूछना कैसे सिखाएँ? उनकी जिज्ञासा को जगाने में मदद कैसे करें? उनके अधिगम को एक-दूसरे से कटे तथ्यों के निष्क्रिय संकलन के बदले सक्रिय कैसे बनाएँ?"

मिस एवरेट का मानना था कि भ्रमण नए अनुभव पाने की आवश्यकता की पूर्ति करेगा। विभिन्न प्रकार के भ्रमण पर बात करने के बाद हमने तय किया कि बच्चों को डॉयल्सटाउन स्थित संग्रहालय ले जाया जाए। इससे हम बच्चों के मन में पायोनियरों (जो सर्वप्रथम बीहड़ इलाकों में जाकर बसे थे) के जीवन के प्रति रुचि को और पैनी बना सकेंगे। बच्चे जिस विषय में रुचि रखते हैं उसके बारे में अधिक पूछते हैं तथा और जानना चाहते हैं। अब क्योंकि हम दोनों ने ही इस संग्रहालय को देखा नहीं था, हमने तय किया कि हम शनिवार को वहाँ जाएँ ताकि पता लगा सकें कि वहाँ बच्चों के देखने लायक क्या-क्या है।

ऐसे भ्रमण से हम कई परिणामों की उम्मीद कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि बच्चे अपना नियत पाठ पढ़ने मात्र की बजाय अधिक जानकारी के लिए दूसरी किताबें देखें। हम चाहते हैं कि बच्चे उस स्थान के बारे में अधिक जानें जहाँ वे रहते हैं। संग्रहालय अधिक दूर नहीं है और वहाँ अध्ययन किया जा सकता है। बच्चे तब ज़्यादा सीखते हैं जब वे चीज़ों को देख सकते हैं और उनके बारे में सोचते हुए उन्हें अपने साथ जोड़ सकते हैं, बजाय इसके कि वे उनके बारे में अमूर्त रूप से सोचें। इस भ्रमण के दौरान हम बच्चों की बात सुनेंगे और वह तलाशने की चेष्टा करेंगे जो उन्हें चुनौती भरा लगे। यह काम मैं बड़े तथा बिचले समूहों के बच्चों को साथ जोड़कर करूँगी। बच्चों से मेरा परिचय अब बढ़ चुका है, सो मैं काम को ऐसी दिशा दे सकूँगी कि प्रत्येक बच्चा अपनी क्षमता के अनुसार प्रगति कर सके। इसके अलावा हमें साथ-साथ काम करने के लिए अधिक समय भी मिलेगा।

शनिवार, 6 फरवरी

मिस एवरेट और मैं डॉयल्सटाउन गए और हमने पाया कि संग्रहालय ठीक वैसा है जैसा हम चाहते थे। डॉयल्सटाउन के आसपास पायोनियर जीवन के जो अवशेष मिले हैं, वे वहाँ संकलित हैं। हमने संग्रहालय के पुस्तकालय में रखी कुछ किताबें देखीं-पढ़ीं। हमने पाया कि हमारे कस्बे के प्रारम्भिक दौर पर काफी रोचक सूचनाएँ उनमें हैं। हमने कुछ नोट्स भी बनाए।

सोमवार, 8 फरवरी

यदा-कदा हम जब दैनिक योजना बनाते हैं तो बच्चे भी सुझाव देते हैं। इससे हमारा दैनिक कार्यक्रम धीरे-धीरे बदलने लगा है। हम स्कूल मैदान की बात कर रहे थे, और बच्चों को लगा कि अगर हमें बसन्त ऋतु में बाहर काम करना है तो हमें अपने खेल मैदान की योजना पर केन्द्रित काम करना होगा। वॉरेन बोला, "आज ही शुरू करते हैं।" फिर उसने जोड़ा, "तो विज्ञान हम सोमवार को क्यों नहीं करते? सब कुछ शुक्रवार को ही होता है।" मेरी ने ध्यान दिलाया, "विज्ञान तो हम वानिकी क्लब में भी करते हैं ना।" सो हमने आज सुबह विज्ञान की कक्षा रद्द करने का निर्णय लिया। कार्यक्रम में निम्नलिखित बदलाव किए गए।

प्रतिदिनः 8:55 से 9:10, दिन का कार्यक्रम बनाना।

सोमवारः 9:10 से 9:25, "ग" समूह (प्राथमिक समूह) का विज्ञान (शेष सप्ताह सामाजिक अध्ययन); 9:25 से 10:00, समूह "क" व "ख" (बड़े बच्चों के समूह) का विज्ञान (सप्ताह के बाकी दिन सामाजिक अध्ययन)।

बुधवारः लड़कियों के लिए नृत्य।

गुरुवारः लड़कों के लिए नृत्य (अगर मौसम सही हो तो बाहर, अन्यथा कक्ष में ही अभ्यास)।

शुक्रवारः 11:20 से 12:00, *वीकली रीडर* तथा *करेन्ट इवेन्ट्स* (ताज़ा घटनावृत) पर चर्चा; 11:40 से 12:00, पुस्तकालय।

बुधवारः 11:40 से 12:00, स्वास्थ्य।

सोमवार व शुक्रवारः बड़े बच्चों के लिए गायन ("क" तथा "ख" समूह); छोटे बच्चे साथ गाएँ या सिर्फ सुनें।

बुधवारः प्राथमिक समूह ("ग" समूह) के लिए गायन। बड़े बच्चे सहायता करें।

मंगलवार व गुरुवारः हार्मोनिका बजाने का अभ्यास।

दिन के अन्त में जब व्यायाम का पीरियड चले, उस दौरान बच्चों के साथ व्यक्तिगत विचार-विमर्श बैठकें।

पिछले तीन सप्ताह से हम *होम एण्ड गार्डन* (घर व बाग) पत्रिका व बीज कैटेलॉगों का अध्ययन करते रहे हैं और स्कूल मैदान के सौन्दर्यीकरण की अपनी व्यक्तिगत योजनाएँ और विचार दर्ज करते रहे हैं। रैल्फ, वॉरेन, सोफिया, एना, रूथ और मेरी स्कूल मैदान के दो बड़े (6' x 3') नक्शे बना रहे हैं। एक नक्शे में मैदान जैसा आज है यह दर्शाया जाएगा, और दूसरे में हम उसे जैसा बनाना चाहते हैं। आज हमने अपने विभिन्न विचारों पर बातचीत की। हमने खेलने का स्थान, रॉक गार्डन, और शौचालयों के पास की जगह पर निर्णय लिए। यह सारी बातें हमारे बड़े नक्शे पर दर्ज कर ली जाएँगी।

मंगलवार, 9 फरवरी

श्रीमती ब्रीड आज श्री विल्सन को अपने साथ स्कूल लाईं। यह नौजवान कठपुतलियों के बारे में जानता है। श्री विल्सन ने हमारी कपड़े की पुतलियों के नाप लिए। उन्होंने कहा कि वे मुलायम लकड़ी लाएँगे और लड़कों को सिखाएँगे कि उससे पिनोकिओ और उसके दो मित्रों की कठपुतलियाँ कैसे तराशी जाएँ। बच्चे उन्हें घेरकर खड़े हो गए और मुँह बाए सुनते रहे। उनके जाने पर उन्होंने कहा, "कितना अच्छा लड़का है वह।"

शनिवार, 13 फरवरी

डॉयल्सटाउन निकलने में देर हो गई क्योंकि आखिरी वक्त श्री प्रिन्लैक ने कहा कि वे अपने बच्चों को नहीं जाने देंगे। मैं खुद उनके घर समझाने गई क्योंकि प्रिन्लैक बच्चों को ऐसे अनुभव की ज़रूरत सबसे अधिक है। उन्हें डर था कि बच्चों को चोट लग जाएगी। मैंने समझाने की कोशिश की कि वे वहाँ वह सब सीख सकेंगे जो घर बैठे सीखा नहीं जा सकता। पर यह उपाय भी कारगर नहीं रहा। उन्होंने मुझे याद दिलाया कि वे स्वयं यूरोप के सभी देशों में घूमे थे, पर उन्हें इसका कोई फायदा नहीं हुआ। "और वैसे भी स्कूल तो बकवास है। बच्चों को जितना कम स्कूल जाना पड़े, उतना ही बेहतर है। आज शनिवार है। स्कूल

की तो छुट्टी है।" सो हमें प्रिन्लैक बच्चों के बिना ही जाना पड़ा और मैं बेहद दुखी हुई।

संग्रहालय में बच्चों ने अपनी आँखें खुली रखीं और वह सब भी देखा जिस पर हमने पिछले शनिवार गौर तक नहीं किया था। उन्होंने बार-बार "यह क्या है?" का सवाल किया। किस कौतूहल व उत्सुकता से उन्होंने एक-एक चीज़ देखी और कितना अच्छा आचरण किया!

संग्रहालय से लौटते समय हम एक खान पर रुके और वहाँ से अपने स्कूल के संग्रहालय के लिए टैल्क और अभ्रक (बायोटाइट व मस्कोवाइट दोनों), सर्पेन्टाइन, सोपस्टोन, ग्रैफाइट, कैल्साइट व एस्बस्टॉस के नमूने लिए। बच्चों को खान इतनी अच्छी लगी कि उन्हें वहाँ से निकालना ही मुश्किल हो गया।

सोमवार, 15 फरवरी

जैसे ही हम शाला भवन में घुसे रैल्फ ने बताया कि उसने अपने पिता के साथ नक्शे पर डॉयल्सटाउन देखा और वह रास्ता भी तलाशा जिस रास्ते से हम गए थे। रैल्फ ने हमारे न्यू जर्सी और पेन्सिलवेनिया के नक्शे पर वह रास्ता दिखाया और अन्य बच्चे भी अपनी-अपनी प्रतिक्रियाएँ बताने लगे।

मैंने बच्चों को खुलकर बात करने को प्रोत्साहित किया ताकि पता चले कि उनकी सर्वाधिक रुचि किस चीज़ में थी और वे किस बारे में और जानना चाहते हैं। जिस कमरे में कठपुतलियाँ थीं उसने सबका ध्यान आकर्षित किया था। रैल्फ को इण्डियन अवशेष अच्छे लगे। सोफिया को कताई कक्ष अच्छा लगा। एना को बैलगाड़ियाँ और घोड़ागाड़ियाँ आकर्षक लगीं। वॉरेन को बन्दूकें अच्छी लगीं। अधिकतर समय बच्चे सिर्फ अपने संस्मरण सुना रहे थे। यह संकेत न मिल पाया कि उन्होंने जो देखा उसके बारे में वे और जानना चाहते हैं।

आज श्री विल्सन आए और उन्होंने ढाई से साढ़े चार बजे तक लड़कों के साथ काम किया और उन्हें मोहे रखा। दो घण्टों तक बच्चों का ध्यान केन्द्रित रखना बहुत मायने रखता है। उन्होंने संक्षेप में बात समझाई, क्या करना है वह करके दिखाया और तब सबको काम पर लगा दिया। आरियों का कुशल व सुरक्षित उपयोग उन्हें सिखाया। जाने से पहले उन्होंने बच्चों को ठीक से समझा दिया कि सप्ताह के शेष दिन उन्हें क्या-क्या करना है।

मंगलवार, 16 फरवरी

आज शाम मिस एवरेट के साथ यह सोचते बिताई कि आगे कौन सी दिशा पकड़नी है। बच्चों को किताबों से प्यार है, अतः हमने आखिरकार यह तय किया कि जो कुछ हमने देखा उसके बारे में कुछ किताबें मिस एवरेट ले आएँ। इधर-उधर कुछ पढ़ने से शायद उनकी जिज्ञासा जगे।

बुधवार, 17 फरवरी

मिस एवरेट काफी सारी किताबें लाईं और पुस्तकालय की मेज़ पर रख गईं। खाने के बाद बच्चे उन्हें देखने लगे। वे उन चीज़ों के चित्र दिखाने मेरे पास आते रहे जो उन्होंने केवल संग्रहालय में ही नहीं बल्कि वहाँ जाते हुए रास्ते में देखी थीं, जैसे डेलवेयर नहर। वॉरेन, रूथ, एना, सोफिया, कैथरीन, डॉरिस और मे ने तकरीबन दो घण्टे किताबों के साथ बिताए। हेलेन और मेरी ने अधिक समय नहीं लगाया। ओल्गा के अलावा बाकी प्रिन्लैक बच्चों ने किताबों में झाँका तक नहीं। उनकी बात समझ में आती है।

शुक्रवार, 19 फरवरी

दिन के काम की योजना बनाने के बाद हमने मिस एवरेट द्वारा लाई गई किताबों पर बात की। हर बच्चे ने अपनी पसन्द का कोई चित्र दिखाया और उस पर बात की। जब भी मौका मिला, मैंने पूछा, "मैं सोच रही थी कि आसपास के वयस्क लोगों के पास ऐसी चीज़ें हैं या नहीं?" मे ने बताया कि उसके पास डल्सीमर नामक तार वाद्य है। कई बच्चों ने कहा कि उनके पास लकड़ी से बने प्याले और मक्खन निकालने की बिलौनियाँ हैं। मेरी ने कहा, "शायद हम अपना संग्रहालय बना सकते हैं।" कई बच्चों ने समुदाय के बुज़ुर्गों की बात बताई। मैंने सुझाया कि बच्चों को उनसे मिलना चाहिए। शायद हम भ्रमण के लायक अन्य स्थलों का पता भी लगा सकते हैं।

आज दोपहर हमने अपने रॉक गार्डन का काम शुरू किया। हमारे यहाँ पत्थरों को जोड़कर और बैठाकर बनाई गई एक पंक्ति है। जब सड़क चौड़ी की गई थी तो वह मिट्टी से अच्छी तरह ढँकी हुई थी। यह सड़क के किनारे छायादार जगह है। हमें पत्ते साफ करने पड़े और झाड़ियाँ हटानी पड़ीं। बाहर काम करने के लिए यह अच्छा दिन था और बच्चे काफी खुश थे।

मंगलवार, 23 फरवरी

बच्चों ने संग्रहालय के लिए चीज़ें इकट्ठी करना शुरू कर दी हैं। हमारे पास एक मक्खन-छाप, एक मक्खन-साँचा और एक पुराना गुलदान आ चुका है। किसी ने एक पालना देने का वादा किया है। मे अपना तानपुरा लाने वाली है।

बुधवार, 24 फरवरी

आज हमने अपने समुदाय के अतीत पर कुछ देर बातचीत की। रैल्फ ने बताया कि उसने सुना है कि स्कूल के सामने वाला मार्ग पहले ओल्डटाउन को जाने वाली घोड़ागाड़ी का मार्ग हुआ करता था। बच्चों को लगा कि पहाड़ के ऊपर से ओल्डटाउन जाने वाली यह सड़क वहाँ जाने के लिए अधिक कठिन रास्ता है। वे वहाँ से क्यों नहीं जाते थे जहाँ से हम आजकल जाते हैं? मैंने सुझाया कि अगर हम यह पता लगा सकें कि पायोनियर लोग यह कैसे तय करते थे कि रास्ते कहाँ बनेंगे, तो शायद हमें अपने सवाल का उत्तर मिल जाए। हम मिस एवरेट द्वारा लाई किताबों पर लौटे और मैंने बच्चों की पठन क्षमता के हिसाब से ये किताबें बाँट दीं। बच्चे दो-तीन के समूहों में बैठ यह जानने की कोशिश करने लगे कि पायोनियरों के ज़माने में यात्रा कैसे की जाती थी। उन्हें यह पता नहीं था कि वे सामग्री कैसे तलाशें, सो मैंने उन्हें विषय सूची और तालिका का उपयोग करना सिखाया। हमने बोर्ड पर कुछ मुख्य शब्दों की सूची बना ली ताकि वे "यात्रा" के अलावा दूसरे शब्दों के सहारे भी सूचना तक पहुँच सकें। मैं बच्चों को व्यक्तिगत स्तर पर यह बताने लगी कि नोट्स कैसे लिए जाते हैं।

रूथ ने बताया कि उसकी माँ कुछ ऐसे लोगों को जानती हैं जो हमें कस्बे के बारे में बता सकते हैं। एण्ड्रयूस् बहनों और रैल्फ ने हमें दो अन्य लोगों के नाम बताए। रूथ ने जोड़ा कि उसकी माँ का सुझाव है कि हम अपने सवाल तैयार करके ले जाएँ ताकि लोगों को हमें वह बताने में आसानी हो जो हम जानना चाहते हैं। माताएँ सच में शिक्षकों की मददगार बन सकती हैं!

शुक्रवार, 26 फरवरी

आज हमने अपने कठपुतली नाटक की तैयारी पूरी गम्भीरता से शुरू कर दी। हमने नाटक को दुबारा पढ़ा और पात्रों की सूची बनाई। हर बच्चे ने अपनी पसन्द का किरदार चुना। जहाँ किसी एक भूमिका के एक से ज़्यादा दावेदार

थे, वहाँ उन्हें जाँचा गया और बच्चों ने खुद निर्णय लिया। सब पिनोकिओ की भूमिका चाहते थे और जाँच के बाद सोफिया को यह किरदार दिया गया। एना इस पर रोने लगी और बोली कि अगर पिनोकिओ का किरदार उसे नहीं मिला तो वह नाटक में हिस्सा नहीं लेगी। रूथ बोली, "ऐसा ही एना पिछले साल भी करती थी। अगर उसकी नहीं चलती थी तो वह सहयोग नहीं करती थी। पर यह तो हमारे साथ न्याय नहीं है और न ही यह एना के लिए अच्छा है कि हर बार उसी की चले।" दिन खत्म होने को था, हम सब थके हुए थे, सो मैंने सुझाया कि हम यह मसला सोमवार तक के लिए मुल्तवी कर दें। तब शायद हम इसे दूसरी तरह से देख पाएँ। रैल्फ और फ्रैंक के अलावा सभी बच्चे नाटक में हिस्सा लेना चाहते हैं। वे दोनों दृश्य सज्जा और प्रकाश व्यवस्था करना चाहते हैं।

सोमवार, 1 मार्च

सुबह साढ़े नौ बजे दरवाज़े पर झिझक भरी दस्तक हुई, और जब मैंने द्वार खोला तो आँसुओं से सना चेहरा लिए एक अस्तव्यस्त-सा लड़का वहाँ खड़ा था। उसने मुझे एक मुड़ा-तुड़ा लिफाफा थमाया, जो पहले बन्द रहा होगा पर अब खुला था। मैंने पत्र निकालकर पढ़ा। उसमें लिखा था कि पत्र वाहक पाँचवीं जमात का नया शिक्षार्थी है। साथ ही लिखा था कि मुझे उसके साथ जैसा ज़रूरी बन पड़े वैसा बर्ताव करने की अनुमति है क्योंकि थॉमस एक बदमिज़ाज और झूठ बोलने वाला लड़का है। पत्र में मुझे उस पर कड़ी नज़र रखने को कहा गया था। "तुमने यह पढ़ा है?" मैंने थॉमस से पूछा। उसने हाँ कहा। मैंने उसके सामने ही पत्र की चिन्दी-चिन्दी कर दी और कहा कि हमारे लिए उसका कोई मतलब नहीं था क्योंकि इस शाला में हम किसी व्यक्ति को उसके काम से आँकते हैं, दूसरों की उसके बारे में राय से नहीं। हमने उसे एक मेज़ दी और काम पर लगा दिया।

आज एना के साथ बात करने का कुछ समय मिल सका। दरअसल यह बड़ी सहजता से हो गया। दोपहरी को हम दोनों कुछ पल अकेले थे। मैंने कहा, "एना, नाटक में तुम्हारी भूमिका पर निर्णय नहीं हो सका। समूह इसकी चर्चा करे, इससे पहले मैं तुमसे कुछ बात करना चाहती थी।" मैंने समझाया कि समूह उसके बारे में क्या सोचता है यह बताना मेरे लिए ज़रूरी नहीं है। पर मुझे क्या लग रहा है यह जानना शायद उसे ठीक लगे। मैंने छोटी-छोटी बिना सोचे-समझे की गई कई बातें उसे याद दिलाईं जो अपने आप में महत्वपूर्ण नहीं थीं, पर कुल मिलाकर

एक ऐसे इन्सान की छवि बनाती थीं जिसे लोग आसपास नहीं चाहते। तब मैंने तमाम अच्छी बातें भी याद कीं जो उसने की थीं। मैंने कहा, "तुम सक्षम लड़की हो, एना। समूह तुम्हारी कीमत तब समझेगा जब तुम सब कुछ जितना अच्छा कर सकती हो वैसे करो।" एना ने जाने से पहले कहा कि वह ऐसा इन्सान बनने की कोशिश करेगी जिसके साथ जीना आसान हो। उसने नाटक में दूसरी भूमिका स्वीकार ली।

माताएँ सप्ताह में दो बार अलग-अलग घरों में इकट्ठी हो नाटक का अभ्यास कर रही हैं। आज सब मौज में थीं। श्रीमती थॉमसन और श्रीमती विलियम्स ने हमारे लिए "आइरिश धोबन" का नाच किया। इनेज़ जोन्स केक लाईं।

गुरुवार, 4 मार्च

पिछले तीन दिनों से हम सामाजिक अध्ययन के पीरियड में यह शोध कर रहे हैं कि पायोनियरों के ज़माने में यात्रा कैसे की जाती थी। इन बच्चों को उपयोगी सामग्री छाँटना सिखाना कठिन काम है। बावजूद इसके कि साल की शुरुआत में हमने काफी समय ठीक यही सीखने में लगाया था, बच्चे पूरे के पूरे पन्नों को उतार लेना चाहते हैं। किसी विषय पर सामग्री इकट्ठा करना किसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए सामग्री निकालने से भिन्न लगता है।

आज बड़ा व्यस्त और थकाऊ दिन था। मैं सुबह आठ बजे आई थी। तब से शाम छह बजे ड्रेस रिहर्सल तक बाहर निकलने तक का वक्त नहीं मिला। लड़कियों ने माताओं के नाटक के लिए पर्दे लगाने में और चीज़ों की व्यवस्था करने में मदद की। नाटक की जानकारी देने की, खाने-पीने के सामान की और टिकटों की पूरी ज़िम्मेदारी माताओं ने खुद सम्हाल ली है। यहाँ तक कि शहर से अतिरिक्त कुर्सियों तक की व्यवस्था उन्होंने कर ली है।

शुक्रवार, 5 मार्च

जब बड़े बच्चे यात्रा का अध्ययन कर रहे थे, मैंने छोटे बच्चों के साथ लगभग एक घण्टा बिताया। उनका खेलघर अब तैयार है। उन्होंने छोटी-छोटी मेज़-कुर्सियाँ आदि बनाई और रँगी हैं। उन्होंने दरियाँ बुनी हैं जिनमें से एक कुण्डलियों वाली दरी है। लड़कियों ने पर्दे सिए हैं, बिछौने बनाए हैं, और घरेलू साज़ो-सामान तैयार किया है। हमने अधिकतर समय खेलघर बनाने के उनके

अनुभवों की कहानियों को लिखने में लगाया। बच्चों को लिखने का काफी अनुभव मिल चुका है। इससे लेखन से जुड़े आवश्यक कौशलों में सुधार हुआ है। प्राथमिक स्तर के बड़े बच्चे अब सही लम्बाई की मौलिक कहानियाँ लिखने लगे हैं।

आज शाम का प्रदर्शन अच्छा रहा। रैल्फ के जीजा ने सामुदायिक गायन में नेतृत्व किया। नाटक के बाद उसने गिटार बजाया और काऊबॉय गीत सुनाए। सामेटिस परिवार की सबसे बड़ी बेटी ने एक इतालवी ऑर्गन-वादक के विषय में कुछ पढ़कर बताया। मध्याह्न के गर्म खाने के लिए माताओं ने पन्द्रह डॉलर इकट्ठे किए।

नाटक के बाद श्रीमती विलियम्स और मैंने बैठकर रैल्फ के बारे में बातचीत की। उन्होंने कहा कि उन्हें इस बात की खुशी है कि उनके अलावा भी कोई रैल्फ को पसन्द करता है। उन्होंने मुझे बताया कि वे जब से इस इलाके में आई हैं उन्होंने रैल्फ के बारे में भयानक कहानियाँ सुनी हैं। "रैल्फ के अन्दर कुछ अच्छे गुण भी हैं, मेरा यह विश्वास है," वे बोलीं, "पर कोई संवेदनशील और धैर्यवान व्यक्ति ही उन्हें बाहर निकाल सकता है।" मैंने उनसे कहा कि रैल्फ दूसरे जीवन्त लड़कों से बुरा नहीं है। असल में, कई बार तो उसका व्यवहार बहुत अच्छा रहा है। "इस साल वह पहले की तरह गैराज की ओर भी नहीं जाता," श्रीमती विलियम्स ने टिप्पणी की। "वहाँ जो आदमी हैं वे उसे छेड़ते हैं और बेहूदी भाषा का इस्तेमाल करते हैं। यह तो किसी भी लड़के के लिए अच्छा नहीं है। और फिर उसका पिता भी तो उसे ठीक से नहीं सम्हालता।"

सोमवार, 8 मार्च

आज सुबह बड़े बच्चों ने यात्रा के बारे में जो कुछ वे पढ़ रहे थे उस पर बातचीत की। दूसरी बातों के साथ उन्होंने यह भी पता लगाया था कि पुराने मार्ग ठीक वहीं बनाए गए थे जिन रास्तों पर इण्डियन लोग आया-जाया करते थे। उन्होंने यह भी पढ़ा था कि वे उद्योग जो यात्रा से जुड़े थे प्रारम्भिक उद्योगों में से थे। उन्होंने इस बात पर चर्चा की कि तब गाड़ियाँ ऐसे बनाई जाती थीं कि वे ऊबड़-खाबड़, कच्चे मार्गों पर चल सकें। मैंने पूछा कि क्या वे अन्य प्रारम्भिक उद्योगों के बारे में भी कुछ जानते हैं। बच्चों ने कुछ कयास लगाए तथा और जानकारी इकट्ठा करने की इच्छा जताई।

श्री लॉरेंज़ो हमारे 4-एच क्लब के एजेंट हैं। वे हमारे खेल मैदान के सौन्दर्यीकरण की योजनाओं में रुचि जताते रहे हैं। उन्होंने कहा कि वे हमारी मदद करने के लिए श्री ब्लैकबर्न को स्कूल में आमंत्रित करेंगे। श्री ब्लैकबर्न लैण्डस्केप विशेषज्ञ हैं। आज वे पधारे। उन्होंने कहा कि हमारी योजना बिलकुल सही और स्पष्ट है। हम शाला भवन के चारों ओर फूलों की क्यारियाँ नहीं बना सकते क्योंकि छत का छज्जा टपकता है। मैदान के चारों ओर क्यारियाँ बनाने से खेलने की जगह में से करीब छह फुट ज़मीन कम हो जाएगी जबकि मैदान वैसे ही छोटा है। जंगल का दृश्य छिपाना नहीं चाहिए बल्कि वहाँ कुछ सफाई की ज़रूरत है। बाहरी भवनों को हरा रंग देना चाहिए ताकि वे पृष्ठभूमि में घुलमिल जाएँ, और उनके इर्द-गिर्द हमें झाड़ियाँ और देवदारु के पेड़ बोने चाहिए। शाला भवन के कोनों में झाड़ियाँ लगाने पर भवन अधिक स्थायी लगेगा। ये सब हमारे प्रश्नों के जवाब थे। श्री ब्लैकबर्न को रॉक गार्डन व दरवाज़े के दोनों ओर गुलाब की लताओं का हमारा विचार भी अच्छा लगा। उनकी सलाह थी कि हम स्थानीय झाड़ियाँ ही लगाएँ। उन्होंने खाद डालकर पेड़-पौधों को कैसे बोया जाए, यह भी समझाया। उनका सुझाव था कि स्कूल में यह सब करने के बाद बच्चे अपने घरों में भी ठीक ऐसी ही चीज़ें करें। वे भी यह समझते हैं कि हमारे समुदाय के पास बहुत कुछ ऐसा है जो सभी के जीवन को समृद्ध कर सकता है।

श्री विल्सन कठपुतलियाँ बनाने में लड़कों की मदद करने आए। उन्होंने रैल्फ से कहा, "ठीक है, रैल्फ, अब तुम जान चुके हो कि यह कैसे किया जाता है। अब तुम दूसरों की मदद करो।" उन्होंने रैल्फ को सिखाया कि टोली में काम कैसे बाँटा जाए, सबके काम को दिशा कैसे दी जाए, गलतियाँ हों तो उन्हें कैसे सुधारा जाए। उन्होंने अगले सोमवार तक रैल्फ को इस काम का मुखिया बना दिया। उन्हें लगता है कि रैल्फ एक अच्छा लड़का और लायक शिष्य है। मैं श्री ब्लैकबर्न और विल्सन को हमारे लड़के-लड़कियों के साथ काम करते देखती रही और मेरे मन में उनके प्रति गहरी श्रद्धा और प्रशंसा का भाव उपजा। वे चन्द सरल शब्दों में अपनी बात सामने रख देते हैं और आचरण में वांछित बदलाव के बीज बो देते हैं। वे अपने उद्देश्य बिलकुल साफ देख पाते हैं और उनके प्रयास उन्हीं उद्देश्यों की दिशा में केन्द्रित होते हैं। काश मैं भी यही कर पाती। अक्सर मुझे लगता है कि मैं "विनि द पूह" और उसके दोस्त "पिगलेट" की तरह हूँ, जो किसी अस्पष्ट वस्तु की तलाश में झाड़ी के इर्द-गिर्द घूमते रहते हैं।

गुरुवार, 11 मार्च

छोटे बच्चे भी कठपुतली मंचन की माँग करते रहे हैं। क्योंकि डोरेवाली कठपुतलियाँ चलाना कठिन है सो मैंने उनके साथ हाथ कठपुतलियों का इस्तेमाल करने का फैसला किया। मैंने उन्हें कहा कि वे मंचन के लिए कहानी का चुनाव कर लें। उन्होंने यह बात इतनी गम्भीरता से ली और वे खोज में कुछ यों जुटे कि बड़े बच्चों में से एक को कहना पड़ा, "इतनी चुप्पी है कि लगता है मानो सारे नन्हे घर चले गए हों।"

शुक्रवार, 12 मार्च

प्राथमिक समूह के बच्चे यह तय नहीं कर पाए कि उन्हें "जो बाइज़ नेल्स" (जो ने कील खरीदे) या "हैन्सेल और ग्रेटेल" में से किस कहानी को नाटक का रुप देना है। आखिरकार उन्होंने "हैन्सेल और ग्रेटेल" को चुना क्योंकि दूसरी कहानी में दृश्य बार-बार बदलता है।

पिछले कुछ सप्ताहों से वानिकी क्लब की बैठकें बढ़िया चल रही हैं। हम विविध प्रकार के पत्थर इकट्ठा कर उनकी पहचान कर रहे हैं। आज हमने अपने व्यक्तिगत संग्रहों को प्रदर्शन के लिए प्लाईवुड पर सजाने का काम शुरू किया।

शनिवार, 13 मार्च

हमारे अखबार का दूसरा अंक इतना लम्बा है और हेक्टोग्राफी में इतना फैलावड़ा मचता है कि इच्छा हुई कि छापे की मशीन को ही घर ले आऊँ और स्कूल के बदले वहीं छपाई पूरी करूँ। एना और रूथ कल रात मेरे साथ घर आईं। आना दरअसल ओल्गा को था, पर उसके पिता ने अनुमति नहीं दी तो उसकी जगह रूथ आई। लड़कियों के लिए यह अच्छा अनुभव होता है क्योंकि उन्हें घर से बाहर समय बिताने का मौका ही नहीं मिलता। एना ने हिसाब लगाया कि एक अखबार छापने में हमें कितना समय लगता है। समूचे अखबार को टाइप करने में सात घण्टे लगे और उसकी पैंतीस प्रतियाँ छापने में साढ़े चार घण्टे लगे। इस तरह, लेख लिखने के समय को न जोड़ें तब भी तकरीबन बारह घण्टे लगते हैं। पर क्योंकि हम साल में केवल तीन अंक ही छापने वाले हैं, हमें लगता है कि इस पर लगाए गए प्रत्येक पल का सच में अच्छा उपयोग हुआ है। बच्चों के अधिकतर लेखन को एक उद्देश्य देने में और समुदाय को स्कूल से

परिचित करवाने में इसकी जो कीमत है उसे नापा नहीं जा सकता।

दोपहर में हम लोग मेरे पिता के फार्म पर घूमते रहे, जहाँ हमें क्वॉर्ट्ज़ के स्फटिक, बलुआ पत्थर, सलेटी पत्थर, चूना पत्थर और चकमक पत्थर मिले। हमने अपने संग्रहालय के लिए उन्हें इकट्ठा किया। काश मैं यह अक्सर कर पाती। एक शिक्षक और बच्चों के बीच इस तरह से घनिष्ठता आ पाती है।

सोमवार, 15 मार्च

आज पहला काम जो हमने किया वह था अपने अखबार को पढ़ना। पढ़ना खत्म किया ही था कि थॉमस, नया लड़का, बोल उठा, "वाह! क्या अखबार है।" उसकी आकस्मिक घोषणा से सब खुशी से खिलखिला उठे।

आज दोपहर बच्चों को दो हिस्सों में गाना सिखाने का पहला प्रयास किया। श्रीमती विलियम्स लगभग इसी दौरान आईं और उन्होंने बताया कि स्कूल के बाहर गायन की आवाज़ें कितनी अच्छी लग रही थीं। कई लड़के अब भी गहरी आवाज़ में गाते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि लड़कों को ऐसे ही गाना चाहिए। मैं छोटे लड़कों को ऐसे तैयार करने की कोशिश करूँगी कि संगीत के प्रति उनका दृष्टिकोण ज़रा सही हो।

सोमवार, 22 मार्च

आज हमने अपना पहला द्विभागीय गीत गाया; एक प्यारी-सी फ्रेंच लोक धुन। बच्चों को दो हिस्सों में गाना पसन्द आ रहा है। कुछ लड़कियाँ संगीत को काफी अच्छे ढंग से पढ़ने लगी हैं। सोफिया हमारी चहेती निर्देशिका बनती जा रही है।

स्कूल के बाद मेरे भाई ने लड़कों को शाला भवन के द्वार के दोनों ओर भूर्ज की जालियाँ बनाना सिखाया।

मंगलवार, 23 मार्च

आज लड़कियों को अपनी किताबों में कुछ नमूनों के चित्र मिले और उनका कहना था कि वे उन्हें बनाना चाहेंगी। कई लड़के कॉनेस्टोगा नामक गाड़ियों और घोड़ागाड़ियों के नमूने बनाना चाहते हैं। जॉर्ज की इच्छा लकड़ी के पात्र तराशने की है। मैंने इस सूची में एक और बात जोड़ी। मैंने कहा कि वे पायोनियर जीवन के कुछ दृश्यों के चित्र भी बना सकते हैं जिन्हें हम दीवार पर

लटकाएँ। इससे हमारे कमरे की सुन्दरता बढ़ेगी और उसमें हमारी रुचि भी बढ़ेगी। एना और सोफिया ने फौरन यह काम करने की इच्छा जताई। इनमें से कुछ गतिविधियाँ आज ही शुरू कर दी गईं। फ्रैंक दोपहर भर रैल्फ के कानों में विद्रोही स्वर फूँकता रहा। जब सब बाहर खेलने गए तो मैं फ्रैंक के साथ बैठी। आजकल उसका चहेता जुमला है "क्या फायदा?"। मैंने उससे हरेक चीज़ के "फायदे" की बात की। मैंने कहा, "फ्रैंक, हरेक गतिविधि में भाग लेने की कोशिश करो। जब हम किसी चीज़ का हिस्सा बनते हैं तो हमें अकेलापन महसूस नहीं होता।" बाहर जाते-जाते वह कह गया कि "मैं कोशिश करूँगा।" स्कूल के बाद रैल्फ और रूथ ने मुझे समुदाय के तीन बुज़ुर्गों के घर तक ले जाने में मदद की ताकि हम उनसे साक्षात्कार की बात तय कर सकें। रैल्फ ने कहा कि फ्रैंक भी आना चाहता है। हम चारों ने अच्छा समय बिताया, अधिकांश बातचीत फोर्ड कम्पनी की गाड़ियों के गुणों पर होती रही।

गुरुवार, 25 मार्च

हमारी सहायक क्लब की बैठक में कैथरीन ने प्रस्ताव रखा कि, क्योंकि बसन्त का मौसम आ गया था, खेल समिति बाहर की गतिविधियों की योजना बनाए, जैसा पतझड़ के समय किया गया था। समूह का फैसला था कि उसकी बैठक गुरुवार को ही हो क्योंकि यदि समितियों को मिलने की ज़रूरत हो तो वे शुक्रवार को मिल सकती हैं और हम बिना समय ज़ाया किए सोमवार को काम शुरू कर सकेंगे। नई खेल समिति का गठन किया गया। उसमें एल्बर्ट को भी चुना गया क्योंकि बच्चों को लगा कि छोटे बच्चों का भी कोई प्रतिनिधि खेल समिति में होना चाहिए।

शनिवार, 27 मार्च

आज सुबह सोफिया, कैथरीन, ओल्गा, जॉर्ज और मैं श्री हैरल्ड स्मॉल से मिलने गए। फ्रैंक को भी हमारे साथ चलना था पर ओल्गा ने बताया कि शायद उसकी तबीयत खराब है। जब हमने श्री स्मॉल से मिलना तय किया था तो हमने उनके पास अपने सवालों की एक सूची छोड़ी थी। आज वे उनके जवाबों की तैयारी के साथ मिले। जॉर्ज को छोड़ सबने बातचीत अपनी कॉपियों में दर्ज की। कैथरीन खास तौर पर सजग थी और उसने ढेरों सवाल पूछे। श्री स्मॉल ने हमारे गाँव की प्रारम्भिक बसावट के बारे में काफी कुछ बताया। लौटते हुए हम लट्ठों

से बने उस कोठार को देखने रुके जिसके बारे में श्री स्मॉल ने हमें बताया था। वह पूरी तरह लट्ठों से बना था और आज भी अच्छी हालत में है। उसके मालिक ने हमें बताया कि यह कोठार लगभग दो सौ साल पुराना है।

दोपहर को डॉरिस, मे और रूथ मेरे साथ श्रीमती व श्री ब्राउन से मिलने गईं। वे वैली व्यू की प्रथम बसावट में रहते हैं और स्थानीय किस्सों की उनके पास भरमार है। उनके पास मूल पट्टा भी था, जिसकी हमने नकल कर ली। शाम साढ़े चार बजे एना, मेरी, हेलेन और एडवर्ड मेरे साथ श्री जॉन रेबर्न से मिलने शहर गए। उन्होंने हमें अपनी दादी की भोजन बनाने की विधियों के बारे में बहुत कुछ बताया।

मंगलवार, 30 मार्च

हरेक बच्चा छोटे से ईस्टर अवकाश के बाद लौट आया है। हमने शनिवार की मुलाकातों पर बात की। मैंने बच्चों से कहा कि उनके पास ऐसी कीमती जानकारी है जिसे उन्हें लिख लेना चाहिए क्योंकि हमें वह किसी भी किताब में नहीं मिलेगी। ये बुज़ुर्ग जब नहीं रहेंगे तो यह सारी जानकारी भी उनके साथ ही गुम हो जाएगी। हमने सारी सामग्री विषय के अनुसार बोर्ड पर सूचीबद्ध कर ली। बच्चों ने वे विषय चुन लिए जिन पर वे लिखना चाहते थे, और उन्होंने तय किया कि वे उनसे सम्बन्धित सूचनाएँ अपनी कॉपियों में दर्ज कर लेंगे। फ्रैंक पूरे दिन गुस्साए रहा। आज शाम वह खराब ढंग से खेला और मुँह फुलाए रहा। दूसरे बच्चे रॉक गार्डन में काम करने को आतुर थे पर उसने वहाँ काम करने से इन्कार कर दिया।

बुधवार, 31 मार्च

आजकल सुबह इतनी खुशनुमा होती है कि बच्चे रॉक गार्डन में काम करने की अनुमति चाहते हैं। आज हमने सभी बच्चों के लिए आधा घण्टा बाहर काम करने का समय निकाला। हम अलग-अलग टोलियों में काम करते हैं, हरेक टोली का एक "बॉस" होता है। कितना मज़ा आता है उन्हें इसमें! वे अपने काम को नाटकीय बना लेते हैं और श्रमिक बन जाते हैं। आज एक "बॉस" ने आकर मुझे सूचना दी कि 11:20 की टोली का समय हो चुका है। लड़के ऊँची कूद के लिए एक सैण्डपिट भी खोद रहे हैं। उन्हें भविष्य में कूदने के लिए बगीचों के

बाड़ों की दरकार नहीं होगी।

इससे पहले कि मैं उनमें शामिल हो जाऊँ, चौथे समूह के बच्चे अक्सर मिलकर अपना पाठ पढ़ चुके होते हैं। आज वॉरेन उनका इंचार्ज था और उन्होंने एक-दूसरे को खूब सिखाया। वे उन शब्दों को भी नहीं छोड़ते जिन्हें वे नहीं जानते हैं। वे अर्थ के बारीक से बारीक रूपों पर भी बात करते हैं। वे शब्दों की ताकत के प्रति सचेत होते जा रहे हैं।

गुरुवार, 1 अप्रैल

कल रात मैंने मिस एवरेट के साथ काम किया और हम दोनों को ही लगा कि छोटे बच्चों को नाटक खेलने और भाषा सम्बन्धी गतिविधियों को करने के पर्याप्त मौके नहीं मिल पा रहे हैं। वाक्य बनाने और लेखन की गतिविधियाँ तो वे कर रहे हैं, पर वार्तालाप का अवसर योजना बनाने के अलावा नहीं मिल पाता। हमें लगा कि छोटे बच्चों को कुछ व्यापक अनुभव भी मिलने चाहिए। इनमें से कोई भी बच्चा कभी रेलगाड़ी में नहीं बैठा है। हमें पता है कि उनकी इसमें रुचि होगी और हमने तय किया कि शुरुआत इसी से करना उचित होगा।

आज सुबह मैंने बच्चों से बात की, यह पता लगाने के लिए कि वे रेलगाड़ियों के बारे में क्या जानते हैं और मैंने पाया कि वे बहुत कम जानते हैं।

आज हमने रसोई की अलमारियाँ साफ करने का समय निकाला ताकि सब सामान तरतीब से अगले सत्र के लिए रख दिया जाए, क्योंकि अब हम इस सत्र में गर्म मध्याह्न भोजन नहीं करेंगे। बच्चे इन सुहाने दिनों में बाहर पिकनिक ही करना चाहते हैं।

कल से हमने बाहर खेलना शुरू कर दिया, जैसा हम पिछले पतझड़ के मौसम में कर रहे थे, और आज यह साफ हो गया कि बच्चों को साथ-साथ खेलना फिर से सीखना होगा। वे इतना लड़ते-झगड़ते हैं। फ्रैंक काफी गुस्साता रहा है और अक्सर वही फसाद शुरू करता है।

सोमवार, 5 अप्रैल

छोटे बच्चों ने उन सभी बातों की सूची बनाई जो वे रेलगाड़ियों के बारे में जानना चाहते हैं। हमने जानकारी प्राप्त करने के लिए कई रेल कम्पनियों को एक

सामूहिक पत्र लिखा। बच्चों ने पत्र लिखवाया, जिसे मैंने बोर्ड पर लिख डाला। फ्रेड, मार्था और वर्ना पत्र की प्रतियाँ बना रहे हैं।

बड़े बच्चों ने अपनी गतिविधियाँ पूरे ज़ोर-शोर से शुरू कर दी हैं। लड़कियाँ अपने नमूने बना रही हैं और लड़के संग्रहालय के लिए वस्तुएँ। एना दीवार पर लटकाने के लिए 3' x 4' का चित्र बना रही है। आज उसने उसका रेखाचित्र बनाया और उसे बड़े पैमाने में ब्राउन पेपर पर उतार लिया। उसके चित्र में कॉनस्टोगा नाम की पुरानी गाड़ी है जिसके पीछे दो बच्चे नंगे पैर चल रहे हैं। एना ध्यान से पायोनियर काल की वेशभूषा का चित्र ढूँढती रही ताकि उसके चित्र में वेशभूषा सही हो। उसने बहुत हल्ला मचाया क्योंकि उसे चित्र मिल नहीं रहा था। तब रूथ और ओल्गा ने उसकी मदद की और वेशभूषा के बारे में उसे कुछ पढ़कर सुनाया।

मंगलवार, 6 अप्रैल

और अब यह मे है जो नाखुश है! आज सुबह कुछ देर मैंने उससे बातचीत की। पिछले कुछ समय से वह न तो खेल में हिस्सा लेती है, न गाती है। वह मुँह लटकाए घूमती रहती है। उसका सामान्य आचरण ही मानो बदल गया है। मैं इतना ही जान पाई कि उसे लगता है कि कुछ लड़कियाँ उससे जलती हैं। कारण वह नहीं जानती। मैंने उससे कहा कि उसे यह चिन्ता छोड़ देनी चाहिए कि दूसरे क्या सोचते हैं और अपने काम का मज़ा लेना चाहिए। सारी सुबह वह उदास-सी रही पर हार्मोनिका अभ्यास के दौरान अचानक चटक हो गई और उसने समूह के निर्देशन में भी भागीदारी की।

मे अकेली नहीं है जिसे परेशानी हो रही है। चारों बड़ी लड़कियों को हमारे कस्बे के जंगली फूलों के चार्ट पर काम करना था, पर उनमें बहसबाज़ी हो गई। हरेक लड़की ने अन्य लड़कियों पर काम से जी चुराने का आरोप लगाया। मैंने पूछा कि क्या वे बिना लड़े काम का बँटवारा करने लायक बड़ी नहीं हो चुकी हैं? उन्हें लगा कि यह बात सही थी। और अन्ततः कोई निर्णय ले ही लिया। पर सिर्फ इतना भर ही नहीं हुआ। इन्तिहा तब हुई जब थॉमस और रैल्फ भिड़ गए। थॉमस ने कुछ ऐसा किया जो रैल्फ को पसन्द नहीं आया और रैल्फ ने तड़ाक से मुक्का जड़ दिया। थॉमस का पारा चढ़ गया और वह रैल्फ से जा भिड़ा। मैंने थॉमस की कलाइयाँ ज़ोर से पकड़ लीं। उसकी आँखें लाल थीं और दाँत किटकिटा रहे

थे पर उसने मेरा प्रतिरोध नहीं किया। मैंने उसे शान्त करने के लिए उससे यथासम्भव शान्त स्वर में बातचीत की, पर अन्दर से मैं खुद हिली हुई थी। मैंने कहा कि अगर वह गुस्से में कुछ करेगा तो बाद में उसे खुद को पछतावा होगा। थॉमस जब कुछ शान्त हो गया तब मैंने रैल्फ से बात की। उसने माना कि वह आपा खो बैठा था। मैंने कहा कि हम नए लोगों से कितना खराब बर्ताव करते हैं। हम उन्हें आसानी से स्वीकारते नहीं हैं और इससे वे भी हम से तालमेल नहीं बैठा पाते। रैल्फ बोला कि ऐसा नहीं है कि हम कोशिश ही न करते हों, पर नए लोग खुद पागलपन करते हैं। मैंने समझाया कि नए लोगों के पास इतनी आज़ादी नहीं होती। और उन्हें आत्मनियंत्रण की आदत सीखनी पड़ती है जो हमारे जैसी शाला में बेहद ज़रूरी होती है। मैंने रैल्फ को याद दिलाया कि साल के शुरुआत में खुद उसे कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ा था और सब ने उसके प्रति कितना धीरज दर्शाया था जब वह समूह के सदस्यों के साथ सहकार करना सीख रहा था। रैल्फ ने तय किया कि वह थॉमस के प्रति सहनशील बनने की कोशिश करेगा।

इस सब के बाद आज मेरा मन गड़बड़ा गया था और मैंने अपनी सहायक शिक्षिका मित्र का आश्रय लिया। हमने विस्तार से इस नन्ही शाला के "उतार-चढ़ावों" पर बात की, और मिस एवरेट के पास से लौटते समय मैं सम्हल चुकी थी। उन्होंने वही सब दोहराया जो मैं पहले सैकड़ों बार सुन चुकी हूँ, पर जब मैं रोज़मर्रा की उलझनों में बहक जाती हूँ तो परिप्रेक्ष्य ही खो बैठती हूँ। उन्होंने मुझे फिर से पटरी पर लौटने में मदद की।

अगर ये बच्चे किसी औपचारिक शाला के परिरक्षित माहौल में होते, जहाँ कोई सद्भावी तानाशाह होता, तो ये तमाम समस्याएँ स्कूल में नहीं उभरतीं। तब स्कूल अधिक सुचारू रूप से चलता। पर समस्याएँ तो तब भी होतीं ही। वे होतीं और बाद में शायद तब उभरतीं जब उनका समाधान करना भी असम्भव होता। ये समस्याएँ स्कूल में उठें तभी बेहतर रहता है, क्योंकि वहाँ कोई परिपक्व व्यक्ति मौजूद रहता है, जिसे भले ही काफी कुछ अभी सीखना हो, पर उसे कम से कम बच्चों की समस्याएँ सुलझाने के लिए मार्गदर्शन करने का प्रशिक्षण तो मिला ही होता है। किसी औपचारिक स्कूल में फ्रैंक, रैल्फ और थॉमस को अनुशासनात्मक समस्या के रूप में देखा जाएगा। यहाँ, अनुकूलन की समस्याओं के बावजूद, वे हमारे छोटे से समाज में अपना सकारात्मक योगदान करना सीख रहे हैं। वे

वांछनीय आचरण सीख रहे हैं। हमारी शाला एक नैसर्गिक सामाजिक परिस्थिति है और बच्चे इसमें सहज रूप से खपकर ज़िम्मेदार नागरिक बनना सीख रहे हैं। यह अभ्यास भविष्य में व्यापक समुदाय में सक्रिय भागीदारी में उनके काम आएगा।

बुधवार, 7 अप्रैल

छोटे बच्चे हमारे पुस्तकालय की किताबों में रेलगाड़ियों की कहानियाँ तलाशते रहे हैं। जब उन्हें कोई कहानी मिल जाती है तो वे उस किताब में निशान के लिए कागज़ लगा देते हैं और उसे मेज़ पर रख देते हैं। वे ढेरों कहानियाँ ढूँढ चुके हैं। जिन बच्चों ने अभी-अभी आना शुरू किया है, उन्होंने भी इसमें मदद की।

गुरुवार, 8 अप्रैल

मुझे पता चला है कि मे की बड़ी बहन को लेकर पिछली शिक्षिका को परेशानी झेलनी पड़ी थी। वह भी आत्मदया से ग्रस्त थी। उसे लगता था कि सब उसे नापसन्द करते हैं और जानबूझकर उसके साथ बदसलूकी करते हैं। यही कारण है कि हाई स्कूल में भी उसे कुछ खास पसन्द नहीं किया जाता। लगता है कि मे उसकी नकल कर रही है। काश मैं जानती कि इसके बारे में क्या करना चाहिए। दोपहर के घण्टे में मैंने मे के साथ बातचीत की और उसे बताने की कोशिश की कि लोग ऐसे लोगों को पसन्द करते हैं जो समूह का हिस्सा बनना पसन्द करते हैं और जो स्कूल को खुशमिज़ाज बनाने में अपनी इच्छा से योगदान देते हैं। मे ने सर्दियों भर इतनी मेहनत की है और समूह उसके विनोदप्रिय स्वभाव को सच में पसन्द करता है। जो वह महसूस कर रही है वह निराधार है। दोपहर बाद मे को दूसरे बच्चों के साथ खेलते देख मुझे अच्छा लगा।

रेलगाड़ियों से जुड़े जो सवाल नन्हों ने पूछे हैं वे अब एक चार्ट पर आ चुके हैं। आज हरेक बच्चे ने पढ़कर उनके जवाब तलाशने शुरू किए।

आज इतने सप्ताह बाद पता चला कि फ्रैंक जैसा बर्ताव कर रहा है उसका कारण क्या है। उसके पिता के पास घोड़ा नहीं है, न इतने पैसे कि वे एक घोड़ा खरीद सकें। वे खेत जुताई के लिए किसी को लगा भी नहीं सकते। सो उन्होंने हल को अपनी गाड़ी के पीछे लगा लिया है और जब वे गाड़ी चलाते हैं तो फ्रैंक

उसे सीधा रखता है। यह कहना कि यह कठिन काम है इसे नर्म शब्दों में व्यक्त करना है। पिछले दो सप्ताहों में फ्रैंक दोपहर को बीमार होने के बहाने तीन दिन तक लगातार घर लौटता रहा है, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि मुझे यह बात पता चले। उसकी कड़वाहट का यही कारण है।

शुक्रवार, 9 अप्रैल

आज जमकर बरसात हुई, सो हमें अन्दर ही सूरज की छटा खुद बनानी पड़ी। सुबह पहले हमने गीत गाए। ये बच्चे कितना सुन्दर गाते हैं! वे बड़े ध्यान से शब्दों का साफ उच्चारण करते हैं और भावनाओं के साथ गाते हैं। उन्होंने बाख की एक सुन्दर सुर पर बाइबल के आठवें भजन-गीत को गाया। वे वाद्यों की संगत के बिना गाते हैं और मेरे सभी निर्देशों का पालन करते हैं। इसके सौन्दर्य ने मुझे विह्वल कर दिया।

मैं रैल्फ को देख रही थी, जो गा नहीं रहा था, पर उसके चेहरे का एकाग्र भाव बता रहा था कि वह भी उद्वेलित था, जैसे बाकी सभी बच्चे भी थे। गाने के बाद कुछ पल कमरे में मौन छाया रहा, और तब – मेरी ने नाक सिनकी।

छोटे बच्चों ने अपनी माँओं को खत लिखा जिसमें उन्होंने मंगलवार को ट्रेन यात्रा पर जाने की अनुमति चाही। वे बेहद आतुर थे। हमने पहले बात की और तय किया कि पत्र में क्या लिखा जाएगा, और बोर्ड पर उन शब्दों को लिखा जिनकी वर्तनी उन्हें आनी चाहिए थी। हरेक बच्चे ने अपना पत्र खुद लिखा और मैंने भूल सुधारने में मदद की।

सहायक क्लब की बैठक में आज बखेड़ा हुआ। हाल में खूब विवाद होने लगे हैं। प्रिन्लैक और ओल्सेउस्की परिवारों के बीच खटपट चल रही है, और बच्चे ये झगड़े स्कूल ले आते हैं। ओल्सेउस्की बच्चों को रूथ से परेशानी है और रूथ को उनसे। सामेटिस बच्चों को रूथ और ओल्सेउस्की बच्चों से परेशानी है। मे को उन सबसे परेशानी है। फिलहाल यह विवाद लड़कियों तक सीमित है। मैं सोचने की कोशिश करती रही कि यह सब शुरू कैसे हुआ होगा।

सोमवार, 12 अप्रैल

आज रैल्फ बिगड़े मिज़ाज में स्कूल पहुँचा था। कई लड़कियों ने उसे छेड़ना शुरू कर दिया और उससे मामला और भी बिगड़ गया। कक्षाएँ प्रारम्भ होने से पहले

वह गेंद से खेलता रहा और असावधानी के कारण उसने खिड़की का एक काँच तोड़ डाला। उसने रूथ पर हुकुम चलाते हुए काँच साफ करने को कहा, लेकिन मैंने कहा कि यह काम उसी का है। उसने झाड़ू लगा काँच इकट्ठा किया, खिड़की पर लगे रह गए काँच को हटाया और पुट्टी को भी खरोंचकर निकाल दिया। शारीरिक मेहनत ने उसे शान्त कर दिया। वह जब कक्षा में लौटा तो हम गा रहे थे। मैं यह देखकर हैरान और खुश थी कि रैल्फ भी गाने लगा।

नन्हे बच्चों ने *हैन्सेल और ग्रेटेल* नाटक की कठपुतलियाँ तैयार कर ली हैं और आज उन्होंने पहली बार उन्हें चलाने का अभ्यास किया। वे काफी अनगढ़ तरीके से कठपुतलियों को चला रहे थे पर उन्हें मज़ा बहुत आया।

मंगलवार, 13 अप्रैल

छोटे बच्चों ने अपनी प्रस्तावित रेल यात्रा पर बातचीत की। उन्होंने वे सारे सवाल फिर से देखे जिन्हें वे स्टेशन के एजेंट और कण्डक्टर से पूछना चाहते थे। हमने यात्रा के दौरान अपने आचरण पर भी बात की।

मिस एवरेट और मैं चौदह छोटे बच्चों के साथ गए। स्टेशन पर बच्चों ने अपनी-अपनी टिकटें खरीदीं। उन्होंने डाकबाबू को रेलगाड़ी में डाक का थैला रखते देखा। एण्ड्रयू को झण्डा दिखा गाड़ी शुरू करने का संकेत देने का मौका मिला। यात्रा के दौरान हम गैप से गुज़रे और कण्डक्टर ने कई रोचक स्थानों की ओर इशारा किया। कण्डक्टर बच्चों में रुचि ले रहा था। वह बच्चों को भोजन कक्ष दिखाने ले गया और उसने उन्हें बैठक में बैठने की अनुमति भी दी। जेम्सबर्ग में हमने दूसरी गाड़ियों को स्टेशन पर आते देखा और सीटियों और सिग्नलों के बारे में जाना। वहाँ पाँच व दस सेंट वाली दुकान से हमने रेलगाड़ी की कुछ किताबें खरीदीं और सोडा स्टोर से आइसक्रीम ली।

जब मिस एवरेट और मैं छोटे बच्चों के साथ थे तो उस दौरान मिस होप्पॉक, जो एक सहायक शिक्षिका हैं, बड़े बच्चों को समुदाय के पुराने बाशिन्दे श्री लिविंगस्टोन के साथ साक्षात्कार के लिए ले गईं। बाद में उन्होंने नहर के किनारे पिकनिक की। जब हम लौटे तो बड़े बच्चे अपने अनुभव सुनाने को आतुर थे, और इसी तरह छोटे बच्चे अपनी यात्रा के अनुभव सुनाने को बेचैन थे। अगले आधे घण्टे दोनों समूहों ने अपनी-अपनी बात बताई।

गुरुवार, 15 अप्रैल

आज सामाजिक अध्ययन के पीरियड में बच्चों ने प्रारम्भिक स्कूलों पर चर्चा की। सबने चर्चा में हिस्सा लिया और आज उन्हें अब तक हुई तमाम चर्चाओं से कहीं अधिक मज़ा आया। श्री लिविंगस्टोन ने बच्चों को हमारे स्कूल के इतिहास के बारे में बताया था। जब वे खुद एक छोटे से लड़के थे उस समय स्कूल कैसा लगता था, वे कौन से खेल खेला करते थे, आदि।

मार्था ने कल रात ट्रेन यात्रा के बारे में एक कहानी लिखी और उसे स्कूल लेती आई। इससे बाकी बच्चों में भी कहानी लिखने की इच्छा पैदा हुई। मार्था ने कहा कि वह रेलगाड़ी पर एक किताब बनाना चाहती है। यह विचार सबको पसन्द आया। मार्था ने छोटे बच्चों को उन शब्दों के हिज्जे बताए जो वे नहीं जानते थे। इस बीच मैं बड़े बच्चों के साथ काम करती रही। क्लब बैठक के दौरान बच्चों ने अपने खेल के बारे में एक और निर्णय लिया। अब तक रैल्फ और फ्रैंक हर सप्ताह अपनी-अपनी टोलियों को चुनते रहे थे। मेरी ने सुझाया कि यह विशेषाधिकार दूसरे बच्चों को भी दिया जाए। बच्चों ने इस पर काफी सलीके से बातचीत की और अन्ततः तय किया कि आज फ्रैंक और रैल्फ ही टोलियाँ चुनें। अगले सप्ताह जिन दो लोगों को उन्होंने सबसे पहले चुना होगा वे टोलियाँ चुनेंगे। उसके बाद के सप्ताह में दूसरे नम्बर पर चुने गए बच्चों की बारी होगी और जब तक सभी बच्चों को बारी नहीं मिलती, वे बदल-बदलकर टोलियों के नेता चुनते रहेंगे।

शुक्रवार, 16 अप्रैल

जितने काम हमें करने हैं उनके लिए दिन छोटा पड़ने लगा है! अँग्रेज़ी की कक्षा में हमने अपनी वाचिक अशुद्धियों की समीक्षा की। हमने आम तौर पर बोलने में होने वाली भूलों के सही रूप की सूची बनाई। हमारी सूची में बयालीस वाक्य थे। अपने बोलने के प्रति बच्चे कितने सचेत हो गए हैं यह देखना बड़ा रोचक था। वे फटाफट वाक्य सुझा रहे थे।

हमारी क्यारी में ट्यूलिप के फूल निकल आए हैं और हमारे खेल के मैदान में रंगों की छटा बिखेर रहे हैं। कई लोग हमें बता चुके हैं कि फूलों के कारण हमारा मैदान कितना प्यारा लगने लगा है। बच्चे इससे बेहद खुश हैं और रोज़ सुबह नए फूलों के लिए क्यारी पर पैनी नज़र रखते हैं।

सोमवार, 19 अप्रैल

आज सुबह नन्हे बच्चों ने एक नाटकीय खेल खेला। हमने अपनी मेज़ें रेल डिब्बों की तरह जोड़ दीं। एण्ड्रयू इंजिनियर बना, विलियम टिकट बाबू और फ्रेड कण्डक्टर। बच्चों को इसमें इतना मज़ा आया कि उन्होंने यह खेल शारीरिक शिक्षा के पीरियड में फिर से खेलने की अनुमति चाही।

मंगलवार, 20 अप्रैल

छोटे बच्चों ने कल के रेलगाड़ी खेल पर बात की। हमने तय किया कि उसे फिर खेलने से पहले हम अपनी रेलयात्रा पर कुछ वार्तालाप की योजना बनाएँगे। मार्था ने कहा कि हमारा रेल-खेल इसलिए अटक गया था क्योंकि यात्रियों के सवालों का कोई जवाब नहीं दे पाया था। फ्रेड ने सुझाया कि हमें जवाब ढूँढ लेने चाहिए। बच्चों ने कहा कि अगर हम रेल कम्पनियों द्वारा भेजी गई पुस्तिकाएँ पढ़ लें तो हमें जवाब मिल जाएँगे। हम तीन समूहों में बँट गए ताकि हम सीटियों, रसोईघर और भोजन कक्ष के बारे में अधिक जानकारी इकट्ठा कर सकें क्योंकि इन्हीं तीनों में बच्चों की रुचि सबसे ज़्यादा थी। एण्ड्रयू, एलेक्स और गस ने अपनी ट्रेन पुस्तिकाएँ निकालीं और यों बैठे कि उनके काले बाल आपस में छू रहे थे। बाद में एण्ड्रयू ने कहा, "अच्छा हुआ हमने सीटियों के बारे में फिर से पढ़ा। कल हमने काफी गलतियाँ की थीं।"

शुक्रवार, 23 अप्रैल

एक बढ़िया दिन के अन्त में उसे मटियामेट करने को कुछ तो होना ही था। बच्चे बस का इन्तज़ार कर रहे थे और इस बीच थॉमस ने रैल्फ को गाली दी। रैल्फ का खोपड़ा सटका और उसने थॉमस की नाक पर मुक्का जड़ दिया। वह यह देखने के लिए रुका नहीं कि इसके बाद क्या हुआ। थॉमस की नकसीर फूट गई। मैंने उसको सम्हाला, उसकी मदद की और कहा कि यद्यपि जो रैल्फ ने किया वह गलत था, पर अगर थॉमस दूसरों को गाली देता रहेगा तो ऐसा पलटवार हो सकता है। थॉमस का स्पष्टीकरण था, "पर उसने मुझे गुस्सा दिलाया था।"

मंगलवार, 27 अप्रैल

थॉमस कल स्कूल नहीं आया था और मैंने रैल्फ को यह बताने की कोशिश की कि जो कुछ उसने किया था उसके नतीजे बड़े गम्भीर हो सकते हैं।

आज सुबह श्रीमती लैनिक का पत्र मिला कि उन्होंने थॉमस और रैल्फ के बीच हुई घटना की सूचना राज्य पुलिस को दे दी है। मैं बहुत दुखी हुई। इस परिवार को यहाँ आए दो माह ही हुए हैं और मैं श्रीमती लैनिक से परिचित होने का समय तक नहीं निकाल पाई हूँ। अगर मैं यह कर पाती तो शायद बात यहाँ तक न पहुँची होती। उन्होंने पत्र में लिखा था कि वे रैल्फ को बखूबी जानती हैं, कि कोई भी उसे काबू में नहीं रख सकता, और कि उसका पिता उसे सुधारने के लिए कुछ करने वाला नहीं है। उन्होंने मुझे दोष नहीं दिया बल्कि लिखा कि वे मेरी मदद ही कर रही हैं। मेरी मदद! काश वे जानती होतीं कि मैं किस तरह रैल्फ पर काम करती रही हूँ। हो सकता है कि मेरी साल भर की मेहनत पर पानी फिर जाए।

मैंने तय किया कि मुझे रैल्फ को बात बतानी ही होगी। मैंने रैल्फ को खत की वे तमाम बातें बताईं जो मुझे लगा कि उसे जाननी चाहिए। हमने तय किया कि बेहतर होगा कि रैल्फ और मैं उसके पिता से बात कर लें, पेशतर इसके कि कोई पुलिसवाला उनसे बात करे। मैंने रात को जोन्स परिवार के साथ खाना खाया और खाने के बाद हम तीनों ने मंत्रणा की। मैंने श्री जोन्स को तथ्य बताए और तब उन्होंने रैल्फ से बात की। मुझे लगा कि उन्होंने स्थिति को सम्हाल लिया और रैल्फ को अच्छी सलाह दी। श्री जोन्स ने मुझे आने के लिए धन्यवाद दिया और कहा कि वे अब भावी घटनाओं के लिए तैयार हैं। रैल्फ भी कृतज्ञ था। वह मुझे गाड़ी तक छोड़ने आया, जो उसने पहले कभी नहीं किया था।

बुधवार, 28 अप्रैल

आज सुबह एक पुलिस अधिकारी आया। पहले मैंने उससे बात की और स्थिति समझाई और तब उसने रैल्फ से बात की। आशा है अब यह मामला खत्म हो जाएगा और रैल्फ इस अनुभव से सीख लेगा।

आज छोटे बच्चों ने बड़ी देर तक इस विषय पर बात की कि भाप का इंजिन कैसे चलता है, और उन्हें खूब मज़ा आया! एल्बर्ट ने बड़ी कक्षा की विज्ञान की किताब के एक चित्र के सहारे यह बताया कि इंजिन के पहिए कैसे घूमते हैं! उसने देर तक चित्र को देखा था और बार-बार पढ़कर समझा था ताकि सरल और सटीक शब्दों में वह समूह को यह प्रक्रिया बता सके। जब रेलगाड़ी का खेल हुआ तो एल्बर्ट इंजिनियर बना और उसने जिज्ञासु सवारियों के सवालों का

जवाब दिया। बाद में उन्होंने अपने खेल में रसोई और भोजन कक्ष के दृश्य भी जोड़ दिए।

बड़े बच्चों ने आज बड़ी मेहनत से हमारे कस्बे के शुरुआती दिनों की कहानियाँ लिखीं। उन्होंने अब तक यह जानने की कोशिश की है कि पायोनियरों के घर कैसे होते थे, वे कैसे कपड़े पहनते थे, उन दिनों दवा-दारू, इलाज की क्या व्यवस्था थी, स्कूल कैसे थे, धर्म का स्वरूप क्या था और वे लोग अपना मनोरंजन कैसे करते थे। संग्रहालय में अब उन्नीस वस्तुएँ हैं। लड़कियों ने अपने नमूने बना लिए हैं। लड़कों ने कॉनेस्टोगा गाड़ी, स्टेजकोच और लट्ठे से बने केबिन के अनगढ़ नमूने बनाए हैं। एना ने मलमल के कपड़े पर दीवार पर लटकाने वाला अपना चित्र बनाया है और उस पर क्रेयॉन के रंग लगाए हैं। चित्र तैयार है, बस उसके पीछे कपड़े की एक तह और लगनी है। सोफिया ने इसी तरह का 3' x 6' का विशाल चित्र बनाया है जिस पर पायोनियर जीवन का वर्णन है। समूह के कई बच्चे उसमें रंग भरने में मदद कर रहे हैं।

गुरुवार, 29 अप्रैल

आज स्कूल के बाद हमारी नियमित बैठक में आठ माताएँ आईं। हमने अगले वर्ष के गर्म मध्याह्न भोजन कार्यक्रम पर चर्चा की। वे गर्मियों में सड़क के उस तरफ स्कूल के सामने वाली पड़ोसिन को तब सूचना दे दिया करेंगी जब भी उनके पास अतिरिक्त सब्ज़ियाँ होंगी। फिर वे पड़ोसिन कुछ माताओं और बड़ी लड़कियों को बुलाकर सब्ज़ियों को डिब्बाबन्द कर देंगी। माताएँ इस काम को बारी-बारी करेंगी।

गुरुवार, 10 जून

पिछले महीने इतनी व्यस्तता रही कि कुछ काम हाशिए पर खिसकाने पड़े। उनमें से एक डायरी लिखना भी था। डायरी लिखना अन्य गतिविधियों के तात्कालिक दबावों के कारण वाकई एक विलास-सा लगने लगा था। यह सच है कि घटनाक्रम को बाद में यादकर लिखना विश्लेषण और मूल्यांकन की दृष्टि से इतना सहायक नहीं होगा, फिर भी लगता है कि दर्ज की गई अन्तिम घटना के बाद की घटनाओं का सार-संक्षेप रिकॉर्ड के लिए तो दर्ज कर ही लेना चाहिए।

बच्चों ने अपने कठपुतली प्रदर्शन पर बड़ी मेहनत की। श्री विल्सन ने एक ऐसा

मंच बनाने में लड़कों की मदद की जिसे सरकाया जा सकता था। उन्होंने लड़कों को पर्दों और दृश्यों के लिए फ्रेम बनाना भी सिखाया और यह भी कि प्रकाश व्यवस्था कैसे की जाती है। लड़कियों ने मलमल के नए पर्दे बनाए। लड़कों ने विभिन्न दृश्यों के चित्र बनाए तथा अन्य सज्जा सामग्री तैयार की और कठपुतलियों की डोर के लिए लकड़ी के हत्थे भी तैयार किए। बच्चों ने कठपुतलियों को नचाने का खूब अभ्यास किया। वे उन पुतलियों में रम गए और कठपुतलियाँ जीते-जागते इन्सानों में तब्दील हो गईं।

नन्हों ने अपनी हाथ पुतलियों को चलाने का खूब अभ्यास किया और अपने प्रदर्शन को सही किया। 21 मई को बच्चों ने काउंटी उपलब्धि दिवस कार्यक्रम में माता-पिता व शिक्षकों के बड़े समूह के समक्ष अपने कठपुतली नाटक प्रस्तुत किए। 26 मई को उन्होंने शाला भवन में वही कार्यक्रम फिर से दिखाया। तब से उस प्रदर्शन की ख्याति फैल गई है और जो लोग उसे देख नहीं पाए हैं वे पूछ रहे हैं कि क्या हम इसे अगले साल फिर से दिखाने वाले हैं।

इस माह हमने सात पृष्ठों का अखबार प्रकाशित किया, इस साल का तीसरा अखबार।

और, जैसे कि हमारे पास करने के लिए काफी नहीं था, हमने वार्षिक कस्बाई खेल दिवस के लिए एक प्रस्तुति तैयार की। हर साल कस्बे के दोनों स्कूलों के विद्यार्थी और शिक्षक साथ मिलकर खेल दिवस मनाते हैं। दोपहर बाद होने वाले मनोरंजन कार्यक्रम में दोनों स्कूल हिस्सा लेते हैं। इस साल हमने अपने कस्बे के इतिहास की नाट्य प्रस्तुति की और अभिभावकों को "वैली व्यू कस्बे के इतिहास के कुछ रोचक तथ्य" शीर्षक वाले एक पर्चे की स्टेंन्सिल की हुई प्रतियाँ भी भेंट कीं।

इस अवधि की सबसे गहन छवि जो मेरे मन में है वह शायद पारस्परिक सहकार की है, जो हरेक काम में नज़र आता रहा। आनन्दमय, व्यस्त कार्यशाला-नुमा वातावरण शाला में बना रहा।

पिछले साल के काम को पलटकर देखती हूँ तो लगता है कि हमारे संघर्ष और वृद्धि की पीड़ाएँ निरर्थक नहीं रहीं, और कि हम सब – बच्चे, माता-पिता और शिक्षक – काम करने, खेलने-कूदने और साथ जीने के अपने अनुभवों के माध्यम से पहले से कहीं ज़्यादा समृद्ध हो सके हैं।

दूसरा वर्ष

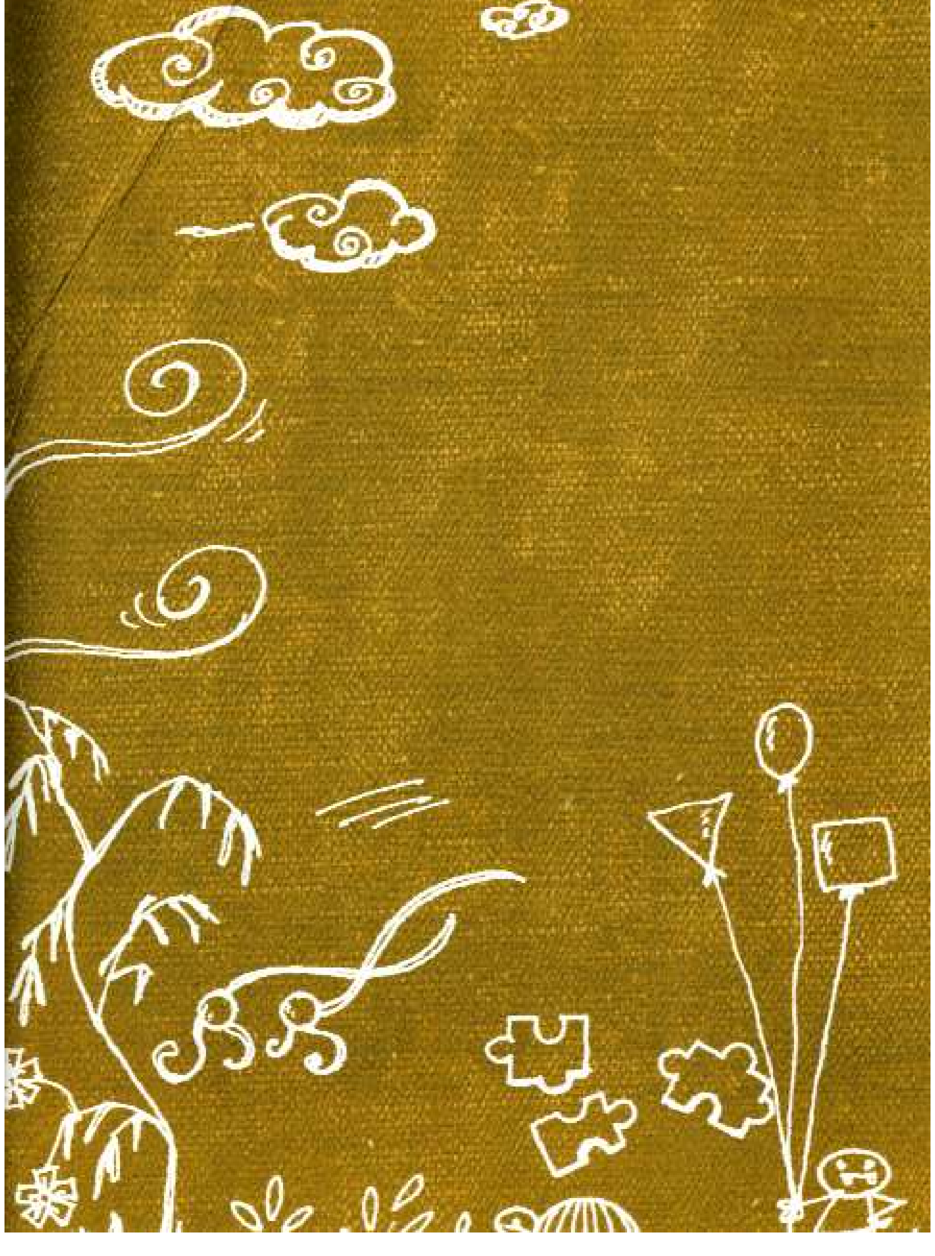

4

हमने नई शुरुआत की

शुक्रवार, 27 अगस्त 1937

व्यस्त गर्मियाँ गुज़र चुकी हैं और अब मुझे अपना ध्यान स्कूल के नए सत्र पर केन्द्रित करना है। मैंने इकत्तीस बच्चों की सूची को ध्यान से देखा। मैं जब उनसे पहली बार मिली थी तब से वे एक साल बड़े हो चुके हैं। सूची में चार नए बच्चे भी हैं:

एलिज़ाबेथ प्रिन्लैक, उम्र 7 वर्ष 8 माह

फ्लोरेंस हिल, उम्र 5 वर्ष 9 माह

चार्ल्स विलिस, उम्र 5 वर्ष 1 माह

एरिक थॉमसन, उम्र 5 वर्ष 1 माह

तीन बच्चे समूह छोड़ चुके हैं: ओल्गा शहर में काम कर रही है, एना कस्बे के हाई स्कूल में पढ़ रही है, और फ्रेड लुत्ज़ गर्मियों में यहाँ से जा चुका है।

पठन, वर्तनी और गणित के समूह मैंने फिर से बनाए। सामाजिक अध्ययन और विज्ञान व स्वास्थ्य के विषयों के लिए हम दो-दो समूह बनाएँगे। फिलहाल हम पिछले साल के अन्त में हमारा जो दैनिक कार्यक्रम था उसी के हिसाब से काम करेंगे, जब तक हमारी नई योजना नहीं बन जाती।

सोमवार, 30 अगस्त

आज शाला भवन गई। द्वार के पास जालियों के सहारे लगी गुलाब की झाड़ियाँ बड़ी हो चुकी हैं। रूथ ने बताया कि गर्मियों में उनमें से एक पर गुलाब के फूल भी खिले थे।

मैं रास्ते में पड़ने वाले घरों में अभिवादन करने रुकी। रूथ 4-एच क्लब के शिविर में गई थी। उसने मुझे अपना कीड़ों का संग्रह दिखाया। श्री थॉमस अब भी सड़क पर हमेशा की तरह ही मेहनत-भरा काम कर रहे हैं। बीच-बीच में वे लकड़ियाँ काटकर बेचते हैं। मैंने उस व्यक्ति को कभी सुस्ताते नहीं देखा।

सामेटिस बच्चे मुझे मिलकर खुश हुए। कैथरीन दुबली हो गई है, पर सोफिया और विलियम का वज़न बढ़ा है। उनके घर गर्मियों में कुछ लोग किराए पर रहने आए हुए हैं जो अपना खाना खुद बनाते हैं। ये सभी आवासी चारों तरफ खड़े बच्चों के साथ मेरी बातचीत सुनते रहे। सोफिया ने सन्तरों के डिब्बे इकट्ठे किए हैं जिनकी लकड़ी का उपयोग स्कूल का फर्नीचर बनाने में किया जाएगा। इन बच्चों को गर्मियों में अपने पसन्दीदा काम करने की फुर्सत नहीं मिल पाई है।

श्रीमती विलियम्स बीमार रहीं। चारों बच्चे घर पर कम ही समय बिता पाए। वे अपने विभिन्न रिश्तेदारों के यहाँ बारी-बारी से जाते रहे, और ये गर्मियाँ उनके लिए बढ़िया व हितकारी रहीं।

जोन्स परिवार के यहाँ सिर्फ मार्था, इनेज़ और उनकी दादी मिले। रैल्फ ने गर्मियों का ज़्यादातर समय अपने पिता के साथ गैराज में काम करते हुए बिताया। मुझे यह सोचकर भय लग रहा है कि जब वह वापिस स्कूल आना शुरू करेगा तो इसका क्या अर्थ होगा। मार्था ने कीड़ों और दबाई हुई पत्तियों का अपना संग्रह मुझे दिखाया।

हिल बच्चे लॉन में से दौड़ते हुए मुझे मिलने के लिए आए। श्री हिल एक बसन्त घर बना रहे हैं। एल्बर्ट ने मुझे दिखाया कि उसके घर के पास बहने वाले नाले में कहाँ से मॉडल बनाने की बढ़िया चिकनी मिट्‌टी मिल सकती है। वॉरेन ने मुझे दिखाया कि कैसे उसका टिकटों का संग्रह बढ़ चुका है। लड़कों ने कुछ इल्लियाँ इकट्‌ठी कर ली हैं, जिन्हें वे तब तक पत्ते खिला रहे हैं जब तक वे अपना रेशमकोश नहीं बुन लेतीं।

एडवर्ड ने आज दोपहर हमारी औज़ार अलमारी में ताकें बनाने और उनमें हुक लगाने में मदद की ताकि हम अपने नए औज़ार लटका पाएँ। गर्मियों में शाला कोष से सात डॉलर खर्चकर मैं औज़ारों का एक नया सेट खरीद लाई थी। हम लकड़ी कम्पनी में गए ताकि अपने तीन पाट के पर्दे और चित्र-फलकों के लिए लकड़ी का ऑर्डर दे सकें।

मंगलवार, 31 अगस्त

आज क्या-क्या नहीं सुना और देखा मैंने! साथ-साथ जीने और काम करने में जो समस्याएँ होने वाली हैं उनका सामना करने के लिए पूरे साहस और समझदारी की ज़रूरत होगी।

प्रिन्लैक व ओल्सेउस्की परिवारों के बीच का पुराना झगड़ा फिर से उभर आया है। कोर्ट-कचहरी, गाली-गलौज, पत्थर फेंकना, सबकुछ हुआ है, यहाँ तक कि कुछ गोलियाँ भी चल चुकी हैं। लगता है कि फ्रैंक ने सबसे ज़्यादा फसाद किया है। ओल्सेउस्की परिवार मुझसे मदद माँग रहा है। मैं क्या कह सकती हूँ?

प्रिन्लैक परिवार के यहाँ जाने पर पता चला कि उनकी गुज़र-बसर बड़ी मुश्किल से चल रही है। श्री प्रिन्लैक ने मुझसे कहा, "अगर इन्सान गरीब हो तो ताउम्र गरीब ही बना रहता है।" श्रीमती प्रिन्लैक ब्रेड बना रही थीं। लौटने से पहले उन्होंने मुझे घर ले जाने के वास्ते ढेर-सारी बेरियाँ दीं। मेरे झिझकने पर उन्होंने बताया कि उनके पास छब्बीस बड़े मर्तबान भरे हैं। जब मैं गाड़ी से उनके घर की तरफ आई, उस वक्त फ्रैंक और जॉर्ज ऊपर जाकर छिप गए थे। जब तक मैं वहाँ थी वे चिमनी के एक सुराख में से ताकते रहे और बातें सुनते रहे। इन परिस्थितियों से घिरे बच्चों के लिए स्कूल क्या कर सकता है? इतनी लाचारी मुझे पहले कभी महसूस नहीं हुई थी।

जब मैं कार्टराइट परिवार के यहाँ पहुँची तो सभी बच्चे पिछवाड़े में जा छुपे और वहीं से झाँकते रहे। नज़रें मिलने पर वे मुस्कुराने लगते पर तुरन्त वापस छिप जाते। कार्टराइट परिवार का बाग बेहद खूबसूरत है जिसकी देखभाल लड़के करते हैं, पर उन्होंने फल-सब्ज़ियों का एक भी डिब्बा बचाकर नहीं रखा।

आज पहली बार थॉमस के पिता और सौतेली माँ से परिचय हुआ। श्रीमती लैनिक मुझे मिलकर खुश लगीं और उन्होंने थॉमस के बारे में काफी बातें मुझे बताईं। माता-पिता के तलाक के बाद थॉमस अपनी दादी के पास रहने चला गया था। वह मर्ज़ी होती तभी स्कूल जाता। जब थॉमस की सौतेली माँ उसके पिता के साथ रहने लगीं तो थॉमस को यह अच्छा नहीं लगा और वह उनसे बदसलूकी वाला और विद्रोही बर्ताव करने लगा। श्रीमती लैनिक थॉमस को "अच्छा" लड़का बनाने की कोशिश कर रही हैं। वे उसे साफ रखती हैं और उसके लिए घर को भी साफ-सुथरा रखती हैं। वे अब भी मानती हैं कि थॉमस

दरअसल खराब लड़का है, और वह कुछ खास नहीं बन सकेगा।

श्रीमती डूलियो मुझे तहखाने में ले गईं और उन्होंने मुझे सब्ज़ियों, जंगली फलों और कुकुरमुत्तों की वे तमाम बोतलें दिखाईं जो उन्होंने और एण्ड्रयू ने मिलकर तैयार की थीं। उन्होंने मुझे वह स्थान भी दिखाया जहाँ वे गाजर व चुकन्दर गाड़ेंगी, और वे डिब्बे दिखाए जिनमें वे सेब रखेंगी। वे गर्मियों में कहीं नहीं गए थे। उनके घर न रेडियो है, न ही अखबार आते हैं। वे बस इसी किराए के खेत के काम में जुटे रहते हैं ताकि इतने पैसे बचा लें कि खुद का छोटा-सा खेत खरीद सकें। फिर भी सभी कठिनाइयों के बावजूद इस परिवार में खुशी भी है। जब एण्ड्रयू अपनी माँ को देखता है तो उसकी आँखों में स्नेहभरी रोशनी झलकती है। श्रीमती डूलियो उसे "मेरा घुँघराले बालों वाला" कह बुलाती हैं। उनका दर्शन बड़ा सरल है: मेहनत करो और जिस बारे में तुम कुछ नहीं कर सकते, उसकी चिन्ता छोड़ दो।

एण्ड्रयूस् परिवार के यहाँ जाना ऐसा लगा मानो रेगिस्तान में नखलिस्तान पहुँच गए हों। लड़कियाँ स्कूल खुलने का बेताबी से इन्तज़ार कर रही हैं ताकि अपने विचारों को साकार कर सकें। श्रीमती एण्ड्रयूस् ने बताया कि उनकी गर्मियाँ आराम से कटीं। उन्होंने कई फिल्में देखीं। डॉरिस के टॉन्सिल निकाल दिए गए। उनके घर का वातावरण खुशनुमा और प्यारा था। घर लौटते समय श्रीमती रेमसे मिलीं। वे अपनी नन्ही बेटी को कस्बे के स्कूल भेजती रही हैं, पर इस साल वे उसे स्टोनी ग्रोव भेजना चाहती हैं क्योंकि उन्होंने हमारी शाला की काफी तारीफ सुनी है। आइरीन छह साल की है। उसके आने पर हमारा नामांकन बत्तीस हो जाएगा।

और अब, पिछले दो दिनों के अनुभव पर विचार करने पर, मैं आने वाले दिनों में अपने काम के बारे में सोचकर ज़रा-सा भयभीत हूँ। शायद शुरुआत यही मानकर करनी चाहिए कि हम पिछले साल जून तक जिस तरह साथ-साथ जीवन गुज़ार रहे थे, वैसे ही गुज़ार सकेंगे। उसके बाद...?

शनिवार, 4 सितम्बर

एना, हेलेन, रूथ, सोफिया और कैथरीन ने मुझे शाला भवन की ओर गाड़ी से आते देखा। आज सफाई करनी थी और वे भी मदद करने आ पहुँचीं। हमने

सारी मेज़ें, कुर्सियाँ, अलमारियाँ धोईं, किताबें अलमारियों से निकालीं, और कमरे को व्यवस्थित किया। दिन भर काम करने के बाद हम कस्बे की दुकान में गए ताकि पर्दों और अलमारियों को ढँकने के लिए कपड़ा खरीद लें।

बुधवार, 8 सितम्बर

जब मैं पहुँची तो छोटे बच्चे दरवाज़े के पास खड़े थे। बड़े बच्चे स्कूल के पिछवाड़े थे, पहले दिन वे मिलने में झिझक रहे थे। मैंने उन्हें तुरन्त काम पर लगा दिया ताकि वे ज़रूरत के अनुसार मेज़ों की ऊँचाई कम या ज़्यादा कर दें, और वे तत्काल सहज हो गए।

आइरीन आज खुश और उल्लसित थी और उसने हमें बताया कि उसे हमारा स्कूल पसन्द आ रहा है। चार्ल्स विलिस दिन भर बिसूरता रहा और उसके साथ एक "दुर्घटना" भी घट गई। वह एक तीन वर्ष की आयु के बच्चे की तरह अपरिपक्व है। एरिक तकरीबन पूरे समय रूथ से चिपका रहा, जिससे रूथ को बड़ी परेशानी हुई। एलिज़ाबेथ और फ्लोरेंस ने दूसरे बच्चों से दोस्ती कर ली और वे जल्दी ही सहज हो गईं।

पिछले साल हम अपने कमरे की कुछ असुविधाओं पर काफी बात करते रहे थे। स्कूल बन्द होने से पहले हमने इनकी एक सूची बना ली थी और यह भी तय कर लिया था कि हम उनके बारे में क्या करेंगे। हमारी सबसे बड़ी समस्या थी छोटे बच्चों के लिए खेलने की जगह बनाना, ऐसी जगह जहाँ वे सच में बातचीत कर सकें, चल-फिर सकें। इस साल पाँच मेज़-कुर्सियाँ और बढ़ने से छोटे बच्चों के लिए स्थान की समस्या और गहरा गई है। मेरी एक और बड़ी समस्या थी उन बड़े लड़कों की आवश्यकताओं को पूरा करने के उपाय तलाशना जो अपनी कक्षा के लिए बड़े हैं पर धीमी गति से सीखते हैं। उन्हें शारीरिक गतिविधियों की ज़रूरत है ताकि वे सीखने के प्रति उत्साहित हों और उन गतिविधियों को कर सकें। इन दोनों समस्याओं से निपटने के लिए मैंने बच्चों को यह सुझाव दिया कि हम बाहर खुले में एक खेलघर बनाएँ जिसमें कई बच्चे एक साथ खेल सकें।

एक दूसरी समस्या थी कि हम अपने कठपुतली मंच का कैसे उपयोग करें ताकि वह जितनी जगह घेरता है उसका "किराया वसूल" तो हो सके। हमें अपनी

रसोई और भण्डारघर को अलग करने के लिए पर्दे की दरकार थी। हमें कमरे की खिड़कियों पर पर्दे चाहिए थे ताकि उसमें घर का सा एहसास हो। हमें और चित्र-फलक भी चाहिए थे। सुबह नौ बजे हम अपनी योजनाएँ बनाने को तैयार थे।

वॉल पेपर के नमूनों, किताबों के आलों और प्लाईवुड से चित्र-फलक बनाना – एडवर्ड व रैल्फ।
कठपुतली मंच को लाइनोलियम से मढ़ना – फ्रैंक।
तीन पाट वाले पर्दे का फ्रेम बनाना – वॉरेन व जॉर्ज।
कठपुतली मंच के पैरों को ढँकने के लिए पर्दा, अलमारियों और खिड़कियों के लिए पर्दे सिलना – कैथरीन, सोफिया, मे, डॉरिस, रूथ, हेलेन व मेरी।
खेलघर के लिए सन्तरों की पेटियों से मेज़-कुर्सी बनाना – एलेक्स, गस, एण्ड्रयू, जोसेफ व वॉल्टर।
कुर्सियों के लिए कुशन व कुशनों के गिलाफ बनाना, दरी के लिए चिन्दियों को रँगना – वर्ना, एलिस, मार्था, पर्ल व जॉयस।
दरी बुनने के लिए दो हाथ-करघे बनाना – एल्बर्ट और विलियम।
कपड़ों से चिन्दियाँ फाड़ना – जॉन व रिचर्ड।
पालने के लिए बिस्तर बनाना – फ्लोरेंस, एलिज़ाबेथ, आइरीन।

स्कूल से पहले मैंने मेरी को समझा दिया था कि पालने के लिए बिस्तर कैसे बनाए जाएँगे और उसने छोटी लड़कियों की इस काम में मदद की। बड़े लड़कों को मेरी मदद की ज़रूरत नहीं थी। उन्होंने मुझसे लकड़ी काटने से पहले सिर्फ माप की बात की। रूथ ने छोटी लड़कियों की कुशन बनाने में मदद की। मेरा ज़्यादातर समय सन्तरों के डिब्बों से मेज़-कुर्सियाँ बनाने वाले लड़कों के साथ बीता। हमारी दस बजे तक कार्यशाला चली।

शारीरिक शिक्षा के पीरियड के बाद हम उन गतिविधियों के बारे में बात करने लगे जो हमने गर्मियों की छुट्टियों में की थीं। मेरी ने कुछ चित्र बनाए थे। मार्था और रैल्फ ने कीड़े इकट्ठे किए थे। कैथरीन और सोफिया ने तितलियाँ इकट्ठी की थीं। विलियम के पास कुछ जीवाश्म थे। फ्रैंक ने दो हवाई जहाज़ बनाए और दो घड़ियाँ सुधारी थीं। रैल्फ ने तैराकी के नए गुर सीखे थे। कुछ दूसरे बच्चों ने भी मनपसन्द कामों को शुरू किया था पर वे उन्हें पूरा नहीं कर पाए थे।

मैंने बच्चों को छुट्टियों में मिशिगन के एकल-शिक्षक स्कूल में प्रदर्शन शिक्षिका के बतौर काम करने के अपने अनुभव के बारे में बताया। मैंने उन्हें वह डायरी दिखाई जो मिशिगन के बच्चों ने लिखी थी, और वे जीवाश्म भी जो मैं साथ लाई थी। हमने उनकी तुलना विलियम के जीवाश्मों से की। नए बच्चों की स्वास्थ्य आवश्यकताएँ इतनी बड़ी हैं कि कुछ समय तक उन पर ही ध्यान केन्द्रित करना होगा। मैं प्रतिदिन सुबह का आखिरी आधा पीरियड इसी पर लगाऊँगी। पिछले साल दोपहर के खेल घण्टे के बाद काफी परेशानियाँ होती रही थीं। इस साल शायद शुरू के पन्द्रह मिनट विश्राम का पीरियड दोपहर बाद के काम के लिए उनके मिज़ाज को ठण्डा रखने में मदद दे। स्वास्थ्य के पीरियड में हमने विश्राम के मसले पर बात की।

आज विश्राम का पीरियड सफल रहा। कई बच्चों ने, जो डेस्क पर सिर टिका सुस्ताना नहीं चाहते थे, आसान किताबें पढ़ीं। हम इतने शान्त हो गए कि संगीत के पीरियड में उबासी लेते रहे। आज हमने अपने पुराने पसन्दीदा गीत गाए।

मैंने छोटे बच्चों को जोड़ने और घटाने के संयोजनों की समीक्षा के काम पर लगाया और उस दौरान बड़े बच्चों ने सुबह शुरू किया काम जारी रखा। प्रत्येक बच्चे के पास जोड़-घटा के संयोजनों के कार्डों की गड्डी है, और हरेक संयोजन को पूरा करने के बाद वह रिकॉर्ड शीट में निशान लगाता जाता है।

देर दोपहर बड़े बच्चों ने अपनी गणित की किताबों की समीक्षा की। और यों एक व्यस्त और रोचक दिन समाप्त हुआ।

गुरुवार, 9 सितम्बर

इतने दिनों बाद स्कूल आने के कारण बच्चे कल इतने खुश थे और अपने काम में इतनी रुचि ले रहे थे कि झगड़े-फसाद से बचे रहे। लग यह रहा था मानो गर्मियों का अवकाश हुआ ही न हो और हम बिछुड़े ही न हों। पर आज छुट्टियों के उनके अनुभव हमारे बीच धकियाकर घुस आए।

हमारे पास गेंदें नहीं हैं। हमारी अच्छी वाली गेंद बसन्त में कस्बाई खेल वाले दिन खो गई थी। हमारे पास बेसबॉल वाली नर्म गेंद ज़रूर है पर उसका बल्ला नहीं है। खेल उपकरण न होने के कारण लड़के दोपहर के समय बिना कुछ किए इधर-उधर खड़े थे। मैंने सुझाया कि हम सब मिलकर जंगल के पास वाले स्थान

को अपने लिए खेलघर बनाने के लिए साफ कर दें। सिर्फ जॉर्ज ने टिप्पणी की, "यह तो बिल्कुल काम जैसा लगता है।" वे भवन के पिछवाड़े चले गए और वहाँ छोटे बच्चों को छेड़ने लगे। एल्बर्ट, जो अब बड़े समूह में आने के कारण खुद को बड़ा लड़का मानने लगा है, उनकी धींगामस्ती का मज़ा ले उसे प्रोत्साहित कर रहा था। पर इसी खींचतान में उसे चोट लग गई। मैंने बड़े लड़कों को बुलाया और उनसे बातचीत की। मैंने कहा कि अगर वे खेलघर बनाने में मदद करते तो शायद उन्हें दोपहर का अधिक मज़ा आता। इस पर रैल्फ बोला, "हम खेलघर बनाने में मदद क्यों करें? हम उसका इस्तेमाल थोड़े ही करेंगे।" मैं यह समझाने लगी कि हम कई काम प्रत्यक्ष फायदे के लिए नहीं बल्कि सामान्य हित के लिए करते हैं, जिनसे हमें सिर्फ दूसरों की मदद करने का सन्तोष ही मिलता है। बच्चों ने इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं की और वे चतुर टिप्पणियों की होड़-सी करने लगे। हमें अपनी बातचीत बिना कुछ हासिल किए बन्द करनी पड़ी, और मुझे लगता है इसका नुकसान ही हुआ। अब पलटकर देखने पर अपनी गलती साफ नज़र आती है। मुझे रैल्फ और फ्रैंक से, जो उस गुट के नेता थे, अलग से बात करनी चाहिए थी, उस समय नहीं जब उनके समर्थक श्रोता साथ थे। बेहतर तो शायद यही होता कि मैं भाषणबाज़ी करती ही नहीं। अब तो एक ही उपाय है कि गेंद जल्द से जल्द सुधरवा ली जाए, बल्ला लाया जाए और कई नए खेल सिखाए जाएँ। मैं छोटे लड़कों को खेलघर बनाने के काम में लगाऊँगी और जब बड़े लड़कों की रुचि उसमें स्वतः ही जगेगी, जो कि अन्ततः होगा ही, तो हम उन्हें भी शामिल कर लेंगे। मुझे दरअसल पहले ही यह करना चाहिए था। शिक्षकों का सौभाग्य है कि बच्चे आसानी से भूल जाते हैं।

शारीरिक शिक्षा के पीरियड में सभी लड़कों ने खेलने से इन्कार कर दिया। फ्रैंक बोला, "यह तो काम करने जैसा है, जो मैं घर पर काफी कर लेता हूँ।" वह इस बात से नाराज़ था कि उसे रैल्फ की टोली में नहीं रखा गया था। उसने कहा कि पिछले साल भी ठीक यही हुआ था और अगर इस साल भी वह रैल्फ की टोली में शामिल नहीं होता तो वह खेलेगा ही नहीं। मैंने रैल्फ से कुछ देर बात की, क्योंकि उसका मिज़ाज कुछ बेहतर हो गया था, और मैंने उसे खेल शुरू करने पर मना लिया। इस दौरान फ्रैंक से बात की। मैंने कहा, "फ्रैंक, तुम्हारे विवेक को क्या हो गया है? पिछले साल तुमने खेल मैदान की समस्याओं को सुलझाने में हमारी मदद की थी। मुझे यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि दो सबसे

बड़े लड़के अगर एक ही टोली में होंगे तो उसमें क्या गड़बड़ है।" मैंने उसे खेलने के लिए कहा, पर वह माना नहीं, सो मैं उसे सीढ़ियों पर बैठा छोड़ आई जहाँ से वह हमें खेलते देखता रहा।

स्वास्थ्य के पाठ के दौरान मैंने खेल मैदान में होने वाले सतत् फसाद की बात उठाई। हमने मानसिक दृष्टिकोण और सामान्य स्वास्थ्य के पारस्परिक रिश्ते पर चर्चा की। हमने निठल्ले बैठे रहने के दुष्प्रभावों पर बात की। यद्यपि बच्चों ने बात ध्यान से सुनी और चर्चा में भागीदारी भी की, पर इसी पाठ का विपरीत असर दोपहर के खेल पीरियड में नज़र आया। वे लगातार यही कहते रहे कि अगर निठल्ले रहेंगे तो परेशानी में पड़ सकते हैं। वे इसी बात को जाँचते रहे – यह जानने के लिए कि कितनी परेशानी में वे फँस सकते हैं।

शुक्रवार, 10 सितम्बर

आज का दिन कल से बेहतर था। सुबह के समय काम के पीरियड हमेशा अच्छे गुज़रते हैं। बच्चे जो करते हैं वह उन्हें अच्छा लगता है।

दोपहर के वक्त सारे छोटे लड़के खेलघर के लिए जगह साफ करने लगे। बड़े लड़के अधिकतर समय उन्हें देखते रहे। मुझे लगता है कि अगर कल मैंने इस मुद्दे को रेखांकित न किया होता तो वे आज ज़रूर मदद करते। स्कूल के बाद, हमेशा की तरह, मैं शौचालय का निरीक्षण करने गई और यह देख सन्न रह गई कि लड़कों के शौचालय में अश्लील बातें लिखी हुई थीं। मैं यह पहचान नहीं सकी कि लिखाई किसकी थी।

सोमवार, 13 सितम्बर

आज सुबह जैसे ही लड़के स्कूल आए तो मैंने उनसे बात की। पर जैसा मुझे लग ही रहा था, लिखाई के बारे में किसी को भी पता नहीं था। यों एक-एक कर नाम सूची से बाहर करते हुए मैं इस निष्कर्ष पर पहुँची कि यह काम चारों बड़े लड़कों ने मिलकर या उनमें से किसी एक ने किया होगा। जब बच्चे बाहर खेल रहे थे मैंने उनसे बात की। मैंने कहा कि हमारी नई पुती दीवार को यों खराब करना अच्छी बात नहीं है। मैंने इस मौके का उपयोग यौन शिक्षा के लिए भी किया। लड़कों ने बात ध्यान से सुनी। मैंने उन्हें दीवार की लिखावट पर फिर से रंग पोतने भेज दिया।

आज बरसात हुई, सो हम बाहर जाकर खेल नहीं सके। मैंने इस बारे में कई सुझाव दिए कि हम क्या-क्या कर सकते थे और तब छोटे समूह के साथ जीवाश्मों को देखने बैठ गई। वे एक लेंस और तिपाई पर रखे सूक्ष्मदर्शी से उनका निरीक्षण कर रहे थे। हम काम में तल्लीन थे और कुछ ही देर में रैल्फ, फ्रैंक, एडवर्ड और जॉर्ज की रुचि भी जग गई। रैल्फ ने कुछ बड़े पत्थर फोड़े और हमने उनके अन्दर नन्ही सीपियाँ जड़ी पाईं। हमारे बीस मिनट बड़े अच्छे गुज़रे।

पर दोपहर का घण्टा उतना आनन्ददायक नहीं रहा। छोटे बच्चे ढूँढ-ढाँढकर अपने शान्तिपूर्ण खेल खेलते और बड़े लड़के टाँग अड़ा उन्हें भंग कर देते। एल्बर्ट हाथ वाले लेंस से जीवाश्म देख रहा था। रैल्फ आया और उससे लेंस छीनने लगा। पर एल्बर्ट लेंस देना नहीं चाहता था। इस छीना-झपटी में लेंस का फ्रेम टूट गया। मैंने रैल्फ से कहा कि उसे नया लेंस लाना होगा (जो 10 सेंट का आता है)। क्योंकि स्थिति काबू में नहीं आ रही थी इसलिए मैंने बच्चों से कहा कि वे अपनी-अपनी कुर्सियों पर बैठ जाएँ और चुपचाप विश्राम करें। जॉर्ज और एडवर्ड को यह बात नागवार गुज़री और उन्होंने शेष दोपहर काम करने से इन्कार कर दिया। वे मुँह सुजाए अपनी कुर्सियों पर बैठे रहे। मुझे इस स्थिति के लिए कुछ सकारात्मक करना चाहिए, यह मैं समझती हूँ, पर क्या?

और जोसेफ! वह बड़े बच्चों के आगे-पीछे डोलता है। उनकी नकल करता है। गला फाड़कर चिल्लाता है और पैर पटकता है। वह इतना बड़ा हो गया है कि किसी सार्वजनिक शाला के लिए उसकी देखभाल करना कठिन हो चला है।

चार्ल्स के पिता मुझसे सहमत हैं कि चार्ल्स को एक साल और स्कूल नहीं आने देना चाहिए क्योंकि वह खुद अपने कपड़े तक नहीं पहन सकता। मैंने श्री विलिस को एक सूची दी है जिसमें वे बातें हैं जो उन्हें अगले साल से पहले चार्ल्स को सिखा देनी चाहिए।

सुबह के खेल के पीरियड के अलावा एक और बात अच्छी रही। दो गीत गाने के बाद हमने संगीत का पीरियड छोटा कर दिया ताकि बच्चे अपनी कहानियाँ सुना सकें। सबसे बढ़िया और सुखप्रद कहानी कैथरीन ने सुनाई। यह एक नन्हे खरगोश की कहानी थी जो अपनी माँ की बात नहीं मानता था। समूह के हरेक बच्चे को यह कहानी बेहद मज़ेदार लगी। उन्होंने कुछ पढ़कर सुनाने का आग्रह

किया। मैंने कैथरीन की कहानी जैसी ही ईसॉप की एक कथा उन्हें सुनाई।

मंगलवार, 14 सितम्बर

कल रात मैंने अपनी समस्या पर सावधानी से सोच-विचार किया। यह सच है कि बच्चों को परेशानी हो रही है, पर मुझे भी हो रही है। मैं सच में उनकी ज़रूरतें पूरी करना चाहती हूँ पर इसके लिए इतना संघर्ष करना पड़ रहा है कि लगता है कि स्कूल खुलने के बाद से मैंने सही की बजाय गलत काम ही अधिक किए हैं। यह काम मेरी कल्पनाशक्ति और धैर्य दोनों से भारी कीमत माँगता है। तानाशाही से चलने वाली शाला में इस तरह की समस्या का हल कितना आसान रहता है। पर मैं एक लोकतांत्रिक शाला के उद्देश्यों को तिलांजलि नहीं देना चाहती, और ये उद्देश्य ज़ोर-ज़बरदस्ती से हासिल नहीं किए जा सकते।

मुझे बच्चों को ऐसे काम सौंपने चाहिए जो ज़्यादा चुनौतीपूर्ण हों। अगर मैं उन्हें व्यस्त रख सकूँ और उनकी जिज्ञासा और रुचि को बाँध सकूँ तो शायद उनकी ऊर्जा को सही दिशा में मोड़ सकूँगी। मैंने दोनों गेंदों में चिप्पियाँ लगवा ली हैं और शाला कोष से एक बल्ला भी खरीद लिया है। रूथ बेसबॉल की गेंद को घर ले गई है ताकि उसमें नए फीते डाल सके।

सामाजिक अध्ययन के पीरियड का उपयोग कमरे के रंग-रूप को सुधारने और उसे कारगर बनाने में लगाना सही रहा है। इसके साथ मैंने अपनी मिशिगन यात्रा में बच्चों की रुचि का ठोस उपयोग करते हुए उन्हें कुछ ज़्यादा निश्चित काम देने का फैसला किया। आज सुबह मैंने ब्लैकबोर्ड पर उन रोचक वस्तुओं की सूची बनाई जो मैंने मिशिगन में देखी थीं: जीवाश्म, पवन चक्कियाँ, गोल छतों वाले खलिहान और उन पर लगे बिजली के सरिए, गेहूँ और मक्के के खेत, चौकोर खेत और सीधी सड़कें, भेड़ें व सुअर, तेल के कुएँ, सपाट ज़मीन, कम पेड़, और ढेर सारी झीलें। हमने इन सब के अर्थ पर बात की। हमने अपनी भूगोल की किताबों में एक नक्शा ढूँढा और वह रास्ता देखा जिस पर मैं गई थी। रूथ ने पढ़ा कि मैं मक्का-पट्टी (Corn Belt) के कुछ इलाके से गुज़री थी। उसने समझाया कि संयुक्त राज्य अमरीका के शेष राज्यों की तुलना में यहाँ मक्के की पैदावार अधिक होती है। बच्चों ने नक्शे का अध्ययन कर यह भी पाया कि गेहूँ भी यहाँ अमरीका के दूसरे हिस्सों से अधिक पैदा होता है। चेरी का फल भी यहाँ अधिक उगता है, गाड़ियों का उत्पादन भी यहाँ ज़्यादा होता है,

और जितनी आटा चक्कियाँ यहाँ हैं उतनी दुनिया के किसी और इलाके में नहीं हैं। मैंने बच्चों से कहा कि वे इस इलाके को अपनी उँगलियों से घेर लें और चर्चा के वास्ते हमने इस इलाके को "उत्तर मध्य राज्य" का नाम दिया। मैंने बच्चों से कहा कि वे पढ़कर यह जानने की कोशिश करें कि यह क्षेत्र इतने अलग-अलग तरहों से महत्वपूर्ण क्यों है।

जब मैं दूसरे बच्चों के साथ काम कर रही थी तो छोटी लड़कियों ने वर्ना के निर्देशन में कुशनों के गिलाफ सिए और कुछ दरियाँ बुनीं, जबकि छोटे लड़कों ने गस के नेतृत्व में नारंगी के डिब्बों से बनाई गई मेज़-कुर्सियों को रँगा। काम छोड़ कुछ देर वे खेलघर की योजना बनाने लगे। उन्होंने सोचा कि इसकी लम्बाई और चौड़ाई 7 फुट होगी और ऊँचाई 6 फुट। वे उसकी छत ढलुवाँ बनाना चाहते हैं। पहले उन्होंने तय किया था कि वे चारों तरफ खिड़कियाँ बना लें, पर एण्ड्रयू ने कहा कि ऐसा करने से ज़रूरत से ज़्यादा हवा अन्दर आएगी। उसने सुझाया कि उत्तरी और पूर्वी दिशाओं की दीवारें पूरी तरह बन्द कर दें, जैसा उसके पिता ने उनके मुर्गी खाने में किया था। हमने उसका एक चालू नक्शा बनाया और बाहर आ गए ताकि खेलघर की जगह के लिए लकड़ी की खूँटियों और सुतली से निशान बना लें।

बुधवार, 15 सितम्बर

बड़े बच्चों ने कल की चर्चा के बाद कुछ समस्याएँ उठाईं:

1. मिशिगन तक जीवाश्म कैसे पहुँचे?
2. उस क्षेत्र की मिट्टी इतनी उपजाऊ क्यों है?
3. वे इतनी मक्की और गेहूँ कैसे उगा पाते हैं?
4. ये शहर इतने बड़े कैसे बन गए?

पहली समस्या को हल करने के लिए उन्होंने भूगोल की अपनी पुस्तकों को पढ़ना शुरू किया। मैंने सूचियों का उपयोग करने में उनकी मदद की।

गुरुवार, 16 सितम्बर

एल्बर्ट, पर्ल और मार्था इस साल बड़े बच्चों के साथ काम कर रहे हैं। उन्हें नक्शों का उपयोग करने में कठिनाई हो रही थी। जब बड़े बच्चे पहली समस्या पर काम

कर रहे थे, मैंने नक्शों के अध्ययन में उनकी मदद की। मैंने उन्हें अमरीका का नक्शा दिया जिसमें वे उत्तरी मध्य राज्यों की बाहरी रेखाएँ बना उनके नाम लिख रहे हैं। प्राथमिक बच्चों ने कल का काम जारी रखा।

आज डॉक्टर साहब को बच्चों की जाँच करने आना था। हमने स्वास्थ्य के पीरियड में उनके लिए तैयारी की। मैंने बच्चों को वह कहानी पढ़कर सुनाई जिसमें एडमिरल बायर्ड एंटार्कटिका की यात्रा के लिए अपने साथियों को चुनते हैं। हमने नियमित शारीरिक जाँच के महत्व की बात की और यह भी कि अगर किसी शारीरिक विकार का समय रहते पता चल जाता है तो उसका फायदा होता है क्योंकि हम उसका उपचार करवा सकते हैं। हमारी चर्चा खत्म हुई ही थी कि नर्स और डॉक्टर उपयुक्त समय पर आ पहुँचे। डॉक्टर ने जाँच की और नर्स ने सारी सूचनाएँ स्वास्थ्य कार्ड पर लिख डालीं। बीच-बीच में मैंने भी अपने अवलोकन बताए और डॉक्टर ने उनकी पुष्टि के लिए अधिक सावधानी से जाँच की। मैं बच्चों के अभिभावकों के साथ मिलकर इन शारीरिक विकारों को जल्दी से जल्दी ठीक करवाने की कोशिश करूँगी।

आज बच्चों ने अपनी नई प्रगति पुस्तकें बनाना प्रारम्भ किया। वे उन्हें खूबसूरत बनाना चाहते थे, सो हमने कला पाठ आयोजित कर किनारों के बेल-बूटे बनाने का अभ्यास किया।

हमारी सिलाई मशीन खराब है, इसलिए स्कूल के बाद लड़कियाँ पड़ोस के घर में बचे हुए पर्दे सीने गईं। एण्ड्रयू, गस, एलेक्स और मैं लकड़ी का आर्डर देने और कुछ सलाह लेने लकड़ी की दुकान पर गए। श्री ओक्स ने हिसाब जोड़ने वाली मशीन पर बिल बनाया जिसे देख लड़कों की रुचि जगी। लौटते समय एण्ड्रयू ने कहा, "सत्ताईस डॉलर बहुत होते हैं। इतना पैसा इकट्ठा करने के लिए हमें शायद दो नाटक करने होंगे।" निकलने से पहले मैं काम शुरू करने में लड़कियों की मदद कर रही थी। मैंने देखा कि लड़कों ने बाकायदा हाथ-मुँह धोए, बाल सँवारे और अपने जूते चमकाए।

आज सुबह फ्रैंक एक भारी पत्थर दो मील तक उठाकर स्कूल लाया। वह पत्थर जीवाश्मों से भरा था। बच्चों ने काफी समय तक उसे हाथ के लेंस व सूक्ष्मदर्शी से देखा और साफ दिखाई देने वाली कई आकृतियाँ एक-दूसरे को दिखाईं। हमारे संग्रहालय में कछुए के कुछ अण्डे भी रखे हैं। आज उनमें से चार अण्डों में से कछुए निकले और बच्चे उन्हें देख रहे थे। वे भौचक देखते रहे। जॉर्ज

दो गिलहरियाँ लाया है। हम उनका भी अवलोकन कर रहे हैं।

सोमवार, 20 सितम्बर

आज सुबह हम घूमने गए ताकि यह देख सकें कि बीजों का प्रसार कैसे होता है। हमने विभिन्न प्रकार के कई बीजों की पहचान की और अलग-अलग तरह से फैलने वाले बीजों के नमूने अपने संग्रहालय के लिए लेते आए।

स्वास्थ्य के पीरियड में हमने इस विषय पर बात की कि घूमना आनन्ददायक कैसे बन जाता है। हमने गति, ताल, पैरों की स्थिति, वज़न, शरीर की भंगिमा, आरामदेह जूतों और अन्ततः आसपास जो कुछ दिखाई दे उसके गुण पहचानने और उसका मज़ा लेने की क्षमता पर बात की। भ्रमण के समय रूथ के पैर दुखने लगे थे, सो हमने उसके पैर की बाहरी रेखा खींची और पाया कि दरअसल उसके जूते उसके पाँव के लिए छोटे हैं। आज रात सभी बच्चे यह जाँच खुद करेंगे।

आज दोपहर लड़कों ने तय किया कि वे जंगल में लट्ठों का एक केबिन बनाना चाहेंगे। मैंने इसका खुलकर स्वागत किया, क्योंकि यह इस साल की उनकी पहली आकर्षक योजना थी। छोटे बच्चों ने गेंद लपकने का खेल खेला। दोपहर का सुखद घण्टा आज जल्द ही बीत गया।

गुरुवार, 23 सितम्बर

स्कूल के बाद वानिकी क्लब की बैठक हुई जिसमें हमने गर्मियों में एकत्रित नमूने मढ़ने का काम किया। मुझे आश्चर्य हुआ कि बड़े लड़के स्कूल के बाद रुककर केबिन बनाने का इरादा त्याग वानिकी क्लब की बैठक में आ गए। रैल्फ के पास अपने नमूने नहीं थे, सो उसने सोमवार को इकट्ठा किए गए बीजों को सजाने और मढ़ने में मदद की। रूथ, कैथरीन, सोफिया और वर्ना कीड़ों की पहचान कर रही थीं। एल्बर्ट ने कीट कोशों के लिए पिंजरा बनाना शुरू किया। रूथ ने चिड़ियों के पंख मढ़ने के लिए चार्ट बनाया। वॉरेन ने छोटे-छोटे चौकोर फट्टे काटे जिन पर वह चिड़ियों के घोंसले मढ़ेगा।

शुक्रवार, 24 सितम्बर

आज सुबह विज्ञान के पाठ में हमने यह चर्चा की कि जब कोई बीज मिट्टी में गिरता है तो क्या होता है, पौधा बीज कैसे बनाता है, और फूल का क्या उद्देश्य

होता है। हमने परागण और प्रकाश संश्लेषण पर बातचीत की। मेरी और हेलेन वृक्षों के जीवन-चक्र का एक चार्ट बनाएँगी।

लड़के शारीरिक शिक्षा के पीरियड में अपना केबिन बनाना चाहते हैं, सो उन्होंने मुझसे अनुमति माँगी। मैंने कहा कि यह निर्णय लड़कियाँ लेंगी क्योंकि खेल तो उनका ही बिगड़ेगा। लड़कियों का कहना था कि वे न्याय करना चाहती हैं, पर उनको लगा कि लड़कों को भी तो सामूहिक खेल की दरकार है। आखिरकार इसका समाधान इस तरह से निकला। लड़के सुबह शारीरिक शिक्षा के पीरियड में अपना केबिन बनाने का काम करेंगे, जब तक काम सही तरह शुरू नहीं हो जाता। इस बीच लड़कियाँ छोटे बच्चों के साथ खेलेंगी। पर दोपहर को हम लोग पहले की ही तरह साथ-साथ खेलेंगे। इन लड़के-लड़कियों को समस्या पर यों शान्तिपूर्वक विचार कर विवेकपूर्ण समाधान, जो सबको सन्तोषजनक लगे, तलाशते देखना मुझे बेहद अच्छा लगा। हमें इस साल फिर से शुरुआत करनी पड़ी है, पर बिलकुल सिरे से नहीं!

शनिवार, 25 सितम्बर

लड़के और कुछ लड़कियाँ स्कूल आए ताकि खेलघर पर काम कर सकें। काम बड़ा है और हमें नींव बनाने में ही काफी समय लग गया। पूरी सुबह और आधी दोपहर नींव को समतल करने और उसे सीध में लाने में गुज़र गई। हमने चारों कोनों पर दोहरे खम्भे गाड़े, ऊपरी फट्टे लगाए और बीच का सहारा देने वाला खम्भा लगाया। हमने खम्भों को सहारें लगाईं। बच्चों ने घर बनाने के सूक्ष्म चरणों के बारे में सीखा और तलमापी का इस्तेमाल सीखा। एण्ड्रयू का कहना था कि उसे पता ही नहीं था कि एक बढ़ई को इतनी मेहनत करनी पड़ती है।

बुधवार, 29 सितम्बर

सामाजिक अध्ययन के पीरियड में प्राथमिक वर्ग के बड़े लड़के आजकल खेलघर के एक तरफ लकड़ी के तख्ते ठोक रहे हैं, जबकि छोटे लड़के सन्तरों की पेटियों से फर्नीचर बना रहे हैं। छोटी लड़कियाँ खेलघर के लिए लीरियों की दरियाँ बुन रही हैं, पालने का बिछौना बना रही हैं, अलमारियों के लिए पर्दे और कुर्सियों के लिए कुशन और गिलाफ तैयार कर रही हैं। मैं उनके साथ तकरीबन आधा घण्टा बिताती हूँ ताकि क्या-क्या करना है यह उन्हें स्पष्ट हो जाए और

तब मैं बड़े बच्चों के साथ काम करती हूँ। जब मैं उनके साथ नहीं होती तो अमूमन वर्ना छोटे बच्चों की ज़िम्मेदारी ले लेती है। प्राथमिक वर्ग के बड़े लड़के छोटे लड़कों की मदद करते हैं।

इस बीच बड़े बच्चे जानकारियाँ इकट्ठा करते हैं, जिस पर हम बाद में चर्चा करते हैं। फिलहाल हम अपनी तीसरी समस्या पर काम कर रहे हैं। वह यह कि उत्तर-मध्य के राज्यों में मक्की व गेहूँ की इतनी फसल कैसे होती है। बच्चों की विशेष रुचि उन मशीनों में है जिनसे गेहूँ की फसल काटी जाती है।

आज हमने स्वास्थ्य के पाठ में शरीर की भंगिमा पर बात की। हमने बैठने, खड़े होने और चलने के सही तौर-तरीकों और काम करते हुए आरामदेह भंगिमाओं पर बातचीत की। हमने भंगिमाओं का अभ्यास किया और एक-दूसरे को सुझाव दिए। सामेटिस बच्चों की भंगिमाएँ गलत हैं। कैथरीन ने बच्चों से कहा कि अगर वे उसे उकड़ूँ या झुककर बैठे हुए देखें तो उसे टोककर याद दिलाएँ।

स्कूल के बाद लड़कियों ने सिलाई क्लब को फिर से व्यवस्थित किया; सिर्फ पाँच ही लड़कियाँ मौजूद थीं। अधिकांश लड़कियों को सीना पसन्द नहीं आता। उन्होंने अपने पदाधिकारी चुने और गुरुवार को अपनी बैठक का दिन चुना और कुछ आगामी सत्रों की योजना बनाई।

शुक्रवार, 1 अक्तूबर

स्कूल के बाद वानिकी क्लब की बैठक थी। केवल रैल्फ, वॉरेन, सोफिया, कैथरीन और रूथ ही रुके। इस साल हमारे क्लबों में सदस्यता बेहद कम है। बच्चों को लगता है कि क्लब एक फालतू का काम है। फिर भी उन्हें इस तरह की गतिविधियों की बेहद ज़रूरत है। जो बच्चे बैठक के लिए रुके उन्हें बड़ा मज़ा आया क्योंकि वे सच में वहाँ होना चाहते थे। रैल्फ टहनियों के नमूनों का संकलन तैयार कर रहा है।

शनिवार, 2 अक्तूबर

आज मेरे पिता को हमारी मदद करनी पड़ी। उन्होंने खेलघर के कोनों वाले लट्ठों को लगाया और चारों बड़े लड़कों को बताया कि बीच वाले शहतीर को कैसे लगाया जाएगा। सभी लड़कों के लिए काम नहीं था, सो बाकी बच्चों ने खेल मैदान की सफाई की और सूखे झाड़-झंखाड़ और कचरे को जलाया। बड़े

लड़कों को मेरे पिता के साथ काम करना पसन्द है और वे खेलघर का काम खुशी-खुशी करते हैं। कल मैंने उन्हें समझाया था कि छोटे बच्चों से छत नहीं बन सकेगी और उन्हें बड़े लड़कों की मदद चाहिए होगी। उनका जवाब था, "बेशक, हम कर देंगे।"

मंगलवार, 5 अक्तूबर

फ्रैंक मन खुश कर देने वाली मुस्कान लेकर आया और उसने जानना चाहा कि क्या वह खेलघर में मदद कर सकता है। चारों बड़े लड़कों ने तुरन्त नाप-जोख लिया और तख्तों को चीरना शुरू किया ताकि छत बनाई जा सके।

नन्हे बच्चों ने अब तक खेलघर बनाने के अपने अनुभवों को दर्ज करने सम्बन्धी किताब के बारे में कुछ भी नहीं कहा है। आज मैंने खुद ही यह बात छेड़ी और केवल एल्बर्ट ने कहा कि उसे लगता है कि वह लिखना नहीं चाहेगा। जब बच्चों ने किताबों की जिल्द के लिए रंग-बिरंगे कागज़ चुनना शुरू किया तो उसका मन बदल गया। पाँच-सात साल वाले बच्चों ने चित्र बनाए और उनमें यह दर्शाया कि हमने खेलघर का स्थान कैसे साफ किया। जॉयस ने अपने चित्र के नीचे लिखा, "हम एक घर बनाएँगे।" बाकी बच्चों ने खेलघर बनाने की योजना की बात पर अपनी-अपनी मौलिक कहानियाँ लिखीं।

बुधवार, 6 अक्तूबर

लड़के सुबह-सबेरे, पूरी तरह चटक हो खेलघर में मदद करने आ पहुँचे। वे अपने लट्ठे के केबिन की बात बिलकुल भूल चुके हैं और छोटे बच्चों के लिए खेलघर बनाने में अपनी समूची ऊर्जा झोंक रहे हैं।

इस साल बच्चे कठपुतली प्रदर्शन के लिए रॉबिनहुड का नाटक तैयार करना चाहते हैं। कल मैंने यह कहानी उन्हें पढ़कर सुनाई। वे मेरे आसपास घिर आए और अच्छा समय बिताया। रैल्फ मेरी कोहनी के पास रखी कुर्सी पर जम जाता है। उसे यह कहानी बेहद पसन्द है।

जब छोटे बच्चे आधे घण्टे के लिए सुस्ता रहे थे तो मैंने अंकल रीमस की कहानी पढ़कर सुनाई। उन्होंने एक कविता भी सीखी, "आओ, मेरे पीछे-पीछे आओ।" कुछ समय बचा जिसमें रैल्फ, मार्था और एलिस ने अपनी मौलिक कहानियाँ सुनाईं। एल्बर्ट की कहानी तो मानो कविता ही थी। बच्चों की सर्वश्रेष्ठ मौलिक

कहानियाँ स्कूल की अखबार के लिए लिख ली जाएँगी।

बुधवार, 13 अक्तूबर

आज हमने कला का पीरियड रखा जिसमें बच्चों ने चारकोल से पेड़ों के स्केच बनाए। पर्ल और हिल लड़के चित्र बनाने के लिए चारकोल का इस्तेमाल बखूबी समझ गए हैं।

बच्चों ने ऑयलक्लॉथ पर दुनिया का नक्शा उतार लिया है। वह नौ फुट चौड़ा है। उन्होंने आज उसे कीलों के सहारे एक लकड़ी के तख्ते पर ठोका और दीवार पर टाँग दिया।

बच्चे तमाम नए खेल सीख रहे हैं और शारीरिक शिक्षा का पीरियड खुशी-खुशी गुज़रता है।

गुरुवार, 14 अक्तूबर

बच्चों को लग रहा है कि कमरे के लिए वे जो चीज़ें बना रहे हैं उसमें बहुत समय लग रहा है। उन्होंने इन चीज़ों को तैयार करने और अपनी कॉपियाँ व्यवस्थित करने के लिए एक पूरा दिन माँगा है। हरेक ने उन कामों की सूची बनाई जो उसे करने थे। कुछ सामाजिक अध्ययन पर काम कर रहे थे। कुछ पठन का बचा हुआ काम सलटाने में जुटे हुए थे। कुछ लड़कियाँ पर्दे सी रही थीं। दो लड़के रसोई की अलमारी की टाँडों पर मोमजामा लगा रहे थे। जॉर्ज तेल के स्टोव को रंग रहा था। एलेक्स, गस और एण्ड्र्यू खेलघर की बगल बनाने के काम में जुटे थे। कैथरीन और सोफिया अपने चित्रों को हॉल के स्क्रीन के लिए ऐसी मलमल पर चिपका रही थीं जिसे ब्लीच नहीं किया गया था। और मैंने लगभग पूरा दिन छोटे बच्चों के साथ पठन, वर्तनी और गणित में उनकी मदद करते बिताया।

स्कूल के बाद बच्चे वानिकी क्लब के लिए रुके और यों पुराने दिनों की यादें ताज़ा हो आईं। बच्चे अब भी गर्मियों में एकत्रित अपने नमूने मढ़ रहे हैं।

शुक्रवार, 15 अक्तूबर

कल का कार्यक्रम इतना सफल रहा कि हमने वही तरीका आज भी अपनाया, क्योंकि अब भी बहुत से काम पूरी तरह समेटे नहीं जा सके थे। लकड़ी कम्पनी के मालिक श्री ओक्स इस दिशा से जा रहे थे, सो वे खेलघर की प्रगति देखने

रुक गए। वे हमारे कक्ष में दसेक मिनट चुपचाप अवलोकन करते रहे, तब जाकर हमें पता चला कि वे आए हैं। उन्होंने जो कुछ देखा वह उन्हें इतना भाया कि हमारे काम में बाधा डालना उन्हें उचित नहीं लगा। वे मुस्कुराए और बोले, "बढ़िया अनुशासन है!" इस टिप्पणी ने मुझे खुश कर दिया। लगा पिछले बसन्त की हमारी भावना लौट आई है। यह भावना क्रमशः फैल भी रही है क्योंकि आज शाम सिलाई क्लब में हाई स्कूल की तीन लड़कियाँ आ जुड़ीं। हमने फ्रॉकों के कपड़े के नमूने मँगवाने के लिए सीयर्स व रीबक कम्पनियों की सूचियों को ध्यान से देखा। लड़कियाँ अपने सिलाई के डिब्बों की सामग्रियाँ इकट्ठा करने लगी हैं।

शनिवार, 16 अक्तूबर

आज सुबह मैं कुछ लड़कियों को वेस्टन ले गई ताकि वे अपनी फ्रॉकों के नमूने चुन सकें। एक बार फिर मुझे बच्चों के अनुभवों की सीमा का एहसास हुआ। उन्होंने आज से पहले स्वचालित सीढ़ियाँ या घूमने वाले दरवाज़े नहीं देखे थे। वे सब कुछ देखने के लिए बार-बार रुकतीं और ढेरों सवाल पूछती गईं। जो महिला हमें नमूने दिखा रही थी वह बच्चों को समझती भी होगी, क्योंकि उसने बड़े धीरज से हमारी मदद की।

सोमवार, 18 अक्तूबर

फ्रैंक जैसे ही स्कूल पहुँचा उसने तुरन्त जानना चाहा कि वह क्या कर सकता है। वह अगले दो सप्ताह के लिए स्कूल का जनरल मैनेजर है, सो मैंने उसे वह सब दिखाया जिस पर उसे नज़र रखनी होगी।

हमारी दोपहर पर्दे टाँगने और कमरे को व्यवस्थित करने में बीती। लड़कियाँ हॉल के नए स्क्रीन-पर्दे को पूरा करना चाहती थीं, सो वे शाम को रुकीं और उन्होंने मलमल पर क्रेयॉन से चित्र बनाए और उन्हें स्क्रीन के खाँचे पर लगाया। हम साढ़े छह बजे तक स्कूल में थे। मैं समझदार और सहृदय माताओं के लिए ईश्वर का आभार मानती हूँ! मेरे पिता ने आज छत बनाने में लड़कों की मदद की। काम इतना कठिन है कि वे अकेले उसे नहीं कर सकते। फ्रैंक ने उन्हें चुपचाप एक सेब दिया, ठीक उसी तरह जैसे वह मुझे भी आजकल कभी-कभार दिया करता है। मेरे पिता के साथ काम करने पर रैल्फ इतना खुश हुआ कि

उसने बाद में रुककर कैथरीन, सोफिया और रूथ की फ्रेम में मलमल के पर्दे ठोकने में मदद की।

मंगलवार, 19 अक्तूबर

आज सुबह जब लड़कियाँ आईं तो वे आलोचनात्मक नज़र से कमरे को देख यह जाँचने लगीं कि सब कुछ ठीक-ठाक है या नहीं। कमरा बड़ा आरामदेह लग रहा है। अलाव के पास हमारा कठपुतली मंच है जिसका उपयोग फिलहाल काम करने की मेज़ के रूप में किया जा रहा है। उस पर भूरा लाइनोलियम लगा है। उसके पैर भूरे, सन्तरी व क्रीम रंग के छापे वाली झालर से ढके हैं। इस मेज़ के नीचे हम वह भारी सामग्री रख देते हैं जिस पर काम चल रहा है जैसे सन्तरों की पेटियाँ और लकड़ी के फट्टे व तख्ते। कमरे के अगले भाग में एक ओर हमारा पियानो है जो दीवार से कुछ हटकर रखा गया है। इससे हमारे संग्रहालय का कोना बन जाता है। पियानो के ऊपर एक काले बड़े कटोरे में पतझड़ की रंग-बिरंगी पत्तियाँ हैं। कमरे के सामने ही दो चित्र-फलक भी हैं जो अपने इस्तेमाल होते रहने का प्रमाण देते हैं। कमरे की दीवारों पर वे सब चित्र टँगे हैं जो इन चित्र-फलकों पर बनाए गए हैं। काले सूचना-पट्ट पर चारकोल से बने पेड़ों के चित्र हैं जिन्हें तरतीब से मढ़ा भी गया है। पिछले साल एना व सोफिया ने जो दीवार लटकनें बनाई थीं वे भी दीवार पर टँगी हैं। कमरे के एक ओर खिड़कियों के नीचे सामाजिक अध्ययन की समस्याओं और शब्दावली के चार्ट और उत्तर-मध्य राज्यों के कुछ नक्शे भी हैं। रसोई घर के आलों पर भूरे, हल्के भूरे व क्रीम चौखटों वाला मोमजामा बिछा है। नया स्क्रीन, जिसके तीन फलकों पर पतझड़, सर्दियों व बसन्त के दृश्य अंकित हैं, हमारी रसोई और कपड़े टाँगने वाले कक्ष को जुदा करता है। नारंगी, हरी व क्रीम धारियों के जाली वाले पर्दे आज जैसे बुझे-बुझे रंगहीन दिन में भी समूचे कमरे में एक गुलाबी आभा बिखेर रहे हैं। लड़कियों ने यह सब देख सन्तोष की साँस ली और कहा, "कितना अच्छा लग रहा है ना मिस वेबर?"

बुधवार, 20 अक्तूबर

स्कूल के बाद प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों को आइरीन ने अपने जन्मदिन की दावत में बुलाया था। श्रीमती रेमसे, उनकी एक सहेली और मैं बच्चों को लेकर

पहाड़ी के ऊपर से होते हुए जंगल में उनके पत्थर से बने खूबसूरत घर गए। यह घर रेमसे परिवार और उनके परिचारक ने मिलकर बनाया था। हमने वहाँ आइसक्रीम और केक खाया। अल्पाहार के बाद हम जंगल में घूमने गए। लौटने पर हम फर्श पर गोल घेरे में बैठ गए और हमने गीत गाए। विलियम ने कहा कि वह तीन भागों वाले गीत "एमेरिलिस" को गाना चाहता है। इस पर मैं बोली कि यह कैसे होगा, बड़े बच्चे तो हैं ही नहीं। पर उन्होंने तब भी इसे गाया! उन्होंने तीन भागों वाले गीत "आओ, मेरे पीछे-पीछे आओ" को भी गाया और उन्हें बड़े बच्चों की मदद की ज़रूरत ही नहीं पड़ी! मैं भौचक थी, श्रीमती रेमसे भी। मेरा ख्याल है कि हमें बच्चों की क्षमताओं के बारे में लगातार नई-नई बातों का पता चलता रहता है।

घर लौटते समय भी बड़ा मज़ा आया। मेरी कार में एल्बर्ट, फ्लोरेंस, जॉयस, वॉल्टर, विलियम, एरिक, पर्ल और एलिज़ाबेथ थे। चाँद निकल आया था और हमारा ध्यान अपनी ओर खींच रहा था। विलियम ने जानना चाहा कि क्या चाँद गर्म होता है। एल्बर्ट को जवाब का पता था और उसने परावर्तित प्रकाश के बारे में बताया। उसने यह भी बताया कि "चन्दा मामा" पर पहाड़ और गड्ढे भी हैं जो उसके चेहरे जैसे दिखते हैं। उन्हें चाँद पर बात कर मज़ा आया। जब चाँद पर कुछ बादल आ गए तो फ्लोरेंस बोली, "देखिए, मिस वेबर, चन्दा मामा ने टोपी पहन ली है।" "अरे, अब तो उसने मूँछें लगा ली हैं।" "अब वह जेल में बन्द है।" "अब वह ताक-झाँक कर रहा है।" एल्बर्ट और फ्लोरेंस को आखिर में उतरना था। एरिक को उतारने के बाद एल्बर्ट बोला, "चलो गाएँ और देखें कि थॉमसन परिवार के घर से हमारा घर कितने गीत दूर है।" हमने पाया कि यह दूरी तीन गीतों की थी।

शुक्रवार, 22 अक्तूबर

आज स्वास्थ्य के पीरियड में हमने नियमित नहाने पर बात की। हमारे समूह के कई बच्चों को यह सबक सीखने की सख्त ज़रूरत है। इन बच्चों को नहाने का पानी दूर से लाना पड़ता है, सो इनके लिए नहाने का मतलब होता है श्रम। हमने स्पंज से नहाने पर बात की और यह समझा कि पूरा शरीर पानी में न डुबोया जाए तो भी उसे साफ किया जा सकता है।

आज शाम सिलाई क्लब की बैठक में चौदह सदस्य उपस्थित थे। इनमें आसपास

की वे सभी लड़कियाँ शामिल हैं जो इस क्लब की सदस्य हो सकती हैं। सीयर्स व रीबक के नमूने आ चुके थे और हमने कपड़े की गुणवत्ता और उसकी कीमतों पर बात की। हमने उन्हें रगड़कर देखा कि कहीं माण्ड तो नहीं लगा है, तब उन्हें धोया ताकि यह भी जाँच लें कि कहीं छापों का रंग तो नहीं निकलता है, और कपड़ा कितना सिकुड़ता है। फिर हमने उन रंगों के बारे में कुछ बात की जो हमारी चमड़ी और बालों के रंग के हिसाब से उचित होंगे। बैठक खत्म होने से पहले हम अपने ऑर्डर फॉर्म और मनीऑर्डर के पर्चे भर चुके थे ताकि कपड़ा मँगवाया जा सके।

शनिवार, 23 अक्तूबर

आज मैं उन लड़कियों को वेस्टन ले गई जो पिछली बार नहीं गई थीं। उन्होंने भी ब्लाउज़ों और फ्रॉकों के नमूने चुन लिए।

सोमवार, 25 अक्तूबर

आज सामाजिक अध्ययन में हमने उत्तर-मध्य के राज्यों की तुलना न्यू जर्सी और उत्तर-पूर्वी राज्यों से की। बच्चों ने नौ अन्तर पहचाने। बच्चों ने उत्तर-मध्य राज्यों पर अच्छी पुस्तिकाएँ तैयार की हैं और उनमें जो कुछ लिखा है उसे वे ठीक से समझते हैं।

बुधवार, 27 अक्तूबर

आज माताओं के साथ इस सत्र की पहली बैठक हुई। स्कूल के बाद तीन समितियों के बच्चे रुके ताकि बैठक में मदद कर सकें। पहली समिति ने माताओं के लिए चाय-नाश्ता व उन छोटे बच्चों के लिए कोको बनाया जिन्हें अपनी माताओं के लिए रुकना पड़ा। दूसरी समिति ने इन बच्चों को खेल व गतिविधियों में व्यस्त रखा। तीसरी समिति ने माताओं की सुविधा का ख्याल रखा और उन्हें स्कूल के काम के बारे में बताया। आठ माताएँ आईं। जब रैल्फ श्रीमती थॉमस, श्रीमती विलियम्स और श्रीमती हिल को हमारे काम के बारे में बता रहा था तो इनेज़ की नज़र उस पर गड़ी थी। वे बाद में बोलीं, "रैल्फ ऐसा कुछ करेगा यह उम्मीद तो उससे मैंने कभी नहीं की थी।"

सोमवार, 1 नवम्बर

जब से बच्चों को *करेन्ट इवेन्ट्स* व *माई वीकली रीडर* मिलने लगे हैं उनकी रुचि दुनिया की घटनाओं में बढ़ी है। हम जिन स्थानों के बारे में पढ़ रहे हैं उनको नक्शे पर चिह्नित करते जा रहे हैं। आज हेलेन ने चीन और जापान की सीमाएँ चिह्नित कीं और हमें समझाईं। फिलिपीन्स जापान के इतना पास है कि हमारी चर्चा अमरीका और उसके उपनिवेशों के रिश्तों की ओर बढ़ी। बच्चों को लगा कि अच्छा हो अगर हम नक्शे में उन स्थानों पर संख्याएँ लिख दें जिनके बारे में हम जान रहे हैं, और एक कुंजी बना लें जो इन स्थानों की कहानी बताए। कुंजी एक पुस्तक के रूप में होगी जिसमें हर संख्या की व्याख्या एक पृष्ठ पर होगी।

गुरुवार, 4 नवम्बर

इस सप्ताह लड़कों ने खेलघर की छत पर तारकोल वाला कागज़ चिपकाया ताकि अन्दर पानी न रिसे। उन्होंने खिड़कियों पर जाली भी लगाई। आज फ्रैंक और जॉर्ज ने खेलघर का फर्श लगाने में कार्टराइट लड़कों और एण्ड्रयू की मदद की। उन्होंने दरवाज़ा भी लगा दिया। वॉल्टर और विलियम ने सभी लट्ठों को मज़बूती से बाँध दिया और लड़कों ने उसे रँगना शुरू किया।

यह सप्ताह शान्ति से गुज़रा है। सभी बच्चे विभिन्न कामों और खेलों में व्यस्त रहे। रूथ सफल जनरल मैनेजर सिद्ध हो रही है, और वह इस बात का ख्याल रखती है कि कमरा साफ और व्यवस्थित हो। रैल्फ सफल अध्यक्ष है और बच्चे उसकी बात सुनते हैं। मेरी कुशल बच्ची है। वह हर दिन छोटे बच्चों को कुछ न कुछ पढ़कर सुनाती है और उन्हें नर्सरी कविताएँ सिखा रही है। प्राथमिक बच्चे उस मिट्टी से खिलौने बनाते हैं जो हम हिल परिवार के घर के पास की नहर से लाए थे। वे चित्र-फलक का उपयोग कर चित्र भी बना रहे हैं। वे कहानियाँ रचते हैं, अपनी कहानियों को नाटकीय रूप देते हैं, और सप्ताह में दो बार कविताएँ सुनते-सुनाते हैं। वे अपने खेलघर के विकास पर नज़र रखे हुए हैं और बेताबी से उस दिन का इन्तज़ार कर रहे हैं जब वह तैयार हो जाएगा। छोटे बच्चों पर इस साल ज़्यादा ध्यान दिया जा रहा है।

शुक्रवार, 5 नवम्बर

आज दोपहर हुई सहायक क्लब की बैठक बड़ी रोचक रही। बच्चों का कहना था कि यद्यपि हम कोशिश तो यही करते हैं कि नाहक बोलकर दूसरों के काम में बाधा न डालें, फिर भी कक्षा में काफी शोर रहता है। स्थिति सुधारने के बारे में उन्होंने कई सुझाव दिए। प्राथमिक कक्षा में नए आए बच्चे जब मिट्टी कूटते हैं तब काफी शोर मचता है। मेरी को कहा गया कि वह उन्हें मिट्टी तैयार करना सिखाए ताकि शोर कम हो। यह भी तय किया गया कि उनकी मेज़ कुछ दूर सरका दी जाए ताकि अन्य कामों में लगे बच्चे परेशान न हों। बच्चों ने पेंसिलें छीलने के घण्टे भी तय कर दिए ताकि यह गतिविधि पूरे दिन न चलती रहे। रूथ ने सबको बताया कि बिना शोर किए मेज़ें कैसे खोली और बन्द की जा सकती हैं। अध्यक्ष ने फ्रैंक को कुर्सियों को तेल पिलाने के लिए कहा ताकि वे चरमराकर आवाज़ न करें।

स्कूल के बाद सिलाई क्लब मिला। हाई स्कूल की दो लड़कियाँ फ्रॉक बनाने का कपड़ा लाई थीं। मार्था और पर्ल ने गमलों की लटकनें बनाना शुरू किया क्योंकि उन्होंने पहले कभी सिलाई नहीं की थी।

सोमवार, 8 नवम्बर

आज सुबह मुझे बाज़ार से खेलघर के लिए और रंग खरीदना था, जिससे मुझे देर हो गई। मैं समझ गई कि स्कूल शुरू होने से पहले सारे काम मैं कर नहीं सकूँगी। रैल्फ और एडवर्ड बाहर खड़े थे, मैंने उन्हें हाँक लगाई। "बच्चो, आज क्या अलाव तुम लोग जला लोगे ताकि स्कूल समय पर शुरू हो सके? मुझे ढेरों दूसरे काम भी करने हैं।" एडवर्ड कुछ बड़बड़ाया, पर उसने आकर राख साफ की। फिर यह बुदबुदाते हुए कि "मैंने अपने हिस्से का काम कर दिया है," वह बाहर निकल गया। रैल्फ अन्दर आया ही नहीं। दूसरे लड़कों के आने पर रैल्फ ने सलाह दी, "मिस वेबर के लिए लकड़ियाँ न जलाना, उन्हें खुद करने दो।" इसके बावजूद पाँच लड़कों ने आग जला दी। इसके कारण स्कूल दस मिनट देर से शुरू हुआ। पर यह कमी हमने दोपहरी के घण्टे में पूरी कर ली। बड़े लड़कों को यह बात पसन्द नहीं आई। पर मैंने इस मसले को अनदेखा करना ही बेहतर समझा। सम्भव है यह रुख अस्थायी हो।

मंगलवार, 9 नवम्बर

लड़के आज खुश थे और दोपहर तक का समय चैन से गुज़रा। कुछ बच्चे अपना खाना खाने खेलघर में बैठे। कुछ ही देर में जोसेफ रोता-रोता बाहर आया। फ्रैंक ने उसे जाली की तरफ धकिया दिया था, जिसका कोना उखड़ आया। फ्रैंक ने कहा कि जोसेफ ने ऐसा जानबूझकर किया था, पर कार्टराइट बच्चों और वॉरेन का कहना था कि फ्रैंक सच नहीं बोल रहा है। मैंने यथासम्भव धीरज भरी आवाज़ में फ्रैंक से कहा, "फ्रैंक, तुम्हें जाली ठीक करनी होगी और कुछ समय तक खेलघर में बैठ खाना नहीं खाओगे।" मेरे जाने के बाद फ्रैंक और रैल्फ खेलघर से बाहर निकले और उन्होंने उस पर पत्थर बरसाने शुरू कर दिए। फ्रैंक ने जानबूझकर एक जाली और उखाड़ दी। मुझे बेहद गुस्सा आया और मैं आपा खो बैठी। मुझे याद नहीं आता कि मैंने क्या-क्या कहा और मैं यही उम्मीद लगाए बैठी हूँ कि दूसरों को भी वह सब भूल गया होगा। जब मैं शान्त हुई तो अपने इर्द-गिर्द स्तब्ध और चकित बच्चों को पाया। शेष बच्चों को खेलने भेज मैंने फ्रैंक और रैल्फ को बिठाकर बात की। मैंने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि मैं नाराज़ हो गई थी और तब जानना चाहा कि हमें क्या करना चाहिए। लड़कों ने कहा कि वे तोड़-फोड़ की मरम्मत कर देंगे। हम में से किसी का भी बात करने का मन नहीं था। शेष दोपहर शान्ति से कटी, पर जो गलती मुझसे हुई थी उसकी वजह से मैं बेहद दुखी रही। दोपहर चुपचाप और उदास थी। अब पलटकर घटनाक्रम पर नज़र डालती हूँ तो लगता है कि मैं अपने आप को लेकर दुख मना रही थी और मैंने लड़कों के आचरण को अकृतज्ञता का प्रदर्शन मान लिया था। लड़के जानबूझकर अकृतज्ञता नहीं दर्शाते। उनका जो आचरण है उसकी वजह कुछ और ही है।

बुधवार, 10 नवम्बर

शिकार के मौसम का आज पहला दिन था और श्री जोन्स रैल्फ को अपने साथ ले गए थे। रैल्फ की अनुपस्थिति में फ्रैंक को किसी दूसरे से सहारा नहीं मिला और कोई गड़बड़ नहीं हुई। वह चुप रहा पर उसकी चुप्पी विद्रोह की चुप्पी नहीं थी, क्योंकि उसे जो काम मैंने बताए उसने चुपचाप कर डाले। कई बच्चों ने बताया कि कल शाम घर लौटते समय फ्रैंक चीखता रहा था कि अगर मैंने फिर कभी उसके घर जाने की ज़ुर्रत की तो वह मेरी गाड़ी के सभी पहियों पर गोली

चलाएगा। काश कोई तरीका होता जिससे मुझे वह बात पता चल जाती जो उसे परेशान कर रही है। समूह का नज़रिया मौन सहानुभूतिभरा है। वे मेरे साथ हैं।

गुरुवार, 11 नवम्बर

आज फ्रैंक शिकार पर गया और रैल्फ के साथ सब ठीक-ठाक रहा। स्कूल के बाद रैल्फ ने पूछा कि क्या वह गैराज तक गाड़ी में मेरे साथ जा सकता है। रास्ते में मुझे उससे बात करने का मौका मिला। उसने तय कर लिया है कि वह हमारे किसी भी क्लब का सदस्य नहीं रहेगा। जब मैंने पूछा क्यों तो उसका जवाब था, "इसका फायदा क्या है?" कुछ और बात नहीं हुई। मैं समझ गई कि शब्दों से किसी भी चीज़ का फायदा रैल्फ को समझाया नहीं जा सकता।

शुक्रवार, 12 नवम्बर

आज सुबह मैंने रैल्फ से बालटी भर कोयले लाने को कहा। लौटने पर उसने पूछा, "मिस वेबर, क्या मैं खाली समय में कोयला घर साफ कर दूँ? कोयले निकालने हों तो उसमें घुसा ही नहीं जाता।"

दोपहर खाने से पहले जब हम हाथ धो रहे थे तो फ्रैंक लाइन से हट गया ताकि सभी लड़कियाँ पहले हाथ धो सकें। तब उसने कहा, "आप भी हाथ धो लें, मिस वेबर, मैं इन्तज़ार कर सकता हूँ।" आज दोपहर उसने पूछा, "उस नन्हे घर पर हम फिर से काम कब शुरू करेंगे?"

मैं फिर से खुश हो चली थी जब जोन्स परिवार की दो सबसे बड़ी लड़कियाँ मिलने आ गईं। वे जब आईं तो हम बाहर खेल रहे थे। मार्था और रैल्फ शान दिखाने में लग गए, जिससे सबका खेल खराब हो गया। जोन्स लड़कियों को उनकी करतबों में मज़ा आया और वे हँस-हँसकर बेहाल हो गईं। रैल्फ ने कोयलाघर की सफाई शुरू कर दी थी। छुट्टी होते ही वह अपनी बहनों के साथ घर चलता बना और कोठार में रखी लकड़ियों और बक्सों को बाहर छोड़ गया। यह सब सोमवार तक बाहर नहीं छोड़ा जा सकता था, सो जो लड़कियाँ स्कूल में छुट्टी के बाद रुकी हुई थीं उन्हें ही यह अटाला वापस रखना पड़ा।

श्रीमती ओल्सेउस्की स्कूल के बाद मिलने आईं। उन्होंने प्रिन्लैक परिवार की शिकायत की और कहा कि पिछले सप्ताह भर से वे असह्य गाली-गलौज करते

रहे हैं और बेहद बुरा बर्ताव भी। उन्होंने धमकी दी कि वे चली जाएँगी। एक और पड़ोसी भी कह रहा है कि अगर यह सब जारी रहा तो वह पुलिस में शिकायत करेगा।

शनिवार, 13 नवम्बर

आज मैंने बहुत सोच-विचार किया। इस साल स्कूल की कई समस्याएँ हमारे आस-पड़ोस की अधिक व्यापक समस्याओं से उपजी हैं। इसलिए ऐसा लगता है कि अगर स्कूल को अपने बच्चों के स्कूली जीवन में कोई वांछनीय बदलाव लाना है तो उसे समुदाय में भी बदलाव लाना होगा।

एक एकाकी, दूरदराज़ इलाके में स्थित एकल-शिक्षक विद्यालय की भूमिका दरअसल है क्या? उसका पहला और मेरी नज़र में सबसे महत्वपूर्ण काम है पाठ्यचर्या को ऐसी शक्ल देना कि वहाँ पढ़ने आने वाले बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। ऐसा कर पाने के लिए ज़रूरी होगा कि स्कूल युवाओं और वयस्कों की आवश्यकताओं को भी पूरा करे। इन आवश्यकताओं में स्वस्थ मनोरंजन और अध्ययन के अवसर, व्यक्तिगत व सार्वजनिक स्वास्थ्य के बेहतर मानदण्ड, बेहतर घरेलू वित्त व्यवस्था व कृषि के नए उपाय सीखने के अवसर, जीवन में आध्यात्मिक ताज़गी व सौन्दर्य, और साझा समस्याओं का समाधान तलाशने के लिए परस्पर सहकार आदि शामिल हैं।

ज़ाहिर है कि ये तमाम काम स्कूल अकेले नहीं कर सकता, पर आस-पड़ोस के जीवन को सुधारने के लिए जो कुछ वह कर सकता है उसे करना चाहिए, क्योंकि बाहरी ताकतें इतनी सशक्त होती हैं कि वे स्कूल के काम में बाधक बन जाती हैं। मुझे शुरुआत भला कहाँ से करनी चाहिए?

युवा वर्ग प्रारम्भिक शिक्षा कार्यक्रम के प्रति असंवेदनशील है, क्योंकि उसे इसकी समझ ही नहीं है। वे, खासकर रैल्फ की बहनें, इस छोटी-सी शाला पर छींटाकशी करती रहती हैं। इन नवयुवाओं को मनोरंजन का एक ही साधन पता है, और वह है सड़कों पर घूमना और एक-दूसरे से मसखरी करना। अगर स्कूल में हम कोई सामाजिक अवसर पैदा करके आपस में मिल सकें तो सम्भवतः उनका नज़रिया बदले। और कुछ नहीं तो इस बिन्दु से शुरुआत तो की ही जा सकती है।

गुरुवार, 18 नवम्बर

आज शाला भवन में युवाओं के साथ हमारी पहली बैठक आयोजित की गई। इसमें दस युवा आए थे। मैंने उन्हें तीन लोकनृत्य सिखाए . . . वे सामाजिक नृत्य भी सीखना चाहते हैं। हमने रिकॉर्डों व सुइयों की व्यवस्था के लिए एक समिति चुनी। सभी खुश नज़र आ रहे थे, यद्यपि शोरगुल काफी मचा।

बुधवार, 24 नवम्बर

पिछले तीन दिन हमने पिछले काम सलटाने में लगाए। लड़कों ने खेलघर की रँगाई पूरी की। छोटे बच्चों ने फर्श पर लाइनोलियम की फर्शी लगाई, चिन्दियों वाली दो दरियाँ बिछाई, एक मेज़ तथा सन्तरों के बक्सों से बनी चार कुर्सियाँ रखीं जिन पर कुशन हैं। गुड़ियों का एक पालना, एक सन्दूक और एक अलमारी भी सजा दी गई। खेलघर बनाने के बारे में वे जो पुस्तिकाएँ तैयार कर रहे थे, वे पूरी हो चुकी हैं और अब कमरे में प्रदर्शित हैं। बड़े बच्चों ने उत्तर-पूर्वी राज्यों पर अपनी किताबें भी तैयार कर ली हैं। उन्होंने अपना काफी समय अखबार के लिए लेख लिखने और चित्र बनाने में लगाया है।

सोमवार, 29 नवम्बर

आज की सुबह बसन्त की सुबह जैसी थी। कल रात गर्म बरसात हुई और दलदल के नन्हे झींगुर गुनगुनाने लगे। मेरे चेहरे पर गर्म हवा का स्पर्श हुआ और मेरी आँखें खुल गईं। मैं जग चुकी थी, तरोताज़ा और काम के लिए तैयार। छुट्टियाँ सुखद होती हैं! शायद यही कारण था कि हमारा दिन इतना अच्छा गुज़रा। एरिक ने पहली बार शर्माया-सा "गुड मॉर्निंग" कहा। सुबह के कामों में कई बच्चों ने स्वेच्छा से हाथ बँटाया।

छोटे बच्चों ने आज लगभग दो घण्टे खेलघर में बिताए। उनका सामूहिक रूप से खेलना विशेष महत्व रखता है, क्योंकि ये बच्चे इतनी दूर-दूर रहते हैं कि स्कूल के बाद एक-दूसरे से मिलने का उन्हें कोई मौका ही नहीं मिलता। फ्लोरेंस माँ बनी और रिचर्ड पिता। जॉयस और एलिज़ाबेथ बड़ी बहनें बनीं। एरिक जंगलों में स्थित एक दुकानवाला बना। आइरीन मिलने आई कोई रिश्तेदार बनी। उन्होंने गुड़िया के कपड़े धोए और उन्हें एक रस्सी पर सुखाया। रिचर्ड पानी लेकर आया। दोपहर को बच्चे मेरे पास आए और कहने लगे कि उन्हें एक

स्टोव, थालियाँ और सफाई करने की चीज़ें चाहिए। हम जो चीज़ें खुद बना सकते हैं बनाएँगे और बाकी स्कूल कोष से खरीद देंगे। स्कूल के बाद वॉरेन, रैल्फ और मैं मिले ताकि अखबार की तैयारी कर लें। लड़कों ने अच्छा सम्पादकीय लिखा। काम खत्म हुआ तो रैल्फ बच्चों की लिखी कविताएँ पढ़ना चाहता था। सो हम तीनों ने हमारे छोटे से समूह के रचनात्मक प्रयासों को पढ़ा और उनका आनन्द लिया।

5

हमें रचनात्मक शक्ति का अनुभव हुआ

मंगलवार, 30 नवम्बर

पहले की ही तरह दिसम्बर माह में सामाजिक अध्ययन के पीरियड का उपयोग हम क्रिसमस पर खेले जाने वाले नाटक की तैयारी के लिए करेंगे।

हम एक सतत बदलती दुनिया में निवास करते हैं। ऐसी दुनिया में प्रभावी ढंग से बने रहना हो तो हमें इसका सामना रचनात्मक तरीकों से करना होगा। हम सब में रचनात्मक शक्ति के ऐसे संसाधन हैं जिन्हें हमने टटोला तक नहीं है। इस रचना शक्ति को मुक्त करने से पहले हमें उन तमाम बन्धनों को तोड़ना होगा जो हमने आलोचना के डर से या हीन बोध के कारण बना लिए हैं। पाठ्यचर्या को विकसित करने में कुछ चीज़ें चुननी पड़ती हैं। यह स्कूलों की मुख्य ज़िम्मेदारी होती है।

इन शर्मीले, झिझक से भरे लड़के-लड़कियों को स्वयं को रचनात्मक व्यक्तियों के रूप में पहचानने की ज़रूरत है। आवश्यकता है कि उनमें आत्मविश्वास व सन्तुलन विकसित हो और वे मुक्त हो जाएँ। यह काम हम रचनात्मक नाटकों के माध्यम से करेंगे क्योंकि मैं स्वयं को इस माध्यम में काफी सहज पाती हूँ।

बुधवार, 1 दिसम्बर

आज सुबह मैंने बच्चों को एक फ्रांसीसी किंवदन्ती "नन्हे वॉल्फ की खड़ाऊँ" सुनाई। मैंने उसमें यथासम्भव बारीक वर्णन जोड़ा। सभी दृश्यों के बारे में विस्तार से बताया और रोचक वार्तालाप सुनाए। बच्चों को कथा पसन्द आई।

कुछ देर हमने यह चर्चा की कि इस कहानी को कैसे बढ़ाया जा सकता है और

उसके कौन-कौन से दृश्य हो सकते हैं।

पहला दृश्य वह होगा जिसमें नन्हा वॉल्फ अपनी मौसी के साथ एक असज्जित टूटे-फूटे कमरे में रात का खाना खा रहा है। समूचे दृश्य में वॉल्फ की मौसी उसे ताने मारेगी, क्योंकि वह उससे नफरत करती है और उसे एक बोझ मानती है। नन्हा वॉल्फ बार-बार मौसी से आग्रह करता है कि उसे भी उसके स्कूली साथियों के साथ स्तुति गीत गाने दिया जाए। आखिरकार मौसी उसे अनुमति दे देती है। एल्बर्ट व कैथरीन को इस दृश्य के संवाद लिखने के लिए चुना गया। उनका प्रयास बेजान व बेरंग रहा। बच्चों को लगा कि कैथरीन अपने चरित्र को बढ़ा-चढ़ा रही है, जो वास्तविक नहीं लगता। एल्बर्ट तो वॉल्फ में ढल ही नहीं पाया, वह एल्बर्ट ही बना रहा। इसके बाद हमने मेरी और विलियम के साथ यह कोशिश दोहराई। विलियम के संवादों को सुन बच्चे चटक हो ध्यान देने लगे। उन्होंने उसी वक्त यह तय कर लिया कि विलियम ही वॉल्फ की भूमिका के लिए सही रहेगा। शेष बच्चों ने भी इन भूमिकाओं को अदा करने की कोशिश की और क्रमशः संवाद जुटने लगे तथा पात्रों का चरित्र विकसित होने लगा।

मैं बच्चों के चेहरों पर आतुरता व तन्मयता के भाव देखती रही। कोई भी बच्चा शर्माकर ठिठिया नहीं रहा था और कई बच्चे इस प्रक्रिया में काफी आक्रामकता से हिस्सा ले रहे थे।

गुरुवार, 2 दिसम्बर

हमने नाटक रचने का काम जारी रखा और पात्रों के चरित्रों पर ज़्यादा से ज़्यादा ध्यान देने की कोशिश की। वॉरेन नन्हा वॉल्फ बना और यों अभिनय करने लगा मानो वह बिगड़ैल, मोहताजी बच्चा हो। बच्चों को लगा कि यह सही नहीं है। वॉल्फ भला कैसा लड़का है? उस जैसा कोई लड़का अपनी मौसी से क्या कहेगा? कैसे कहेगा? ठीक इसी तरह के प्रश्न वॉल्फ की मौसी के बारे में भी हमने पूछे। हमने कुछ देर इस पर भी बातचीत की कि किस प्रकार कोई अभिनेता या अभिनेत्री किसी चरित्र का ईमानदारी से चित्रण कर पाते हैं। वे उस चरित्र को इतनी अच्छी तरह समझने लगते हैं कि खुद को भुलाकर वह पात्र ही बन जाते हैं। बच्चे *करेन्ट इवेन्ट्स* में पिछले दिनों यह पढ़ते रहे हैं कि पॉल म्यूनी जब अभिनय करता है तो पहले काफी समय उस चरित्र के विषय में शोध करने में बिताता है। अगली बार कैथरीन और विलियम ने अपनी-अपनी भूमिकाएँ

निभाते समय इतना अच्छा प्रदर्शन किया कि तालियाँ बज उठीं। भावनाओं की अभिव्यक्ति अच्छी होने के बावजूद संवाद की भाषा अनगढ़ थी। हमने कुछ समय इस चर्चा में बिताया कि दर्शकों तक सही भावनाएँ सम्प्रेषित करने के लिए सटीक शब्दों का उपयोग ज़रूरी होता है। हमने वाक्यों की लम्बाई पर चर्चा की। बच्चे इतने छोटे वाक्यों का इस्तेमाल कर रहे हैं कि संवाद टूटा-बिखरा सा लगता है।

शुक्रवार, 3 दिसम्बर

आज हम दूसरे दृश्य पर पहुँचे और हमने कथानक पर ध्यान देने की चेष्टा की। हमने सोचा कि यह सड़क का दृश्य होगा जहाँ वॉल्फ अपने सहपाठियों से मिलता है। मास्टरजी का इन्तज़ार करते हुए बच्चे वॉल्फ पर छींटाकशी करते हैं। मास्टर साब के आते ही सब गिरजे की ओर बढ़ जाते हैं और वॉल्फ को पीछे-पीछे आने के लिए छोड़ देते हैं। रैल्फ ने मास्टर साब बनने की इच्छा जताई और भूमिका में काफी कुछ जोड़ा। एडवर्ड और जॉर्ज ही दो लड़के थे जिन्होंने योगदान करने में अनिच्छा दिखाई। मुझे लगता है कि यह झिझक के कारण है, न कि अरुचि के कारण। जब हमने कथानक पर बातचीत कर स्थिति समझ ली, तब कई लड़के कमरे के अगले भाग में खड़े हो गए और उन्होंने संवादों पर काम किया। यह सब धीमी रफ्तार से चला क्योंकि लड़के भाषण देने लगे और एकालाप में उलझने लगे। रूथ ने सुझाया कि वे एक-दूसरे की बात सुनें और अपना संवाद पिछले सूत्रों से जोड़ें। दूसरी बार चेष्टा करने से पहले हमने यह विचार किया कि वे क्या-क्या कह सकते हैं और इस बार वार्तालाप बेहतर रहा।

सोमवार, 6 दिसम्बर

बच्चे तीसरे दृश्य के बारे में बड़े उत्साहित हैं। यह गिरजाघर का दृश्य है और बच्चों को उम्मीद है कि वे इसे खूबसूरत बना सकेंगे। हमें गिरजे का बाहरी हिस्सा दर्शाना होगा क्योंकि गिरजे की सीढ़ियों पर ही एक छोटा बच्चा सोता हुआ दिखाया जाना है। बच्चों को लगा कि दर्शकों को लगातार प्रार्थना के दौरान पत्थरों से बनी गिरजे की दीवार देखना पसन्द नहीं आएगा। उन्होंने रंगीन काँचों की खिड़की की योजना बनाई है ताकि दर्शक उसके पीछे प्रार्थना करते लोगों की छाया देख सकें।

गिरजे से निकलने के बाद लड़कों की जो बातचीत होती है, हम उस पर काम करने लगे। वॉल्फ, जो सबसे अन्त में गिरजे से निकलता है, यह गौर करता है कि सीढ़ियों पर सोए बच्चे के पैर नंगे हैं। वह अपना एक जूता बच्चे के पास छोड़ देता है ताकि जब क्रिसमस की पूर्व संध्या पर बाल यीशु वहाँ से गुज़रे तो वह उस बच्चे के लिए कोई तोहफा छोड़ दे। बच्चों को अपने-अपने चरित्र के अनुरूप संवाद बोलने में कठिनाई हुई। जो बच्चे वॉल्फ को ताने मार रहे थे उनकी प्रतिक्रियाएँ सीढ़ी पर सोए बच्चे के प्रति कैसी होंगी? क्या वे उदासीन रहेंगे? क्या उनमें उत्सुकता जगेगी या फिर वे क्रूरता दर्शाएँगे? क्या सभी लड़कों की प्रतिक्रियाएँ एक जैसी होंगी? इस बिन्दु पर हमने हरेक लड़के की पृष्ठभूमि की कल्पना की और उसकी एक जीवन कथा बना डाली। इसमें बड़ा मज़ा आया। हरेक लड़के ने उस लड़के की भूमिका चुनी जिसे वह ठीक से समझ सका हो। तब हमने फिर से दृश्य खेला। इससे बहुत फर्क पड़ा और बच्चे अपने काम से खुश हो गए। वे नाटक को लेकर बेहद उत्साहित होते जा रहे हैं और दिन भर नए-नए सुझाव रखते हैं। उन्होंने काम के दौरान इतनी बार टोकाटाकी की कि अन्ततः मुझे कहना पड़ा कि वे अपने विचार लिख डालें और तब दें जब हम नाटक का अगला सत्र करें।

आजकल दिन का कार्यक्रम सीधा-सरल है। सुबह तकरीबन घण्टे भर हम नाटक पर काम करते हैं। छोटे बच्चे लगभग आधा घण्टा हमारे साथ रहते हैं। वे योगदान करते हैं या सिर्फ देखते-सुनते हैं। इसके बाद कोई बड़ा बच्चा उन्हें हॉल में ले जाता है। वे बच्चों को बाइबल के "ल्यूक" अध्याय में दी गई क्रिसमस कथा सिखा रहे हैं, जो बच्चे नाटक में गिरजे के दृश्य के समय सुनाएँगे। जब वे थकने लगते हैं तो उनका प्रभारी उन्हें या तो कुछ पढ़कर सुनाता है या वे परिचित स्तुति गीतों का अभ्यास करते हैं।

सुबह की शारीरिक अध्ययन कक्षा के बाद कमरे में शान्ति छा जाती है और सभी पठन का काम करने लगते हैं। पठन समाप्त करने के बाद बच्चे क्रिसमस उपहार बनाने में जुट जाते हैं। बड़े बच्चे पिन-ट्रे या सिलाई टोकरियाँ और रूमाल रखने के डिब्बे बना रहे हैं। छोटे बच्चे कनस्तरों और माचिस के डिब्बों के लिए टिन पर चित्रकारी कर रहे हैं। कुछ छोटे लड़के प्लाईवुड से ब्रेड काटने के लिए तख्ते बना रहे हैं।

सप्ताह में दो दिन साढ़े ग्यारह बजे स्वास्थ्य की कक्षाएँ होती हैं और शेष तीन दिन भूगोल और इतिहास की, ताकि ताज़ा घटनावृत्त पर जो चर्चाएँ हों वे ठोस जानकारी पर आधारित हों। स्वास्थ्य के पाठों के दौरान छोटे बच्चे चर्चा सुनते भी हैं और उसमें भाग भी लेते हैं। पर शेष तीन दिन, अगर मौसम साथ दे तो वे खेलघर में खेलते हैं। बड़े बच्चे बारी-बारी उनके साथ खेलघर में समय बिताते हैं। वे योजना बनाने में नन्हों की मदद करते हैं पर उनके खेल में हस्तक्षेप नहीं करते। वे पढ़ते हैं या अपना कोई काम करते रहते हैं, पर एक नज़र नन्हों पर भी रखते हैं ताकि वे गलत आदतें न पाल लें।

दोपहर के खाने के बाद हम पन्द्रह मिनट आराम करते हैं और फिर आधे घण्टे के लिए स्तुति गीतों का अभ्यास करते हैं। जिस समय छोटे बच्चे वर्तनी और गणित का अभ्यास करते हैं, बड़े बच्चे स्वास्थ्य या समसामयिक घटनाओं पर काम करते हैं और उसके समाप्त होने पर अपने क्रिसमस उपहारों पर काम शुरू कर देते हैं। दिन का अन्त हमेशा की तरह बड़े बच्चों के वर्तनी व गणित के अभ्यासों से होता है।

मंगलवार, 7 दिसम्बर

आज हमने नाटक के अन्तिम दो दृश्यों की रूपरेखा बनाई। चौथे दृश्य में वॉल्फ को उसकी मौसी से फटकार सुननी पड़ती है क्योंकि वह अपना एक जूता किसी अजनबी बच्चे को दे आया है। मौसी कहती है कि बाल यीशु उसके बचे हुए एक जूते में कुछ ऐसा छोड़ जाएगा जिससे सुबह उसकी पिटाई की जा सके। अन्तिम दृश्य में वॉल्फ और उसकी मौसी सुबह उठने पर पाते हैं कि उनके अलाव के पास ढेरों उपहार रखे हैं, और साथ हैं वॉल्फ के दोनों जूते। उनके घर के बाहर गाँव में शोरगुल मचा है क्योंकि पूरा गाँव उन लड़कों पर हँस रहा है जिन्होंने बेहतरीन उपहारों की उम्मीद की थी, पर जिन्हें सिर्फ छड़ियाँ मिली थीं। इसी समय एक पादरी आता है और सबको बताता है कि पिछली रात गिरजे की सीढ़ियों पर जहाँ एक बच्चा सोया पड़ा था, ठीक उसी जगह उसे सोने व रत्नों से जड़ा एक गोल घेरा मिला।, गाँववासी चमत्कार की बात सुन श्रद्धानत हो जाते हैं। बच्चों को यह अन्तिम दृश्य अच्छा लग रहा है और उनमें से किसी ने इसकी विश्वसनीयता पर सवाल नहीं उठाया है। फ्रैंक ने पादरी बनने की इच्छा जताई और भूमिका समझदारी के साथ अदा की। अब पूरे नाटक की रूपरेखा

तैयार है। हमें उसकी बारीकियों में जाकर सावधानी से योजना बनानी है।

बुधवार, 8 दिसम्बर

हमारा ज़्यादातर समय अन्तिम दृश्य के संवादों को बनाने में लगा। जॉर्ज को छोड़ सभी नाटक में भाग ले रहे हैं। जॉर्ज ने कहा कि वह दृश्यों की सज्जा का काम करेगा। हमने उसे मंच प्रबन्धक बना दिया है।

हवा में क्रिसमस की भावना है। हम सब इससे प्रफुल्लित हैं और दूसरों के प्रति चिन्तनशील हैं। लड़के आज दोपहर बाज़ार गए ताकि खिड़कियों की गोल मालाओं की सामग्री ला सकें। पर काम करते समय वे दबे स्वरों में बातचीत करते रहे। अमूमन दोपहर का घण्टा गुल-गपाड़े से भरा होता है, पर आज की शान्ति उसके विपरीत थी।

गुरुवार, 9 दिसम्बर

नाटक बच्चों के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। आज कैथरीन एक पुरानी काली ड्रेस लेकर आई जो उसके अनुसार वॉल्फ की मौसी के लिए बिलकुल सही थी। हमने दूसरे पात्रों की पोशाकों पर भी बात की। उसमें अधिक कठिनाई नहीं होनी चाहिए। बड़ी समस्या तो दृश्य सज्जा की है। बच्चों ने विभिन्न दृश्यों के चित्र बनाए ताकि यह समझ आए कि हमें किन-किन चीज़ों की ज़रूरत है और उन्हें कैसे सजाना होगा।

शुक्रवार, 10 दिसम्बर

हमने अपनी मेज़-कुर्सियाँ सामने से हटाकर एक किनारे रख दीं, ताकि नाटक के अभ्यास और मंच सज्जा की वस्तुओं के लिए जगह बनाई जा सके। लड़के लकड़ी की कुछ पट्टियाँ ले आए और एक बड़े से अलाव का ढाँचा बनाने लगे।

हमारा अधिकांश समय पहले दृश्य पर खर्च हुआ। आज हमने तय किया कि विलियम और कैथरीन वॉल्फ और उसकी मौसी की भूमिकाएँ निभाएँगे। बच्चे अपने संवाद याद नहीं कर रहे हैं। जब वे उन संवादों पर बातचीत कर निर्णय लेते हैं तो मैं उन्हें लिख डालती हूँ और अब तक उनका जो स्वरूप बना है उसे पढ़कर सुना देती हूँ। तब वे शुरू करते हैं और अभ्यास के दौरान उन्हें सुधारने की कोशिश भी करते हैं।

बड़े लड़के अभिनय को बड़े गौर से देखते रहे। वे विचार कर रहे थे कि अलाव किस स्थान पर रखा जाएगा। आखिरकार उन्होंने तय किया कि वे उसे पीछे की ओर कुछ तिरछा कर लगाएँगे ताकि दर्शकों को अलाव व लोहे की केतली साफ दिखाई दे। इससे मंच पर एक मेज़ और एक बेंच की जगह बची रहेगी।

सोमवार, 13 दिसम्बर

लड़कों ने अलाव के ढाँचे को भूरे कागज़ से ढँक दिया और उस पर पत्थरों को चित्रित करना शुरू कर दिया ताकि वह सचमुच का अलाव लगने लगे। कुछ दूसरे बच्चे मेज़ बनाने के काम में जुट गए।

बच्चों ने अब तक पाँच फ्रांसीसी स्तुति गीत सीख लिए हैं जो नाटक के दौरान दो हिस्सों में गाए जाएँगे। हमने लोकप्रिय स्तुति गीतों का काफी अभ्यास किया, जो हमारे दर्शक हमारे साथ गाएँगे। मेरे एक संगीतज्ञ मित्र कल हमारे साथ अभ्यास के लिए आने वाले हैं, सो हम उनके लिए तैयार रहना चाहते हैं।

मंगलवार, 14 दिसम्बर

आज काफी समय गाने में बीता। बीच-बीच में हम केवल कुछ देर सुस्ताने भर को रुकते थे । बच्चे चैलो वाद्य से मोहित थे। श्री रैपल ने बच्चों को सरल व मज़ाकिया लहज़े में बताया कि चैलो भी एक तार वाद्य है और उसे कैसे बजाया जाता है। बच्चों ने तमाम सवाल दागे। लड़कों ने ही अधिक रुचि दिखाई।

हमने नौ स्तुति गीत पियानो व चैलो की संगत में गाए और तब हमें उन्हें दोहराना भी पड़ा। बच्चे गाने-बजाने से बिलकुल नहीं उकताए। कुछ समय मेरी ने छड़ी पकड़ संगीत निर्देशन किया और फिर सोफिया ने। दोपहर बाद जब काउंटी के अधीक्षक श्री एटवुड आए तो हम उनके लिए भी स्तुति गीत गाना चाहते थे। हमने कुछ गीत हार्मोनिका पर बजाए क्योंकि श्री एटवुड कहते हैं कि यह उनके पसन्दीदा वाद्यों में एक है। हम स्कूल खत्म होने के बाद हार्मोनिका बजाने का अभ्यास करते रहे हैं।

नन्हे बच्चे दो बजे के बाद घर लौटना ही नहीं चाहते थे। उन्होंने चिरौरी की कि बड़े बच्चे जितनी देर रुकते हैं उन्हें भी तब तक रुकने दिया जाए। छोटे बच्चे संगीत सभाओं के शिष्टाचार को तो समझते नहीं हैं। सो अगर वे इतनी देर

चुपचाप, बिना कुर्सियाँ सरकाए बैठे रहते हैं तो सिर्फ इसलिए कि उनकी रुचि वास्तविक है। रैल्फ की नज़र श्री रैपल पर से एक बार भी नहीं हटी। जैसे ही एक गीत खत्म होता वह अपनी सबसे अच्छी मुस्कान चेहरे पर लाता और कहता, "हमारे लिए एक और बजाइए ना।" मुझे लगा मानो नई सहस्त्राब्दी का आगमन हो गया हो!

बुधवार, 15 दिसम्बर

आज बच्चों को शान्त-स्थिर रखना कठिन रहा। वे लगातार गाते रहना चाहते थे। मैंने उन्हें लैटिन शब्दों वाला एक पुराना लैटिन स्तुति गीत "रानी पादरिन" सिखाया। हमें लगा कि गिरजे के दृश्य के साथ यह सटीक रहेगा। गिरजे की प्रार्थना कैसे होगी यह भी हमने तय किया।

इस दृश्य की मंच सज्जा की सामग्री की तैयारी लड़कियों ने शुरू कर दी है। उन्होंने हमारे कठपुतली मंच को भूरे कागज़ से लपेटा और उसमें दो खिड़कियों के चित्र बनाए। लड़के दूसरे दृश्य के लिए स्ट्रीट-लैम्प बना रहे हैं। उनकी योजना है कि दूसरे दृश्य में मंच पर पूरा अँधेरा होगा और सिर्फ खम्भे से लटका लालटेन टिमटिमाएगा।

गुरुवार, 16 दिसम्बर

आज बर्फीली ठण्ड थी और छोटे बच्चे घरों से निकले ही नहीं। इससे हमें स्कूल को एक कार्यशाला में बदल देने और सामग्री तैयार करने का बढ़िया अवसर मिल गया। लड़के एक ऐसा स्ट्रीट-लैम्प बनाने में सफल रहे जैसा हमें अक्सर क्रिसमस कार्डों पर नज़र आता है। वह जिस खम्भे से लटका होगा वह लड़कों से भी लम्बा है। उन्होंने उसे काफी मज़बूती से बनाया है ताकि किसी दुर्घटना का खतरा न रहे। फ्रैंक ने हमें निर्देश दिए कि दृश्य खत्म होने के बाद उसे खम्भे से उतारने से पहले लैम्प को बुझाना है।

शुक्रवार, 17 दिसम्बर

लड़कियों ने गिरजे की खिड़कियों का डिज़ाइन भूरे कागज़ पर काट लिया और सूराखों वाली जगहों पर अलग-अलग रंगों के सेलोफेन कागज़ के टुकड़े चिपका दिए। छोटे बच्चे इस प्रक्रिया को अचरज और प्रशंसा से देखते रहे।

सोफिया कुछ कदम पीछे हटी और बोली, "ज़रा सोचिए, मिस वेबर, इतनी सारी मेहनत की जा रही है और लोग इसे सिर्फ पाँच या दस मिनट ही देखेंगे।" इस पर पास खड़ी डॉरिस ने तल्खी से जवाब दिया, "हाँ, पर इसे जल्दी से भूलेंगे नहीं।" अपने अन्तस में कहीं गहरे मुझे शिद्दत से यह लगता है कि हमारा इस महीने का काम बेकार नहीं जाएगा।

सोमवार, 20 दिसम्बर

बच्चे आज क्रिसमस का पेड़ लेने गए और एक बारह फुटा देवदार लेकर लौटे। छोटे बच्चों ने उसे सजाने के लिए कुछ चीज़ें बनाई हैं और हमने दोपहर बाद उसकी काट-छाँट की। बच्चों ने अपने माता-पिता के लिए जो उपहार बनाए हैं उन्हें हमने रंगीन कागज़ों में लपेटा और पेड़ के नीचे रखा।

मंच सामग्री को अन्तिम रूप दिया गया और हमने नाटक के कुछ अनगढ़ हिस्से और माँज दिए।

मंगलवार, 21 दिसम्बर

आज हमने समूचे कार्यक्रम को ठीक उसी क्रम में किया जिस क्रम में गुरुवार रात वह प्रस्तुत किया जाएगा। सामान हटाने-धरने में काफी कठिनाई हो रही है क्योंकि हमारा कक्ष काफी छोटा है। हरेक व्यक्ति दूसरों की राह में अटकता रहा, पर मैंने एक भी नाराज़गी भरी शिकायत न सुनी। वे कहते रहे, "हेलेन, मेहरबानी से एक ओर सरक जाओ," या "ज़रा सावधानी से, कहीं गिरजे की खिड़की पर तुम्हारी कोहनी न लग जाए।" इसके बाद हम सब ने तसल्ली से बैठकर योजना बनाई कि मंच सज्जा की चीज़ें कैसे उठाई-धरी जाएँगी। हरेक बच्चे को बताया गया कि उसकी ज़िम्मेदारी क्या है। आज दोपहर हमने पूरा प्रदर्शन फिर से दोहराया और मैं प्रशंसा से भरी दर्शक बन आराम से पीछे बैठी सब कुछ देखती रही।

बुधवार, 22 दिसम्बर

आज हमने अपनी आवाज़ों पर खास ध्यान दिया। हमने नाटक के कुछ संवादों का अभ्यास किया ताकि कुछ शब्दों पर बल दिया जाए और उनके अर्थ रेखांकित हों। हमने कोशिश की कि हम सही भावनाएँ सम्प्रेषित कर सकें। हमने

"डाउन" (नीचे) जैसे शब्द में स्वर तथा "नथिंग" (कुछ नहीं) जैसे शब्द में व्यंजन के उच्चारण का अभ्यास किया। जिन संवादों से क्रोध, आश्चर्य, मखौल उड़ाना आदि दर्शाना था, हमने उनका अभ्यास किया ताकि वे वास्तविक लगें।

गुरुवार, 23 दिसम्बर

सुबह हमने एक बार फिर से कार्यक्रम का अभ्यास किया और तब कमरे की सफाई कर उसे रात के लिए व्यवस्थित किया। रात को हमारा नन्हा कक्ष गर्वीले माता-पिता व मित्रों से भर गया। नौजवान कमरे के पिछवाड़े शृंखला-सी बनाए थे। वे प्रत्येक गुरुवार को शालाभवन में अपनी बैठक करते रहे हैं। पिछली बैठक में मैंने उन्हें बताया था कि बच्चों ने नाटक की तैयारी में कितनी मेहनत की है, और उनके लिए इसका क्या मतलब है। मैंने उनसे मदद माँगी कि वे नाटक वाले दिन कक्ष में कोई गड़बड़ न होने दें। क्योंकि सभी बच्चों को यह पक्की तरह पता था कि उन्हें क्या-क्या करना है, मैं भी दर्शकों के बीच बैठ गई और यों मुझे नौजवानों की शक्लें देखने का मौका भी मिला। वे बच्चों का प्रदर्शन देख आश्चर्यचकित और खुश हुए और कई बार उनके चेहरों पर विस्मय का भाव भी नज़र आया कि उनके ही छोटे भाई-बहन वास्तव में यह सब कर रहे थे।

नाटक के बाद जब सामूहिक गायन हो रहा था, एडवर्ड का बड़ा भाई, जो किसी समय स्कूल के कार्यक्रमों में खलल डालने में नेतृत्व करता था, बाहर गया और उसने सांता क्लॉज़ (Santa Claus) की पोशाक पहन ली। वह घण्टियाँ बजाता अन्दर घुसा और बच्चे उसे फौरन पहचान गए। उसे सभी उपस्थित लोगों को उपहार बाँटते देख बच्चे बेहद खुश हुए। डॉ. व श्रीमती ब्रीड ने बच्चों को मीठी गोलियाँ और सन्तरे बाँटे।

बेहद खुशगवार शाम बीती। सभी उपस्थित स्त्रियों, पुरुषों व बच्चों ने कार्यक्रम में खुलकर शिरकत की।

कार्यक्रम खत्म होने के बाद एडवर्ड का भाई (सांता क्लॉज़) और मैं कुछ दूसरे बड़े बच्चों के साथ स्टेशन वैगन और मेरी कार में ठुँस लिए और हमने समूची बस्ती के हरेक घर में जाकर स्तुति गीत गाए। हमें सभी घरों में अन्दर आमंत्रित किया गया और खाने को केक व मीठी गोलियाँ दी गईं। सभी माता-पिता हमारे लिए तैयार थे; हमारा राज़ खुल गया था।

6

हमने अपने समुदाय का अध्ययन किया

शनिवार, 12 फरवरी

क्रिसमस की छुट्टियों के दौरान बच्चों को और मुझे अपने क्षेत्र के रोमांच को अनुभव करने का दुर्लभ मौका मिला। यह साल 1787 के अध्यादेश की 150वीं जयन्ती का वर्ष है, जब उत्तर-पश्चिम क्षेत्र को खोला गया था। इस अवसर का उत्सव मनाने के लिए नौजवानों की एक टोली मैसाच्युसेट्स से ओहायो तक ठीक पायोनियरों की तरह यात्रा कर रही है। वे यात्रा के दौरान जगह-जगह रुकते हैं और अपनी प्रस्तुति देते हैं। श्री हिल ने और मैंने बड़े बच्चों को यह सब दिखाने के लिए वाहन व्यवस्था कर दी। उस नाट्य प्रस्तुति में हमने देखा कि नौजवानों ने कायदे-कानून बनाए ताकि नए क्षेत्र में पहुँचकर वे उनके अनुसार कामकाज चलाएँ। बच्चे नए कानूनों को बनाने के प्रति उत्साह और उनको लेकर हुए वाद-विवाद से बेहद प्रभावित हुए। कैथरीन ने कहा, "अरे! यह सब तो ठीक वैसा ही है जैसे हम अपने सहायक क्लब की बैठकों में अपने लिए नियम बनाते हैं।"

बिचले समूह के बच्चे नौजवानों के कपड़ों, उनके यात्रा के तौर-तरीकों और यात्रा के दौरान आने वाली कठिनाइयों में रुचि दिखा रहे थे। उन्होंने उत्तर-पश्चिमी हिस्से को नक्शे में देखा और वह राह देखी जिस पर ये नौजवान चल रहे हैं। एल्बर्ट जानना चाहता था कि पायोनियरों ने इस भू-भाग को क्यों चुना। क्या वे मैसाच्युसेट्स से चलने से पहले ही इसके बारे में जानते थे? पर बड़े बच्चों की रुचि कानूनों और उन्हें बनाने की प्रक्रिया में अधिक थी।

बच्चे इस सब पर अधिक जानकारी एकत्रित करने के लिए रुचि अनुसार दो

दलों में बँट गए। दोनों समूह चर्चाओं और रिपोर्टों के लिए मिलते भी रहे।

बिचले समूह के बच्चों ने उत्तर-पश्चिम में आ बसने पर एक चलचित्र बनाया। जिस समय वे इस विषय पर पढ़ रहे थे, शोध कर रहे थे, उन्होंने महत्वपूर्ण तथ्य दर्ज कर लिए थे। चलचित्र बनाते समय उन्होंने इन्हीं तथ्यों का उपयोग किया। बड़े बच्चों ने 1787 के अध्यादेश (Ordinance of 1787) का अध्ययन किया। हमने कुछ समय इस बात पर सोचने-विचारने में लगाया कि मुट्ठी भर साधारण लोग किस प्रकार एकत्रित हुए ताकि यह तय कर सकें कि वे कैसे जीना और शासित होना चाहते हैं। जो नियम-कानून उन्होंने बनाए थे वे हमें विवेकपूर्ण लगे। मैंने बच्चों से पूछा, "उन्हें अपने विचार भला कहाँ से मिले होंगे?" बच्चों का जवाब था कि शायद उनके पिछले अनुभवों से उन्होंने यह अन्दाज़ लगाया होगा कि उन्हें यह सब चाहिए। तब हमने मेफ्लावर कॉम्पैक्ट (Mayflower Compact) के तहत बनी वर्जिनिया, मैसाच्युसेट्स, बे कॉलोनी, मेरीलैण्ड, कैरोलाइना, जॉर्जिया व कनैक्टिकट की सरकारों का अध्ययन किया। हमने इन बस्तियों की सरकारों और 1787 के अध्यादेश की तुलना की। हमने पाया कि अध्यादेश एक अच्छा दस्तावेज़ था जिसमें उपरोक्त उपनिवेशों के श्रेष्ठतम बिन्दुओं का समावेश करने के साथ अनेक लोकतांत्रिक उपाय भी शामिल कर लिए गए थे।

हमने मौजूदा सरकार की तुलना भी उस सरकार से की जो अध्यादेश के तहत स्थापित की गई थी। हमने उन चीज़ों की सूची बनाई जो 1787 की प्रारम्भिक सरकारों में नहीं थीं। कैथरीन ने कहा कि संविधान ने हमें पायोनियरों से बेहतर सरकार दी है। मैंने बच्चों से पूछा कि क्या वे जानते हैं कि हमें अपना संविधान कैसे मिला। रैल्फ ने कहा ऐसा इसलिए हुआ होगा क्योंकि उपनिवेशकों को देश के मामलों को चलाने की योजना बनानी पड़ी होगी। मैंने उन्हें बताया कि उपनिवेशकों के पास पहले ही एक योजना थी। क्या वे संघटन के अनुच्छेदों (Articles of Confederation) को भूल रहे हैं? उन्हें इनके विषय में कोई जानकारी नहीं थी, सो हमने इन्हें देखा। हमारी इतिहास की पुस्तक में उन कमियों का उल्लेख था जो संघटन के अनुच्छेदों में मानी जाती हैं। रूथ ने कहा, "यही वजह थी कि सैनिकों को उत्तर-पश्चिम की ओर जाना पड़ा। सरकार इतनी मज़बूत नहीं थी कि वह कर एकत्रित कर सके और इस तरह उसके पास अपने कर्ज़ चुकाने लायक पैसे भी नहीं थे।" मैंने जानना चाहा कि क्या संविधान ने उन

कमियों को पूरा किया है। बच्चों का कहना था कि संविधान ने देश का एक प्रमुख बनाया जिसे कानून लागू करने की शक्ति दी गई। संविधान ने एक कानून बनाने वाली प्रतिनिधि संस्था का गठन किया और मामलों की सुनवाई के लिए अदालतें बनाईं। हमने अपनी राष्ट्रीय सरकार के इन तीन अंगों के दायित्वों को तथा उन्हें नियंत्रित व सन्तुलित करने की व्यवस्था को देखा-जाँचा।

अपने अध्ययन के दौरान बच्चों को पता चला कि प्रारम्भ में संविधान को स्वीकारा ही नहीं गया था क्योंकि उसमें उन अधिकारों का कोई उल्लेख ही न था जिनके लिए उपनिवेशकों ने संघर्ष किया था। अधिकारों का विधेयक (Bill of Rights) बाद में जोड़ा गया था। बच्चों ने इस विधेयक का ध्यान से अध्ययन किया और उसके तहत दिए गए अधिकारों की सूची बनाई। इसके फलस्वरूप उन्होंने राज्य व राष्ट्रीय सरकारों व उनके कामों की तुलना की। हमने एक सूची बनाई जिसमें उन सभी चीज़ों को सूचीबद्ध किया गया जिनके द्वारा राज्य व राष्ट्रीय सरकारें हमारे कस्बे की व्यवस्था से सम्पर्क में आती हैं। हमारे कस्बे की सरकार को समझने के लिए हमने टाउनशिप समिति के प्रमुख व शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष से साक्षात्कार किए। हम काउंटी के न्यायालय भी गए और काउंटी के स्कूलों के अधीक्षक से भेंट की। काउंटी जेल के वॉर्डन बच्चों को जेल के दौरे पर ले गए। हमने काउंटी क्लर्क के कार्यालय को देखा और काउंटी सरकार के बारे में कुछ सीखा। इन प्रयासों से बच्चों को साफ-साफ अन्दाज़ होने लगा है कि सरकार क्या होती है।

प्राथमिक समूह के बच्चे इस दौरान समुदाय का अध्ययन करते रहे हैं। इस काम के लिए हम "न्यू जर्सी की समाज अध्ययन की निर्देशन-पुस्तिका" (*New Jersey Handbook of Social Studies*) की रूपरेखा का उपयोग करते रहे हैं। इसमें स्कूल तथा पर्यावरण के भौतिक पक्षों का अध्ययन भी शामिल है। बच्चों ने अपने मोहल्ले का एक नक्शा बनाया और उसका उपयोग करना सीखा। उन्होंने समुदाय के कामगारों के बारे में पढ़ा और यह जाना कि वे कौन-कौन सी सेवाएँ उपलब्ध करवाते हैं। उन्होंने आवासों का अध्ययन किया और इस अध्ययन को विस्तृत करते हुए उसमें पशुओं व पक्षियों के आवासों को भी जोड़ा। उन्होंने पक्षियों के लिए काठ के घर बनाए तथा उनके दाने-पानी के स्थान बनाए, ताकि सर्दियों भर इस इलाके में आकर रहने वाले पक्षियों को खिला-पिला सकें।

किसी एकल-शिक्षक शाला में छोटे बच्चों के साथ क्या किया जा सकता है, यह मैं धीरे-धीरे सीखने लगी हूँ। बड़े बच्चे तो शिक्षक न हो तब भी किसी उद्देश्य के लिए काम में जुटे रहते हैं, पर छोटे बच्चों को अकेले अधिक समय गुज़ारना इसलिए मुश्किल लगता है क्योंकि उनका ध्यान अधिक समय तक किसी एक विषय पर टिक नहीं पाता। मैं अब छोटे बच्चों के साथ समय बिताने के लिए बड़े बच्चों का ऐसा उपयोग करने लगी हूँ जिससे दोनों को लाभ हो। क्रमशः एक प्रभावी दैनिक कार्यक्रम उभर आया है।

हमारे स्वास्थ्य के पाठों में हमने पदार्थों के खाद्य मूल्य का सघन अध्ययन किया। इन पाठों का बच्चों की खाने-पीने की आदतों पर प्रभाव नज़र आने लगा है। अधिकांश बच्चे अब भरपेट नाश्ता करके ही स्कूल आते हैं और शायद ही कोई खाली पेट आता हो। जब मैं श्रीमती सामेटिस से मिलने गई तो उन्होंने बताया कि उनकी बेटियाँ हरे पत्तों की सब्ज़ियाँ खाने लगी हैं, जो वे पहले छोड़ देती थीं। वे हरे पत्तों की सब्ज़ियों को पौष्टिक व स्वादिष्ट तरीके से पकाने में माँ की मदद भी करती हैं।

दोपहर के गर्म मध्याह्न भोजन का कार्यक्रम एक अर्से से निर्बाध चल रहा है। रसोई में काम करना सब बच्चों को अच्छा लगता है। पाक दल ने इस सप्ताह बड़े भगोने का नामकरण "श्रीमान" किया और छोटे का "श्रीमती"। सारे प्याले उनके एककर्णी बच्चे बन गए हैं। वे हरेक बच्चे को बखुशी अन्दर-बाहर रगड़कर साफ करते हैं। उन्हें अपनी साफ-सुथरी रसोई पर नाज़ है और इस बात पर भी कि दोपहर के सत्र से पहले वे अपना सारा काम खत्म कर लेते हैं। इस सप्ताह रैल्फ को बरतन माँजने थे, पर चूँकि वह अनुपस्थित रहा, फ्रैंक ने स्वेच्छा से बरतन माँजने की ज़िम्मेदारी ली। यह इस बात का प्रमाण है कि रसोई में काम करना भी मज़ेदार लग सकता है।

चित्र-फलक सतत उपयोग में रहते हैं। बच्चों ने बर्फबारी के इतने दृश्य बनाए कि उन्हें टाँगने की जगह ही नहीं है। हमने उन सबको बाकायदा कागज़ों पर चिपकाया और "शीत दृश्य" शीर्षक से एक किताब बना डाली।

इस माह मैंने हर दिन स्कूल का काम समाप्त होने पर रैल्फ और कैथरीन की अँग्रेज़ी व्याकरण में मदद करने का समय निकाला। हाई स्कूल में कुछ चीज़ों की जानकारी ज़रूरी होगी और मैं कोशिश कर रही हूँ कि उनको वह सब ज़रूर

आ जाए। उन्होंने मेरे साथ इच्छा से काम किया है तथा घर पर भी अतिरिक्त काम किया है।

इस सबके बावजूद पिछले माह के काम ने मुझे उतना सन्तोष नहीं दिया जितना दिसम्बर के माह ने दिया था। मिस एवरेट और मैं पिछले सप्ताह साथ काम करते रहे हैं और वे इस स्थिति को जाँचने में मेरी मदद करती रही हैं। क्योंकि बच्चों ने सन्तोषप्रद व्यवहार सीख लिया है और कोई नई समस्याएँ पैदा नहीं हो रही हैं, स्कूल का काम सही ढंग से चल रहा है। पर परेशानी यह है कि हम एक स्तर पर आकर ठहर-से गए हैं। मनोवैज्ञानिक कहेंगे कि हम सीखने की प्रक्रिया के वक्र में एक समतल पठार पर पहुँच गए हैं। मुझे पता है कि उम्दा शिक्षण के बारे में जो कुछ मैं जानती हूँ मैं उस सबका उपयोग नहीं कर पा रही हूँ। मेरे लिए यह सब बड़ा कठिन है। शब्दों को जानना एक बात होती है, पर शब्दों को कर्म में उतारना ज़्यादा मुश्किल है।

मिस एवरेट और मैंने इस बात पर काफी विचार-विमर्श किया कि हम किस प्रकार बच्चों के जीवन को अधिक प्रभावी रूप से दिशा दे सकते हैं। हमें लगता है कि तात्कालिक वातावरण में उनके अनुभवों को समझने में हमें उनकी मदद करनी चाहिए। क्योंकि उन्हें आगे वास्तविक परिस्थितियों का सामना करना है, अतः यह ज़रूरी है कि वे सीख लें कि उन्हें अपने वातावरण से न केवल आवश्यक तालमेल बैठाना होगा बल्कि उसमें वांछनीय बदलाव भी लाने होंगे। इस प्रकार वे जो कुछ भी सीखेंगे उससे वे काउंटी के, राज्य के व दुनिया के व्यापक समुदायों को भी समझ सकेंगे।

समुदाय में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कर मैं बच्चों को विविध शैक्षिक अनुभव उपलब्ध करवा सकी हूँ। हमने साथ-साथ अपने आस-पड़ोस की छानबीन की है, इलाके की भौमिकी को, पेड़-पौधों और जीव-जन्तुओं को जाना-समझा है। हमने रेड इण्डियनों की जनश्रुति और उनके आरम्भिक इतिहास की छानबीन की है। अपनी सरकार को स्थानीय से राष्ट्रीय स्तर तक ज़्यादा समझने के लिए हमने तमाम कोशिशें की हैं क्योंकि इसका हमारे रोज़मर्रा के जीवन पर असर पड़ता है। मिस एवरेट का सुझाव था कि शायद बच्चों को अब समसामयिक समुदाय के बारे में अधिक जानने की कोशिश करनी चाहिए। शायद समुदाय के विश्लेषण से हमें उसके सदस्यों की ज़रूरतों को पूरा करने का कोई उपाय मिले।

मिस एवरेट ने निम्नलिखित रूपरेखा बनाई ताकि शुरुआत करने में मुझे मदद मिले। उन्होंने जनगणना के कुछ आँकड़े भी हमें उपलब्ध करवाए।

मंगलवार, 15 फरवरी

हमारे समकालीन समुदाय के अध्ययन की शुरुआत करने के लिए मैंने बोर्ड पर प्रश्न लिखाः "आज का वैली व्यू (Valley View) औपनिवेशिक युग के वैली व्यू से किस तरह भिन्न है?" कई बच्चों के पास हमारे कस्बे के प्रारम्भिक इतिहास पर जो पुस्तिका हमने पिछले साल बनाई थी उसकी प्रतियाँ मौजूद थीं। बच्चों की टिप्पणियों को मैंने बोर्ड पर दर्ज कियाः

"आजकल लोग कम हैं।" (रूथ)

"आज के ज़्यादातर घर आधुनिक हैं।" (मेरी)

"आजकल गाड़ियाँ हैं और यातायात के बेहतर साधन हैं, और खासकर सड़कें पहले से बेहतर हैं। काम करने के वास्ते हमारे पास बेहतर उपकरण हैं।" (वॉरेन)

मैंने वॉरेन ने पूछा कि इसका मतलब क्या है और उसने खुलासा कियाः

"चीज़ें आसानी से मिल जाती हैं क्योंकि वे मशीनों से बनाई जाती हैं और कुछ लोग सबके लिए काम करते हैं।"

"आजकल सरकार को हमारी मदद करनी पड़ती है।" (थॉमस)

"लोग दूसरों की मदद करते हैं, वे सिर्फ अपने लिए चीज़ें नहीं बनाते।" (हेलेन)

"हम अपना दूध दुग्ध केन्द्र पर ले जाते हैं, केवल अपनी ज़रूरत लायक उत्पादन नहीं करते।" (कैथरीन, हेलेन के बिन्दु को विस्तार देते हुए)

मैंने स्पष्ट किया कि जब ऐसा किया जाता है तो इसे विशिष्ट कृषि (specialised farming) कहा जाता है। आरम्भिक दिनों में लोग सामान्य खेती करते थे। हमने अपने इलाके के सामान्य व विशिष्ट खेतों की पहचान कीः

"जहाँ आजकल सिर्फ खेत और जंगल हैं, पहले वहाँ कस्बे थे। लोग यहाँ से चले गए हैं।" (सोफिया)

"पहले यहाँ चमड़े और अनाज पीसने की मिलें हुआ करती थीं और अब वे यहाँ नहीं हैं।" (वॉरेन)

तब मैंने जनगणना के कुछ आँकड़े बोर्ड पर लिखे:

वर्ष	आबादी
1810-1820	3360
1820-1830	1962
1830-1840	1957
1840-1850	727
1850-1860	792
1860-1870	638
1870-1880	538
1880-1890	503
1890-1900	400
1900-1910	405
1930	331

1810 से 1930 के दौरान वैली व्यू की आबादी में ज़ाहिर तौर पर कमी आई है, जबकि इस दौरान काउंटी की आबादी 13,170 से बढ़कर 43,187 हो गई है। सोफिया ने सवाल किया कि ऐसा भला क्यों हुआ होगा। मैंने सवाल समूह की ओर पलट दिया। बच्चों ने जो टिप्पणियाँ कीं उनमें से कुछ ये थीं:

"हमने पढ़ा है कि पहले लोग अपनी ज़मीन के बारे में इतने सचेत नहीं होते थे क्योंकि ज़मीन की कोई कमी नहीं थी और जैसे ही उसका उपजाऊपन कम हो जाता था, वे कहीं और चले जाते थे। हो सकता है कि वैली व्यू की ज़मीन कम उपजाऊ हो गई हो और लोग बेहतर ज़मीन की तलाश में चले गए हों।" (मेरी)

"शायद वे पश्चिम की ओर फैल गए हों, जैसे पूर्व में बसे कई लोगों ने भी किया था।" (पश्चिम की ओर पलायन के अपने हालिया अध्ययन पर सोचते हुए एल्बर्ट ने कहा।)

"1840 से 1850 के बीच आबादी में भारी कमी आई। शायद ऐसा गोल्ड रश (Gold Rush) के कारण हुआ हो।" (वॉरेन)

"खेतीबाड़ी से अधिक फायदा नहीं होता था क्योंकि पश्चिम से, जहाँ ज़मीन

उर्वरक और यातायात बेहतर है, चीज़ें सस्ती मिल जाती थीं।" (वैली व्यू पर पुस्तिका को पढ़ते हुए सोफिया ने टिप्पणी की।)

क्योंकि समय हो चुका था, मैंने सुझाया कि इस चर्चा से उभरे कुछ सवाल बोर्ड पर लिख दिए जाएँ ताकि उनके जवाब हम बाद में तलाश सकें:

1. वैली व्यू में लोग इतने कम क्यों हो गए हैं?
2. क्या आगामी वर्षों में उनकी संख्या और घटेगी?
3. जो नौजवान यहाँ पले-बढ़े उनका क्या हुआ?
4. आज कौन से ऐसे काम उपलब्ध हैं जो पहले नहीं थे?
5. कौन से ऐसे काम हैं जो प्रारम्भिक निवासियों को उपलब्ध थे, पर हमें उपलब्ध नहीं हैं?
6. क्या आज हमारे कुछ काम ऐसे भी हैं जो प्रारम्भ में यहाँ आकर बसने वालों के पास भी थे?

मैंने वॉरेन से कहा कि वह सचिव बने और हमारी चर्चा को दर्ज करे। उसे लिखने के अभ्यास की ज़रूरत है।

बुधवार, 16 फरवरी

बच्चों ने कल जो चर्चा हुई थी उसकी समीक्षा की। हमने अपने सवालों को फिर से देखा और यह सोचने की कोशिश करने लगे कि उनके जवाब कैसे मिलेंगे। फ्रैंक ने सुझाया कि चौथे सवाल का जवाब पाने के लिए हमें दो सूचियाँ बनानी होंगी। पहली सूची में आजकल जो काम होते हैं उन्हें दर्ज करना होगा और दूसरी में पहले जो काम होते थे उन्हें लिखना होगा। उसका कहना था कि इससे हम दूसरे सवालों के उत्तर भी ढूँढ सकेंगे। मैंने समूह को सुझाव दिया कि चित्र व ग्राफ आदि हमें चीज़ों को साफ-साफ देखने में मदद करते हैं। वैली व्यू की आबादी के साथ उसका आकार भी घटा है। मेरी, हेलेन, जॉर्ज और एडवर्ड विभिन्न समयों पर वैली व्यू का इलाका दिखाने के लिए नक्शे बना रहे हैं। सोफिया, रूथ, थॉमस और वॉरेन आज के समुदाय के काम-धन्धों की सूची बना रहे हैं। मेरी, एल्बर्ट और डॉरिस वैली व्यू की पुस्तिका को पढ़ रहे हैं ताकि वे प्रारम्भिक बाशिन्दों के काम-धन्धों की सूची बना सकें।

गुरुवार, 24 फरवरी

प्राथमिक समूह के बच्चे उपलब्ध सामुदायिक सेवाओं के अध्ययन में जुटे हुए हैं। आज विलियम ने पूछा कि क्या हम डाकघर बनाने वाले हैं। जब मैं बड़े बच्चों के साथ काम कर रही थी, प्राथमिक समूह के बच्चों ने पुस्तकालय की किताबों से डाकघर की जानकारी इकट्ठा करने की कोशिश की।

बड़े समूह की समितियों ने अपनी छानबीन की जानकारी दी और उन्होंने जो सूचियाँ बनाई थीं उनके बारे में बताया। रूथ ने अपने समूह की ओर से बोलते हुए बताया कि आज के उद्योगों में हमारे कस्बे का सबसे प्रमुख धन्धा डेयरी का है। मैंने इस सूत्र को आगे बढ़ाना उचित समझा क्योंकि डेयरी उद्योग के सघन अध्ययन में सीखने की बहुत-सी सम्भावनाएँ नज़र आती हैं। इस अध्ययन से हमारे समुदाय के मौजूदा रुझान समझ आ सकते हैं, और वे यह भी जान सकते हैं कि समुदाय जैसा है वैसा क्योंकर बना। मैंने बच्चों से पूछा कि क्या आरम्भिक दिनों में भी ऐसा ही था। रैल्फ ने कहा, "नहीं। पहले हरेक परिवार अपनी ज़रूरत खुद पूरी करता था।" "क्या उनके पास बेचने को कुछ भी नहीं था?" मैंने पूछा। "अरे हाँ," रैल्फ ने जवाब दिया, "उनके पास दूध बच जाता था जिससे वे मक्खन बनाते थे और अपनी अतिरिक्त फसल के साथ बाज़ार में बेचने ले जाते थे।" वॉरेन ने मेरे सवाल के जवाब में जोड़ा कि दूध के बदले मक्खन इसलिए बेचा जाता था क्योंकि जब तक वे शहर पहुँचते, दूध फट जाता। चर्चा के दौरान उन्होंने वे कारण बताए जिनके चलते वैली व्यू में डेयरी उद्योग विकसित हुआ थाः

- पथरीली भूमि खेती के लिए कम उपयोगी है, पर चरागाह के लिए अच्छी है।
- पास ही में बड़े बाज़ार भी हैं; न्यू यॉर्क व नेवार्क के लोगों को दूध की ज़रूरत है, पर वे शहरों में गायें नहीं रख सकते हैं।
- बेहतर सड़कों और बेहतर यातायात के कारण शहरों में दूध सही-सलामत पहुँचाया जा सकता है।
- दूध को सही रखने के साधन विकसित कर लिए गए हैं, जिससे दूध का उत्पादन लाभदायक है।

हमारी चर्चा में हमारे लिए कुछ सवाल भी उभरे और मे इन्हें सवालों की सूची में जोड़ देगी। ये सवाल थेः

- वैली व्यू के प्रारम्भिक दिनों में एक विशिष्ट उद्योग के रूप में डेयरी उद्योग इतना महत्वपूर्ण क्यों नहीं था?
- तब से आज डेयरी उद्योग एक विशिष्ट उद्योग कैसे बन चला है?
- आज डेयरी उद्योग कैसे चलाया जाता है?
- डेयरी फार्मों में कौन से आधुनिक तरीके काम में लाए जाते हैं?
- कुछ इलाकों में डेयरी उद्योग अधिक विकसित है। क्या भूमि की सतह और वातावरण का इससे कोई सम्बन्ध है?
- वैली व्यू और न्यू जर्सी के दूसरे भागों में जो दूध उत्पादन होता है उसके बाज़ार कहाँ-कहाँ हैं?
- अच्छी सड़कें कैसे मदद करती हैं?

मंगलवार, 1 मार्च

प्राथमिक समूह ने कस्बे के डाकघर जाने की योजना बनाई। एलिस ने सलाह दी कि वे जाएँ तो अपनी आँखें और कान खुले रखें ताकि ज़्यादा से ज़्यादा जान सकें। जो प्रश्न वे डाकपाल से पूछना चाहते हैं उनकी बच्चों ने एक सूची बनाई। उन्हें पुस्तकालय में डाकघर के बारे में जो कुछ सामग्री मिली है उसे वे पढ़ने लगे हैं। मैंने हरेक बच्चे को पढ़ने के लिए कुछ चुनने में मदद की। डेयरी उद्योग के इलाकों तथा भौतिक परिस्थितियों व बाज़ारों के बीच रिश्ते को जानने के लिए बड़े बच्चों को पहले यह जानना था कि कौन-कौन से इलाकों में डेयरी उद्योग विकसित है और उन इलाकों के कौन-कौन से गुण उन्हें उद्योगों के लिए उपयुक्त बनाते हैं। बच्चों ने कुछ समूह बना लिए ताकि वे हमारी काउंटी, राज्य और दुनिया के ऐसे इलाकों को नक्शों पर दर्शा सकें जहाँ डेयरी उद्योग पनपा है।

बुधवार, 2 मार्च

आज बड़े बच्चों को नक्शों का काम करते छोड़ शेष सब कस्बे के डाकघर गए। डाकपाल ने बच्चों को पूरा डाकघर दिखाया और उनके सवालों के जवाब दिए। उन्होंने बच्चों को मनीऑर्डर के खाली फॉर्म दिए और चीज़ों को रद्द करने के ठप्पे के नमूने भी। बच्चों ने देखा कि डाक कैसे छाँटी जाती है, कैसे थैलों में बन्द की जाती है और फिर रेलगाड़ी तक पहुँचाई जाती है। बच्चों ने डाक डालने के लिए बने अलग-अलग खाँचों और खिड़कियों को देखा और उनके उद्देश्यों के बारे में पूछताछ की।

लौटने पर बड़े बच्चों ने खुश होते हुए बताया कि उन्होंने ज़िम्मेदार बच्चों का सा आचरण किया और खूब काम किया। "हम पूरे समय व्यस्त रहे, मिस वेबर," उनकी टोली के प्रमुख ने बताया।

गुरुवार, 3 मार्च

आज सुबह नन्हों ने अपना डाकघर बनाने की योजना बनाई। उन्हें इसके लिए वह कोना चाहिए जहाँ चित्र-फलक रखे हैं और वे अपना डाकघर सन्तरे के डिब्बों से बनाना चाहते हैं। एलिस ने समूह का सचिव बन किए जाने वाले सभी कामों की सूची बनाई।

शुक्रवार, 4 मार्च

आज बच्चों ने बेहतरीन क्लब बैठक की। मैं आजकल चर्चा में कम हिस्सा लेती हूँ और बच्चे भी प्रस्ताव रखते समय या टिप्पणी करते समय पलटकर मुझे सम्बोधित नहीं करते। वास्तव में वे शायद यह भी भूल जाते हैं कि मैं वहाँ हूँ। सिलाई क्लब की बैठकें खुशनुमा होती हैं। हर सप्ताह हम सिलाई करते समय बातचीत भी करते हैं, और मैं अन्दर के कुछ राज़ जानने लगी हूँ। मुझे मालूम है कि हर लड़की की अपने परिवार के शेष सदस्यों में से हरेक के प्रति क्या भावनाएँ हैं, उन्हें विशेष तौर पर क्या पसन्द या नापसन्द है, उनके भावी सपने क्या हैं, वे विवाह, तलाक, दोस्ती, प्रेम और बच्चों के लालन-पालन के विषय में क्या सोचती हैं, उन्हें कौन सी किताबें पढ़ना पसन्द हैं, वे पैसों के बारे में क्या सोचती हैं, तथा तमाम अन्य चीज़ें। मुझे उन्हें स्वस्थ यौन शिक्षा उपलब्ध करवाने के कई मौके मिले हैं।

सोमवार, 7 मार्च

जॉर्ज और एडवर्ड डाकघर बनाने में छोटे बच्चों की मदद कर रहे हैं। शेष छोटे बच्चों ने सूची से अपनी पसन्द के काम चुन लिए हैं।

बड़े बच्चों ने अपने नक्शे पूरे कर लिए हैं। उन पर दुनिया भर के ऐसे इलाके दर्शाए गए हैं जहाँ दूध उत्पादन प्रमुख गतिविधि है। अब वे उनका बारीकी से अध्ययन कर रहे हैं ताकि यह समझ सकें कि भूमि, जलवायु, बाज़ारों की संख्या व निकटता, सड़कें, यातायात के साधन आदि का डेयरी उद्योग के साथ क्या रिश्ता है।

मंगलवार, 8 मार्च

आज वैली व्यू के बारे में हमने अब तक जो कुछ सीखा है उसकी समीक्षा की गई। इसके लिए हमने अपनी सूची में दर्ज सभी सवालों के यथा सम्भव जवाब देने की कोशिश की। दूध उत्पादन के आधुनिक तरीकों पर चर्चा के दौरान दो सवाल उठाए गए:

- दूध निकालने की मशीन कैसे काम करती है?
- दूध को पाश्च्यूरीकृत कैसे किया जाता है?

गुरुवार, 10 मार्च

डेयरी फार्मों में कौन से आधुनिक तरीके अपनाए जाते हैं यह जानने के लिए बच्चों ने कस्बे की सबसे बढ़िया डेयरी देखने की योजना बनाई। हम वहाँ क्या-क्या जानना चाहेंगे उसे हमने सूचीबद्ध कर लिया:

- दूध की जाँच कैसे की जाती है?
- दूध निकालने की मशीनें कैसे काम करती हैं?
- दूध को ठण्डा कैसे किया जाता है?
- श्री रेमण्ड को हर दिन कितना दूध मिल पाता है?
- उनके पास कितनी गायें हैं?
- मक्खन कारखाने में भेजने से पहले दूध को कैसे तैयार किया जाता है?
- दूध निकालने में उन्हें कितना समय लगता है?
- दूध बेचने से पहले उन्हें क्या-क्या करना पड़ता है?
- क्या गायों की एक निश्चित संख्या ज़रूरी होती है?
- बढ़िया दूध पाने के लिए वे गायों को क्या खिलाते हैं?
- क्या मक्खन कारखाना किसी खास स्तर का दूध ही स्वीकारता है?
- गाय की टी.बी. की जाँच कैसे होती है?
- अगर गाय इस जाँच में खरी न उतरे तो क्या होता है?
- अधिक दूध पाने के लिए किसान को गाय की कैसी देखभाल करनी चाहिए?
- श्री रेमण्ड का दूध जाँच में कैसा निकला?
- क्या श्री रेमण्ड दूध उत्पादक संघ (Dairymen's League) के सदस्य हैं?
- अगर हैं, तो संघ उनके लिए क्या करता है?

स्कूल के बाद रैल्फ और मैं श्री रेमण्ड के पास साक्षात्कार की तारीख तय करने गए। हमने अपने सवालों की सूची उनके पास छोड़ दी ताकि उन्हें तैयारी का मौका मिल सके।

गुरुवार, 17 मार्च

पिछले तीन दिन से सड़कों पर बिछी बर्फ के कारण कई बच्चे स्कूल नहीं आ पा रहे। मैं हर बच्चे की व्यक्तिगत ज़रूरतों पर काफी समय लगा सकी। इससे उनकी कई परेशानियाँ दूर हो पाईं। पहले दो दिन तो बच्चों को यह सब बड़ा अच्छा लगा और वे बार-बार कहते रहे, "काश, हमेशा ही ऐसा हो सके।" पर कल उन्हें अपने साथियों की कमी अखरने लगी, सामूहिक चर्चाओं का जोश याद आने लगा। कैथरीन फूट पड़ी, "यह तो संन्यासियों जैसी हालत है, बस अकेले काम करते रहो। मुझे तो संन्यासी बनना पसन्द नहीं है। क्या आपको पसन्द आएगा, मिस वेबर!"

घनघोर बारिश और आँधी-तूफान का मुझ पर बुरा असर पड़ता है और मेरा मिज़ाज बच्चों को प्रभावित करता है। आज हम सब तनाव में थे। मैंने शान्त रहने की खूब कोशिश की पर मैंने पाया कि मैं रूखे, असम्बद्ध वाक्यों में बोल रही हूँ। जब हम गाने लगे तो हमारा आन्तरिक तूफान मानो गुज़र गया। आज रात हम "स्नोव्हाइट और सात बौने" फिल्म देखने गए। बच्चों ने जब तक उसे दो बार न देख लिया, वे लौटने को तैयार ही न हुए। फिल्म की डायन से उन्हें डर तक नहीं लगा। बच्चे नन्हे जानवरों को देख बेहद खुश हुए। हेलेन तो मानो आपा ही खो बैठी। वह बारबार दोहराती रही, "ओह, मुझे ये बहुत प्यारे लग रहे हैं।"

सोमवार, 21 मार्च

बसन्त का पहला दिन खूबसूरत और गर्म था। स्कूल से पहले हम अनौपचारिक रूप से बैठ गए और हमने बसन्त के जो लक्षण हमें नज़र आए हैं उन पर बातचीत की।

दोपहर को खाते वक्त मैंने घोषणा की, "बसन्त आ गया है और आज मैं रॉक गार्डन में काम करूँगी। कौन मेरा साथ देगा?" सोफिया और रूथ ने हामी भरी। बाग में यह देखकर–हम चकित थे कि तमाम नन्हे पौधे धरती से झाँक रहे थे। वर्ना इससे उत्तेजित हो उठी और कूद-कूद कर चीखने लगी, "आओ, आकर देखो तो सही हमारे बाग में क्या-क्या है!" मे, विलियम और मेरी भागे आए। बाद में कैथरीन, एलिस और शेष नन्हे भी आ जुड़े। कुछ ही देर में रैल्फ भी यह देखने आ गया कि क्या वह भी कुछ मदद कर सकता है। दोपहरी का घण्टा पूरा हुआ तो हम सभी को अफसोस हुआ।

नन्हे फिर से अपने खेलघर में खेलने लगे हैं। आज उन्होंने मार्था की मदद से एक कठपुतली नाटक तैयार किया। उन्होंने हाथ से लिखा आमंत्रण पत्र बड़े बच्चों को दिया और उन्हें नाटक देखने अपने "घर" आने का न्यौता दिया। पत्र की वर्तनी सुधारने में मार्था ने उनकी मदद की। एण्ड्र्यू, एलेक्स, गस, वर्ना, पर्ल और मे भी घर-घर खेलती हैं। एण्ड्र्यू को खेलना पसन्द है पर वह कहता है कि लड़कियाँ कभी-कभार बड़ी दादागीरी छाँटती हैं।

मंगलवार, 22 मार्च

हम सब बसन्त-रोग से ग्रस्त हैं। आज दूसरी काउंटी की छह शिक्षिकाएँ मिलने आई थीं और हममें से किसी की काम करने की इच्छा नहीं थी। हमने खेलने का समय बढ़ा दिया और काम व पढ़ाई का समय घटा दिया, फिर भी राहत न मिली। थोड़ी-थोड़ी देर में कोई न कोई बच्चा चुपचाप उठता और कक्षा के बाहर चक्कर काट आता, ताकि जग जाए और लौटकर काम कर सके। पर इसका कोई फायदा नहीं हुआ। हमारे मेहमानों के जाने के बाद हमने यह कोशिश त्याग दी और बगीचे का काम करने बाहर निकल आए। बड़े बच्चों ने क्यारी से घासपात हटाई और शेष बच्चों ने रॉक गार्डन की खरपतवार साफ की, और पत्थरों की पगडण्डियों को साफ कर दिया।

बुधवार, 23 मार्च

कल की कमी पूरी करने के लिए आज बच्चों ने बेतहाशा काम किया।

श्री रेमण्ड के साथ साक्षात्कार पूरा हुआ। बच्चों के साथ वे बड़े आराम से मिले। हम उनकी बैठक में बैठे और उन्होंने बच्चों के सवालों के उत्तर दिए। हरेक बच्चे को कुछ प्रश्नों के उत्तर दर्ज करने थे। श्री रेमण्ड हमें गौशाला ले गए और मशीन से दूध निकालने का तरीका दिखाया। उन्होंने बताया कि वे मशीनों की देखभाल कैसे करते हैं, गायों को चारा आदि कैसे खिलाया जाता है, उनकी

देखभाल कैसे की जाती है। मार्था, हेलेन और वॉरेन लगातार सवाल दागते रहे।

गुरुवार, 24 मार्च

आज सुबह हमने उस जानकारी की समीक्षा की जो हमें श्री रेमण्ड के यहाँ मिली थी। रैल्फ यह जानना चाहता था कि जब श्री रेमण्ड का दूध मक्खन कारखाने में पहुँचता है तो उसका क्या होता है? हमने मक्खन कारखाने में जाने की योजना बनाई ताकि हमें निम्नोक्त सवालों के उत्तर मिल सकें:

- क्या वे दूध से कुछ बनाते हैं?
- वे दूध को पाश्च्यूरीकृत कैसे करते हैं?
- दूध में वसा की मात्रा की जाँच कैसे होती है?
- दूध बोतल में बन्द कैसे किया जाता है?
- दूध का वज़न कैसे लिया जाता है?

सोमवार, 28 मार्च

बड़े बच्चे अपना काफी समय दुनिया के दूध उत्पादन इलाकों की तलाश में बिताते रहे हैं। आज हम एक सुविधाजनक समूह में अपनी टिप्पणियाँ व नक्शे लेकर बैठ गए। हमने अपने शोध के नतीजों पर बातचीत कर उन्हें सूचीबद्ध किया। वॉरेन ने जो सूची मुझे दी उसमें निम्नोक्त बातें थीं:

1. दूध उत्पादन के अधिकांश इलाके उत्तरी शीतोष्ण भाग में स्थित हैं।
2. दक्षिणी शीतोष्ण भाग में भी कुछ दूध उत्पादन क्षेत्र हैं, पर उनकी संख्या कम है।
3. दुनिया के सूखे प्रदेशों में डेयरी क्षेत्र नहीं हैं, पर इसमें एक अपवाद भी है। दक्षिण अमरीका में, जहाँ बरसात कम होती है और जो काफी गर्म भी है, सिर्फ इतना दूध उत्पादन होता है कि वहाँ की गोरी आबादी को दूध उपलब्ध हो सके।
4. डेयरी क्षेत्र उच्चभूमि व जंगलों वाले इलाकों में स्थित हैं। अक्सर इन स्थानों में खेती करना काफी कठिन होता है, पर धरती इतनी तो उपजाऊ होती है कि पशुओं के लिए कुछ फसलें और चारा पैदा हो सके।

5. दूध उत्पादन निचली सपाट भूमि में भी किया जाता है जहाँ ज़मीन खेती के लिए माकूल है। यहाँ लोग खेतीबाड़ी के बनिस्बत दूध उत्पादन का काम इसलिए पसन्द करते हैं क्योंकिः (क) ये छोटे देश हैं और अनाज पैदा कर फायदेमन्द खेतीबाड़ी के लिए ज़्यादा ज़मीन की ज़रूरत होती है। अपने पशुओं के लिए सिर्फ चारा उगाना अधिक आसान पड़ता है। (ख) अनाज वे उन देशों से ले लेते हैं जहाँ उसे उगाना सस्ता पड़ता है।

बच्चों ने अमरीका में गेहूँ और मक्का उगाने वाले क्षेत्रों की भी तुलना की ताकि उपरोक्त कथनों को दर्शाया जा सके। इस चर्चा से एक अन्य सवाल भी उठाः अगर हमारे भोजन में दूध इतना महत्वपूर्ण है, तो फिर उन देशों के लोग क्या करते होंगे जहाँ दूध उत्पादन नहीं होता?

मंगलवार, 29 मार्च

बड़े बच्चे उस सवाल का जवाब तलाशने लगे हैं जो उन्होंने कल उठाया था। दोपहर के घण्टे में बच्चे कंचों की प्रतियोगिता में व्यस्त हो गए जो उन्होंने खुद आयोजित की थी। हेलेन और रैल्फ ने जोड़ियाँ बनाईं। जो जीते, उनकी फिर से जोड़ियाँ बनाई गईं। यह क्रम तब तक चलेगा जब तक सिर्फ एक जोड़ी बच जाएगी और विजेता तय हो जाएगा। जैसे-जैसे बच्चे प्रतियोगिता से बाहर होते गए उन्होंने अपने लिए खेल आयोजित कर लिए। कभी-कभी मुझे लगता है कि इन बच्चों को किसी शिक्षक की दरकार नहीं है, वे स्वयं ही इतने ढेर सारे काम कर लेते हैं!

बुधवार, 30 मार्च

नन्हों ने अन्ततः अपना डाकघर बना डाला है। आज उन्होंने चिट्ठी की रूपरेखा सीखी और एक-दूसरे को अपना पहला खत लिखा। उन्होंने एक बच्चे को डाकपाल चुना जो टिकटें बेचे, टिकटों को रद्द करने के ठप्पे लगाए और डाक डिब्बों से एकत्रित चिट्ठियों को बाँटे। बड़े बच्चे सामूहिक चर्चा में पिछली बार उठे सवाल – "जिन देशों में दूध उत्पादन नहीं होता वहाँ लोग दूध के लिए क्या करते हैं?" – पर अपनी-अपनी टिप्पणियाँ लेकर आए। हमने अरब देशों के ऊँट, भारत के याक, लैपलैण्ड के रेन्डियर, इटली की बकरियों और इन स्थानों में बसे लोगों की जीवन शैलियों के बारे में बात की। बच्चों ने पाया कि इन देशों

की भूमि की विशेषताएँ, वहाँ की जलवायु, वहाँ कितनी फसल उगती है, देश की समृद्धि (जिन पशुओं को श्रम के लिए काम में लिया जाता है, उन्हीं से दूध लेने की मजबूरी), ये सब चीज़ें निर्धारित करती हैं कि वहाँ कौन से पशु पाले जाते हैं।

हमें पता चला कि हम आज मक्खन कारखाने नहीं जा सकते क्योंकि वह मरम्मत के लिए बन्द है। सो हमने वहाँ पूछे जाने वाले अपने सवाल वॉकर गॉर्डन फार्म पर कल पूछे जाने वाले सवालों की सूची में जोड़ दिए।

गुरुवार, 31 मार्च

प्लेन्सबरो में हमारा गाइड हमें दूध को बोतलबन्द करने वाला संयंत्र, गौशालाएँ, दूध सुखाने वाला संयंत्र इत्यादि दिखाने ले गया। हमने दोपहर का भोजन यहीं किया और हरेक बच्चे को पाव-भर दूध दिया गया। हमारे गाइड ने बताया कि जब उनके कुछ अमरीकी ख़रीददार यूरोप यात्रा पर जाते हैं तो उन्हें इस दूध की याद इतना सताती है कि वे वॉकर गॉर्डन कम्पनी से दूध मँगवाते हैं। बच्चों ने फौरन यह जानना चाहा कि यह कैसे सम्भव होता है। उन्हें साथ ले जाने के लिए छपी सामग्री दी गई। मार्था ने कहा कि वह इस सबको पढ़कर अपनी दादी को सुनाएगी। अगर इस यात्रा से मार्था और उसकी दादी के बीच बेहतर सम्बन्ध बन पाते हैं, तो भी यह यात्रा फलदायी सिद्ध होगी।

सोमवार, 4 अप्रैल

आज सुबह बच्चों ने जो कुछ वॉकर गॉर्डन डेयरी में देखा था उस पर बातचीत की। हमने पहले तो यह दोहराया कि वहाँ जाने का हमारा उद्देश्य क्या था। तब हमने उन कारणों की सूची बनाई जिससे यह सिद्ध हो सके कि यह डेयरी दुनिया की सबसे बेहतरीन डेयरी क्यों मानी जाती है:

- हर चरण में पूरी सफाई बरती जाती है।
- उनके दुधारू पशु बढ़िया हैं जो सही चारा-पोषण व देखभाल के कारण अच्छा दूध देते हैं।
- वहाँ के कामगारों के बीच उम्दा सहकार है जिसके चलते सब काम सुचारू रूप से सम्पन्न होते हैं।

फ्रैंक इस तथ्य से प्रभावित था कि वहाँ गायों को उनका आहार तोलकर,

विटामिन व अन्य पोषक तत्वों के साथ मिलाकर दिया जाता है। उसका कहना था कि जिस तरह से अपनी देखभाल करते हैं, वहाँ पशुओं की उससे भी बढ़िया देखभाल की जाती है।

मुझे वॉरेन को यह कहते सुन अच्छा लगा कि श्री रेमण्ड भी वे सभी काम करते हैं जो वॉकर गॉर्डन डेयरी में किए जाते हैं, सिर्फ उनका स्तर छोटा है।

मंगलवार, 5 अप्रैल

हमने अब तक डेयरी उद्योग के बारे में जो कुछ भी जाना-सीखा था उसकी समीक्षा की। बच्चों को यह बात समझ आने लगी है कि हमारा इलाका डेयरी उद्योग के लिए सही है। मैंने उनसे पूछा कि क्या उनकी राय में हमें अपनी आय में इज़ाफा करने के लिए अधिक दूध उत्पादन करना चाहिए? इस प्रश्न का सन्तोषजनक उत्तर हम नहीं दे पाए। मैंने सुझाया कि शायद हमें काउंटी के कृषि एजेंट श्री राब को कहना चाहिए कि वे हमारी मदद करें। समूह के सचिव के रूप में काम कर रही रूथ उन्हें एक पत्र लिखेगी और उन्हें स्कूल आने को आमंत्रित करेगी।

सोमवार, 11 अप्रैल

हमने श्री राब के आगमन की तैयारी शुरू कर दी है। जिन सवालों पर हम उनसे बातचीत करना चाहते हैं उसकी सूची भी बना ली है। ये सवाल हैं:

- हमारे इलाके में कौन-कौन सी डेयरियाँ हैं? क्या वे सहकारी समितियों की हैं?
- पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से क्या वैली व्यू में अधिक डेयरियाँ बनाना उचित होगा?
- अगर वैली व्यू में अधिक डेयरियाँ हों तो क्या सारे दूध की खपत यहीं हो जाएगी, या वह बचेगा?
- क्या दूध उत्पादन संघ का सदस्य बनना अच्छा होता है?
- निजी मक्खन कारखानों और दूध उत्पादन संघ के कारखानों में क्या फर्क होता है?
- दूध की कीमत कैसे तय होती है?
- राज्य दूध नियंत्रण बोर्ड क्या है और वह क्या करता है?

मैंने बच्चों को सुझाव दिया कि अगर हम दूध विपणन के बारे में कुछ पढ़-समझ लें तो शायद श्री राब की बात ज़्यादा समझ आए।

इस सप्ताह मान नामक एक नया जर्मन परिवार हमारे इलाके में आ बसा है। हेनरी आज स्कूल आया। वह अच्छा लड़का लगता है और समूह ने उसे दिल से स्वीकार लिया है। वॉरेन और हेनरी में गहरी दोस्ती हो गई। मैंने हेनरी के साथ कुछ काम किया और पाया कि वह हमारे प्राथमिक समूह के बड़े बच्चों के साथ काम कर सकेगा।

मंगलवार, 12 अप्रैल

आज हमारी चर्चा अतिरिक्त दूध से शुरू हुई। हमें पता चला कि न्यू यॉर्क दूध पट्टी, जिसमें हमारा इलाका आता है, दुनिया का सबसे बड़ा बाज़ार है। यहाँ अतिरिक्त दूध की मात्रा सबसे कम है। पर इसके बावजूद हम अधिक दूध पैदा नहीं कर पाते क्योंकि यहाँ श्रम बेहद महँगा है। औद्योगिक श्रम से स्पर्धा करने के लिए चारा खरीदना पड़ता है क्योंकि ज़मीन की कमी है, और स्वास्थ्य बोर्ड के कठोर नियमों के कारण डेयरी व पशुओं के रख-रखाव पर खर्च भी अधिक होता है। समूह के तीन बच्चों ने अपने माता-पिता का उदाहरण देते हुए बताया कि वे मज़दूर रख ही नहीं सकते क्योंकि मज़दूरी दरें उनकी पहुँच से बाहर हैं। उन्हें कुछ चारा भी खरीदना पड़ता है। और कई इन्तज़ाम भी उन्हें करने पड़ते हैं, जैसे बिजली से दूध ठण्डा करने वाली मशीनें। इन सब कारणों से उनकी कुल आय बहुत कम रह जाती है।

एक अखबार में छपा था कि किसानों के पास अतिरिक्त दूध इसलिए बच जाता है क्योंकि वे मौसमी उत्पादन को बाज़ार की ज़रूरतों के हिसाब से नियंत्रित नहीं करते। अगर किसान परस्पर सहकार करें तो उत्पादन नियंत्रित किया जा सकता है, जिससे सबको लाभ हो सकता है। एडवर्ड ने कहा कि यह बात सच है: कि उसके पिता को अपने अतिरिक्त दूध की आधी कीमत ही मिल पाती है। उसके पिता के पास जून के महीने में अधिक अतिरिक्त दूध होता है क्योंकि लगभग उसी समय गायों के बछड़े पैदा होते हैं। साथ ही, गायें जून में चरागाहों में चरने जाती हैं और बेहतर चारे के कारण अधिक दूध देती हैं। मैंने पूछा कि वॉकर गॉर्डन डेयरी इस बारे में क्या करती है? बच्चों का कहना था कि वे पूरे साल भर गायों को एक-सा चारा देते हैं और पुरानी गायों को हटा नई रखने

की व्यवस्था करते हैं ताकि दूध की मात्रा और गुणवत्ता दोनों हमेशा समान बनी रहें। श्री रेमण्ड भी ठीक यही करते हैं।

सामेटिस बच्चों का कहना था कि उनकी समझ में नहीं आता कि अतिरिक्त दूध होता ही क्यों है। लोग कम कीमत पर अधिक दूध बेच क्यों नहीं देते? पिछली सर्दियाँ उन्होंने शहर में बिताई थीं, जहाँ उन्हें पीने को दूध ही नहीं मिल पाया था क्योंकि वहाँ दूध खरीदना भारी पड़ता था। उनके लौटने के कारणों में एक यह भी था, क्योंकि यहाँ वे एक गाय रख पाते हैं।

बुधवार, 13 अप्रैल

अतिरिक्त उत्पादन की चर्चा आज भी जारी रही। एडवर्ड ने बताया कि मक्खन कारखाने में उस सारे के सारे दूध को अतिरिक्त माना जाता है जो अपने तरल रूप में बेचा नहीं जा सकता हो। हमने कुछ देर यह बातचीत की कि अतिरिक्त दूध का क्या किया जाता है, कैसे मक्खन, पनीर व दूध के अन्य उत्पाद बनाए जाते हैं। हम एक रोचक चर्चा की दिशा में बढ़ गए जब मार्था ने पढ़कर सुनाया कि मक्खन में लैक्टिक एसिड बनाने वाले जीवाणु मिलाए जाते हैं ताकि उसमें खमीर "उठे"। बच्चों को यह तो पता था कि लैक्टिक एसिड का क्या मतलब है और कि जीवाणुओं को पैदा करना होता है, पर यह किया कैसे जाता है यह कोई नहीं जानता था। सोफिया ने कहा कि शायद वे पुराना मक्खन ताज़े में डाल देते होंगे। उसकी माँ जब पनीर बनाती हैं तो दूध में पुराने पनीर का टुकड़ा डालती हैं ताकि दही बनना शुरू किया जा सके। मेरी और एडवर्ड ने बताया कि उनकी माँ नई डबलरोटी बनाते समय खमीर उठाने के लिए पिछली बार के आटे में से बचाकर रखे गए खमीरी आटे को मिलाती हैं।

कल बच्चों को अपनी पुस्तकों में पनीर के इतिहास के बारे में कुछ रोचक जानकारी मिली, जैसे वे कितने प्रकार का होता है, उसे कैसे बनाया जाता है, आदि। वॉरेन हम सबको चखाने के लिए थोड़ा-सा ईडाम नामक पनीर लेकर आएगा।

गुरुवार, 14 अप्रैल

आज सुबह-सुबह दावत हो गई। सबको ईडाम पनीर की छोटी-छोटी लाल गोलियाँ मिलीं, जो समूह को बड़ी अच्छी लगीं।

कल सवाल यह उठा था कि "औपनिवेशिक दिनों में लोग अपने अतिरिक्त दूध का क्या करते थे?" प्रश्न के जवाब में हमने प्रथम दूध रेलगाड़ी, रेफ्रिजरेशन के प्रारम्भिक तरीकों, आधुनिक यातायात व्यवस्था और दूध ठण्डा करने की आधुनिक व्यवस्था के विषय में जानकारी ली। डेयरी उद्योग के लिए रेलगाड़ी का आना महत्वपूर्ण रहा है।

बुधवार, 20 अप्रैल

स्कूल शुरू होता उससे पहले सोफिया और कैथरीन खुशी से लबरेज़ होकर मेरे पास आईं। क्यारी में बेहद सुन्दर फूल खिल आए हैं। वे दोनों रूथ के साथ छुट्टियों में जंगली फूलों वाला रॉक गार्डन देखने गई थीं और उन्होंने चौदह जंगली पौधों की सूची बनाई थी जो उसमें उगे हुए हैं। लड़के एक लम्बी रस्सी ले आए और जी भरकर कूदे। "साथ-साथ कूदें हम लड़के," वे गा रहे थे। मैंने फ्रैंक और डॉरिस से बात की ताकि उन्हें यह पता रहे कि नन्हों की मदद के लिए उन्हें आज क्या-क्या करना है।

नौ बजे डॉरिस और मैं छोटे से खेलघर में पाँच-छह वर्षीय बच्चों के साथ गए। हमने योजना बनाई कि खेलघर के सामने कहाँ अहाता बनेगा, कितना बड़ा बनेगा। हम यह कर ही रहे थे कि एरिक बोला, "मिस वेबर, मेरे पिता आज बगीचा गोड़ रहे हैं।" आइरीन फौरन बोली, "ओह, क्या हम भी बाग लगा सकते हैं? चीज़ों को उगते देखने में बड़ा मज़ा आएगा।" फ्लोरेंस ने बताया कि उसकी माँ रॉक गार्डन बना रही हैं। रिचर्ड ने जोड़ा कि ऐसा करना मुश्किल नहीं होगा क्योंकि खेलघर के पिछवाड़े में पत्थरों का ढेर पड़ा है। मैंने जानना चाहा कि वे पहले क्या करना चाहेंगे। उन्होंने योजना यह बनाई कि वे पहले बिखरी टहनियों, कागज़ आदि की सफाई करेंगे, तब बड़े पत्थरों से अहाता बनाएँगे और फिर सपाट पत्थर ठीक दरवाज़े तक बिछाकर रास्ता बना लेंगे। इसके बाद मैं डॉरिस की देखभाल में उन्हें छोड़ आई। पर मैंने उसे चेता भी दिया कि वह नन्हों को बड़े पत्थर न उठाने दे और उन्हें उनकी ही योजना के अनुसार काम करने दे।

प्राथमिक समूह के शेष बच्चों ने पहले दस मिनटों में वॉल्टर और जॉयस को खत लिखे जो यहाँ से चले गए हैं और जिन्होंने पत्र से हमें अपनी नई शाला के बारे में बताया था। जब मैं अहाते से लौटी तो मैंने खत लिखने में बच्चों की मदद की। दस बजे तक सभी पत्र लिख डाले गए, पर सब बच्चे उन्हें साफ अक्षरों

में उतार नहीं सके। कई खत रोचक थे और काफी लम्बे थे।

दस बजे हम खेल के लिए तैयार थे। बड़े बच्चों ने लकड़ियों व पत्थर का खेल खेला और मैंने छोटों के साथ "मैं टॉमी टिडलर की ज़मीन पर हूँ" खेला। पर वे तब तक खेलने को राज़ी न हुए जब तक मैंने सुबह के उनके काम को ठीक से जाँच नहीं लिया। खेलघर के सामने तरतीब से पत्थर लगा आयताकार अहाता बन चुका था। वहाँ से टहनियाँ, पत्ते, कागज़ साफ किए जा चुके थे। मेहनत-मशक्कत के बाद वे हाथ-मुँह धोने, अपनी कारगुज़ारी को देखने और सुस्ताने के लिए दस मिनट रुके। डॉरिस बोली, "उन्हें लगता है कि यह बड़ा अच्छा लग रहा है।"

खेल घण्टे के बाद समूची शाला पढ़ने में जुट गई। पाँच और छह साल के बच्चों ने मेरे साथ बैठ किताबें देखीं और उन पर बातचीत की।

जिस समय मैं प्रथम समूह के साथ थी, द्वितीय समूह ने बड़ी सावधानी से तैयारी की और अपनी कहानियाँ सुन्दर तरीके से पढ़कर सुनाईं। पढ़ने के बाद उन्होंने अपनी कार्य-पुस्तिकाओं में कुछ अनुवर्तन का काम किया और तब फ्रैंक उन्हें बाहर ले गया ताकि वे खिड़कियों वाले डिब्बे बना सकें। एण्ड्रयू और गस को आरी चलाने और कीलें ठोकने का कुछ अनुभव था। वर्ना ने फट्टों की नाप-जोख की। इन तीस मिनटों के दौरान पाँच और छह साल के बच्चे अपने खेलघर में खेलते रहे।

ग्यारह बजकर दस मिनट पर वर्ना और गस हमारे साथ *रॉबिनहुड* के अभ्यास में जुड़े। एण्ड्रयू एल्बर्ट, एलिस और मेरी के साथ *विनी द पूह* का अभ्यास करने लगा। प्राथमिक समूह की प्रस्तुति में यही नाटक होगा। 12 मई को कठपुतली प्रदर्शन से पूर्व हम हर दिन आधा घण्टा अभ्यास करना चाहते हैं। यह समय हम अपनी पठन कक्षा से निकाल रहे हैं। इसका मतलब होगा कि मैं तीसरे, चौथे, पाँचवें और छठे समूह से सप्ताह में दो बार के बदले एक ही बार मिलूँगी। दूसरी बार वे खुद बैठेंगे और मन ही मन पढ़ेंगे। इस प्रयास से वे कितना समझ पाते हैं, यह बाद में जाँच लिया जाएगा। हमने जो कार्यक्रम तय किया है वह यह है:

सोमवार: तीसरा समूह मेरे साथ बैठेगा; चौथा आपस में मिलेगा; पाँचवाँ और छठा समूह मन ही मन मौन वाचन करेंगे जिसे समझ के लिए जाँचा जाएगा।

मंगलवार: पाँचवाँ समूह मेरे साथ बैठेगा; छठा आपस में मिलेगा; तीसरा और चौथा समूह मौन वाचन करेंगे जिसे समझ के लिए जाँचा जाएगा।

बुधवार: चौथा समूह मेरे साथ बैठेगा; तीसरा आपस में मिलेगा; पाँचवाँ और छठा समूह मौन वाचन करेंगे जिसे समझ के लिए जाँचा जाएगा।

गुरुवार: छठा समूह मेरे साथ बैठेगा; पाँचवाँ आपस में मिलेगा; तीसरा और चौथा मौन वाचन करेंगे जिसे समझ के लिए जाँचा जाएगा।

साढ़े ग्यारह बजे प्राथमिक समूह के बच्चों ने पुस्तकालय से आसान किताबें चुनीं और वॉरेन के साथ बाहर चले गए। उन्होंने पहले मन ही मन किताबें पढ़ीं और जब उनकी तैयारी हो गई तो एक-दूसरे को पढ़कर सुनाईं।

विश्राम के पीरियड के बाद छोटे बच्चों ने ताल का अभ्यास किया। वे दरियों पर बैठे और मैंने गेंद उछालने की धुन बजाई। उन्होंने पहले ताल की पहचान की और तब बारी-बारी संगीत के ताल के अनुसार गेंद उछाली। बाद में ताल के अनुसार विभिन्न जानवरों की चाल की भी पहचान की। इस दौरान बड़े बच्चे अपने विविध काम करते रहे। वॉरेन और रैल्फ ने कठपुतली मंच के लिए दृश्यों की चर्चा की और उन्हें बनाने की योजना बनाई। रूथ ने ताज़ा घटनाक्रम वाली किताब में जोड़ने के लिए एक लेख लिखा जो दुनिया के नक्शे के साथ छापा जाएगा। हेलेन, मार्था और एल्बर्ट ने कठपुतलियों की डोरें लगाईं। कैथरीन ने उल्लू की पुतली बनाने के लिए उसके चेहरे की कढ़ाई की। साल भर की ज़िम्मेदारियाँ आवंटित करने वाली समिति ने बैठक की। ये सब काम बच्चों ने तब-तब किए जब-जब वे अपने नियमित काम से फारिग हो चुके होते थे।

दोपहर डेढ़ से दो बजे तक पाँच व छह साल वाले नन्हे अपने खेलघर में खेले। आइरीन कुछ शब्दों की वर्तनी का अभ्यास करने के बाद उनमें शामिल हो गई। आइरीन की दिली इच्छा है कि वह लिख सके। शेष प्राथमिक समूह को मैंने कुछ नए शब्द लिखवाए। उन्होंने सूची को ध्यान से देखा ताकि पता चले कि किन शब्दों को उन्हें याद करना होगा। जो थोड़ा-सा समय बचा उसमें मैंने उन्हें गणित में व्यक्तिगत मदद दी।

दो बजे प्राथमिक समूह घर चला गया और मैंने बड़े बच्चों के साथ बेसबॉल खेला। खेल के बाद बड़े समूहों की गणित में मदद की।

4-एच वानिकी क्लब की मार्गदर्शिका में एक अध्ययन का वर्णन है जिसमें तकरीबन एक-चौथाई एकड़ भूमि के टुकड़े का अध्ययन किया जाता है। बच्चे उस भूमि को बारीकी से जाँचते-परखते हैं ताकि वहाँ के पेड़-पौधों, जानवरों व जलचरों, सभी के बारे में जान सकें। हमें भी जंगल में एक ऐसा टुकड़ा मिला जिसमें "सब कुछ" था। पर बरसात शुरू हो जाने के कारण हम ठीक से उसकी छानबीन न कर सके। पर एक पुरस्कार हमें ज़रूर मिला। हमें दोहरा इन्द्रधनुष नज़र आया जो हमने पहले कभी नहीं देखा था। बच्चों ने पूछा कि इन्द्रधनुष कैसे बनता है। वॉरेन को इसका पता था, सो उसने समूह को बताया। पर हममें से कोई यह नहीं जानता था कि दो इन्द्रधनुष क्योंकर बने और मैंने सुझाया कि अवसर मिलने पर हम उत्तर की तलाश करें।

बारिश थमने का इन्तज़ार करते हुए हमने यह चर्चा की कि जंगल के उस हिस्से का अध्ययन हम कैसे करेंगे। कैथरीन ने कहा कि पहले हमें वहाँ वह सब देख लेना चाहिए जिसे हम पहचानते हैं। वॉरेन को लगा कि हमें उस भूखण्ड का नक्शा बनाकर जो चीज़ें मिलें उन्हें चिह्नित करना चाहिए। मैंने जानना चाहा कि "जो चीज़ें मिलें" से उसका क्या अर्थ है। उसने सुझाया कि अगर ऐसे सुराख मिलें जिसमें जानवर हों, या पेड़ों पर, दलदल में, खेतों में या जंगल में सुराख मिलें, तो उन सबको नक्शे पर दर्शाया जाए। मैंने पूछा कि क्या हम पशु भी दर्शा सकते हैं। उत्तर "नहीं" था, "नक्शा इतना बड़ा थोड़े ही होगा।" रैल्फ ने कहा, "बड़ा नक्शा भी तो बनाया जा सकता है।" एल्बर्ट का कहना था कि हमें बड़े नक्शे को इधर-उधर ले जाना मुश्किल होगा। रैल्फ ने जोड़ा कि हमारे पास अपने-अपने छोटे नक्शे होने चाहिए जिन्हें हम बाहर ले जा सकते हैं और एक बड़ा नक्शा होना चाहिए जिस पर हम स्कूल में काम करें।

गुरुवार, 21 अप्रैल

रैल्फ "जून बेरी" के फूलों का एक खूबसूरत गुलदस्ता लेकर स्कूल आया। उसने सोफिया से कहा कि वह उन फूलों को सजा दे और वह उसके लिए गुलदान भी लेकर आया। हम सब बाहर बाग में यह देखने निकल आए कि नया क्या है। जंगली जर्मेनियम, दलदली गेंदा और लेडी स्लिपर सिर उठाए खड़े हैं। मैंने कुछ समय मे के साथ योजना बनाते हुए बिताया जिसे आज नन्हे बच्चों के साथ काम करना है।

प्राथमिक समूह के बच्चों ने फ्रैंक के साथ खिड़की-बक्सों पर काम किया। वर्ना और एलिस ने एक बक्सा रँगा। विलियम, एण्ड्रयू और हेनरी ने काटा, पीटा, नापा-जोखा और एक और बक्सा बना डाला। फ्रैंक नन्हे बच्चों के साथ बड़े सलीके से काम करता है। उनके लिए वे काम वह कभी नहीं करता जिन्हें करना वे खुद सीख सकते हैं।

बड़े बच्चों ने अपने अखबार पर बातचीत की। बच्चों का मानना था कि उनका पहला अखबार दूसरे वाले से बेहतर था क्योंकि उसके लिए अपने लेख हमने काफी पहले से लिखने शुरू कर दिए थे, हमारे पास कई रोचक चीज़ें थीं जिन पर हम लिखना चाहते थे, और सबने सहयोग किया था और योगदान दिया था। उनका सुझाव था कि हमें अपने तीसरे अखबार का काम फौरन शुरू कर दिया जाना चाहिए। मेरी ने कहा कि यह बात हर दिन याद दिलाई जानी चाहिए। वॉरेन को लगा कि अगर सूचना-पट्ट पर सबके नामों की सूची लगा दी जाए तो बेहतर होगा। जैसे-जैसे हम अपना योगदान करें, वह नाम के आगे दर्ज होता चले। मेरी का कहना था कि अगर हमारे पास ढेरों लेख तैयार हो जाते हैं तो हम उनमें से सबसे बढ़िया लेख चुन सकते हैं और एक अच्छा अखबार बना सकते हैं। मे हमारे लिए सूची बना देगी।

अखबार में लिखने के लिए हमने स्कूल की रोचक घटनाओं की सूची बनाई। जब सूची बन चुकी तो रूथ नें कहा, "हमें अच्छी पुस्तक समीक्षा लिखना सीखना चाहिए।" "हाँ, और लेख भी," वॉरेन ने हँसते हुए जोड़ा। "यह हम कल करेंगे," मेरी ने कहा।

स्कूल के बाद सोलह उत्साही बच्चे भू-अध्ययन के लिए रुके। कल की तुलना में आज संख्या अधिक थी। एल्बर्ट ने नवागन्तुकों को संक्षेप में हमारी योजना बताई। हमने अपनी तख्तियाँ और पेंसिलें उठाई और रैल्फ की अगुवाई में जंगल की ओर बढ़ चले। वहाँ पहुँचते ही चयनित भूखण्ड को हमने घेर दिया। भूखण्ड का नक्शा बनाते समय बच्चे बतिया रहे थे। "मिस वेबर, क्या हमारे अपने-अपने भूखण्ड भी हो सकते हैं?" सवाल रैल्फ का था। "शायद मेरे पिता इन गर्मियों में हमें पैदल यात्रा पर ले जाएँ। वे प्रकृति के बारे में बहुत कुछ जानते हैं," वॉरेन विचार करने लगा। तब रैल्फ ने कहा कि "शायद मेरे पिता भी ले जाएँ। मैं उनसे पूछूँगा!" यह सुन मेरी तो लगभग साँस ही बन्द हो गई।

शुक्रवार, 22 अप्रैल

बड़े बच्चों ने अच्छे आलेख के कुछ मानक तय किए। रूथ, जो हमारी सचिव है, उनकी एक सूची तैयार कर रही है ताकि वह सूचना-पट्ट पर लगाई जा सके। उसे सुविधा से सब अपनी प्रगति पुस्तिका में उतार लेंगे। बच्चों ने पीरियड का बचा हुआ समय आज बनाए गए मानकों के आधार पर कल लिखे गए आलेखों को जाँचने में लगाया।

पठन के पीरियड के बाद छोटे बच्चों ने स्वेच्छा से खेलघर में अपनी क्लब बैठक की। एलिस ने उनकी मदद की और खुद उनके द्वारा बनाए गए नियमों की निम्नोक्त सूची मुझे थमाईः

1. सीढ़ियाँ पूरी करो।
2. खिलौने मत तोड़ो।
3. सीढ़ियों के लिए लगाए गए पत्थर हमें उखाड़ने नहीं हैं।
4. हमें क्यारी नहीं तोड़नी है।
5. गन्दे शब्द नहीं बोलने हैं।
6. अन्दर घुसने से पहले जूते साफ करो।

मंगलवार, 26 अप्रैल

मैं नन्हों के साथ बाहर चली आई तथा फ्लोरेंस ने उन्हें जिंजरब्रेड मानव (Gingerbread Man) की कहानी सुनाई। आज उसे नाटक में बदलने में मज़ा आया क्योंकि हमारे पास भाग-दौड़ के लिए पूरा मैदान था। मुझे आश्चर्य हुआ कि आइरीन ने कहा कि वह गाय बनेगी। उसे हमेशा मुख्य पात्र ही बनने की इच्छा रहती है। इस दौरान बड़े बच्चे अखबार के लिए अपने आलेखों पर काम करते रहे। जब मैं अन्दर आई तो डॉरिस ने अपना लेख थमाते हुए कहा, "मिस वेबर, मैंने नियमों के हिसाब से लिखा है और लगता है कि यह ठीक ही है।" लेख में एक भी अशुद्धि नहीं थी! वैसे भी वह बढ़िया था।

बुधवार, 27 अप्रैल

फ्रैंक ने प्राथमिक समूह के साथ खिड़की-बक्से बनाने का काम किया। वह अपनी ज़िम्मेदारी गम्भीरता से लेता है और मुझे प्रगति की सूचना भी देता है।

आज उसने टिप्पणी की, "मिस वेबर, कभी-कभार जब वे एक-दूसरे के काम में बाधक बनते हैं तो ज़ोर से चीखते-चिल्लाते हैं। मैंने उनसे कहा कि यह बात ठीक नहीं है। विलियम आज काफी देर रूठा रहा, क्योंकि वर्ना ने उसे धक्का लगाया था। मैंने वर्ना से माफी माँगने को कहा और तब उन्हें हाथ मिला दोस्ती करनी पड़ी। अब सब ठीक है।"

गुरुवार, 28 अप्रैल

आज नन्हे बच्चे अन्दर आकर दिन की योजना बनाने में मदद नहीं करना चाहते थे। उनकी इच्छा थी कि वे अपने बाग का काम फौरन शुरू कर दें। हमने उन्हें जाने दिया और एडवर्ड ने खोदने, गुड़ाई करने और जलकुम्भी के बीज बोने में उनकी मदद की।

हमारे सवालों के उत्तर देने श्री राब आए। उन्होंने बच्चों को वैली व्यू में दूध उद्योग के बारे में बताया और काउंटी में दूसरे इलाकों से यहाँ की स्थिति की तुलना की। उन्होंने सहकारी समितियों और उनके महत्व को समझने में उनकी मदद की। उन्होंने न्यू जर्सी स्थित दूध नियंत्रण बोर्ड के काम के बारे में बताया, और यह भी कि दूध की कीमत कैसे तय होती है। बच्चों को पता चला कि अगर खेती के लिए जुताई कम की जाए और घास बनी रहने दी जाए तो वैली व्यू में दूध उत्पादन ज़्यादा वांछनीय बन सकता है। ऐसा करने पर भूमि खराब नहीं होगी, बल्कि बेहतर बनेगी। पर अगर गायों की संख्या बढ़ानी हो और उसके लिए मक्का उगाने के लिए ज़्यादा ज़मीन को जोतकर खेती लायक बनाना हो तो इससे भूमि को नुकसान होगा।

जहाँ तक अतिरिक्त दूध का सवाल है, न्यू जर्सी में दूध का उत्पादन पर्याप्त नहीं है। श्री राब ने बताया कि दूध की कुल खपत का मात्र चालीस प्रतिशत ही काउंटी में होता है। पर उसे शेष दूध उत्पादक इलाकों के साथ होड़ भी करनी पड़ती है। इन इलाकों में पैनसिल्वेनिया के कुछ भाग और न्यू यॉर्क भी शामिल हैं। उनका कहना था डेयरी फार्म शुरू करने की लागत इतनी ज़्यादा है कि हमारे कस्बे में नए फार्म खुलें इसकी सम्भावना कम ही है। आज जितनी डेयरियाँ हैं वे कई सालों पहले शुरू की गई थीं। इस अध्ययन के दौरान बच्चे निम्नलिखित सामान्यीकरणों तक पहुँचे हैं:

1. सहकारी दूध उत्पादन बाज़ार सुनिश्चित करता है।
2. सहकारी दूध उत्पादन से दूध की उच्च गुणवत्ता बनाए रखी जा सकती है।
3. वैली व्यू के लिए दूध उत्पादन आय व संरक्षण, दोनों ही दृष्टियों से फायदेमन्द है।
4. कुछ ऐसी ज़मीन भी जोती जा रही है जिसका उपयोग जल्दी ही चरागाह या जंगल के रूप में किया जाना चाहिए।
5. बेहतर यातायात, यंत्रों व वैज्ञानिक तौर-तरीकों के कारण खास प्रकार की खेती सम्भव हुई है।
6. वितरण व्यवस्था में ज़रूर कुछ गड़बड़ है, क्योंकि शहरों में कई लोगों को खरीद न पाने के कारण पीने तक के लिए दूध नहीं मिल पाता और किसानों के पास अतिरिक्त दूध बचता है जिसे वे बेच नहीं पाते।
7. दूध हमारे भोजन का महत्वपूर्ण हिस्सा है।
8. गायों को अगर सही चारा मिले, उनकी बढ़िया देखभाल हो, तो वे बेहतर और अधिक दूध देती हैं।
9. दूध जब हमारे घरों तक पहुँचता है तो वह साफ व सुरक्षित होता है। यह स्थिति बनी रहनी चाहिए।

श्री राब खेल पीरियड से दस मिनट पहले ही आ गए थे, सो बच्चों को दोपहर बाद ही खेलने का मौका मिल पाया। पर इस पर किसी भी बच्चे ने कोई टिप्पणी नहीं की। पर जैसे ही श्री राब ने बात खत्म करते हुए कहा, "लगता है इतना काफी है," रैल्फ पूछ बैठा कि क्या वे हमारे साथ "लॉन्ग बॉल" खेलना पसन्द करेंगे। श्री राब बोले कि उनके पास पन्द्रह मिनट हैं। बच्चों ने कक्ष से बाहर होने में पल भर भी नहीं गँवाया। आम सहमति से श्री राब को उस दल में शामिल किया गया जिसमें खिलाड़ी कम थे। थॉमस ने उन्हें लॉन्ग बेस के पास यह कहते हुए खड़ा किया कि "आप लम्बे हैं, सो बॉल को पकड़ लेंगे और हमें हर बार सड़क की ओर दौड़ना नहीं होगा।" हमने खुशी-खुशी समय बिताया।

मैंने दूध उत्पादन के हमारे अध्ययन के महत्व के विश्लेषण की चेष्टा की। हमारे समुदाय के लोग जिन भिन्न-भिन्न तरीकों से अपना जीवनयापन करते हैं, उनमें

से एक के बारे में और उससे जुड़ी समस्याओं के प्रति बच्चे जागरूक बने हैं। उन्होंने इन समस्याओं पर अपने माता-पिता से भी बातचीत की है, इस तरह वे भी इनके प्रति जागरूक बने हैं – इस कदर कि एडवर्ड के पिता ने काउंटी कृषि सलाहकार को सुझाव देने के लिए बुलाया।

वे यह भी समझने लगे हैं कि कुछ आर्थिक समस्याएँ ऐसी हैं जो सहकारी गतिविधियों के अभाव से उपज रही हैं, तो कुछ ऐसी भी हैं जो हमारे राष्ट्र के इतिहास के क्रमिक विकास से उपजी हैं। बच्चों को अतिरिक्त उत्पादन और घोर अभाव की असंगतियाँ, श्रम के संघर्षों व मूल्य नियंत्रण आदि बातें समझ आने लगी हैं। उन्हें पता चलने लगा है कि दुनिया में बसा विशाल समुदाय हमारे छोटे से मुहल्ले को कैसे प्रभावित करता है।

वे यह देख-जान रहे हैं कि आबोहवा, भूमि की सतह तथा हमारे देश के अन्य भागों व दुनिया में यातायात के साधन हमारे समुदाय के किसी उद्योग को कैसे प्रभावित करते हैं। यह भी वे देख-समझ रहे हैं कि हमारे देश के विकास ने हम पर क्या असर डाला है। वे जन-स्वास्थ्य, खेतीबाड़ी, उद्योग व परिवहन के क्षेत्रों में हो रही वैज्ञानिक प्रगतियों को भी समझ रहे हैं।

यह सच है कि बच्चे इस वक्त इन स्थितियों के बारे में कुछ खास कर नहीं सकते, पर इन विषयों पर जो कुछ वे सीख रहे हैं उससे उनका नज़रिया बनेगा जो बड़े होने पर उनके काम को दिशा देगा। इस प्रकार के "बौद्धिकरण" को बच्चों की वास्तविक समझ के परे भी नहीं बढ़ने देना चाहिए, अन्यथा वह महज़ प्रचार या मौखिक अभिव्यक्ति बन जाता है जो खतरनाक साबित होता है।

जिन विषयों का बच्चे अध्ययन कर रहे थे, उन्हें वे समुदाय में वास्तव में देख सके। स्कूल में बिताया समय पढ़ने और चर्चा करने में लगाया गया ताकि वह उन्हें पैने अवलोकन के लिए और बाद में जो कुछ उन्होंने देखा उसे समझने के लिए तैयार कर सके। किताबों का उपयोग उन्होंने अपने अनुभवों के निहितार्थ निकालने और उन्हें विस्तार देने के लिए किया है।

बच्चों के सामाजिक सम्पर्क बेहद सीमित हैं। इस अध्ययन के दौरान की गई यात्राओं ने उन्हें सार्वजनिक शिष्टाचार का अभ्यास करने का अवसर दिया है। नक्शों का उपयोग, यात्राओं की योजना बनाना और यात्राएँ करने के अनुभव

ने उन्हें अधिक सचेत व सतर्क बनाया है। इससे उन्हें न केवल अपने तात्कालिक वातावरण में अर्थ तलाशने में मदद मिली है, बल्कि उनके वातावरण को विस्तार मिला है और उनका क्षितिज फैला है।

शुक्रवार, 29 अप्रैल

हमने जंगल में चिह्नित भूखण्ड में जो कुछ कल जाना-सीखा था, उसे फिर से देखने जाने के लिए विज्ञान के पीरियड का उपयोग किया। बच्चों को वहाँ उन्नीस सुराख मिले थे जो चूहों, साँपों, गिलहरियों या अन्य छोटे जानवरों या कीड़ों के आवास हो सकते हैं। हेलेन ने सुझाया कि हम उनके चित्र बनाएँ क्योंकि सही चित्र बनाने के लिए हमें यह भी जानना होगा कि वे जन्तु कैसे दिखते हैं, वे चौपाए हैं या शल्क वाले। वॉरेन ने सुझाया कि अगर हम किताबों की छानबीन करें तो हमें पता चल सकता है कि दरअसल हमें क्या तलाशना है। उन्होंने तय किया कि वे सारी सूचनाएँ कॉपियों में लिखेंगे। मैंने पूछा, "भूखण्ड का अध्ययन कैसे किया जाएगा? क्या तुम सभी लोग एक ही चीज़ का अध्ययन करोगे या फिर तुम समितियों में काम बाँट लोगे?" कैथरीन का मानना था कि बेहतर यही होगा कि एक-एक चीज़ का बारी-बारी अध्ययन किया जाए। इससे सभी लोग हरेक वस्तु के बारे में सब कुछ जान सकेंगे। हेलेन ने कहा, "जिसे जो पसन्द आए वह उसी का अध्ययन करे।" एल्बर्ट उठा और उसने एक लम्बा भाषण दिया, "मुझे लगता है हमें समितियों में बँट जाना चाहिए। हरेक व्यक्ति सब कुछ का अध्ययन करे इतने सप्ताह बचे ही नहीं है। अगर हम समूहों में काम करें तो हम काफी तेज़ी से चीज़ों का अध्ययन कर सकेंगे।" वह बैठ गया और तुरन्त फिर से खड़ा हो गया, "और इसके अलावा, हम एक-दूसरे को सुनकर तथा एक-दूसरे की कॉपियाँ पढ़कर अन्य चीज़ों के विषय में भी सीख लेंगे।" मेरी ने जोड़ा, "तब हरेक वह कर सकेगा जो वह करना चाहता है और हमारा समय बर्बाद नहीं होगा। इससे हमें अपने भूखण्ड में गर्मियों में जो कुछ भी दिखेगा उस सबके बारे में हम जान सकेंगे।" सब बच्चों ने अपने लिए तय किया कि वे क्या जाँचना-तलाशना चाहते हैं।

गुरुवार, 5 मई

पिछले सप्ताह बने समिति समूहों ने अध्ययन के सम्बन्ध में जो योजनाएँ बनाई थीं, उन्हें भूखण्ड में जाकर लागू किया गया। जल-जीवन समूह ने धब्बेदार

जलगोधिका को देखा, उसके चित्र बनाए, उसकी शक्ल-सूरत के बारे में पढ़ा और उसकी आदतों के बारे में सूचनाएँ इकट्ठा कीं। फूल समूह ने उन तमाम फूलों की सूची बनाई जिन्हें वे पहले से पहचानते थे। मे ने पाँच पेड़ों की विशेषताओं का अध्ययन किया। अब वह दो सफेद बलूतों में तथा जंगली चेरी और चेरी भूर्ज में अन्तर बता सकती है।

शुक्रवार, 13 मई

स्कूल वर्ष के समापन का समय हमेशा व्यस्ततम समय लगता है। एकल-शिक्षक शाला चलाने वाले प्रत्येक शिक्षक को दरअसल एक बढ़िया सचिव की ज़रूरत है जो सब कुछ दर्ज करती जाए और तब शिक्षक को कार्य की समीक्षा व योजना की फुर्सत मिल जाए।

कल और आज रात बच्चों ने *विनी द पूह* और *रॉबिन हुड* के कठपुतली नाटक किए। दोनों ही दिन दर्शक ठसाठस भरे थे। पिछले साल के नाटकों की चर्चा फैल चुकी थी, सो पास के कस्बे से भी अच्छी संख्या में लोग आए। हमें सन्तोष था कि हमने ऐसा प्रदर्शन किया जिसे कस्बे वाले भी देखने के लिए इतनी दूर आए। कई आगन्तुकों ने इस बात की प्रशंसा की कि बच्चों ने खुद को बखूबी सम्हाला था। मंच, प्रकाश व साज़ो-सामान, सबके लिए प्रबन्धक थे, अतः नाटक का मंचन कुशलता से हुआ। नाटक का मंचन प्रभावी बन सका। हर बच्चे को पुख्ता तौर पर पता था कि उसे कब और क्या करना है।

हमें मंच के पीछे से पंक्तियाँ याद दिलाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी क्योंकि जहाँ कहीं बच्चे अटके, उन्होंने स्वयं शब्द गढ़ लिए। इससे उन्होंने नाटकों को और मज़ेदार बना दिया। *रॉबिनहुड* के दूसरे दृश्य में जहाँ रॉबिनहुड और नन्हा जॉन सँकरे पुल पर मिलते हैं और उनमें बहस होती है कि किसे रास्ता देना चाहिए, रॉबिनहुड लट्ठ काटने के लिए कुछ पल के लिए पुल से गायब हो गया। पर्दे के पीछे बच्चे रॉबिनहुड के हाथों में लट्ठ पकड़ाने की कोशिश करते रहे जो उसके हाथों में ठहर ही नहीं रहा था। इसका मतलब था कि नन्हा जॉन योजना से अधिक समय तक अकेला खड़ा रहा। पर रैल्फ ने स्थिति सम्हाली। पहले नन्हा जॉन अधीरता से पैर ठकठकाने लगा। फिर उसने अपना सिर खुजलाया। अन्ततः वह पुल पर इतनी जीवन्तता से आगे-पीछे चलने लगा कि दर्शक तो पगला ही गए। रैल्फ को एक भी शब्द नहीं बोलना पड़ा। उसकी पुतली के

हावभाव पूरी बात कह रहे थे। इसके बाद तो दर्शकों की खूब भागीदारी हुई। बच्चों ने भी इसे भाँप लिया और इतने जी-जान से मंचन किया कि मैं हैरान रह गई। कस्बे में लोहे-लक्कड़ वाली दुकान का मालिक तो उत्साह में अपनी जाँघें ठोकने लगा, हँसी से लोटपोट हो गया और पास बैठे दर्शकों को कहने लगा कि इतना उम्दा प्रदर्शन उसने अपनी ज़िन्दगी में पहली बार देखा है।

बच्चों ने रॉबिनहुड के युग की पाँच अँग्रेज़ी गाथाएँ भी गाईं। ये गीत बड़े लोकप्रिय हो गए हैं।

नाटक समाप्त हुआ तो सभी दर्शक पर्दे के पीछे बढ़ गए और बच्चों ने उन्हें कठपुतलियाँ चलाकर दिखाईं। उन्होंने शान नहीं बघारी और तारीफ को सौम्यता से स्वीकारा। वे खुशी से फूले नहीं समा रहे थे! अब उनमें एक नया आत्मविश्वास है जो पहले कभी नहीं था। संयोगवश, हमने साठ डॉलर बना लिए!

सोमवार, 16 मई

कठपुतली मंचन सलटने के बाद हम वार्षिक कस्बाई नाटक दिवस की तैयारी में जुट गए। हमने *रिप वैन विंकल* को नाटक की शक्ल देने की सोची। यह खुले में मंचन के लिए सही है क्योंकि इसका काफी हिस्सा मूकाभिनय से प्रस्तुत किया जा सकता है। गीत-संगीत, नृत्य, खेल-कूद और करतबों का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। यह सब बच्चे साल भर सीखते रहे हैं और यह उसी में से लिया जा सकता है। इस तरह इसमें सभी बच्चे शिरकत कर सकते हैं।

इस बसन्त छोटे बच्चे अपने लिए नए खेल ईजाद करते रहे हैं। आज उन्होंने अपने ताज़ा खेल के बारे में बताया और वह मुझे अच्छा लगा। उन्होंने इसे "पेड़ के तने के इर्द-गिर्द" नाम दिया है।

गुरुवार, 19 मई

आज भाग्य ने अचानक साथ दिया। हम अपने भूखण्ड के अध्ययन में मशगूल थे कि वॉरेन उत्तेजना में काँपता हुआ दौड़ा आया और बोला, "जल्दी से आइए। आकर देखिए तो सही कि एल्बर्ट को क्या मिला है।" हम उसके पीछे-पीछे दौड़े। देखा कि एल्बर्ट जंगल में एक खुली-सी जगह पर खड़ा है और उसके पास कुछ

है जो पंखों का ढेर-सा लग रहा है। हम ठीक से देखने और पास गए। वह पक्षी शिशु ही था, पर काफी बड़ा, एल्बर्ट के दोनों हाथों के बराबर। पंख उसके काले और सफेद थे और कलगी लाल थी। उसकी जीभ, पूँछ और पंजों से लगा कि वह कठफोड़वा है, पर ऐसे कठफोड़वे को हमने पहले कभी देखा नहीं था। हम ऊपर से आती ज़ोरदार चीखों से चौंक पड़े। उसकी माँ हमें डाँट रही थी और अधिक निकट आने से डरती हुई आगे-पीछे उड़ रही थी। एल्बर्ट ने पक्षी शिशु को सावधानी से धरती पर रख दिया और हम सब यह देखने के लिए कि आगे क्या होता है पीछे हट गए। नन्हा पक्षी फुदकता हुआ एक टेढ़े उगे पेड़ के तने पर चढ़ गया और धीमे-धीमे ऊपर बढ़ने लगा। उसकी माँ उसके पीछे-पीछे चलने लगी। हम पक्षियों को उनके आश्रय स्थल की शान्ति में छोड़ लौट आए। शाला भवन पहुँचते ही हमने अपनी पक्षी पुस्तक निकाली और पाया कि हमारा परिचय कलँगीदार कठफोड़वे से हुआ था जो काफी बिरला पक्षी है।

सोमवार, 6 जून

पिछले दो सप्ताह फुर्र से उड़ गए। हमारा काफी समय नाट्य दिवस के लिए *रिप वैन विंकल* की तैयारी में लगा। नाटक अब खासा चुस्त बन पड़ा है।

पिछले सप्ताह हमने अपनी मेज़ों की मरम्मत का काम शुरू किया। बच्चों ने काँच के टुकड़ों पर टेप चिपकाया ताकि हाथ न कटें, और उनसे वार्निश की पुरानी सतह खुरच डाली और लकड़ी की सतह को पूरी तरह सपाट बना डाला। उन्होंने मेज़ों को पहले खुरदुरे और फिर बारीक रेगमाल से रगड़ा। हमने इस बार गहरे-बलूत रंग का वार्निश लगाया। अधिकांश मेज़ें पूरी हो चुकी हैं और बिलकुल नई-ताज़ा लग रही हैं। बच्चों को अपने कौशल पर बड़ा गर्व हो रहा है।

जब हम मेज़ों को रंग रहे थे, बच्चे हमारे कक्ष में और आवश्यक सुधार-मरम्मत की बात भी कर रहे थे। उन्हें लगता है कि सबसे पहले तो उन्हें किताबों की अधिक अलमारियों की ज़रूरत है। पुस्तकालय प्रभारियों को उन्हें व्यवस्थित रखने में बेहद परेशानी होती है क्योंकि किताबों को तरतीब से रखने की कोई जगह ही नहीं है। हमें अपने संग्रहालय की वस्तुओं को करीने से सजाने और बच्चों के खिलौने रखने की जगह भी चाहिए। लड़कों का कहना था कि यह सब

स्कूल के समय में नहीं किया जा सकता क्योंकि इससे शेष गतिविधियों में बाधा आएगी, कमरा देर तक अस्तव्यस्त रहेगा, और सच तो यह है कि ऐसे काम के लिए लम्बे समय तक निर्बाध जुटे रहना पड़ता है। हमने तय किया कि यह सब स्कूल खुलने से पहले अगस्त में किया जाए, जब मैं भी ग्रीष्म शाला से लौट आऊँ।

शुक्रवार, 10 जून

कस्बाई नाट्य दिवस पर हमारा *रिप वैन विंकल* का नाटक लोगों को पसन्द आया। बाहर खुले में मंचन बड़ा सटीक था। सारे बौने पात्र अपनी रंग-बिरंगी लम्बी टोपियों में जंगल से निकले, बाड़ लाँघकर आए और व्यस्त चूहों की तरह इधर-उधर घूमते रहे। श्रीमती वैन विंकल के रूप में कैथरीन ने अपनी कलाकारी फिर से दर्शाई, जो दर्शकों में लोकप्रिय सिद्ध हुई। रिप के साथ खेलते नन्हे बच्चे अपने स्वाभाविक रूप में थे और थॉमस ने रिप को प्यारे चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया। स्कूल सत्र को यों समाप्त करना सुखद था।

इस वर्ष की मेरी दैनन्दिनी साफ दर्शाती है कि सभी लड़के-लड़कियों की ज़रूरतों को पूरा करने की कोशिश में मुझे कितना जूझना पड़ा है। परन्तु मिस एवरेट ने लगातार स्थिति का विश्लेषण व मूल्यांकन करने में मेरी मदद की और मुझे लगता है कि मैंने कुछ और सीखा है और मैं जानती हूँ कि हमने कुछ हासिल भी किया है।

मेरा पक्का विश्वास है कि लोकतांत्रिक सामाजिक व्यवस्था ही सर्वश्रेष्ठ है, इसलिए तमाम बाधाओं के बावजूद मैंने हमारे सामूहिक दैनिक जीवन में लोकतांत्रिक तरीके से सोचने और काम करने का विकास करने की कोशिश की है। हम इस दिशा में कामयाब भी रहे हैं, क्योंकि विगत साल के हमारे काम पर नज़र डालने पर मुझे लगता है कि हमारे काम का मुख्य लक्षण सामूहिकता की भावना है जो हममें पनपी है। लोकतांत्रिक भागीदारी की भावना भी लगातार बढ़ी है। बच्चे यथासम्भव स्कूली जीवन के तमाम दायित्वों और ज़िम्मेदारियों को निभाने लगे हैं। हार्प ने जिसे "दुनिया के काम को सहकार के साथ करने की क्षमता व रुचि तलाश पाना और उसमें आनन्द लेना" कहा था, मुझे लगता है कि हम वास्तव में उस दिशा में बढ़ रहे हैं।

तीसरा वर्ष

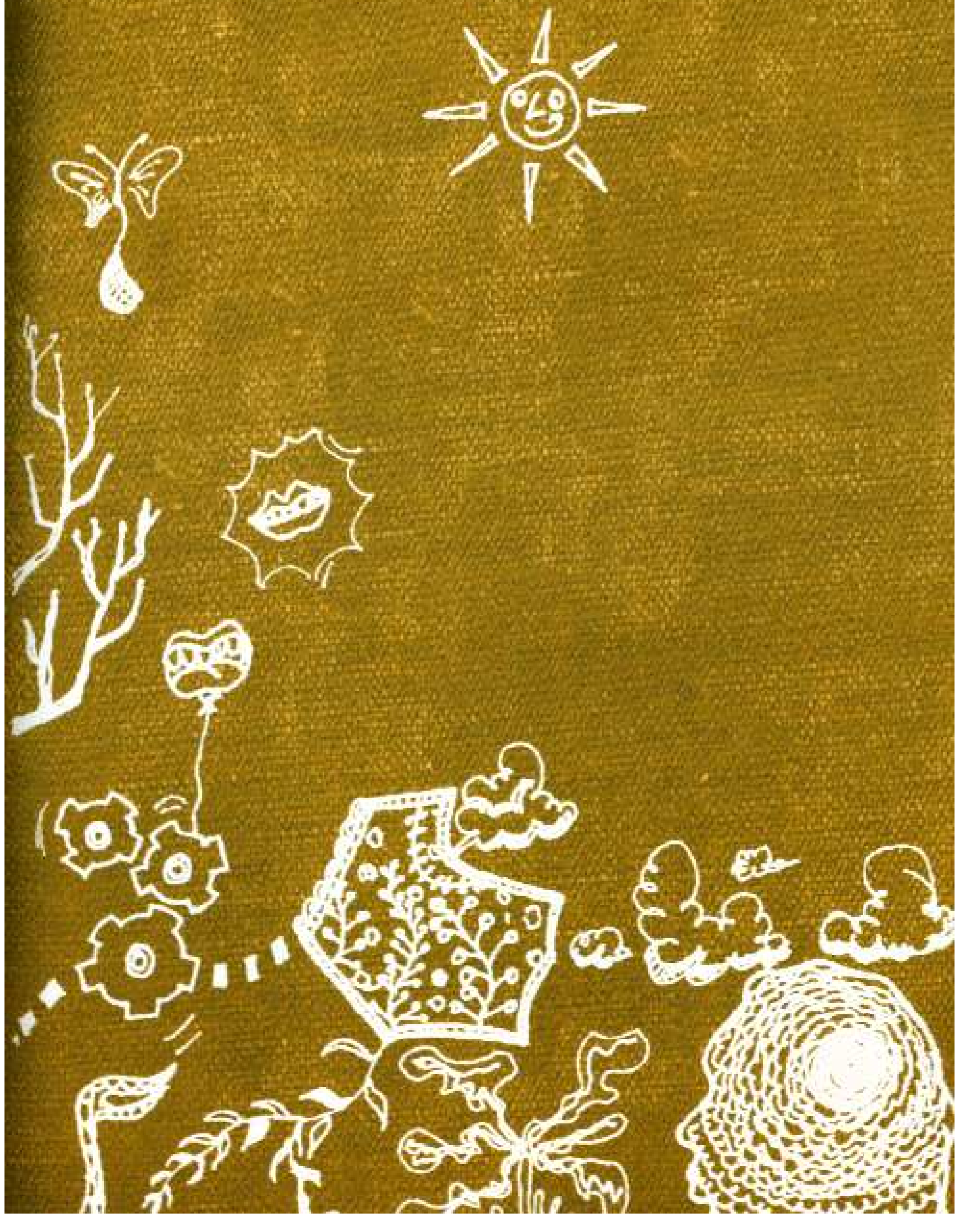

7

मैं अपना दर्शन लागू करने की कोशिश करती रही

गुरुवार, 18 अगस्त 1938

ग्रीष्म शाला से घर लौट एक बार फिर से जम चुकी हूँ। अब जाकर कुछ खाली समय और एक शान्त कमरा उपलब्ध हुआ है, जिससे मैं अपने इन विचारों को शब्दों में बाँध सकी हूँ कि हमारे समाज को किस दिशा में बढ़ना चाहिए, इस समाज में स्कूल का क्या स्थान है, और जिन बच्चों को हम पढ़ाते हैं उनके बारे में हमारा क्या सोच है, वे कैसे हैं, कैसे सीखते हैं, और उनके प्रति स्कूल का क्या दायित्व है।

मुझे लगता है कि सिखाते समय हमें कुछ सामाजिक लक्ष्य अपने समक्ष रखने चाहिए, और ये लक्ष्य इस विचार से उपजने चाहिए कि हम किस प्रकार का समाज चाहते हैं। हम शिक्षकों के मन में एक चित्र होना चाहिए, जो हमारे अनुभवों के बढ़ने के साथ-साथ विस्तृत होता चले, कि आख़िर लोगों के लिए जीवन जीने का एक अच्छा तरीका क्या है। हमें अपने बच्चों का अध्ययन इन मूल्यों के प्रकाश में करना चाहिए ताकि यह समझ आए कि उनके जीवन किस प्रकार सुधारे जा सकते हैं और इन वांछनीय दिशाओं में विकसित हो सकते हैं। जैसे-जैसे यह स्पष्ट होने लगे कि हमारे बच्चों को किन चीज़ों की आवश्यकता है, हमें ऐसा कार्यक्रम रचना चाहिए जिससे उन ज़रूरतों की पूर्ति हो।

शुक्रवार, 19 अगस्त

आज मैं बच्चों के घरों में गई ताकि फिर उनसे मिल लूँ और उनके द्वारा भेजे

गए अनेक सुन्दर पत्रों के लिए धन्यवाद भी दे डालूँ। थॉमस ने गर्मियों में घर के बड़े कमरे के दरवाज़े को खुरचा, उसकी वार्निश को हटाया, और उसे फिर से रंग डाला। जब एण्ड्रयूस् परिवार के यहाँ पहुँची तो पाया कि लड़कियाँ अपनी मेज़-कुर्सियों को रंग रही थीं। श्री जोन्स मार्था और रैल्फ को सर्कस व चिड़ियाघर दिखाने ले गए थे, और इतवार को घुमाने भी। हिल परिवार समुद्र किनारे और न्यू यॉर्क घूमने गया था। मान व हिल लड़कों ने अपना काफी समय दुकान-दुकान और सर्कस-सर्कस खेलने में बिताया था। सामेटिस बच्चों ने दो फिल्में, "हूसियर स्कूलबॉय" और "किडनैप्ड" (अपहृत) देखीं थीं। वे नक्षत्रशाला और प्राकृतिक इतिहास का अजायबघर भी देखने गए थे। लगभग सभी बच्चों को अपनी रुचियों के अनुसार कुछ करने का समय मिला था। मनोरंजन की इन तमाम गतिविधियों में स्कूल का प्रभाव साफ-साफ नज़र आता है! नए वर्ष के लिए अधिकांश संकेत शुभ हैं।

गुरुवार, शुक्रवार व शनिवार, 25, 26 व 27 अगस्त

सभी बड़े लड़के इन तीनों दिन स्कूल में मिले ताकि वे उन अलमारियों को बना सकें जिनकी हमने पिछले बसन्त सत्र के समापन से पहले योजना बनाई थी। रैल्फ भी आया, यद्यपि वह इस वर्ष हाई स्कूल जाएगा और अलमारियों का लाभ खुद नहीं उठा पाएगा। उसका दृष्टिकोण कितना बदल गया है। उसका यह रवैया पिछले साल के शुरू में उसके रवैये से कितना भिन्न है जब उसने नन्हों के लिए खेलघर बनाने में मदद करने से इन्कार कर दिया था, क्योंकि वह उसमें नहीं खेलने वाला था।

लकड़ी के आने का इन्तज़ार करते समय हमने अलमारियों के आकार तय किए। आठों बड़े लड़के तीन समूहों में बँट गए। एक समूह को पुस्तकालय के शेल्फ बनाने थे, दूसरे को संग्रहालय के, और आखिरी समूह को खिलौनों की अलमारी। हरेक समूह ने अपनी योजना के हिसाब से लकड़ी नापी, उसे काटा, शेल्फ बनाए और उन्हें दीवार के साथ खड़ा किया, रेगमाल से घिस फट्टों को सपाट किया और उन्हें रँगा।

जब हम इस सब में जुटे थे, मुहल्ले के कई पुरुष हमारा काम देखने रुके। उनका कहना था कि लड़कों का काम इतना बढ़िया था कि वे हैरान थे। लड़कों को

अपने ऊपर फख्र है और उन्हें लगता है कि ये अलमारियाँ और शेल्फ हमारे कक्ष के आकर्षण और कुशलता में इज़ाफा कर रहे हैं।

शुक्रवार व मंगलवार, 2 व 6 सितम्बर

बड़ी लड़कियाँ स्कूल प्रारम्भ होने से पहले सफाई करने व कक्ष को तैयार करने में मदद करने आईं।

बुधवार, 7 सितम्बर

औपचारिक रूप से आज स्कूल खुला है यद्यपि अधिकांश बच्चे पहले ही आने लगे थे। इस वर्ष इकत्तीस बच्चे हैं। शुरुआत करने वाले क्लैरेंस कार्टराइट और चार्ल्स विलिस हैं। बर्था श्मिट शहर से आई नई लड़की है और वह प्राथमिक समूह में शामिल होगी। सैली लेनिक भी प्राथमिक समूह में होगी। वह भी शहर से है। उसके माता-पिता कस्बे की किसी जायदाद की देखभाल करने आए हैं। सैली थॉमस की चचेरी बहन है।

आज दोपहर जब बच्चे आराम कर रहे थे तो मैंने उन्हें फर्डीनैंड नामक साँड की कहानी पढ़कर सुनाई। बच्चों को कहानी बेहद अच्छी लगी और उन्हें लगा कि कठपुतली प्रदर्शन के लिए यह बढ़िया रहेगी। एल्बर्ट का मानना था कि कहानी ज़रा छोटी है। वॉरेन जानना चाहता था कि हम इस साल एक बड़ी कहानी के बदले चार-पाँच छोटी कहानियाँ क्यों नहीं प्रस्तुत कर सकते हैं।

हमने आज काफी समय मैदान से कागज़, टूटी शाखाएँ और पिकनिक मनाने आए लोगों द्वारा छोड़े गए खाली डिब्बों को साफ करने में बिताया।

गुरुवार, 8 सितम्बर

आज सुबह नियोजन के पीरियड में मैंने बच्चों का ध्यान स्कूल के पिछवाड़े घास-फूस के टुकड़े की ओर आकर्षित किया और सुझाव दिया कि अगर हम उसकी सफाई कर दें और उसे लॉन में बदल दें तो शाला भवन बेहतर दिखेगा। जब एलेक्स और गस छोटे बच्चों के साथ काम कर रहे थे और एण्ड्रयू व एडवर्ड खेलघर में छाया करने के लिए लगाई कपड़े की छतरी की मरम्मत कर रहे थे, हम सब स्कूल के पिछवाड़े गए और हमने खरपतवार हटा दी। लड़कियों ने अपने शौचालय के इर्द-गिर्द से घास-फूस हटाई और लड़कों ने अपने पेशाबघर

के आसपास सफाई की। काम करते-करते किसी ने सुझाया कि इसे एक स्पर्धा में बदलकर देखा जाए कि लड़कियाँ बेहतर काम करती हैं या लड़के।

देखते ही देखते दस बज गए और बच्चे अपने-अपने समूहों में खेलने की तैयारी करने लगे। बच्चे अब मानकर चलते हैं कि वे साथ-साथ खेलेंगे। हेनरी ने आज मुझे बताया कि उसे अब तक वर्णमाला नहीं आती है, जो दरअसल उसे सीख लेनी चाहिए थी। कुछ दूसरे बच्चों ने कहा कि जब वे शब्दकोश देखने लगते हैं तो उन्हें देर तक सोचना पड़ता है कि "पी" वर्णमाला के पूर्वार्द्ध में आता है या उत्तरार्द्ध में और "टी" अन्तिम अक्षरों के कितना आसपास है, इत्यादि। वर्तनी के पीरियड में हेनरी वर्णमाला को पक्की तरह याद करने बैठा, जबकि शेष बच्चों ने शब्दकोश से अर्थ तलाशने का काम किया। बिचले समूह के बच्चों ने शब्दकोश में कुछ शब्द तलाशे जो मैंने बोर्ड पर लिखे थे। उन्होंने उस पृष्ठ संख्या को दर्ज किया जिस पर उन्हें वे शब्द मिले। उन्होंने शब्दों को वर्णक्रम में भी लिखा। बड़े बच्चों को ऐसे अभ्यास की दरकार नहीं थी, अतः उन्होंने कुछ मुख्य या मार्गदर्शक शब्दों के सहारे शब्दकोश में शब्द तलाशने का काम किया। उन्होंने शब्दार्थ के अलावा उन तमाम बातों को भी दर्ज किया जो शब्दकोश शब्द के बारे में हमें बताता है।

पिछली गर्मियों के दौरान बच्चे खिड़कियों में लगे काठ के बक्सों को घर ले गए थे ताकि उनमें उगे फूलदार पौधों की देखभाल की जा सके। आज स्कूल के बाद मैं उन्हें वापस लाई और उन्हें यथास्थान लगाया। बच्चों ने उनकी बढ़िया देखभाल की है और पिट्यूनिया के फूल बेहद सुन्दर हैं।

शुक्रवार, 9 सितम्बर

आज जब हम खरपतवार से भरे पिछवाड़े के हिस्से में सफाई करने गए तो लड़कियों ने अपनी प्रगति की तुलना लड़कों के काम से की और उन्होंने खुद को पीछे पाया। डॉरिस ने कहा, "हमारा काम तेज़ी से नहीं बढ़ पाता है क्योंकि काँटे हमारी खुली टाँगों को छील देते हैं। लड़के लम्बी पतलून पहनते हैं, सो उन्हें परेशानी नहीं होती।" थॉमस ने सुझाया कि अगर लड़कियाँ चाहें तो लड़के काँटों को साफ कर देंगे। डॉरिस ने कहा कि इसके बदले में लड़कियाँ लड़कों के उस हिस्से की खरपतवार उखाड़ देंगी जहाँ काँटे नहीं हैं। मे बोली, "हम एक-दूसरे की मदद करेंगे तो प्रतियोगिता कैसे होगी भला?" "क्या फर्क पड़ता है," थॉमस ने ज़ोर से कहा, "काम तो बेहतर होगा ना।" बच्चों ने आज एक बेहद ज़रूरी पाठ सीख लिया है।

खेल के पीरियड के बाद नन्हे बच्चों और मैंने खेलघर में खेलने की योजना बनाई। पाँच मिनट में हमने माँ-पिता, बच्चे, शिक्षक, और सम्बन्धियों को चुन लिया, और एक खेल कार्यक्रम बना डाला। मे उनके साथ बाहर चली गई ताकि ज़रूरत पड़ने पर उपलब्ध रहे। वह उनके साथ चुप रहती है और कोमल बर्ताव करती है।

पिछले दो वर्षों से हम कोशिश करते आ रहे हैं कि हमारे मैदान के गड्ढों को भरने में कोई मदद कर दे, खासकर शाला भवन के सामने सीढ़ीदार चबूतरा बनाने में, ताकि उस पर लॉन बनाया जा सके। हम सफल नहीं हो सके हैं क्योंकि लगता है कि यह काम किसी के कार्यक्षेत्र में शामिल नहीं है। बच्चों के माता-पिता बेहद व्यस्त रहते हैं, सो वे भी मदद नहीं कर सके हैं। आज सुबह हमें सूझा कि हम अपने कस्बे के डब्ल्यू.पी.ए. (WPA) यानी निर्माण प्रगति प्रशासन (Works Progress Administration) के प्रमुख को पत्र लिखें और उनसे मदद पाने के सुझाव माँगें।

आज हमारी सुन्दर, नई, जिल्द बँधी कॉपियाँ आ पहुँचीं। पिछले साल सत्र के अन्त तक इतनी कॉपियाँ भर गई थीं कि बच्चों ने इच्छा ज़ाहिर की कि वे एक ही मोटी सजिल्द कॉपी रखें, जिसके अलग-अलग हिस्से कर उसी में काम करें, जैसे मैं करती हूँ।

बुधवार, 14 सितम्बर

प्राथमिक समूह के आधे बच्चे खेलघर में खेल रहे थे और शेष आधे चित्र-फलकों पर बड़े चित्र बनाने में व्यस्त रहे। कुछ समय बाद इन समूहों ने अपनी गतिविधियों की अदला-बदली कर ली। सैली को अपने चित्र में बेहद आनन्द आया। उसने अपनी नीग्रो गुड़िया का चित्र बनाया। सैली ने हमें बताया, "इसकी दो चोटियाँ हैं और मैं इसे 'सनशाइन' कहती हूँ। मेरे पास एक बत्तख भी है। वह सीना तान लेती है और सोचती है कि वह बॉस है।" बच्चों ने उसकी गुड़िया देखने की माँग की, जिसे वह कल लाएगी।

एरिक छोटे बच्चों के साथ खेलना पसन्द नहीं करता। वह उन्हें नोचता है और उनकी बाँहें मरोड़ता है। चार्ल्स के प्रति वह खास तौर से बेरहम है। पहले मैं सोचती थी कि ज़रूर दूसरे बच्चे एरिक को छेड़ते होंगे, पर आज मैंने ध्यान से देखा और पाया कि मेरा कयास गलत था। एरिक पर उसकी दो बड़ी बहनें हावी रहती हैं। शायद यह कारण हो कि वह अपने से छोटों पर गुस्सा निकालता है। मुझे पक्का पता नहीं। अगर यह सच है तो उसे अपना गुस्सा निकालने का कोई ऐसा रास्ता चाहिए जो दूसरों को नुकसान न पहुँचाए।

साढ़े ग्यारह बजे डॉरिस नन्हों को बाहर कहानी सुनाने ले गई। उस वक्त बड़े बच्चे पाण्डुलिपि लेखन सीख रहे थे। वे अपनी मौलिक कविताओं का संकलन करना चाहते हैं। मैंने उन्हें मोत्ज़ार्ट की जीवन कथा पढ़कर सुनाई और जानना चाहा कि अक्तूबर के मनोरंजन कार्यक्रम के लिए क्या वे उसका नाट्य रूपान्तर प्रस्तुत करना चाहेंगे। एल्बर्ट का कहना था कि वे पहले अन्य संगीतकारों की जीवनियाँ सुनना चाहेंगे।

गुरुवार, 15 सितम्बर

मैंने बच्चों को बाख और हेडन की जीवन कथाएँ सुनाईं। उन्हें मोत्ज़ार्ट की कथा सबसे अच्छी लगती है।

प्राथमिक समूह के बच्चों ने सैली की गुड़िया पर बातचीत की, और हमने एक चार्ट कथा बनाई। सभी बच्चों ने इस कहानी को पढ़ना सीखा। जब मैं समूह चार और पाँच के साथ पठन का अभ्यास कर रही थी, नन्हे बच्चे अपने खेलघर में खेलने गए।

साढ़े ग्यारह बजे रुककर हमने "बयार में वर्षा की सी ध्वनि है" नामक कविता सीखी। हमने कविता के अर्थ पर बात की और तब उस अर्थ को सम्प्रेषित करते हुए कविता पढ़ने की कोशिश की। वॉरेन ने टिप्पणी की कि यह कविता पिछले सप्ताह की कविता से अलग है क्योंकि यह तूफानी और उदास है। हेनरी का कहना था कि यह "चिन्ताओं से भरी है।"

छोटे बच्चे इस साल सीखने को लेकर बड़े उत्साहित हैं। अक्सर उनमें से कोई खेलना बन्द कर बैठ जाता है और अपना नाम लिखने की कोशिश करता है।

या फिर हम उन्हें पुस्तकालय के कोने में बैठे सचित्र किताबों के पन्ने पलटते देखते हैं। चार्ल्स रोज़ पूछता है, "मैं कब पढ़ सकूँगा?"

शुक्रवार, 16 सितम्बर

श्री राइली ने आज हमारे पत्र का जवाब भेजा जिसमें उन्होंने कहा कि स्कूल मैदान की भराई के लिए एक वैध परियोजना बनाने के लिए हमें शिक्षा बोर्ड को कहना होगा।

सोमवार, 19 सितम्बर

स्वास्थ्य सम्बन्धी कक्षा में हमने गत वर्ष अपने स्वास्थ्य की देखभाल के लिए जो कुछ किया था, उसे संक्षेप में दोहराया। हम एक सूची बनाएँगे जिसमें उन सभी बातों को दर्ज कर लेंगे जिनका हमें इस वर्ष खास ख्याल रखना है और फिर एक-एक कर उन पर ध्यान देंगे जब तक कुछ चीज़ों को करने की नई और बेहतर आदतें न बन जाएँ। यह कर पाने के लिए हम नए तरीकों के कारण समझेंगे और उन पर विचार-विमर्श करेंगे।

आज मैंने गौर किया कि यद्यपि बच्चे लगातार काम करते रहे पर उनका काम समय पर पूरा नहीं हो पाया। ज़्यादा तहकीकात करने पर पता चला कि वे उन कामों को भी करते रहे थे जिनको ज़रा बाद में करना था। वे उस काम को पहले करना पसन्द करते हैं जो उन्हें अच्छा लगता है। कल मैं उन्हें उनके अध्ययन की योजना बनाने में मदद करूँगी। लगता है इस विषय पर हर साल उनसे बातचीत करना ज़रूरी है।

मंगलवार, 20 सितम्बर

कुछ समय हमने समय-सारणी की चर्चा करने और उसे बनाने में लगाया। हरेक व्यक्ति ने अपने हिसाब से स्वयं के अनुकूल सारणी बनाई है। इसे वे अपनी कॉपियों में दर्ज कर लेंगे ताकि ज़रूरत पड़ने पर उसे देख सकें।

सोमवार, 26 सितम्बर

बड़े बच्चों को मैंने फल उद्योग से परिचित करवाया। हमारी काउंटी में सेब उत्पादन महत्वपूर्ण व्यवसाय बनता जा रहा है। क्योंकि हमारे कस्बे में सेब का

बागान भी है, मुझे लगा कि हम इस संसाधन का उपयोग कर उन चीज़ों को समझ सकेंगे जो बच्चे दूध उत्पादन के अध्ययन के दौरान समझ नहीं पाए थे। समुदाय की वित्तीय समस्याओं में से कुछ का समाधान शायद सेब उत्पादन को बढ़ाकर किया जा सकता है।

हमने मार्था की दादी के बागान की चर्चा की और इस विषय पर भी कि सेब का उत्पादन कैसे एक विशिष्ट उद्योग का रूप ले रहा है। हमने भोजन में फलों के महत्व पर बात की, और कि पहले फलों की देखभाल कैसे की जाती थी और आज हम उनकी देखभाल कैसे करते हैं। मैंने पूछा कि क्या हमें पूरे साल ताज़ा फल मिल सकते हैं? वॉरेन ने कहा कि दुकानों में तो वे उपलब्ध होते हैं, पर सर्दियों में उनकी कीमत इतनी अधिक होती है कि उन्हें खरीदना कई बार सम्भव नहीं होता है। मैंने पूछा कि क्या डिब्बाबन्द फल भी उतने ही पौष्टिक होते हैं। किसी को कुछ पता नहीं था। सोफिया का कहना था कि पिछले साल सन्तरे बड़े सस्ते थे, पर इसका कोई कारण वह नहीं बता सकी। वॉरेन को इस बात में असंगति नज़र आई क्योंकि सन्तरे काफी दूर से यात्रा करके हमारे पास पहुँचते हैं। उसने यह भी पढ़ रखा था कि सन्तरों को हाथों से एक-एक कर तोड़ना पड़ता है, जिससे समय ज़्यादा लगता है। मैंने पूछा, "सन्तरों की एक पेटी अगर पचास सेंट में बिकती है तो क्या उन्हें तोड़ने वालों को काफी मज़दूरी मिलती होगी?" इस बात की गहराई में हम नहीं गए। आज मेरी कोशिश इतनी भर थी कि फल उद्योग के कई पहलुओं को हम खोल दें। हमने फलों की पौष्टिकता, फल उद्योग के विकास, कीमत, मज़दूरी और फलों की कीमत के बीच रिश्ता, ताज़ा और डिब्बाबन्द फलों की पौष्टिकता, फलों को सही तरह से डिब्बाबन्द करना और फलों की देख-रेख आदि पहलुओं को छुआ।

मंगलवार, 27 सितम्बर

गत कुछ दिनों से बच्चे यूरोपीय संकट की खबरें लाते रहे हैं, जो उन्हें अखबारों या रेडियो से मिलती हैं। हम हर सुबह पन्द्रह-बीस मिनट इन पर बातचीत करते हैं, और इससे फायदा होता है। सबसे बड़े बच्चों के समूह ने फल अध्ययन से सम्बन्धित पुस्तकों की सूची बनाई है। समूह के बड़े बच्चे स्वयं काम करने में जुट गए हैं, क्योंकि वे गत वर्ष यह करना सीख चुके हैं। जो बच्चे कुछ छोटे हैं, उनकी मैंने मदद की।

मंगलवार, 4 अक्तूबर

आज सुबह बड़े बच्चों के साथ ज़्यादा समय बिताना पड़ा ताकि उन्हें बता सकूँ कि वे अपने पढ़ाई के समय का बेहतर उपयोग कैसे कर सकते हैं।

दिन के अन्त में गणित करने के बदले एक समिति ने सहायक क्लब की विशेष बैठक बुलाई और थॉमस से त्यागपत्र चाहा। उनका कहना था कि वह अध्यक्ष बनने लायक नहीं है क्योंकि वह किसी की मदद ही नहीं करता। यह कई घटनाओं की लम्बी कड़ी का नतीजा है। थॉमस केवल तब खेलता है जब खेल उसे अपने अनुकूल लगता है। और जब वह खेलता भी है, तब उसके निर्णय न्यायपूर्ण नहीं होते। इसके अलावा, वह अध्ययन कक्ष में ऊँची आवाज़ में बोलता रहा है। एण्ड्रयू ने थॉमस से त्यागपत्र माँगने का प्रस्ताव रखा जिस पर सबने सहमति जताई। अपनी रोज़मर्रा की समस्याओं से निपटने की दिशा में बच्चों ने काफी प्रगति की है और वे विवेकवान निर्णय लेने में सक्षम हैं।

एक नई समस्या उभर रही है, जिससे सावधानी से निपटना होगा। इसे बच्चे बिना मदद स्वयं नहीं सुलझा सकेंगे। रूथ, डॉरिस, मेरी, मे और सोफिया पिछले साल में तेज़ी से परिपक्व हुई हैं। रूथ और मे काफी समय लड़कों के बारे में बातचीत करने में गुज़ारती हैं। दोपहर के समय खेलने के बदले ये लड़कियाँ नई-पुरानी फिल्मों की बातें करती हैं। उनका काम असावधानी और अकुशलता से किया गया होता है। मे मुझ पर आरोप लगा चुकी है कि मैंने उसके कागज़ खो दिए हैं, जो बाद में उसे अपनी ही एक किताब के बीच पड़े हुए मिले। लड़कियाँ तेज़ी से बढ़ रही हैं और विकसित हो रही हैं।

लगता है कि रूथ उनकी नेत्री है। मैं स्वयं को यह विश्वास कभी नहीं दिला पाई हूँ कि बच्चों को रोकना सही कदम है। जब रूथ पिछले साल प्रारम्भिक स्कूल के अन्तिम वर्ष की ओर बढ़ रही थी तो उसकी माँ को उसकी तेज़ प्रगति देख लगा था कि अगर उसे हाई स्कूल में अच्छी छात्रा बनाना हो तो उसे प्रारम्भिक शाला में एक साल और बिताना चाहिए। चूँकि रूथ भी अपनी माँ से सहमत थी, हमने यही किया। पर इस वर्ष मुझे पुख्ता तौर पर लग रहा है कि हमसे गलती हुई है। यद्यपि रूथ ने काफी सीखा है, पर उसे शारीरिक व भावनात्मक रूप से अपने हमउम्र बच्चों के साथ होना चाहिए।

शुक्रवार, 7 अक्तूबर

जब हम सेबों को बाज़ार पहुँचाने की बात कर रहे थे, मार्था ने बताया कि उसकी दादी अपने सेब श्री स्कॉट को बेचती हैं, जो काउंटी के अधिकांश सेब खरीद लेते हैं और तब आगे बेचते हैं। मैंने सुझाया कि हम श्री स्कॉट से मिलें और आज हमने उन सवालों की सूची बनाई जो उनसे पूछे जाने हैं।

बुधवार, 12 अक्तूबर

आज साढ़े ग्यारह बजे बड़े समूह के बच्चे श्री स्कॉट के फार्म की दिशा में निकले। श्री स्कॉट ने उन्हें फलों का बागान दिखाया। इमारतों में लौटने पर बच्चों ने सेब का रस निकालने, छानने, उसे ठण्डा रखने के यंत्रों को देखा। हमने उनका भण्डार भी देखा और वह कमरा भी जिसमें विभिन्न आकारों के सेब छाँटे और डिब्बों में बन्द किए जाते हैं। स्कॉट फार्म के बाद हम वैली झील के किनारे पिकनिक करने गए। थॉमस की टिप्पणी थी कि काम और मस्ती को साथ मिला लिया गया है। हमने कुछ देर गीत गाए, बेसबॉल खेली और तब, क्योंकि अँधेरा होने लगा था, हम घर की ओर लौट आए। यह आनन्ददायक व फलदायी दिन रहा।

गुरुवार, 13 अक्तूबर

मैं अपनी दैनन्दिनी में लिखी टिप्पणियाँ पढ़ रही थी और मुझे वे अपर्याप्त और मूल्यांकन में कमज़ोर लगीं। फल उद्योग का अध्ययन बच्चों के लिए वास्तविक चुनौतियाँ नहीं रख रहा, मैं किशोरियों के लिए कुछ भी सन्तोषजनक नहीं कर पा रही हूँ। पढ़ाने के अलावा मुझे हर सप्ताहान्त अपने कोर्स के लिए न्यू यॉर्क भी जाना पड़ता है। हालाँकि अभी साल शुरू ही हुआ है, मैं थकी-थकी हूँ और मेरी महत्वाकांक्षा भी क्षीण हो रही है। मैं अपनी ऊर्जा को सही दिशा नहीं दे पा रही हूँ।

शनिवार, 15 अक्तूबर

हमेशा की तरह जैसे निराशा व उदासी के दौर में होता है, मैं मिस एवरेट से मिलने गई। उनसे चर्चा करने से समस्याएँ खुद-ब-खुद छँटने लगती हैं। उनका

कहना था कि मैं जो कोर्स पढ़ रही हूँ वह मुझे अधिक प्रभावी और कम बोझिल लगेगा जब उसका रिश्ता मेरे काम के साथ होगा। हमने इस मसले पर कुछ विचार किया कि अध्ययन के लिए मैं किस समस्या को चुनूँ। हमने शुरुआत इस प्रश्न के साथ की कि "बच्चों के लिए आगे क्या हो?" उन्होंने समुदाय के कृषि के दौर का कुछ अध्ययन किया है। उन्होंने उन परिवर्तनों पर गौर किया है जो शुरुआत से अब तक स्थानीय समुदाय में आए हैं। ये बदलाव किन कारणों से आए यह प्रश्न कई बार उठा है, पर उसका सटीक उत्तर कभी नहीं मिला है। हमें लगा कि अगर बच्चे इन सवालों के जवाबों पर सोचें तो उन्हें फायदा होगा। इस तरह बदलती दुनिया की समझ उनमें पनपेगी, खासकर औद्योगिक क्रान्ति के कारण जो बदलाव आए उन्हें वे समझ सकेंगे।

किशोर बालिकाओं की स्वास्थ्य समस्याओं और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं को सम्बोधित करने की सख्त ज़रूरत है।

हमें लगता है कि इन आवश्यकताओं की पूर्ति कपड़ा उद्योग के अध्ययन से की जा सकती है। इस अध्ययन की योजना बनाते समय बच्चे और मैं कुछ नई तकनीकों के साथ प्रयोग भी कर सकते हैं। मुझे इसमें और इससे सम्बन्धित उठने वाली समस्याओं के बारे में पाठ्यक्रम के अपने प्रोफेसर से मदद मिल सकती है। तब मुझे अपने पाठ्यक्रम के लिए जो पर्चा लिखना है वह बच्चों की परियोजना की कहानी और परियोजना के मूल्यांकन के विषय में लिखा जा सकता है।

मिस एवरेट का कहना था कि क्योंकि बच्चों की फल उद्योग में खास रुचि नहीं है, उसके अध्ययन को तेज़ी से समाप्त कर उसे एक यथासम्भव सन्तोषजनक निष्कर्ष तक ले जाना चाहिए। जिन चीज़ों को सिखाने की उम्मीद हमने फल उद्योग के अध्ययन से रखी थी, वे कपड़ा उद्योग के अध्ययन से भी सीखी जा सकती हैं।

सोमवार, 26 दिसम्बर

गत दो माह से मैं अपनी दैनन्दिनी नहीं लिख पाई हूँ क्योंकि बहुत सारे दूसरे कामों के बीच इसके लिए समय निकालना सम्भव ही नहीं रहा। पर आज इन

दो महीनों के अनुभवों की जो छवि मेरे मन में है, उसे दर्ज कर लेना चाहती हूँ। इस दौरान हमने जो किया:

1. सेब उद्योग का अध्ययन पूरा किया।
2. अखबार का पहला अंक निकाला।
3. मोत्ज़ार्ट के जीवन पर एक नाटक रचा और मंचित किया।
4. रेडियो पर गाया।
5. क्रिसमस मनोरंजन कार्यक्रम के लिए डिकन्स के उपन्यास *क्रिसमस कैरल* का मंचन किया।
6. पोलिश, स्वीडी, फ्रेंच, इतालवी, रूसी, हंगारी व जर्मन भाषाओं में कैरल सीखे व गाए।
7. कई उपयोगी क्रिसमस उपहार बनाए।

स्थिति:

अक्तूबर माह के अन्त में स्थिति में कुछ तनाव था, पर दिसम्बर के आते-आते तनाव गायब हो गया। मुझे यकीन है कि अधिकतर परेशानी इस वजह से थी कि मैं खुद थकी होने के कारण जो कुछ घट रहा था उसके प्रति संवेदनशील न रह पाई थी। विभिन्न क्लबों की बैठकों में मेरा नज़रिया झलकने लगा। बच्चे चिड़चिड़ाने लगे थे और एक-दूसरे में मीन-मेख निकालने लगे। तब नवम्बर में एक दिन मैंने रूथ को टोका क्योंकि वह बच्चों से तीखी आवाज़ में बोल रही थी। इस पर उसने कहा, "पर आप तो खुद हमसे ठीक ऐसे ही बोलती हैं।" मैं सकते में आ गई, पर मुझे तत्काल समझ आ गया कि हो क्या रहा था।

अगली क्लब बैठक में हमने इस समस्या पर खुली बातचीत की। हमने यह समझने की कोशिश की कि हम जैसा आचरण कर रहे हैं उसका कारण क्या है। हममें से कोई भी यह नहीं कह सका कि यह सब शुरू कैसे हुआ, पर एक कठोर शब्द की प्रतिक्रिया में दूसरे कठोर शब्दों ने हमारे पारस्परिक सहकार को छिन्न-भिन्न कर दिया था, और यों स्थिति बद से बदतर होती गई। बैठक के अन्त में मेरी ने प्रतिवेदन पुस्तिका में लिखा, "यह निर्णय लिया गया कि हम सब

एक-दूसरे के प्रति अधिक सहृदयता से पेश आने की भरसक कोशिश करेंगे।"

बच्चों के विषय में:

रूथ, सोफिया, मे व डॉरिस ने ठेठ किशोरियों-सा आचरण करते हुए अपना गुट बना लिया है। उनकी पहली रुचि खुद में, अपने कपड़ों में और अपने बालों में है, और उसके बाद फिल्मों और फिल्मी सितारों में है। उनके लिए स्कूल महत्वपूर्ण नहीं है। अक्तूबर के अन्त में रूथ हर उस काम की आलोचना करने लगी जो मैं कर रही थी। उसने कमरे को व्यवस्थित करने में मदद करने से मना कर दिया। दो नवम्बर को हम बाहर घास पर बातचीत करने बैठे। हमारी बातचीत कुछ वैसी ही थी जैसी पहले साल रैल्फ और मेरे बीच हुई थी। प्रारम्भिक शाला के लड़के-लड़कियाँ वैसे युवा क्लब के सदस्य नहीं बन सकते, पर उस दिन मैंने अपवाद स्वरूप रूथ को उसकी सदस्यता का न्यौता दिया। दूसरे बच्चों को यह समझाना आसान था कि अगर रूथ ने साल भर प्रारम्भिक शाला में रुकना न चुना होता तो वह हाई स्कूल की छात्रा होती। इसके बाद अचानक रूथ में सारी व्यवस्थाएँ करने की इच्छा जगी। हमने उसे अल्पाहार और मोत्ज़ार्ट नाटक की पूरी ज़िम्मेदारियाँ लेने के अवसर दिए। उसने खुद एक समिति चुनी, अल्पाहार के लिए आवश्यक वस्तुओं की सूची बनाई, हरेक समिति सदस्य को बताया कि उसे क्या लाना है, और बिना मेरी मदद के नाटक की संध्या को अल्पाहार की बिक्री की व्यवस्था की! जैसे ही रूथ ने सहयोग करना शुरू किया, दूसरी लड़कियों का आचरण भी बदल गया।

मे क्रमशः अपनी बहन जैसी बनती जा रही है और उसे भी स्कूल पसन्द नहीं आता है। मुझे इससे दुख होता है क्योंकि वह एक अच्छी व सन्तुलित बच्ची बन रही थी। मुझे लगता है कि मैंने समूह के शेष बच्चों की तुलना में उसकी कम मदद की है। उसकी बहन डॉरिस एक शान्त लड़की से शोर-शराबा करने वाली लड़की में बदल गई है। मैं दस नवम्बर को उनके घर गई तो उन्होंने बुझा-बुझा सा स्वागत किया। मुझे याद है कि जब उनकी माँ जीवित थीं तो वे बड़े उत्साह से मेरा स्वागत करती थीं।

मैंने उनकी एक बड़ी बहन एडना को, जो परिवार को सम्हाल रही है, बैठकों में जुड़ने का निमंत्रण दिया। वह एक युवा मण्डल की बैठक में आई भी और

मैंने उसके साथ काफी समय बिताया और उसे स्कूल की योजनाओं के बारे में बताया। उनकी सबसे बड़ी बहन ब्लाँश, जो नर्स है, क्रिसमस की छुट्टियों में उनके पास आई और एडना उसे हमारे मनोरंजन कार्यक्रम में साथ लेती आई। ब्लाँश कार्यक्रम के बाद मेरे पास आई और बोली कि बच्चों द्वारा इतना उम्दा प्रदर्शन उसने कभी देखा ही नहीं। ब्लाँश ने एडना को नया नज़रिया अपनाने में मदद की है।

सोफिया अपनी शेष तीन सहेलियों जितनी परिपक्व नहीं है, पर उनकी नकल करती है ताकि समूह में खप सके।

यह गुट मेरी को पसन्द नहीं करता, क्योंकि वह मुँहफट्ट है और उन्हें उनके बारे में अपनी राय साफ बता देती है। पर मेरी काफी अकेली पड़ जाती है, सो कभी-कभार वह उनके समूह में शामिल हो जाती है और यह नाटक करती है कि उनमें कोई मतभेद है ही नहीं और कि उसे मज़ा आ रहा है। सतही तौर पर यह सब चल जाता है पर मेरी ने मुझे बताया कि उसे यों नाटक करना पसन्द नहीं आता। पर लड़के मेरी को पसन्द करते हैं और उन्हें गुट की लड़कियाँ "बेवकूफ" लगती हैं। छोटे बच्चों में भी मेरी खासी लोकप्रिय है।

इस स्कूल में आने के बाद से थॉमस में काफी सुधार आया है। वह जब आया था तो दबा-सहमा सा लड़का था जो ज़रा-ज़रा सी बात पर अपने अधिकारों के लिए लड़ने को तैयार रहता था। पिछले साल उसने समूह के सभी लड़कों, खासकर रैल्फ से भिड़ने की पेशकश की थी। इस साल भी वह यदा-कदा भड़कता है, पर ऐसी घटनाएँ काफी कम हो गई हैं। वह समूह से तालमेल बैठाने लगा है और उसमें योगदान करने लगा है। गत अक्तूबर बच्चों ने थॉमस को उसके पद से हटा दिया था, पर नवम्बर में उसे फिर से मौका देने के लिए अध्यक्ष के रूप में चुना। थॉमस ने भी पूरी कोशिश की और दिसम्बर में फिर से चुना गया।

दिसम्बर में कॉलेज का एक छात्र स्कूल देखने आया। वह हमारे काम का अवलोकन करने कई बार आएगा। जब थॉमस ने यह सुना तो उसे लड़कों के शौचालय में हाल में लिखी गई अश्लील इबारतों से शर्म आई। मुहल्ले के बाहर के कुछ बड़े लड़कों ने यह काम किया है। उसने अपनी टोली को एकजुट किया, इबारतों को खुरच दिया, और इक्कीस सेंट इकट्ठे कर मुझे दिए ताकि मैं उन्हें रंग ला दूँ और वे पुताई कर सकें।

हेनरी को हमेशा चिन्ता रहती है कि वह कोई छोटी-मोटी गलती कर डालेगा। वह घड़ी देखता रहता है क्योंकि उसे डर रहता है कि वह समय पर काम खत्म नहीं कर पाएगा। वह इतनी धीमी गति से काम करता है कि अक्सर उसके पास दूसरी गतिविधियों का मज़ा लेने का समय ही नहीं बचता। वह चाहता है कि समूह उसे स्वीकार ले। इस पतझड़ में एक दिन खाने के पीरियड में उसे लड़कों ने छेड़ना शुरू किया तो वह अपनी माँ का दिया ढेर सा खाना पूरा नहीं खा सका। वह यह नहीं चाहता था कि इस बारे में उसकी माँ मुझसे कुछ कहे। उसे डर था कि ऐसा करने पर लड़के उसे नापसन्द करने लगेंगे। श्रीमती मान ने हेनरी की मौजूदगी में मुझसे बात की। मैंने हेनरी से कहा कि लड़के उसे पसन्द करते हैं, और अगर वह साहस दिखाए तो वे नाराज़ नहीं होंगे बल्कि उसकी कद्र करेंगे। अगली क्लब बैठक में हेनरी ने मामला उठाया। उस पर चर्चा हुई और मामला सलट गया। श्रीमती मान और उनकी सास, दोनों ही हेनरी से हर क्षेत्र में बढ़िया प्रदर्शन की उम्मीद रखती हैं। उस पर भारी दबाव है। हम इस मुद्दे पर मिलजुलकर काम कर रहे हैं।

वॉरेन, एल्बर्ट, मार्था, मेरी, थॉमस व हेनरी ऐसी चर्चाओं में सबसे ज़्यादा योगदान करते हैं जिनमें अमूर्त विचारों की ज़रूरत हो।

पर्ल, एलिस, एलिज़ाबेथ, वॉरेन, एल्बर्ट, मार्था, मेरी, हेलेन, थॉमस, हेनरी तथा एण्ड्रयू ज़्यादातर व्यावहारिक सुझाव देते हैं और खूब मेहनत करके योगदान करते हैं।

हमारे नन्हे बच्चे बेहद सक्रिय हैं। वे अपनी झिझक को पीछे छोड़ चुके हैं। हर तरह की गतिविधि में उनकी रुचि है। उन्हें खेलना पसन्द है और वे ढेरों सवाल पूछते हैं। उनकी हमेशा आपस में नहीं बनती। एरिक व आइरीन को चार्ल्स नापसन्द है और कभी-कभी वे उसका जीना हराम कर डालते हैं। आइरीन को स्कूल में काम करना नापसन्द है। मुझे अन्देशा यह है कि उसकी माँ घर में उसे काफी ठेलती रहती हैं कि वह हर क्षेत्र में उम्दा प्रदर्शन करे।

इस समूह को सैली की मौजूदगी से लाभ हुआ है। वह बेहद बेतकल्लुफ बच्ची

है और जीने का इतना मज़ा लेती है कि उसके चेहरे पर हमेशा खुशी झलकती है। वह कविताएँ, गीत और नाच रचती रहती है और हमेशा ही करने को कुछ ऐसा तलाश लेती है जो उसे आकर्षित करता हो।

कार्टराइट बच्चे आधा समय अनुपस्थित रहे हैं क्योंकि उनके पास पहनने को ढंग के कपड़े नहीं हैं। स्कूल आने पर वे खूब मेहनत करते हैं, पर बेहद शर्मीले हैं। क्रिसमस उपहार बनाने वाले पीरियड में मैंने उन पर खास ध्यान दिया। एलेक्स ने बँधेज का एक स्कार्फ बनाया, जिसके किनारे उसने खुद सिए। गस ने दीवार पर लटकाने के लिए बाटिक का चित्र बनाया और उसके पीछे लाइनिंग लगाई। मेरा विश्वास है कि उनके घर की सबसे खूबसूरत वस्तुएँ यही होंगी। वर्ना भी कुछ दिन आई थी जब उसने बाटिक का काम किया था, पर उसे किनारे सीने का समय नहीं मिल पाया। रिचर्ड और क्लैरेंस ने स्टेन्सिल की मदद से कुछ टेबल मैट और सुई रखने के होल्डर बनाए।

अभिभावकों के विषय में:

श्रीमती थॉमसन रूथ के प्रति सहयोगी भाव व सहानुभूति रखती हैं, और हम एरिक की उन कामों के लिए तारीफ करते हैं जो वह अच्छी तरह करता है ताकि वह ज़्यादा सुरक्षित महसूस करे। हमारी कोशिश है कि हम लगातार उसकी गलतियाँ न निकालें।

श्रीमती हिल व श्रीमती लेनिक (थॉमस की माँ) मुझे बार-बार धन्यवाद देती हैं क्योंकि स्कूल ने उनके बच्चों के लिए बहुत कुछ किया है। मैं श्रीमती लेनिक को थॉमस की प्रगति का ग्राफ दिखाती रही हूँ और उन्हें यह भरोसा हो चला है कि थॉमस कुछ सीख रहा है। उन्हें लगता है कि वह एक बेहतर लड़के में बदलता जा रहा है। श्रीमती सामेटिस हमेशा सलाह माँगती रहती हैं, क्योंकि अपने बच्चों के आलोचनात्मक रुख से वे आहत रहती हैं। उन्हें समझ नहीं आता कि उनकी बेटियों को क्या हो रहा है, सो वे ज़रूरत से ज़्यादा फिक्रमन्द रहती हैं।

श्रीमती ओल्सेउस्की यथासम्भव मदद करने को तैयार रहती हैं। श्रीमती डुलियो दोपहरी के गर्म भोजन के वास्ते उदारता से सहयोग देती हैं।

प्रिन्लैक दम्पत्ति अपने बच्चों को हर गतिविधि में सहयोग करने और अपनी अध्यापिका की मदद करने को प्रेरित करता है क्योंकि वह उनके लिए इतना

कुछ करती है। और वे सच में मदद करते हैं! मैंने इस दौरान श्रीमती रैमसे के साथ दो खुशनुमा दोपहरें बिताईं और उन्हें अधिक करीब से जाना। उन्होंने अपनी रोमांचक जीवनगाथा सुनाईः कैसे उनके माता-पिता क्रान्ति के दौरान रूस से भागे, कैसे उन्होंने फिनलैंड के किसानों की नर्स के रूप में तब तक सेवा की जब तक परिवार को इस देश में लाने के लिए पैसे न जुट गए। उन्होंने अपने खुशगवार बचपन और रसायनशास्त्र में विशेषज्ञता हासिल करते समय कॉलेज के जीवन के बारे में बताया, और अपनी जुड़वाँ बहन की बात बताई जो अब एक फिलहार्मोनिका संगीत मण्डली के निर्देशक की पत्नी है।

मुझे सैली की माँ को भी जानने का मौका मिला। वे जवान हैं और सैली के विषय में बेहद महत्वाकांक्षी हैं। उन्हें इस बात की तकलीफ है कि सैली को इस ग्रामीण शाला में पढ़ना पड़ता है, क्योंकि उनके अनुसार सैली खिलन्दड़ी लड़के-सी बनती जा रही है। पहले सैली शहर के एक निजी स्कूल में पढ़ती थी जहाँ वह एक शिष्ट नन्ही महिला बनना सीख रही थी। मैंने उन्हें बताया कि सैली जो कुछ भी कर रही है उसमें उसे बड़ा मज़ा आ रहा है और वह एक स्वस्थ व अनुकूलित बच्ची है। सैली को अपना चचेरा बड़ा भाई थॉमस बेहद प्यारा लगता है। थॉमस उससे सहृदयता से पेश आता है।

कुल मिलाकर माता-पिता का दृष्टिकोण अच्छा है। वे सहयोग करते हैं, उनका आचरण मित्रवत व संवेदनशील है, और मुझे उनके प्रति आभार की गहन अनुभूति होती है।

सेब उद्योग सम्बन्धी अध्ययन के बारे में:

हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सेब बागान हमारे कस्बे के लिए लाभदायक सिद्ध होंगे। यहाँ की आबोहवा इतनी बढ़िया है कि उसमें नरम, खुशबूदार सेब उगते हैं जिनकी बहुत माँग है। उस माँग को पूरा करने लायक उत्पादन हमारी काउंटी कर नहीं पाती। सड़कें व बाज़ार की सुविधाएँ भी पर्याप्त विकसित हैं। सेबों का उत्पादन कैसे किया जाए इसकी समुचित जानकारी भी उपलब्ध है। साथ ही छोटा-मोटा बागान लगाने में खर्च भी बहुत नहीं आता, लेकिन उससे आय पाने के लिए तकरीबन सात साल इन्तज़ार करना पड़ता है।

इस अध्ययन ने बच्चों को उतना नहीं बाँधा जितना दूध उत्पादन के अध्ययन ने बाँधा था।

"स्वस्थ शैक्षणिक अनुभव का मर्मस्थल उद्देश्य में स्थित होता है" – इस कथन को काम में उतारने के लिए मुझे शायद बहुत कुछ सीखना बाकी है।

मोत्ज़ार्ट के जीवन सम्बन्धी नाटक के विषय में:

बच्चों को अब तक जितनी कथाओं का नाट्य रूपान्तर करने में मैंने मदद की, उनमें यह सबसे रोचक कथाओं में से थी। इससे पूर्व क्रिसमस के दौरान प्रदर्शन के लिए जितनी रचनात्मकता से हमने नाटक बनाए, उतनी ही रचनात्मकता का हमने यहाँ भी उपयोग किया था। कई बच्चे इसमें भाग ले पाए और उन्होंने मोत्ज़ार्ट के तीन से चौदह वर्ष तक के जीवन के विभिन्न चरणों को प्रस्तुत किया। सैली तीन वर्षीय मोत्ज़ार्ट बनी थी। पहले दृश्य में मोत्ज़ार्ट परिवार लियोपोल्ड मोत्ज़ार्ट के जन्म की चालीसवीं वर्षगाँठ मनाता है। यह वह दृश्य था जिसमें मोत्ज़ार्ट का तीन वर्षीय बेटा वूल्फगैंग वह पंक्तियाँ कहता है जो प्रसिद्ध हो गई हैं: "पापा, मैं तुम्हें बहुत, बहुत प्यार करता हूँ; ईश्वर के बाद मेरे पापा ही हैं।" सैली कुर्सी पर खड़ी हुई, उसने अपनी बाँहें थॉमस के गले के इर्द-गिर्द डालीं, उसने पूरी भावना से ये पंक्तियाँ कहीं, और फिर उसके गाल को चूमा। दोनों बच्चे बिलकुल भी असहज नहीं थे। वे थॉमस और सैली भी नहीं थे। वे तो लियोपोल्ड मोत्ज़ार्ट और उसका तीन साल का बेटा वूल्फगैंग ही थे! यह इतना वास्तविक था कि दर्शकों में कोई भी नहीं हँसा।

आइरीन छह वर्षीय वूल्फगैंग बनी। दूसरे दृश्य में लियोपोल्ड और उसके मित्र मोत्ज़ार्ट को लिखने में व्यस्त देखते हैं और उनके बीच यह बातचीत होती है:

लियोपोल्ड: और तुम क्या कर रहे हो, वूल्फर्ल?

वूल्फर्ल: पापा, एक पियानो सोनाटा लिख रहा हूँ, पर अभी यह अधूरा ही है।

लियोपोल्ड: कोई बात नहीं, ज़रा देखें तो। ज़रूर अच्छा होगा। शाख्टनर, देखो तो सही, कितना सही और व्यवस्थित है। बिलकुल नियमानुसार लिखा हुआ। पर इसे कोई बजा नहीं सकेगा क्योंकि यह बड़ा कठिन लग रहा है।

मैं वह क्षण कभी नहीं भूलूँगी जब आइरीन ने अपना छोटा-सा सिर उठाया और बड़ी गम्भीरता से थॉमस को कहा, "यह तो एक सोनाटा है, पापा, पहले इसका अभ्यास करना पड़ता है, पर देखिए यह ऐसे बजेगा।" तब आइरीन ने "ए"

सप्तक में सोनाटा का प्रारम्भिक भाग बजाया। उसने पहली बार दर्शकों के सामने पियानो बजाया था। उस पल लग यह रहा था कि वह खुद को मोत्ज़ार्ट ही मान रही हो!

नाटक में मोत्ज़ार्ट के संगीत को शामिल करने के कई अवसर थे, सो बच्चों ने सावधानी से उसे सीखा, और प्रदर्शन से पहले उनकी धुनों पर कई गीतों का अभ्यास किया। बच्चों ने बड़ी ईमानदारी से अभिनय किया और दर्शकों को वह पसन्द भी आया।

रेडियो पर गीतों की प्रस्तुति:

हर माह वेस्ट रेडियो स्टेशन आधे घण्टे का शैक्षणिक कार्यक्रम प्रसारित करता है। इसकी सामग्री कस्बे के विभिन्न भागों से संकलित की जाती है। दिसम्बर में हमारे बच्चों से गाने को कहा गया। उन्होंने यह कार्यक्रम प्रस्तुत किया:

समवेत पाठ:
सोप बबल्स (साबुन के बुलबुले)
द विंड हैज़ सच ए रेनी साउन्ड (बयार में वर्षा की ध्वनि है)
लिटिल व्हाइट हॉर्सेज़ (नन्हे श्वेत घोड़े)
द मेन डीप

लोकगीत:
आइरिश – द गैलवेपेपर
इतालवी – टू इटली (इटली की ओर)
जर्मन – लिटिल डस्टमैन
रूसी – कज़ाक हॉर्समैन (कज़ाक घुड़सवार)

शास्त्रीय संगीतज्ञों की प्रस्तुतियाँ:
ब्राह्मस् – इन पोलैण्ड देयर इज़ एन इन (पोलैण्ड में है एक सराय)
हेडन – द विन्डस् (हवाएँ)
मोत्ज़ार्ट – स्लीप एण्ड रेस्ट (निद्रा व विश्राम)
बीथोवन – नाइट एण्ड डे (रात्रि व दिन)
बाख़ – द एट्थ साल्म (अष्टम् भजन)

क्रिसमस कैरल (गीत):
साइलैन्ट नाइट (निस्तब्ध रात)
ब्रिंग अ टॉर्च, जैनेट इसाबैला (एक टार्च लाओ, जैनेट इसाबैला)
ओ सैंक्टिसिमा

उन्हें बधाई के कई तार मिले जिनमें उनकी प्रस्तुतियों की प्रशंसा थी। घर बैठे रेडियो पर उनको सुन रहे अनेक अभिभावक भी बेहद प्रसन्न थे। बच्चे रेडियो स्टेशन पर फिदा हो गए और उन्होंने उसके बारे में तमाम सवाल दागे, जिनके जवाब वहाँ के कर्मियों ने धीरज से दिए। बच्चों के लिए यह एक बेहद सार्थक अनुभव रहा।

क्रिसमस नाटक के बारे में:

डिकन्स के *क्रिसमस कैरल* नामक उपन्यास के नाट्य रूपान्तर में थॉमस ने स्क्रूज का किरदार इतनी रचनात्मकता से निभाया कि सबने उसे बधाईयाँ दीं और डॉ. व श्रीमती ब्रीड ने उससे हाथ मिलाया। अगली सुबह जब हम सफाई कर रहे थे तो वह मेरे पास आया और काफी विनम्रता से बोला, "रात मेरा काम काफी अच्छा रहा होगा।" और सच उसने कमाल किया था! समूचा समुदाय उसे आदर से, नई दृष्टि से देख रहा है और थॉमस ख़ुद को भी!

दूसरे दृश्य में, मैंने बच्चों को "सर रॉजर डी कॉवरली" नामक एक ख़ास नृत्य सिखाया था। जहाँ तक बड़ी लड़कियों का सवाल था, उनके लिए यही समूचे नाटक का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा था। उन्होंने अपने पुरुष साथियों पर ख़ूब चर्चा की। हेनरी इसलिए पसन्द किया जाता था क्योंकि वह सबसे सुन्दर नाचता था। दिसम्बर माह में आप अक्सर यह देखते कि कोई लड़की अपने साथी को हॉल में अभ्यास के लिए ले जाती क्योंकि वह यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि उसके साथी का पद संचालन बिलकुल सही हो।

एल्बर्ट और वॉरेन ने *क्रिसमस कैरल* का फिल्म रूपान्तर देखा था और उन्होंने हमारी काफी मदद की। वॉरेन ने काफी निर्देशन किया।

नाटक में सभी बच्चों ने शिरकत की, क्लैरेन्स के आकार के बच्चों तक ने जिसने टाइनी टिम (नन्हे टिम) का अच्छा अभिनय किया। नाट्य प्रदर्शन के बाद दर्शकों ने हमारे साथ स्तुति गीत गाए और नाटक की ख़ूब तारीफ की।

बुधवार, 28 दिसम्बर

और अब शेष सत्र की योजना बनाने का समय आ गया है। मुझे अपने पाठ्यक्रम कोर्स के लिए इसकी रिपोर्ट भी लिखनी होगी। ज़ाहिर है कि अच्छी रिपोर्ट लिखने में काफी समय लगाना होगा, सो शायद बेहतर यही रहे कि उसी पर ध्यान केन्द्रित करूँ और दैनन्दिनी या अन्य टिप्पणियाँ लिखना अगले कुछ महीनों के लिए स्थगित करूँ। नया कार्यक्रम मैंने तैयार कर लिया है।

8

मैंने सीखीं नई तकनीकें

धन्यवाद-पर्व (Thanksgiving) के बाद हमने वस्त्र उद्योग का अध्ययन शुरू किया। दिसम्बर में बच्चों ने लाइनोलियम के ठप्पों से छपाई करने का अनुभव किया था। उन्होंने इन ठप्पों से क्रिसमस कार्ड, मेज़पोश व अन्य कपड़े छापे थे। उन्होंने कपड़े पर बाटिक व बँधेज का काम सीखा; स्कार्फ, मेज़पोश व पर्दे बनाए। बच्चे उपहार बनाना शुरू करें उससे पहले मैंने कुछ समय उन्हें डिज़ाइन के विषय में कुछ सिखाने में लगाया। पर मुझे पता चला कि ऐसा करना गलत था। यह एक पुराना तरीका था। बच्चों के पल्ले कुछ पड़ ही नहीं रहा था। जब मैं अपनी व्यवस्थित, क्रमबद्ध सामग्री परोस रही थी तो मैंने इस बात पर विचार ही नहीं किया कि बच्चे दरअसल सीखते कैसे हैं। मैंने उन्हें यह मौका ही नहीं दिया कि वे खुद प्रयोग करते हुए डिज़ाइन के बारे में कुछ जानें। मैं उनकी डिज़ाइन की समझ को विस्तार देने के बदले उसे सीमित कर रही थी। यह समूचा काम पूरी तरह फिस्स इसलिए नहीं हुआ क्योंकि बच्चों को अपने हाथों से काम करना पसन्द है। और जब उन्होंने वास्तव में कुछ करना शुरू कर दिया तो वे करते हुए सीखने का मज़ा लेने लगे। पर अगला चरण क्या हो? क्रिसमस की छुट्टियों के बाद काम को कैसे बढ़ाया जाए?

शायद मुझे पहले यह विचार कर लेना चाहिए कि कपड़ों के इस अध्ययन से इन बच्चों की कौन सी ज़रूरतें पूरी होंगी। उनमें यह समझ तो विकसित होनी ही चाहिए कि अलग-अलग मौसमों व आयोजनों में वे कैसे कपड़े पहनें। नए कपड़े चुनने में अभिरुचि का होना भी ज़रूरी है। कपड़ों पर खर्च करने के लिए जितनी भी राशि उनके बजट में हो, उसका सबसे अच्छा उपयोग करना उन्हें आना चाहिए। कपड़े खरीदते समय उपभोक्ता किन समस्याओं का सामना करते हैं यह

भी उन्हें मालूम होना चाहिए और इस ज्ञान का समझदारी से उपयोग करना भी आना चाहिए। उन्हें विभिन्न लेबलों की समझ होनी चाहिए, और साथ में उस जानकारी की जो ये लेबल देते हैं। जैसे, वस्त्र की गुणवत्ता, कारीगरी, और किन परिस्थितियों में वह वस्त्र बना है। उन्हें विज्ञापनों को विवेक से पढ़ना-समझना आना चाहिए। यह भी समझना चाहिए कि आविष्कारों से, जैसे कपड़ा व वस्त्र उद्योग के आविष्कारों से, दुनिया और जीवन शैली में बदलाव कैसे आते हैं।

किशोरी बालिकाओं की एक दूसरी ज़रूरत भी है, जो आकर्षक दिखने में उनकी रुचि से पैदा होती है। बड़े लड़कों, खासकर वे जो कुछ सुस्त हैं, को अपने हाथों से कुछ करने की ज़रूरत भी है। इससे उनके समक्ष उनकी समझ के दायरे में ही एक व्यापक दुनिया खुलेगी।

शायद मुझे स्कूल में कुछ सामग्रियाँ ले जानी चाहिए। अगर हम उन सामग्रियों और अपने वस्त्रों को जाँचें और यह जानने की कोशिश करें कि वे किस चीज़ से बने हैं, तो बच्चों की रुचि जग सकती है।

मंगलवार, 3 जनवरी 1939

आज मैंने शुरुआत बच्चों से यह पूछकर की कि क्या वे जानते हैं कि उनके कपड़े किन चीज़ों से बने हैं। हमें सूत, ऊन, रेशम व रेयॉन के बने वस्त्र तो मिले पर लिनेन के नहीं। बच्चों ने डिब्बे में रखे कपड़े के टुकड़ों को बड़ी सावधानी से जाँचा और पूछते रहे, "क्या यह लिनेन है?" तब, कई बार गलत पहचान करने के बाद उनकी ओर से पहला सवाल आया, "पहचान कैसे की जाती है?" मैंने प्रश्न समूह की ओर ही उछाल दिया। हेलेन बोली, "लिनेन आसानी से मुस जाता है।" इस पर दूसरे बच्चों ने कहा कि सभी तरह के कपड़े मुसते हैं। इस रास्ते पहचान करना कठिन था। एल्बर्ट का कहना था कि कुछ सूत लिनेन जैसा दिखता है, इसलिए पहचान करना मुश्किल था। एण्ड्रयू ने कहा कि उसका भाई छूकर विभिन्न प्रकार के कपड़ों को पहचान सकता है। बच्चों ने टुकड़े उठा लिए और वे उन्हें स्पर्श से जानने की कोशिश करने लगे। इस दौरान वॉरेन बोला कि ऊन की पहचान जलाने पर उससे निकलने वाली गन्ध से हो सकती है। हमने यह करके देखा। बच्चे फौरन जलती ऊन से निकलती पशु-गन्ध को पहचान गए। कुछ टुकड़े ऐसे भी थे जो देखने में ऊनी लगते थे पर जलाने के परीक्षण में उनकी गन्ध ऊन जैसी नहीं थी। मार्था ने कहा कि कपड़े का अधिकतर भाग

शायद सूती है और उसमें कुछ ऊन मिलाई गई है। उसने बताया कि उसके पास एक स्वैटर था जो सूत और ऊन के मिश्रण से बना था। बच्चों ने सुझाया कि दूसरी तरह के नमूनों को जलाकर देखना चाहिए कि क्या होता है। जॉर्ज ने रेशम का एक टुकड़ा जलाया। बच्चों ने देखा कि ऊन की तरह रेशम भी जलने पर एक परत छोड़ देता है और उसकी एक खास तरह की गन्ध होती है। कुछ कपड़े स्पर्श से रेशम जैसे लग रहे थे, पर दरअसल थे नहीं। जलाने पर उनके मोटे-मोटे, खुरदुरे-से किनारे निकल आए। रूथ ने टिप्पणी की, "यह ज़रूर रेयॉन होगा।" इस पर जॉर्ज ने सूती कपड़ा जलाया जो रेयॉन-सा जला। "जलाकर हम अन्तर नहीं जान पाएँगे," एल्बर्ट बुदबुदाया। पॉल बोला, "खैर, सूती कपड़े और रेयॉन में अन्तर करना आसान है। एक चमकीला होता है, दूसरा नहीं।" "ना, ऐसा भी नहीं है," रूथ ने बात काटी। "सिलाई क्लब में मैं अपनी ड्रेस बना रही हूँ। यह एक खास तरह के सूती कपड़े की है जो चमकीला है।" "पर वह रेयॉन से कहीं भारी है," पर्ल ने पलटकर जवाब दिया। "मिस वेबर के पास एक नायलॉन की ड्रेस है जो मेरे सूती लट्ठे जितनी ही भारी है, और देखने में भी वैसी ही लगती है," रूथ ने निर्णयात्मक ढंग से कहा। समय प्रायः खत्म हो चला था। सो मैंने सुझाया कि वे घर पर रखी सामग्री देखें और माता-पिता से पूछें कि उनमें फर्क कैसे किया जा सकता है।

बुधवार, 4 जनवरी

आज मैंने बच्चों से पूछा कि घर पर उन्हें क्या पता चला था। वॉरेन ने बताया कि उसकी माँ का कहना था कि ऊन और रेशम पशुओं से प्राप्त होते हैं, इसलिए उनकी गन्ध चिड़ियों के पंख जैसी अजीब-सी होती है। सूती और लिनेन के कपड़े वनस्पति से प्राप्त तन्तुओं से बनते हैं। रूथ ने कहा कि रेयॉन भी वनस्पति से बनता है। "क्या वह पेड़ों से नहीं बनता?" वॉरेन ने कहा कि रेयॉन कृत्रिम तन्तु से बनता है।

बच्चों को सूझा कि वे अपनी-अपनी कॉपियों में हर तरह की सामग्री के नमूने लगाएँगे। सो हमने कपड़ों को सूती, ऊनी, रेशमी, रेयॉन, लिनेन व अज्ञात की ढेरियों में छाँटना शुरू कर दिया। "लाइनिंग स्टोर ने सिलाई क्लब के लिए जो कपड़ों के नमूने भेजे थे, क्या उनको काम में नहीं लाया जा सकता? उनमें से हरेक के पीछे लिखा है कि वह किस तरह का कपड़ा है," मेरी ने सुझाया। मेरी उन्हें ले आई और बच्चों ने देखा कि उन्हें किस तरह काटकर लगाया गया था।

वे यह सब कर ही रहे थे कि सोफिया ने गौर किया कि सूती कपड़ों के ढेरों प्रकार हैं और डेनिम और नैनसूक में कितना भारी अन्तर है। मैंने बच्चों को बताया कि रेयॉन के भी कई नाम हैं, पर क्योंकि रेयॉन उद्योग अभी नया है, हम उनसे परिचित नहीं हैं। डॉरिस ने दो तरह के ऊनी कपड़े उठाकर कहा, "ऊनी कपड़ों में भी अन्तर होता है। लाइनिंग स्टोर ने उनमें से एक को ऊनी क्रेप कहा है।"

वॉरेन काफी देर से चुपचाप कपड़े छाँट रहा था, पर अब सिर उठाकर बोला, "हम कभी भी पक्के भरोसे से यह नहीं कह पाएँगे कि हम सही हैं। जिन वस्त्र कारखानों में कपड़े सीने के लिए हर तरह की सामग्री मँगवाई जाती है, वे भला क्या करते हैं? क्या उनके पास निश्चित तौर पर फर्क करने का कोई खास तरीका है?" मैंने उसे बताया कि आजकल माइक्रोस्कोप के बिना विभिन्न सामग्रियों में साफ अन्तर करना लगभग असम्भव हो चला है। मेरे मुँह से शब्द निकले नहीं थे कि मुझे सूझा कि हम डॉ. ब्रीड के स्कूल से माइक्रोस्कोप का जुगाड़ बैठा सकते हैं। लड़के-लड़कियों के लिए यह बड़ा मोहक अनुभव रहेगा!

सोमवार, 9 जनवरी

शनिवार को डॉ. ब्रीड से मुझे माइक्रोस्कोप मिल गया और इसे मैं आज स्कूल ले आई। माइक्रोस्कोप ने दिन भर का कार्यक्रम गड़बड़ा दिया। छोटे बच्चे भी यह देखना चाहते थे कि क्या हो रहा है। मैंने सबसे पहले कपास का तन्तु लगाया और हरेक बच्चे ने उसकी बड़ी छवि को ध्यान से देखा। आश्चर्य और उत्साह की तरह-तरह की ध्वनियाँ सुनाई दीं। बच्चों ने विभिन्न प्रकार के तन्तुओं में अन्तर करना सीखा। उनकी योजना यह है कि वे इनके चित्र अपनी कॉपियों में बनाएँगे।

दोपहर को बच्चों ने माइक्रोस्कोप से कई दूसरी चीज़ें भी देखीं। वॉरेन ने अपना खाली समय एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के बाल संस्करण को पढ़ने में बिताया। उसने माइक्रोस्कोप के सभी भागों के बारे में पढ़ा, और यह भी कि वह कैसे काम करता है।

मंगलवार, 10 जनवरी

आज सुबह हमने माइक्रोस्कोप द्वारा "अज्ञात" कपड़ों के ढेर में से कपड़े जाँचने शुरू किए ताकि उनके स्वरूप के बारे में पता चल सके। जैसा कि बच्चों को

पहले ही लग रहा था, इनमें से कई कपड़े मिश्रित तन्तुओं से बने थे।

अब तक मैं ही माइक्रोस्कोप में नमूने लगाती रही थी। दोपहर को वॉरेन ने अनुरोध किया कि उसे इसकी इजाज़त दी जाए। उसने कहा कि उसे पता है कि वह कैसे काम करता है और उसे सुरक्षित कैसे रखा जाए। मैंने कुछ देर उसे काम करते देखा और तब रुचि ले रहे बच्चों के समूह के साथ उसे काम करते छोड़ चली आई। मैं जहाँ काम करने बैठी वहाँ उसकी आवाज़ सुनाई दे रही थी। वह कह रहा था, "याद है पिछले साल हमने मैग्नीफाइंग ग्लास का उपयोग कर चीज़ों को असल आकार से बड़ा करके देखा था? माइक्रोस्कोप भी ठीक वैसे ही काम करता है। फर्क इतना है कि यह ज़्यादा शक्तिशाली होता है, क्योंकि इसमें अक्सर दो से अधिक लैन्स होते हैं।" वह जो कुछ कह रहा था पूरी तरह समझकर कह रहा था, इसलिए बच्चे भी उसकी बात समझ पा रहे थे।

दोपहर के इस पीरियड में बच्चों ने माइक्रोस्कोप से कपड़ों के टुकड़े जाँचने शुरू किए ताकि वे बुनाई के नमूनों को देख सकें। उनकी रुचि कपड़ों की बुनावट की खूबसूरती में ही थी।

बुधवार, 11 जनवरी

आज सुबह मैंने बच्चों से बुनावट को बारीकी से देखने को कहा। उन्होंने कई तरह के नमूने जाँचे और पाया कि तीन तरह की बुनावट दोहराई गई है। मैंने मे को बुनने की किताब पकड़ाई और उससे कपड़े बुनने के बारे में जानकारी इकट्ठा करने को कहा। मे ने पता लगाया कि वे तीन मुख्य प्रकार की बुनावटों को देख रहे हैं। बच्चों ने उनके नमूने अपनी कॉपियों में उतारने का फैसला किया। जब हम साटिन के कपड़े के एक टुकड़े को देख रहे थे, मार्था ने पूछा, "इसे कैसे बुना जाता है?" मैंने बच्चों से जानना चाहा कि क्या वे करघों पर खुद कुछ कपड़े बुनना चाहेंगे। उन्होंने उत्साह जताया।

सोमवार, 16 जनवरी

हमने डॉ. ब्रीड को माइक्रोस्कोप के लिए धन्यवाद देते हुए एक साझा पत्र लिखने की योजना बनाई। पत्र बड़े स्नेह और कृतज्ञता भरे शब्दों में लिखा गया, जो साफ जताता था कि माइक्रोस्कोप बच्चों के लिए क्या मायने रखता है। डॉरिस, जो फिलहाल सचिव है, ने पत्र सुन्दर अक्षरों में उतारा और उसे भेज दिया।

मंगलवार, 17 जनवरी

मैंने रूथ, डॉरिस, मे और सोफिया को किताबें दीं और कहा कि वे नवाजो इण्डियन (Navajo Indian) करघे, बॉक्स करघे, गोद करघे और बड़े फ्रेम वाले खटका खींचकर चलाए जाने वाले करघे के बारे में पता लगाएँ। मैंने उनकी मदद की ताकि वे अपनी रपटें समूह के सामने व्यवस्थित रूप से रख सकें। इस दौरान समूह के शेष बच्चे अपनी कॉपियों में काम करते रहे।

बुधवार, 18 जनवरी

आज लड़कियों ने अपनी रपटें सुनाईं तथा बच्चों ने ध्यान से सब कुछ सुना ताकि वे यह तय कर सकें कि वे किस तरह के करघे बनाना चाहेंगे। प्राथमिक समूह के बच्चों ने भी सुना। उनमें से कई ने इच्छा ज़ाहिर की है कि वे भी करघे बनाकर कपड़ा बुनना चाहेंगे। रूथ का कहना था कि छोटा नवाजो इण्डियन करघा बनाना मुश्किल नहीं है, सो प्राथमिक समूह के बच्चे उसे बना सकते हैं। पाँच-छह साल के बच्चों को लगा कि वे तो छूट ही गए। मैंने वादा किया कि वे कार्डबोर्ड के छोटे करघे बना सकते हैं, जिससे वे पतली पट्टियाँ बुन सकेंगे और उनसे गमला टाँगने के छींके बनाए जा सकेंगे।

शुक्रवार, 20 जनवरी

लड़कों ने विभिन्न करघों को बनाने के लिए आवश्यक लकड़ी की सूची बनाई और स्कूल के बाद हम लकड़ी की टाल पर गए ताकि ज़रूरी सामग्री खरीदी जा सके। डॉरिस ने न्यू यॉर्क स्थित औद्योगिक कला सहकारी सेवा को सूती व ऊनी धागों के लिए पत्र लिखा। बच्चों ने तय किया कि वे छोटी कितबिया और बेल्टें बनाएँगे। नन्हे बच्चे नवाजो करघों पर मोटी पट्टियाँ बुनेंगे।

शुक्रवार, 3 फरवरी

पिछले दो हफ्तों से हम करघे बनाने में जुटे रहे हैं। मैंने निर्देश सावधानी से नहीं पढ़े थे, जो ठीक ही रहा क्योंकि बच्चों को खुद अपनी योजनाएँ बनानी पड़ रही थीं। और बार-बार निर्देश पढ़ने पड़ रहे थे। इससे वे और भी आत्मनिर्भर बने हैं। मेरा विश्वास है कि हरेक बड़ा बच्चा अब बिना किसी दूसरे की मदद लिए खुद एक और करघा बना सकता है। एडवर्ड, जो पढ़ने में कमज़ोर है, उसने भी

बिना मेरी मदद के एक बॉक्स करघा बना डाला। उसने तीन दूसरे बच्चों की भी खूब मदद की जिन्हें अपने बॉक्स करघे बनाने में दिक्कतें आ रही थीं। जॉर्ज ने नवाजो करघा बनाना सीखा और प्राथमिक समूह के बच्चों को सिखाया कि उसे कैसे बनाया जाए। उसने इस पूरे उपक्रम पर नज़र रखी।

हमारे अध्ययन के इस पक्ष ने बच्चों, खासकर बड़े लड़कों की एक भारी ज़रूरत पूरी की है। यह ज़रूरत है अपने हाथों से कुछ करने-बनाने की। क्योंकि उनके सामने एक मज़बूत लक्ष्य था, इसलिए उन्होंने निर्देश बड़ी मेहनत और सावधानी से पढ़े।

अन्ततः मे की किसी ऐसी चीज़ में रुचि जगी है जो हम स्कूल में कर रहे हों। उसने एडवर्ड की थोड़ी-बहुत मदद से एक बॉक्स करघा बनाया और अब एक छोटी कितबिया के लिए बुनाई कर रही है। शेष लड़कियाँ तो तब से ही रुचि लेने लगीं थीं जब हमने कपड़े जाँचने शुरू किए थे।

शुक्रवार, 17 फरवरी

फिर दो हफ्ते गुज़र गए हैं। बच्चे बुनने में व्यस्त रहे हैं और जैसे ही दूसरे काम खत्म होते हैं, वे फौरन उस की तरफ लौट आते हैं। इस सारे समय मैं यह सोचती रही हूँ कि अब आगे क्या करना है। बच्चों की ओर से कोई संकेत नहीं मिल पाया है; वे तो कपड़े बुनने में ही मगन और सन्तुष्ट हैं। इस दौरान मैं कपड़ों के बारे में लगातार इतना पढ़ती रही हूँ कि ऊब चुकी हूँ। अध्ययन के इस पक्ष पर लगभग सात सप्ताह लग चुके हैं। यह समय काफी लम्बा लगता है। पर हम इस पर फैसला कैसे लें? जैसे-जैसे अध्ययन आगे बढ़ेगा, उसके ऐसे नतीजे भी सामने आ सकते हैं जिनको मैंने अपनी सूची में शामिल नहीं किया है। ये नतीजे शायद ऐसे हों जो अब तक ज़ाहिर नहीं हुए हैं पर जो शायद बच्चों को वह सब समझने में मदद करें जो हम भविष्य में करेंगे। मेरा ख्याल है कि यही इस बात की असली जाँच होगी कि हमने अब तक जो समय लगाया है वह सार्थक था या नहीं।

इस दौरान हमने कोई औपचारिक चर्चा नहीं की है। हमने हरेक पीरियड में केवल काम ही किया है। हमें जब कुछ जानना होता तो हम रुकते, जानकारी लेते और आगे बढ़ जाते। यह तकनीक अब तक सही लगती रही है, पर मुझे

लगातार इसका मूल्यांकन करना होगा। बच्चों ने कुछ ऐसे सवाल उठाए जिनसे अध्ययन आगे बढ़ा। जब बच्चों का उत्साह चढ़ाव पर दिखा तब मैंने अगले कदम सुझाए। यह तकनीक और इससे मिले अवसर बच्चों के लिए और मेरे लिए भी नए हैं। सम्भव है कि भविष्य में वे ही ज़्यादा सवाल उठाएँ। जैसे-जैसे काम बढ़ता है मुझे अन्य चीज़ों के अलावा इस पर खास नज़र रखनी होगी।

अगले कदम क्या हों? उदाहरण के लिए, विभिन्न प्रकार के तन्तुओं से कपड़ा बनाने की प्रक्रिया के अध्ययन से हम ऊन की प्रकृति, उसकी देखभाल, उससे ऊनी कपड़ा बनाने की प्रक्रिया, क्या वह गर्मी की चालक है, क्या उसे आसानी से धोया, साफ किया जा सकता है, क्या वह महँगी होती है आदि के बारे में काफी कुछ जान चुके हैं। मुझे लगता है कि इस प्रकार के अध्ययन से हम बालक-बालिकाओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी तथा उनकी वित्तीय व सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते हैं।

शायद वह समय आ चुका है जब मुझे कपड़े बुनने में बच्चों की इस रुचि को कपड़ा निर्माण की प्रक्रियाओं के गहन अध्ययन की ओर मोड़ना चाहिए। अध्ययन के प्रारम्भ में मैंने जो गलती की थी – यानी शुरू में ही विषय-वस्तु की रूप-रेखा खींच देना – उससे बचने के लिए शायद मुझे कुछ कच्ची ऊन स्कूल ले जानी चाहिए और बच्चों को उसे धोने को कहना चाहिए। बच्चों ने पड़ोस के पशुपालक की भेड़ों की ऊन उतरते देखी है। वे जानते हैं कि ऊन कहाँ से आती है। हम ऊन से शुरुआत इसलिए करेंगे क्योंकि उसे कातना आसान है और कपास से कहीं ज़्यादा आसानी से उससे काम किया जा सकता है।

मुझे लगता है कि बच्चों को ऐसा उत्तेजक अनुभव देना अच्छी शुरुआत होगी और मैं तब तक इस तरीके को काम में लेती रहूँगी जब तक मैं इसे सिद्ध न कर दूँ या इसे छोड़ने का कोई ठोस कारण न उभरे। ऐसे अनुभवों को आँख मूँदकर नहीं चुना जा सकता। अनुभव ऐसा होना चाहिए जो विकास और अन्य अनुभवों की सम्भावनाएँ खोलता हो, जिससे जिज्ञासा जगती हो और ऐसे मज़बूत उद्देश्य उभरते हों जो बच्चों को सीखने के लिए उकसाएँ।

जब तक यह अध्ययन चल रहा है मुझे कुछ सवाल खुद से पूछने चाहिए। क्या बच्चों की वास्तव में गहरी रुचि है? क्या वे समझ रहे हैं? क्या वे सोचने के आधार के रूप में सही और विविध तथ्यों को काम में ले रहे हैं? क्या वे एक-

दूसरे के साथ जीना सीख रहे हैं? जो कुछ वे सीख रहे हैं उस बारे में क्या वे खुद कुछ निर्णय ले सकते हैं, फिर चाहे वह निर्णय कितना भी छोटा क्यों न हो? जिस दुनिया में वे जीते हैं, क्या उसके बारे में उनकी समझ कुछ बढ़ रही है?

मंगलवार, 21 फरवरी

मैं औद्योगिक कला सहकारी सेवा द्वारा भेजी गई कुछ अनधुली ऊन स्कूल ले गई और बच्चों से पूछा कि क्या वे उससे कपड़े का एक टुकड़ा बुनना चाहेंगे। तुरन्त सवाल दागा गया, "यह भला हम कैसे करेंगे?" क्योंकि ऊन बहुत ज़्यादा नहीं थी, मैंने सुझाया कि लड़कियाँ उसे धो डालें। उन्होंने समूह बना पहले तो पढ़कर यह जाना कि धुलाई कैसे की जाए। लड़कों को मैंने ऊन धुनकने का यंत्र दिखाया जो मुझे अपने घर की अटारी में मिला था। जॉर्ज और एडवर्ड ने वैसी ही दो और धुनकियाँ बना डालने की पेशकश की ताकि अधिक बच्चे ऊन धुन सकें। उन्होंने औज़ार निकाले और काम करने हॉल में चले गए। शेष लड़कों को मैंने तीन तकलियाँ दिखाईं, जिनमें वज़न लटका था। ये मैंने सहकारी स्टोर से खरीदी थीं। मैंने उन्हें सिखाया कि उससे सूत कैसे काता जाता है। यह काम मुझे मेरी माँ ने सिखाया था। इस सब में बड़ा मज़ा आया।

गुरुवार, 23 फरवरी

छुट्टी से पहले हम जो कुछ कर रहे थे उसी के उत्साह में वापस लौटने के प्रयास में प्रत्येक समूह ने शेष समूहों को बताया कि मंगलवार को वे क्या कर रहे थे। सोफिया ने हमें साफ कच्ची ऊन का एक टुकड़ा दिखाया और बताया कि उसे उलझने से बचाने के लिए क्या सावधानियाँ उन्होंने बरती थीं। जॉर्ज और एडवर्ड ने धुनकी का उपयोग समझाया और उनके द्वारा बनाई गई धुनकियाँ दिखाईं। एल्बर्ट ने तकली से कताई की विधा का प्रदर्शन किया। बचा हुआ समय हमने ऊन को धुनने और उससे सूत कातने में बिताया। मैंने सुझाव दिया कि ऊन से बने एक छोटे से टुकड़े को बनाने के लिए सूत कातने और बुनने में जितना समय हमें लगे, उसको हम दर्ज कर लें। उम्मीद है कि हम इससे कुछ महत्वपूर्ण सामान्यीकरणों तक पहुँच सकेंगे।

बच्चों में कुछ ऐसी रुचि जगी कि वे दिन भर, अपना दूसरा काम खत्म होते ही, तकलियों से धागा कातने के लिए लौटते रहे। हर बार वे ब्लैकबोर्ड पर उतने

मिनट दर्ज करते जितने मिनट उन्होंने काम किया होता। स्कूल खत्म होने से पहले ही उन्होंने सारी ऊन खत्म कर डाली थी।

शुक्रवार, 24 फरवरी

रूथ के पास एक धातु का बना छोटा करघा है जिसकी चौड़ाई और लम्बाई घटाई-बढ़ाई जा सकती है। समूह ने सुझाया कि हम ऊन से एक टुकड़ा बुनने के लिए इसी करघे का उपयोग करें। रूथ अपने करघे को चलाना जानती थी, सो उसने ताने के धागे डाले और शेष बच्चों को बताया कि बाना कैसे बुना जाए। बच्चों के रिकॉर्ड के अनुसार सत्ताइस गज़ ऊन के धागे को कातने में और उससे पाँच इंच लम्बे व पाँच इंच चौड़े दो छोटे टुकड़े बुनने में उन्हें पूरे चार घण्टे लगे थे। कपड़ा अनगढ़-सा था, कहीं मोटा तो कहीं पतला। समान मोटाई का सूत कातने में अभ्यास की ज़रूरत होती है। बच्चों की टिप्पणियाँ ठीक वैसी थीं जैसी मैंने उम्मीद की थी। "हाथ से बुनना कठिन है और इसमें काफी समय लगता है।" "हमें तो मज़ा आया, पर अगर पूरे परिवार के लिए कपड़े बनाने हों तो जान ही निकल जाए।" "एक पूरी ड्रेस या सूट इस तरह बनाना हो तो बहुत समय लगेगा। औपनिवेशिक काल के लोगों को भी क्या कातने-बुनने में इतना ही समय लगता होगा?" जॉर्ज को एक छोटे चरखे का चित्र मिला और उसने तय किया कि वह भी एक चरखा बनाने की कोशिश करेगा।

मंगलवार, 28 फरवरी

मिस मोरान ने हमें रेयॉन बनाने की समूची प्रक्रिया की एक प्रदर्शनी भेजी। बच्चों ने उसे बड़ी रुचि से देखा। मार्था ने पूछा, "हम ऊनी कपड़ा बनाने की प्रक्रिया को ठीक ऐसे ही क्यों नहीं दर्शा सकते?" रूथ ने सुझाया कि हम इस प्रदर्शन के लिए अपने "हाथों से बुने" टुकड़ों में से एक को रंग डालें। हमने कुछ समय तक अपने संग्रहालय के लिए प्रदर्शनी बनाने पर बात की। बच्चों ने सुझाया कि हम इसमें अनधुली कच्ची ऊन, धुली और धुनी हुई ऊन, ऊन और हाथकता धागा, हाथबुना कपड़ा और रँगा हुआ कपड़ा लगाएँ और सबके नीचे यह लिखें कि वह क्या है। मैंने सलाह दी कि हम अपने टुकड़े को रँगने से पहले घर में बने रंगों से कुछ प्रयोग कर लें।

बुधवार, 1 मार्च

हमने औद्योगिक कला सहकारी सेवा के बुलेटिन में देसी रंगों सम्बन्धी जानकारी पढ़ी। बुलेटिन में लिखा था कि विभिन्न चीज़ों, जैसे एसेटिक एसिड, सोडा, फिटकरी, आयरन सल्फेट आदि का उपयोग कर सूती, ऊनी, लिनेन, रेशम आदि कपड़ों को रँगकर इसे चार्ट में दर्शाया जा सकता है।

हमने अपनी कॉपियों के लिए ऐसे कई चार्ट बनाए और हरेक के सामने एक चौकोर स्थान छोड़ दिया ताकि उसमें रँगे हुए नमूने लगा सकें। कल बच्चे मेपिल, सफेद व लाल बलूत, जंगली चेरी, सैसाफ्रेस तथा अखरोट के पेड़ों की छालें और प्याज़ के छिलके लाएँगे। जॉर्ज, एडवर्ड और थॉमस ने आज अपना छोटा चरखा तैयार किया और उससे ऊन कातने की कोशिश की। चरखा ठीक से चल नहीं पाया और हमें तो लगा कि तकली से सूत कातने में भी इतना ही समय लगता है, पर लड़के इस मशक्कत से कताई की प्रक्रिया को अधिक अच्छी तरह समझ पाए।

गुरुवार, 16 मार्च

पिछले सप्ताह हम रँगाई के प्रयोग करते रहे। रँगे चौकोर टुकड़े जब सूख गए तो बच्चों ने अपनी-अपनी कॉपियों में उन्हें चिपका लिया। रँगाई प्रक्रिया और अपने प्रयोगों के नतीजे वे दर्ज करते रहे हैं। मे और डॉरिस की रुचि काफी है पर हमारी मुख्य रंगरेज़ पर्ल है। वह और एलिस घर पर अपने आप भी कुछ प्रयोग करती रही हैं।

सामाजिक अध्ययन की अधिकांश कक्षाओं में हम मौजूदा घटनाओं पर चर्चाएँ करते रहे हैं। जब किसी घटना की पृष्ठभूमि को समझने के लिए विगत परिस्थितियों को जानने की ज़रूरत होती है तो बच्चे अपनी इतिहास और भूगोल की किताबों को सन्दर्भ पुस्तकों के रूप में पढ़ते हैं। इन घटनाओं की जानकारी उन्हें *करेन्ट इवेन्ट्स* तथा *वीकली रीडर* नामक पत्रिकाओं से भी मिलती है। उनकी कॉपियों में ताज़ा घटनाओं वाला भाग सबसे बड़ा है। दीवार पर टँगे दुनिया के नक्शे पर वे उन स्थानों को दर्ज करते हैं जिनके बारे में उन्होंने पढ़ा हो।

आज सुबह रूथ ने मुझसे कहा, "आपका नया स्वैटर बड़ा अच्छा है, मिस वेबर। क्या यह अंगोरा ऊन का है?" मेरा जवाब था, "नहीं, यह एल्पाका है।" "एल्पाका क्या होता है?" रूथ ने जानना चाहा। मेरे बताने पर रूथ बोली, "मुझे नहीं पता था कि भेड़ और बकरियों के अलावा दूसरे पशुओं से भी ऊन मिलता है।"

सामाजिक अध्ययन की कक्षा में मैंने समूह को सुबह की बातचीत के बारे में बताया। मैंने बच्चों को अपने स्वैटर का लेबल दिखाया। वे भी अपने कोट और स्वैटर कक्षा में ले आए और जानने की कोशिश करने लगे कि उन पर लगे लेबलों से ऊन के अन्य स्रोतों का पता चल सकता है या नहीं। बच्चों को अपने लेबलों में "ऊन," "वर्स्टेड" और एक पर "उपभोक्ता संघ" लिखा मिला।

जब यह सब चल रहा था, रूथ को एक किताब मिल गई जिस में लिखा था कि ऊन याक, लामा, ऊँट, एल्पाका, भेड़ और बकरी से पाई जाती है। "अरे हाँ, ऊँट," वह बोली, "मुझे पता होना चाहिए था। मेरी बहन के पास एक कोट है जो ऊँट के बालों से बना है।" एण्ड्रयू ने सुझाया कि अच्छा हो अगर हम दुनिया के एक बड़े नक्शे पर उन पशुओं के चित्र लगाएँ जिनसे ऊन मिलती है। उसी साँस में वह बोला, "यह मैं करूँगा।" यह विचार उसे न्यू जर्सी के उद्योगों के एक सचित्र नक्शे को देखकर आया था। यह नक्शा बच्चों को खूब पसन्द है।

कक्षा खत्म होने से पहले मैंने बच्चों को याद दिलाया कि उन्होंने आज कई प्रश्न उठाए हैं जिन्हें हमें भूलना नहीं है। वर्स्टेड व ऊनी कपड़े में क्या अन्तर है? उपभोक्ता संघ के लेबल का क्या मतलब है? ऊन किन-किन पशुओं से मिलती है? हमने इन सवालों को एक चार्ट पर लिख लिया ताकि बाद में उनके बारे में अध्ययन किया जा सके।

शुक्रवार, 17 मार्च

हम समूह में रँगाई के साथ जिस हद तक प्रयोग करना चाहते थे कर चुके हैं। फिटकरी के साथ प्याज़ का मिश्रण एक खूबसूरत पीले रंग में तब्दील हो गया, जो ऊन के लिए सबसे बढ़िया था। सो हमने हाथ से बुने एक ऊनी टुकड़े को इसी में रँगा। पर्ल को यह सम्मान दिया गया। प्रयोगों के मटमैले नतीजों को देख वॉरेन ने टिप्पणी की, "तभी तो हमारे देश के शुरुआती बाशिन्दे इतने बदरंग-से कपड़े पहना करते थे।"

सोमवार, 20 मार्च

लेबलों को पढ़ने के प्रति रुचि बनी हुई है। आज सुबह एक व्यक्ति ने विलियम और हेनरी को स्कूल तक छोड़ा। इन दोनों ने अनुरोध किया कि क्या वे उसके कोट का लेबल देख सकते हैं। उसका कोट लामा ऊन से बना था। उस व्यक्ति ने बताया कि उसका कोटा महँगा है। जब स्कूल आए तो दोनों बड़े उत्साह से यह किस्सा सुनाने लगे। हेनरी ने जानना चाहा, "कुछ ऊनी कपड़े दूसरे ऊनी कपड़ों की तुलना में इतने महँगे क्यों होते हैं?" हमने गुरुवार को प्रश्नों का जो चार्ट बनाया था उसमें यह सवाल भी जोड़ दिया।

एण्ड्रयू ऊन के स्रोतों वाले दुनिया के नक्शे पर काम करना चाहता था। बच्चों को लगा कि इससे पहले "कौन-कौन से पशुओं से ऊन मिलती है?" प्रश्न के उत्तर पर शोध करना चाहिए। जब एण्ड्रयू बड़े कागज़ पर दुनिया के नक्शे की रेखाएँ बनाने लगा, तब शेष बच्चे अपनी भूगोल की किताबों व अन्य सन्दर्भ पुस्तकों की ओर मुड़े। मैंने सुझाया कि जब वे पढ़ ही रहे हैं तो वे हमारे दूसरे सवालों के जवाब भी ढूँढें। जानकारी मिलने पर वे इनके सन्दर्भों की सूचना ग्रन्थसूची कार्डों पर दर्ज कर लें, और उन्हें कार्डों की फाइल में रख दें, जैसा हम पहले भी कर चुके हैं। बच्चे काम में लग गए और मैंने टिप्पणियाँ बनाने में उनकी मदद की। सन्दर्भ पुस्तकें चुनने तथा विषयसूची का उपयोग करने में मैंने छोटे बच्चों की मदद की।

मंगलवार, 21 मार्च

बच्चों ने जो सूचनाएँ एकत्रित की थीं हमने उस पर चर्चा शुरू की। वे ऊन वाले पशुओं की सूची बना चुके थे। सो हमने इस विषय पर बातचीत की कि ये पशु अपने-अपने क्षेत्र में कैसे जीते हैं। उन्होंने एण्ड्रयू के लिए इन जानवरों के अच्छे चित्र चुने थे और उसे यह भी बताया कि वे नक्शे में कहाँ पर बनाए जाएँ।

डॉरिस को पता चला कि भेड़ें कई प्रकार की होती हैं। उसकी टिप्पणी थी, "इसीलिए शायद उनकी कीमतें भी अलग-अलग होती हैं।" वॉरेन ने जोड़ा, "भेड़ों की देखभाल भी तो काफी करनी पड़ती है ताकि उनकी ऊन बिलकुल साफ रहे। इसका भी तो कीमतों पर असर पड़ता है।" जल्दी ही हमें एक रूपरेखा दिखाई देने लगी।

ऊनी कपड़ों की कीमतें नीचे दर्ज की गई बातों पर निर्भर करती हैं:

1. भेड़, बकरी या दूसरे ऊन वाले पशुओं की नस्ल।
2. पशुओं की देखभाल।
3. जिस प्रक्रिया से ऊनी कपड़ा बनाया जाता है।
4. मज़दूरी।

अब हमारा अध्ययन और चर्चाएँ अधिक केन्द्रित हो सकेंगी। यह एक नई तरह की तकनीक है। हमने तय किया कि हम इस रूपरेखा के पहले प्रश्न पर कल विचार-विमर्श करेंगे।

बुधवार, 22 मार्च

हमने इस प्रश्न पर चर्चा शुरू की, "जिस प्रकार के पशु से ऊन प्राप्त हुई हो, उसका कीमत पर कैसे असर पड़ता है?" हम इस सवाल पर बात कर ही रहे थे कि सोफिया ने हमें ऊनी और वर्स्टेड कपड़े का अन्तर बताया। यह अन्तर बच्चों के कपड़े में साफ नज़र आ रहा था। चर्चा उतनी सहज नहीं थी जितनी होनी चाहिए थी। मुझे लगता है कि बच्चों को फिर से चर्चा करने के अपने तरीकों को जाँचना होगा।

गुरुवार, 23 मार्च

हमने कल की चर्चा पर विचार किया और बच्चों ने निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखने के वास्ते सूचीबद्ध किया:

1. बातचीत को विषय-वस्तु पर ही केन्द्रित रखा जाए।
2. सबकी बात ध्यान से सुनी जाए ताकि हम उन सवालों को वापस न दोहराएँ जिनके जवाब मिल चुके हैं।
3. पूरे समूह को सम्बोधित किया जाए।
4. सूचना इस रूप में हो जिसे आसानी से बाँटा जा सके।
5. एक समय पर एक ही बच्चा बोले। दूसरे धीरज से अपनी बारी का इन्तज़ार करें।
6. किसी को सुधार करवाना हो या कोई सुझाव देना हो तो वह शिष्टता से बोले।

मंगलवार, 28 मार्च

"ऊनी कपड़ा बनाने की प्रक्रिया का उसकी कीमत पर कैसे असर पड़ता है?" इस प्रश्न के बारे में बच्चों को कुछ रोचक तथ्य मिले। थॉमस को पता चला कि मशीनों से वस्तुओं की कीमत काफी कम हो जाती है। उसने बताया कि सन् 1700 में जब कपड़ा बुनने की मशीन काम में ली जाने लगी तो कीमत 50 सेंट प्रति गज़ से 9 सेंट प्रति गज़ हो गई। इस पर सोफिया ने जानना चाहा कि "ये मशीनें आखिर किस तरह ईजाद की गईं?" हमने इस सवाल को अपनी सूची में जोड़ लिया।

शुक्रवार, 31 मार्च

चर्चाओं की वजह से सूचनाओं को कॉपियों में लिखने का काम काफी पिछड़ गया था, सो हमने पिछले तीन दिनों के सामाजिक अध्ययन और अँग्रेज़ी की कक्षाओं का उपयोग एकत्रित सामग्री को व्यवस्थित करने और उसे अपनी कॉपियों में लिखने में किया। हमने शब्दावली की सूची को देखने में भी समय लगाया ताकि हरेक बच्चा सूची में लिखे सभी शब्दों का मतलब समझे। कुछ शब्दों के हिज्जे भी बच्चों ने सीखे।

सोमवार, 3 अप्रैल

बच्चों ने उन कपड़ा मशीनों के बारे में पढ़ा जिनके कारण ऊनी वस्त्र इतना सस्ता हो गया था, और यह भी कि उनका आविष्कार कैसे हुआ। उन्होंने स्पिनिंग जैनी (spinning jenny) नाम की कताई मशीन, आर्कराइट द्वारा बनाई कताई मशीन और कार्टराइट की बुनाई मशीन के बारे में पढ़ा। मैं सबके पास जाकर मदद कर रही थी कि वे एक-एक कर सवाल पूछने लगे। ये सारी मशीनें इंग्लैण्ड में ही क्यों बनीं? लोग इन आविष्कारों से इतनी घृणा क्यों करते थे? आर्कराइट को "औद्योगिक युग का जनक" क्यों कहा जाता था? उन दिनों के कारखाने कैसे होते थे? उन आरम्भिक कारखानों में औरतें और बच्चे क्यों काम करते थे? आज भी कारखानों की स्थिति क्या ऐसी ही है? ये सभी सवाल हमने अपनी सूची में जोड़ लिए।

बुधवार, 5 अप्रैल

कल भी हम आगे पढ़ते और अध्ययन करते रहे। हमें सामग्री तो खूब मिल रही

है, पर इसमें से ज़्यादातर ऐसी है जिसे बच्चे समझ नहीं पा रहे हैं। मैंने उनकी मदद की ताकि वे केवल उन सामग्रियों का ही उपयोग करें जिसे समझने की क्षमता उनमें हो और जिस पर वे अपने शब्दों में बातचीत कर सकें। आज हमने अपने सवालों के जवाब ढूँढने की कोशिश प्रारम्भ की। हेनरी, विलियम और एल्बर्ट ने कताई मशीन तथा आर्कराइट व कार्टराइट के आविष्कारों की कहानियाँ सुनाईं।

मे ने समूह को बताया कि इंग्लैण्ड में व्यवस्था बन चुकी थी, इसलिए इन आविष्कारों का वहीं होना स्वाभाविक था। इंग्लैण्ड में लोगों के समूह कताई और बुनाई के लिए संगठित हो चुके थे। वहाँ श्रम विभाजन था। हमने विस्तार से श्रम विभाजन के फायदे और नुकसानों की बात की और मैंने पाया कि बच्चे इस बात को सच में समझ रहे थे। क्रिसमस के समय हमने ब्लैक फॉरेस्ट के घड़ीसाज़ के बारे में पढ़ा था। डॉरिस ने आज टिप्पणी की, "आज के बड़े घड़ी कारखानों में काम करने वाले को उतना सन्तोष नहीं मिलता जितना ब्लैक फॉरेस्ट के उस घड़ीसाज़ को मिलता था।" "नहीं," वॉरेन ने सोचते हुए कहा, "पर मुझे लगता है कि एक विशाल कारखाने का हिस्सा बनना भी उत्तेजक होता होगा।" थॉमस बोला, "मैं एक कपड़ा मिल देखने जाना चाहूँगा। मैं एक बहुत बड़ी बुनाई मशीन देखना चाहता हूँ। वे बड़ी तेज़ी से काम करती होंगी।"

अँग्रेज़ी के पीरियड में थॉमस ने पासाइक चेम्बर ऑफ कॉमर्स (Passaic Chamber of Commerce) को पत्र लिखकर कपड़ा मिल का भ्रमण करने के बारे में पूछा।

गुरुवार, 6 अप्रैल

मार्था ने समूह को बताया कि लोग कपड़ा बुनने वाली मशीनों को इसलिए तोड़ देते थे क्योंकि उन्हें डर था कि उनके काम छिन जाएँगे। उत्पादकों को भी ये आविष्कार पसन्द नहीं आए क्योंकि इसका मतलब था कि उन्हें नई मशीनों की खरीदी करने पर और अपने कारखानों को आधुनिक बनाने पर बाध्य होना पड़ेगा। "आधुनिक मशीनों का आविष्कार आज भी बेरोज़गारी का एक महत्वपूर्ण कारण है, कि नहीं?" रूथ ने जानना चाहा। "क्या हमारे कस्बे के कई लोगों को कस्बा छोड़कर जाना नहीं पड़ा था, क्योंकि फसल काटने, अनाज निकालने और पूले बाँधने की मशीनों का आविष्कार होने से पश्चिम में अनाज की फसल लेना अधिक लाभदायक बन गया था?" वॉरेन ने अगली कड़ी

जोड़ते हुए कहा, "और क्या रेलगाड़ी आने का भी इससे रिश्ता नहीं था?" "हमने कुछ ही समय पहले *करेन्ट इवेन्ट्स* में पढ़ा था कि दक्षिण के लोग कपास चुनने वाली मशीनों का विरोध कर रहे हैं क्योंकि इससे लाखों लोग बेरोज़गार हो जाएँगे," थॉमस ने हमें याद दिलाया। हमारे प्रयास से बच्चों को वह दुनिया समझ आने लगी है जिसमें वे जी रहे हैं!

मेरी ने प्रारम्भिक कारखानों के बारे में बताया। उसने कहा कि आर्कराइट ने अच्छे कारखाने लगाए, जिनमें स्वास्थ्य सम्बन्धी सावधानियाँ और बेहतर कार्य स्थितियाँ थीं। उस समय के लिए वे उचित थीं। पर बाद में कारखानों में बच्चों को लगाया जाने लगा क्योंकि मिल मालिकों को यह पता चला कि बच्चे भी इन मशीनों को चला सकते हैं और उन्हें नहीं के बराबर मज़दूरी देनी पड़ती है। औरतों और बच्चों को पुरुषों से कम मज़दूरी देनी पड़ती थी। काम के अधिक घण्टे, कम मज़दूरी और अस्वास्थ्यकर कार्य स्थितियाँ इन कारखानों की विशेषताएँ बन गईं। इनसे बने कपड़े घरों में बने कपड़ों की तुलना में काफी सस्ते थे। कारखानों में मशीनों के कारण उत्पादन बढ़ गया और इससे भी कपड़े की कीमतों में गिरावट आई।

मंगलवार, 11 अप्रैल

हम इस सवाल का जवाब तलाश रहे हैं कि "क्या ये स्थितियाँ आज भी मौजूद हैं?" पर्ल अखबारों में छपी कुछ तस्वीरें लाई जिनमें कारखानों में काम करने के कारण विकलांग हुए बच्चे और दक्षिण में कपास चुनते बच्चे दर्शाए गए थे। समूह उन समस्याओं में बड़ी रुचि रखता है जो कारखानों के कारण मज़दूरों को झेलनी पड़ रही हैं। हमने उन कानूनों को पढ़ा जो महिला और पुरुष कामगारों की स्थितियाँ सुधारने और बाल श्रम समाप्त करने के लिए बनाए गए हैं, और उन प्रयासों के बारे में जो इस दिशा में किए गए हैं। हमने यह चर्चा भी की कि न्यू जर्सी राज्य बाल श्रम के बारे में क्या कर रहा है। हमने उपभोक्ता सहकारी समितियों, महिला संघों व ऐसी ही दूसरी संस्थाओं पर चर्चा की जो उन स्थितियों को सुधारने के प्रयास कर रही हैं जिनमें उत्पादन होता है। वॉरेन कुछ उपभोक्ता पत्रिकाएँ लाया और आज दोपहर सोफिया ने हमारा परिचय एक रेडियो प्रसारण "उपभोक्ता क्विज़" से करवाया जो उसने खोज निकाला था। हमारी शाला में इसी महीने बिजली आई है और जो पहला काम हमने किया वह था एक छोटे

रेडियो की खरीददारी।

जब हम बाल श्रम पर बातचीत कर रहे थे, मे ने एक पुरानी किताब से पढ़कर सुनाया कि एक बाल श्रम कानून संविधान का बीसवाँ संशोधन बनना था। उसने कहा कि वह अब बीसवाँ संशोधन बन गया होगा। रूथ ने संविधान संशोधनों को देखा तो पाया कि बीसवें संशोधन का बाल श्रम से कोई लेना-देना ही नहीं था। वह संशोधन पारित ही नहीं हुआ था।

थॉमस ने आज हमें बताया कि सामग्री और कपड़ों की कीमतों में कुछ वृद्धि इसलिए भी होती है क्योंकि अब कपड़ा मिलों के मज़दूरों को कुछ बेहतर भुगतान होता है और शोषण करने वाले कारखाने कम हो गए हैं। मैंने बच्चों को बताया कि लेबलों पर ध्यान देकर हम मज़दूरों की बेहतर कार्य स्थितियों के मुद्दे में मदद करते हैं और बदले में हमें बेहतर उत्पाद भी मिलते हैं।

बुधवार, 12 अप्रैल

4-एच सिलाई क्लब की बड़ी लड़कियाँ कपड़ों की देखभाल का अध्ययन कर रही हैं। पिछली बैठक में हमने सर्दियों के कपड़ों को सहेजकर रखने पर विचार शुरू किया था। मुझे लगा कि हमारे काम का यह हिस्सा तो पूरे स्कूल में किया जाना चाहिए। आज हमने इस पर बातचीत की और मैंने सुझाया कि अच्छा हो अगर हम स्वैटर को धोना सीखें यानी ऐसी ऊन को जिसे गीला किया जा सकता है; और जैकेट की सफाई करना सीखें यानी ऐसी ऊन की सफाई जो धोने से खराब हो जाती है। "हम ऊन के बारे में क्या जानते हैं जिससे हमें ऊनी कपड़ों की सफाई में मदद मिले?" मैंने पूछा। बच्चों ने ऊन की विशेषताएँ बताईं, जिन्हें मैंने बोर्ड पर लिख डाला। हमने माइक्रोस्कोप के नीचे देखा था कि ऊन के तन्तु एक-दूसरे से गुँथे होते हैं और उनमें से बाहर की ओर रेशे-से निकले होते हैं। अगर सावधानी न बरती जाए तो धुलने पर तन्तु सिकुड़ते हैं और आपस में गड्ड-मड्ड चटाई जैसे बन जाते हैं। ऊन सूत से कमज़ोर होती है। गरम पानी से धोने और रगड़ने पर ऊनी धागे कमज़ोर पड़ टूट जाते हैं। ऊन को रँगना आसान होता है। अगर वह बदरंग हो जाए तो उसे फिर से रँगा जा सकता है। गर्मी और तापमान में अचानक बदलाव का ऊन पर असर पड़ता है। ऊन गर्मी का अच्छा चालक नहीं होती, इसलिए वह सर्दियों में बड़ी मूल्यवान होती है। गर्मियों के लिए यह सही नहीं रहती क्योंकि इसमें पसीने और शरीर की गन्ध

बस जाती है। सर्दियों में भी ऊनी फ्रॉकों में अस्तर लगाना सही रहता है। ऊन काफी नमी सोखती है, इससे उसे सूखने में ज़्यादा समय लगता है। बच्चों ने ये सभी बातें अपने अनुभवों के आधार पर बताईं, रटकर या पढ़कर नहीं। बच्चों ने ऊन की इन विशेषताओं को अपनी कॉपियों में दर्ज कर लिया। डॉरिस को लगा कि हमें दूसरे कपड़ों की विशेषताओं को भी अपनी कॉपियों में दर्ज कर लेना चाहिए।

गुरुवार, 13 अप्रैल

मेरी ने न्यू ब्रुन्सविक में स्थित न्यू जर्सी कृषि महाविद्यालय की कृषि विस्तार सेवा की "कपड़ों की देखभाल" शीर्षक वाली पुस्तिका में छपे निर्देशों के हिसाब से अपना स्वैटर धोया। उसने हल्के साबुन का घोल बनाने का प्रदर्शन किया, स्वैटर कैसे धोया और सुखाया जाए यह भी दिखाया। बच्चों ने इन निर्देशों को अपनी कॉपियों में दर्ज कर लिया।

शुक्रवार, 14 अप्रैल

मैंने "कपड़ों की देखभाल" में दिए गए निर्देशों के हिसाब से घोल बनाया और विलियम की जैकेट साफ की। मैंने ऊनी कपड़ों पर इस्त्री करना भी दिखाया। बच्चों ने इन निर्देशों को भी दर्ज कर लिया। डॉरिस और मे ने बचे हुए घोल को घर ले जाने की अनुमति माँगी, ताकि वे अपने कुछ ऊनी कपड़े धो सकें। आज यह जवाब आया है कि बच्चों को पासाइक स्थित कारखानों में जाने की अनुमति नहीं है।

रविवार, 22 अप्रैल

पिछले सप्ताह हमने कपड़ों के अध्ययन को छोड़ा और गुरुवार तथा कल रात को हुए कठपुतली प्रदर्शन की तैयारी में जुट गए। वही प्रदर्शन आज रात फिर से होना है। पूरे साल लोग पूछते रहे हैं कि हम इस साल भी कठपुतली प्रदर्शन करेंगे या नहीं। हमने समय रहते प्रदर्शन का खूब प्रचार-प्रसार किया ताकि वे सब लोग आ सकें जो उसे देखना चाहते थे। गुरुवार रात हमारी नन्ही शाला में इतने लोग आ गए कि कई पुरुषों को जिन्होंने टिकट के पैसे भी दिए थे बाहर खड़े हो खिड़कियों से झाँककर नाटक देखना पड़ा। दरअसल हमने उन्हें कहा था कि वे बाद की दोनों में से किसी एक रात नाटक देख सकते हैं। लोग पन्द्रह

मील दूर स्थित दूसरी काउंटी से, बाइस मील दूर स्थित काउंटी मुख्यालय से, पैनसिल्वेनिया और न्यू यॉर्क तक से आए थे। आज नेवार्क से एक समूह आने वाला है।

बच्चे बेहद खुश हैं, पर उन्होंने आपा नहीं खोया है। नाटक के बाद बच्चों ने मेहमानों से उन लोगों की तरह बात की जिन्हें यह भरोसा हो कि उन्होंने अपना काम बखूबी किया है। उन्होंने जो नाटिकाएँ प्रस्तुत कीं वे *निकोडेमस, फार्डिनेंड, द चाईनीज़ नाइटिंगेल* (चीनी बुलबुल) और *विनी द पूह* की कहानियों का नाट्य रूपान्तर थीं। ये मौलिक प्रस्तुतियाँ थीं। बच्चों ने हर बार कुछ परिवर्तन किया और अपनी प्रस्तुतियों में कुछ नया जोड़ा।

इन नाटकों ने इन शर्मीले बच्चों के लिए जो किया वह हमारी किसी भी दूसरी गतिविधि की तुलना में कहीं अधिक है। उनकी विवेकशीलता और चतुर प्रबन्धन में भारी इज़ाफा हुआ है। नाटकों के दौरान सभागार के पिछले हिस्से में बैठ मैं न केवल उनकी प्रस्तुतियों का आनन्द ले पाई हूँ, बल्कि दर्शकों कि प्रतिक्रियाओं का मज़ा भी ले सकी हूँ। मैं समझ रही हूँ कि इस माध्यम में कितनी सम्भावनाएँ हैं। बच्चे पर्दे के पीछे चुपचाप व्यवस्थित रूप से अपना-अपना काम करते हैं। उनका आपसी सहकार इतना सघन है कि ज़रूरत पड़ने पर वे किसी दूसरे साथी का काम भी पूरी सहजता से कर सकते हैं। यहाँ सामाजिक नियंत्रण पूरे समूह में निहित होता है जो एक ऐसे साझे काम में जुटा होता है जिसमें सबको योगदान का मौका मिले और जिसके प्रति सबमें ज़िम्मेदारी की भावना हो।

ऐसे सहकार का विकास महज़ इत्तफाक नहीं है बल्कि सचेत योजना का नतीजा है। मैंने ऐसी परिस्थितियाँ बनाने की कोशिश की है जहाँ बच्चे किसी एक नेता का अन्धानुकरण नहीं करते बल्कि सामने आ रही समस्याओं को सुलझाने में विवेक का उपयोग करते हैं। उन्हें योजना बनाने के, फैसले करने के, अपने निर्णयों के मूल्यांकन के अवसर लगातार मिलते रहे हैं। इससे हर नए मूल्यांकन के आधार पर पहले से ज़्यादा चतुराई से काम कर पाने की उनकी शक्ति में इज़ाफा हुआ है। यही तो लोकतंत्र की नींव है!

बच्चों ने विभिन्न नाटकों के बीच वे गाने भी प्रस्तुत किए जो उन्होंने क्रिसमस के बाद सीखे हैं। वे इतना सुन्दर गाते हैं कि डॉ. व श्रीमती ब्रीड ने उन्हें इतवार को अकादमी के चर्च में लड़कों के लिए गाने को निमंत्रित किया। हमने वहाँ

जो कार्यक्रम किया उसमें निम्नलिखित गीत शामिल थे:

महान संगीतकारों की रचनाएँ:

बाख – एक स्तुति गीत
बीथोवन – साँग ऑफ डे (दिवस गीत)
हेडन – इकोज़ (प्रतिध्वनियाँ)
मोत्ज़ार्ट – स्प्रिंग इज़ कमिंग (आ रहा है बसन्त)
मोत्ज़ार्ट – इन टायरोलियन हिल्स (टायरोलियन पहाड़ियों पर)

लोकगीत:

दक्षिणी अपलेचियन – द फ्रॉग वेन्ट अकोर्टिंग (मेंढक चला प्रेम करने)
अँग्रेज़ी – फ्रॉग इन द वैल (कुएँ का मेंढक)
अँग्रेज़ी – द लिटिल ओल्ड वुमन (नन्ही वृद्धा)
आयरिश – द मेडो (बाग)
रूसी – फायरफ्लाइज़् (जुगनू)
रूसी – कैनोइंग (नौका-चालन)
फिनिश – डस्क (गोधूलि वेला)
इतालवी – स्ट्रीट फेयर (गली मेला)
हंगारी – कैरावे एंड चीज़ (कलौंजी और पनीर)
डच – इन द पॉपलर्स (चिनार के जंगल में)
डच – द सिंगिंग बर्ड (गाती चिड़िया)
स्लोवाकियन – मॉर्निंग कम्स् अर्ली (जल्द आता है प्रभात)

लोहे के दुकानदार श्री एलेन, जिनसे हमने पिछले बसन्त वार्निश रंग खरीदे थे, प्रदर्शन के बाद मुझसे मिले और बोले, "आपको पता है मिस वेबर, मैं यहाँ सारी मेज़ों को देखता रहा हूँ, और मुझे उन पर एक भी निशान नहीं मिला है! यह आपने कैसे किया?"

वस्त्र उद्योग के अध्ययन के इस हिस्से ने बच्चों के लिए क्या किया इसका मूल्यांकन करने का समय आ चुका है। उनकी स्वास्थ्य सम्बन्धी कुछ आवश्यकताएँ इससे पूरी हुई हैं। उन्होंने अपने कपड़ों को ब्रश से झाड़ना सीखा है। कल रात

नाटक देखने आई श्रीमती सामेटिस ने मुझे बताया कि जब से मैंने विलियम की जैकेट स्कूल में साफ की, तब से वह उसे हर दिन झाड़ता और सावधानी से टाँगता है। बच्चों ने बुने हुए ऊनी स्वैटरों को धोना और उन पर लगे दाग-धब्बों को हटाना सीखा है। एण्ड्रयू परिवार की लड़कियाँ अपने ऊनी कपड़ों को सन्दूक में रखने से पहले साफ कर रही हैं। सभी लड़कियाँ अपनी ड्रेसों को टाँगने से पहले ढँकती हैं और सूती फ्रॉकों को पहले से ज़्यादा बार धो रही हैं।

अध्ययन उनकी कुछ आर्थिक ज़रूरतों की भी पूर्ति कर रहा है। उन्होंने यह सीखा है कि ऊनी कपड़ों को अधिक समय तक चलाने के लिए उनकी देख-रेख कैसे की जाए। उन्होंने कपड़ों में अन्तर करना सीख लिया है। इससे वे उनकी उचित देखभाल कर सकेंगे। वे कपड़ों की खरीददारी सोच-समझकर करना सीख रहे हैं। अध्ययन से उनकी सामाजिक ज़रूरतें भी पूरी हो रही हैं। कपड़ों की खरीद में उपभोक्ता जिन समस्याओं का सामना करते हैं उनको वे पहले से ज़्यादा समझने लगे हैं। सिलाई क्लब की लड़कियाँ कपड़ों के विवरण पर खास ध्यान देने लगी हैं। वे उनकी बुनाई व धागों की संख्या और धागे के ताव आदि पर विचार करती हैं। बच्चे लेबलों को ध्यान से पढ़ते हैं। इससे उन्हें कपड़े की गुणवत्ता और उन स्थितियों के बारे में पता चलता है जिनके तहत वह बनाया गया था। वे अब कुछ-कुछ यह भी समझने लगे हैं कि कपड़ा बनाने के लिए क्या-क्या किया जाता है, और कि कपड़ा तथा वस्त्र उद्योग के लिए जो आविष्कार हुए हैं उनका दुनिया पर क्या असर पड़ा है व उनके साथ कौन सी नई समस्याएँ उपजी हैं। कुछ बच्चों को अपने कपड़ों को चुनने में अपने अर्जित ज्ञान को इस्तेमाल करने के अवसर भी मिले हैं। अधिकांश बड़े बच्चे अपने वस्त्र खुद ही चुनते हैं। विलियम और हेनरी ने तो इस विषय में अपने माता-पिता की रुचि भी जगा दी है।

यह अध्ययन कुछ दूसरी ज़रूरतों की आपूर्ति भी कर रहा है। किशोरियाँ इससे प्रेरित हो कपड़ों की देखभाल में रुचि लेने लगी हैं। उन्होंने 4-एच क्लब बुलेटिन का उपयोग न सिर्फ कपड़ों की देखभाल के लिए करना शुरू किया है बल्कि वे बालों और नाखूनों की देखभाल में भी रुचि लेने लगी हैं। वे साफ-सफाई के प्रति सचेत हुई हैं। बड़े लड़कों को हाथों से काम करने के तथा नए प्रयोग करने के अवसर मिले हैं। सभी बच्चों को चर्चा करने की कुछ अच्छी आदतें सीखने

और उनका अभ्यास करने के मौके मिले हैं। वे महत्वपूर्ण बिन्दुओं को चुनना और चर्चा के दौरान समूह के समक्ष उन्हें प्रस्तुत करना सीख चुके हैं। वे अब इसलिए प्रश्न करते हैं क्योंकि कुछ बातें जानने में उनकी रुचि है, और इसलिए भी क्योंकि वे जो कुछ कर रहे हैं वह उन्हें सार्थक लगता है। अखबारों व रेडियो का विवेकपूर्ण उपयोग करना भी वे सीख रहे हैं।

अगले चरण क्या हों? सूती वस्त्रों के अध्ययन में कई सम्भावनाएँ नज़र आती हैं। इससे बच्चों की ज़रूरतें पूरी होंगी और वे कुछ सामान्यीकरणों तक पहुँच सकेंगे। इन सामान्यीकरणों में, जो बच्चों को कर लेने चाहिए, कुछ निम्नलिखित हैं: वस्त्र निर्माण के तरीके उसकी कीमत पर असर डालते हैं। कच्चे माल के लिए देश एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं। मशीनों के आविष्कार से व बिजली के आने से काम करने और जीने के तौर-तरीकों में भारी बदलाव आए हैं। देश आपसी व्यापार इसलिए करते हैं क्योंकि अन्य देशों के पास उनकी ज़रूरत की वस्तुएँ होती हैं। बच्चे इन सामान्यीकरणों की दिशा में बढ़ रहे हैं, इसके कुछ संकेत नज़र आने लगे हैं।

मंगलवार, 25 अप्रैल

मेरी एक सखी ने मुझे फोटो चित्रों की एक किताब दी। शीर्षक था, *यू हैव सीन देयर फेसेस* (उनके चेहरों को आपने देखा है)। पुस्तक दक्षिण की समस्याओं को ऐसी खूबसूरती के साथ प्रस्तुत करती है कि मैंने उसे समूह को दिखाने की बात सोची। मुझे विश्वास था कि उन चित्रों को देख बच्चे प्रश्न भी पूछेंगे क्योंकि पुस्तक विचारोत्तेजक है।

चित्रों और उनके नीचे लिखी इबारतों का अध्ययन करने में हमें दो दिन लगे हैं। ये इबारतें दरअसल लोगों के ही कथन थे जो उन्होंने फोटोग्राफर से कहे थे। कहने वाले लोग किसान, नीग्रो और दूसरे लोग थे। उदाहरण के लिए, उनके कुछ कथन थे: "मैंने हमेशा खूब मेहनत की, पर इसका कोई फायदा नहीं हुआ। मैं वहीं का वहीं रहा।" और "नीलामी करने वाला बॉस इतनी तेज़ी से बोलता है कि नीग्रो के पल्ले यह बात पड़ती ही नहीं कि उसकी तम्बाकू की फसल कितने में बिक रही है।" किताब को देखते-पढ़ते समय बच्चों ने ये सवाल पूछे: दक्षिण के किसान इतनी गरीबी में क्यों रहते हैं? क्या ऐसे रहना उनके लिए ज़रूरी है? वे इस बारे में कुछ करते क्यों नहीं? वे किसान और ज़्यादा कमा

क्यों नहीं पाते? उठते ही उत्तर पाने के लिए ये सवाल बेहद बड़े थे। मैंने इन सवालों को उनके बीच खुला रखने की यह कहकर कोशिश की, "हमें पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए।" और मैंने सुझाया कि हम सारे सवाल लिख डालते हैं ताकि हम उन्हें भूल न जाएँ। हेलेन ने सचिव की भूमिका निभाई। बच्चों ने काफी समय अकेले या छोटे समूहों में पुस्तक को देखने और उस पर चर्चा करने में बिताया।

गुरुवार, 27 अप्रैल

कल का दिन समूह ने दक्षिण के बारे में और जानकारी इकट्ठा करने के लिए पढ़ने में बिताया ताकि हमारे सवालों के जवाब ढूँढे जा सकें। आज मार्था ने यह कहकर चर्चा शुरू की, "मैं बता सकती हूँ कि कपास कैसे उगाई जाती है।" मेरी ने कहा कि जब एली व्हिटनी ने कपास पिंजाई की मशीन ईजाद कर दी तो अधिक कपास उगाना सम्भव हुआ। एली व्हिटनी कौन था? इस मशीन ने आखिर ऐसा क्या किया? इतनी कपास क्यों उगाई जाती है? ये वो सवाल थे जो मेरी की टिप्पणी के बाद उठे और उन्हें हमारी सूची में जोड़ लिया गया। एण्ड्रयू ने कहा कि वह अपने नक्शे पर कपास उपज के स्थानों पर निशान लगाने को तैयार है। कुछ बच्चे इस उद्देश्य से पढ़ने लगे, जबकि दूसरे उठाए गए सवालों के जवाब तलाशने के लिए पढ़ते रहे।

बुधवार, 3 मई

आज हमने अपनी चर्चा ठीक उसी जगह से शुरू की जहाँ गुरुवार को रोकी थी। थॉमस ने बताया कि कपास की पिंजाई और सफाई की मशीन का आविष्कार कैसे हुआ। ढेरों लोग हाथ से जितनी कपास एक दिन में साफ करते थे, उतनी कपास एक मशीन से आसानी से साफ हो जाती थी। क्योंकि कपास को साफ करना आसान हो गया, इसलिए दक्षिण के किसान और अधिक कपास उगाने लगे। कपास की फसल बढ़ी तो उसे चुगने के लिए अधिक लोगों की ज़रूरत पड़ी। कपास सस्ती थी और मज़दूरों की संख्या अधिक थी। शायद इसीलिए वे मज़दूरी की दरें कम दे पाते थे। इस पर मैंने थॉमस से पूछा कि "वे" से उसका क्या मतलब था। वह बोला, "जो लोग अपनी ज़मीन बँटाई पर देते थे या बँटाईदारों को ज़मीन और औज़ार देते थे।" इसके बाद सस्ते मज़दूरों, नीग्रो मज़दूरों और खेत मालिकों के फायदे के लिए काम करने की उनकी बाध्यता

पर लम्बी चर्चा छिड़ गई। बच्चों को यह भी समझ आने लगा कि कैसे एक मशीन के कारण, जिसने लोगों को हाड़तोड़ मेहनत से बचाया, कई नई समस्याएँ पैदा हुईं। कपास चुनने की मशीन और उससे जुड़ी समस्याओं पर वे पहले ही बातचीत कर चुके थे। आज उन्होंने फिर से उस पर चर्चा की और उन्हें एहसास हुआ कि समस्या का समाधान आसान नहीं है।

गुरुवार, 4 मई

मेरी ने आज एक कथन पढ़कर सुनाया कि पौधा खाने वाले झींगुर दरअसल आशीर्वाद हैं। हमारे नए लड़के डेनियल ने इस वक्तव्य को चुनौती दी, "कोई कीट आशीर्वाद कैसे हो सकता है?" "क्योंकि उनके कारण कुछ किसानों ने कपास उगाना बन्द कर दिया," मेरी ने जवाब दिया। मैंने पूछा, "तो क्या यह अच्छी बात है?" "हाँ," कई बच्चों ने कहा। "अगर कपास न हो तो कीट मर जाते हैं क्योंकि उन्हें खाने को कुछ नहीं मिलता। इससे ज़मीन को आराम करने का मौका मिल जाता है। ज़मीन कम उपजाऊ है क्योंकि उस पर लम्बे समय से कपास उगाई गई है। इससे अतिरिक्त उपज में भी कमी आती है।" मेरे "क्यों" के ये जवाब बच्चों ने दिए थे। मैंने पूछा, "क्या कोई दूसरे कारण भी हो सकते हैं?" उत्तर की तलाश में हमने किताबें टटोलीं। हमने पाया कि उस कीट के कारण बेहतरी की दिशा में कुछ बदलाव ज़रूर आए, पर वे बदलाव छोटे थे और दूरगामी नहीं थे।

सोमवार, 15 मई

दक्षिण के लोग कपास की खेती कैसे करते हैं, कैसे फसल उगाते हैं, कपास की सफाई से लेकर बाज़ार में उसकी बिक्री और तैयार वस्त्र बनने तक की समूची प्रक्रिया किन चरणों से गुज़रती है, इस सब के बारे में बच्चे पढ़ते और सोचते रहे हैं। उन्होंने इन विषयों पर अपनी कॉपियों में छोटे-छोटे लेख लिखे हैं।

आज जब बच्चे अपने लेख लिखने में व्यस्त थे तो एडवर्ड ने कहा, "सूती कपड़े हमारे पास पहुँचें, उससे पहले कपास के साथ कितना कुछ घट चुका होता है।"

मंगलवार, 16 मई

मैंने समूह को एडवर्ड की टिप्पणी की याद दिलाई और पूछा कि क्या इसका

रिश्ता उन समस्याओं के साथ भी है जो हमने शुरुआत में उठाई थीं। इस पर अच्छी चर्चा हुई। कपास कई लोगों के हाथों से गुज़रती है और हरेक व्यक्ति जो उसके साथ कुछ काम करता है, उससे कुछ न कुछ कमाना चाहता है। जिस व्यक्ति के पास पहले से ही पैसा होता है, वही सबसे ज़्यादा पैसा कमाता है, जबकि बँटाई-किसान को, जिसने कोई पूँजी नहीं लगाई होती और जिसे समूची प्रक्रिया से अनभिज्ञ रखा जाता है, कमाने का कोई मौका ही नहीं मिलता। उत्पादक हमेशा भारी मुनाफा कमाना चाहते हैं, फिर चाहे वह कमाई किसी भी तरीके से हो। शिक्षा का अभाव लोगों को अनभिज्ञ बनाए रखता है। बच्चों ने कहा कि दक्षिण में श्रम की समस्याएँ ठीक वैसी ही हैं जैसी उत्तर में। पर शायद उत्तर के कारखानों में इन समस्याओं को सुलझाने की दिशा में अधिक ध्यान दिया गया है। उन्होंने ऊन के अध्ययन के समय जो जानकारी जुटाई थी उसका उपयोग किया। बच्चों का कहना था कि उत्पादन की श्रृंखला में जो सबसे पहले होता है वही सबसे अधिक परेशानियाँ झेलता है। उन्होंने इसकी तुलना हमारे क्षेत्र के दूध उत्पादकों से की जिनके बारे में उन्होंने पिछले साल अध्ययन किया था। इस बात पर चर्चा के दौरान कि कपास उगाने वाले किसान को कितनी कम कीमत मिलती है, वॉरेन ने कहा, "कपास की कीमत कितनी हो, यह कौन तय करता है? उन्हें यह कैसे मालूम होती है?" यह जानने के लिए हमने और पढ़ा।

बुधवार, 17 मई

विनिमय केन्द्रों की बात समझना बच्चों के लिए कठिन था। हम जितना समझ पाए उसी को लेकर आगे बढ़े। हमने पाया कि संयुक्त राज्य अमरीका कपास की कीमत तय करने में एक महत्वपूर्ण घटक है क्योंकि दुनिया भर में उगने वाली कुल कपास की उपज की आधी यहीं उगती है। इंग्लैण्ड में कपास की जितनी खपत होती है उसकी आधे से भी अधिक संयुक्त राज्य से भेजी जाती है। जर्मनी, इटली और जापान भी संयुक्त राज्य की कपास काम में लेते हैं। लिवरपूल और न्यू यॉर्क में विनिमय केन्द्र हैं जहाँ अनुबन्ध के हिसाब से कपास खरीदी और बेची जाती है। कपास की कीमतें तय करने वाले मौसम और कीड़ों की महामारी पर कड़ी नज़र रखते हैं। मौसम, माँग और आपूर्ति, यातायात की सुविधा, इन सबका कपास की कीमत पर असर पड़ता है। इंग्लैण्ड और जर्मनी

इस कोशिश में लगे हैं कि संयुक्त राज्य से खरीदी जाने वाली कपास में कमी आए। इंग्लैण्ड कपास के साथ प्रयोग कर मिस्र और भारत में बेहतर फसलें पाने की चेष्टा कर रहा है। जर्मनी में कपास के विकल्पों की तलाश में प्रयोग किए जा रहे हैं।

गुरुवार, 18 मई

करेन्ट इवेन्ट्स और *वीकली रीडर* के हालिया अंकों में हमने पढ़ा कि कपास अब "बादशाह" नहीं रही है। यूरोप में अमरीकी कपास की माँग कम हो गई है। रेयॉन अब तेज़ी से कपास की जगह लेने लगा है। बच्चों ने पूछा कि क्या इससे दक्षिण में समस्याएँ बढ़ेंगी और उन समस्याओं को दूर करने के क्या उपाय हो सकते हैं। उन्होंने कपास की अतिरिक्त उपज की चर्चा की, उसकी तुलना दूध के अतिरिक्त उत्पादन से की और दर्शाया कि स्थितियाँ एक जैसी थीं – इन उत्पादों की ज़रूरत के बावजूद अतिरिक्त उत्पादन।

उन्हें यह भी लगा कि खड़ी कपास को हल चलाकर वापिस ज़मीन में मिला देना गलत है, पर उन्हें एहसास था कि यह मुद्दा चर्चा का विषय है। उन्हें लगा कि बेहतर यह हो कि किसानों को सिखाया जाए कि वे विविध प्रकार की फसलें उगाएँ।

शनिवार, 20 मई

अध्ययन का यह चरण कई कारणों से रोचक रहा। यहाँ प्रत्यक्ष अनुभव के नाम पर हमने केवल चित्र देखे और पढ़ा। बच्चों ने अपने पिछले अनुभवों और अन्य अध्ययनों से जुटाई सामग्री से लगातार सीखें निकालीं। अध्ययन के सभी प्रश्न और दिशाएँ खुद बच्चों ने तय कीं। और, अन्ततः, पहली बार सामान्यीकरण स्पष्ट नज़र आने लगे।

अध्ययन का यह भाग कठिन था। यह समस्या एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय समस्या है और यह सभी लोगों की ज़िन्दगियों को छूती है। फिर भी बच्चे इसके सीधे सम्पर्क में नहीं आते और जहाँ तक मुझे लगता है वे इस बारे में कुछ कर भी नहीं सकते। इन कारणों से बच्चों की दृष्टि से इस अध्ययन का मूल्य शायद उतना नहीं है जितना ऊन के अध्ययन का था। इसका सबसे बड़ा फायदा तो यही था कि हम सामान्यीकरणों तक पहुँच सके जिनसे बच्चों को अपनी खुद की परिस्थितियों को समझने में मदद मिलेगी। अध्ययन प्रारम्भ करने से पहले कुछ सामान्यीकरणों को मैंने सूचीबद्ध किया था। वे फिर से उभरे यद्यपि ठीक उस रूप में नहीं जिसमें मैंने उन्हें रखा था। जिन अन्य सामान्यीकरणों तक हम पहुँचे, वे कुछ इस तरह थे:

- किसी भी समुदाय के जीवन और काम में वहाँ की जलवायु बेहद महत्वपूर्ण है।
- किसी एक ही फसल की खेती करने के कुछ नुकसान होते हैं।
- विविध प्रकार की फसलें लेना ज़मीन, उपज और लोगों के लिए फायदेमन्द होता है।
- निर्माताओं, उत्पादकों और मज़दूरों के हित भिन्न होते हैं और अक्सर आपस में टकराते हैं, जिससे समस्याएँ पैदा होती हैं।
- यद्यपि कई चीज़ों का "अति-उत्पादन" होता है, परन्तु वितरण की समस्याओं के कारण इस "अतिरिक्त उत्पादन" का उपयोग वहाँ नहीं हो पाता जहाँ उसकी आवश्यकता हो।

बच्चों द्वारा उठाए गए सवालों और जवाबी सामग्री तलाशने में उत्साह से यह स्पष्ट था कि उनकी इस विषय में गहरी रुचि थी। यह रुचि अधिकतर इसलिए थी कि सामग्री में नाटकीय द्वैत भाव था और मुझे सावधानी बरतनी पड़ी ताकि उनकी चर्चा तथ्यात्मक रहे, भावनात्मक न बन जाए। यह महत्वपूर्ण था कि अध्ययन की ज़िम्मेदारी बच्चों के हाथों में हो ताकि उनकी रुचि सतत बनी रहे, अन्यथा इतना पढ़ना, इतनी बातचीत और विमर्श करना ऊबाऊ और कठिन बन जाता।

बुधवार, 24 मई

पिछले तीन दिन हमने एण्ड्रयू की मदद करने में बिताए और नक्शे पर फ्लैक्स, रेशम और रेयॉन के स्रोत चिह्नित किए। बेहद सुन्दर नक्शा बन पड़ा है। यह हल्के जल रंगों से चित्र-बोर्ड पर बना है। एण्ड्रयू को उस पर बड़ा नाज़ है। बच्चों ने अपनी कॉपियों में चार्ट बनाकर कपास, लिनेन, रेशम और रेयॉन के तन्तुओं की विशेषताएँ दर्ज कीं।

इस लाभदायी अध्ययन को हमने यहाँ लाकर छोड़ा। यह लाभदायी इस अर्थ में था कि बच्चों की कई ज़रूरतें इससे पूरी हो पाईं, जैसा कि मैंने पहले भी कहा है। यह लाभदायी इसलिए भी था क्योंकि इसने मुझे सिखाया कि अगर शिक्षा को बच्चों की ज़िन्दगी में कोई बदलाव लाना है, तो पुरानी तकनीकों से काम नहीं चलेगा। हमें नई परिस्थितियों के लिए लगातार नई तकनीकें ईजाद करनी होंगी। गत वर्ष मैंने शैक्षिक प्रक्रिया और पाठ्यचर्या निर्माण के बारे में जो शब्द लिखे थे उन्हें मैं अब अधिक स्पष्टता से समझ पा रही हूँ।

बुधवार, 31 मई

इन सर्दियों में विज्ञान शिक्षण के एक सत्र के दौरान मुझे पता चला कि हिल बच्चों के अलावा शेष बच्चों ने कभी समुद्र देखा ही नहीं है। मुझे लगा कि समुद्र तट की यात्रा बच्चों के लिए एक सार्थक अनुभव रहेगा। मैं इस बात का ज़िक्र अपनी मित्र श्रीमती कोलमार से कर रही थी, जो हमारी नन्ही-सी शाला में रुचि लेती रही हैं। उन्होंने कहा, "तो फिर तुम उन्हें हमारे घर क्यों नहीं ले जातीं?" उनका घर ऐन समुद्र तट पर है, जो नितान्त निजी तट है।

यही कारण था कि मैं स्कूल के बाद आज शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष से मिलने गई, उन्हें यह समझाने कि इस भ्रमण का बच्चों के लिए क्या मतलब होगा, और यह अनुमति लेने कि क्या हम इसके लिए दो दिन काम में ले सकते हैं, क्योंकि बच्चों को कुछ गाड़ियों में भरकर ले जाने और वापिस लाने का काम बसन्त के गर्म सप्ताहान्त के बदले सप्ताह के दौरान करना अधिक सुरक्षित होगा। उनका कहना था कि क्योंकि स्टोनी ग्रोव में हम काफी अतिरिक्त समय लगाते हैं, हम दो दिन की छुट्टी आराम से ले सकते हैं। और, क्योंकि वे यह भी समझते थे कि ऐसे अनुभव से बच्चे खूब सीखेंगे, उन्होंने हमें अनुमति दे दी।

गुरुवार, 1 जून

पहला काम जो बच्चों ने किया वह था भ्रमण में शामिल होने के लिए माता-पिता की लिखित अनुमति पाने के लिए पत्र लिखना। कल रात घर लौटते वक्त मैं न्यू जर्सी की सड़कों के कई नक्शे लेती आई थी ताकि हरेक बच्चे को एक-एक मिल सके, और अब हमने अपने रास्ते का अध्ययन करना शुरू किया। हमने देखा कि भ्रमण का सीधा रास्ता क्या रहेगा और फिर सड़कों के नक्शे के पीछे

दिए गए ऐतिहासिक स्थानों के चित्रों के नक्शे का अध्ययन भी किया ताकि अधिक से अधिक स्थानों पर जाना तय कर सकें।

सोमवार, 5 जून

पिछले सप्ताह हमारा लगभग पूरा समय उन ऐतिहासिक स्थानों के महत्व का अध्ययन करते बीता जहाँ हम भ्रमण के दौरान जाने वाले हैं। बच्चे क्रान्ति के युग और न्यू जर्सी की उस युद्ध में भूमिका के इतिहास में डूबे रहे हैं।

कल ही वह बड़ा दिन है। मुझे नहीं लगता कि बच्चों में से कोई भी आज रात सोएगा। हम केवल बड़े समूह के बच्चों को ले जा रहे हैं क्योंकि इस तरह की यात्रा पर प्राथमिक बच्चों की देखभाल मुश्किल होगी। हमने उनसे वादा किया है कि हम उनके लिए जितनी सम्भव होगी समुद्र किनारे की रेत ले आएँगे।

गुरुवार, 8 जून

यात्रा समाप्त हुई और आज हम सब असामान्य रूप से शान्त हैं। पिछले दो दिनों का हमारे लिए क्या अर्थ रहा है उसे अभिव्यक्त करने के लिए हम में से किसी के पास भी शब्द नहीं हैं। पर जब-जब बच्चों की आँखें एक-दूसरे की या मेरी आँखों से मिलीं, मैंने उनमें आपसी समझ की गर्माहट झलकते देखी।

हम सुबह साढ़े आठ बजे निकले थे और हमारा पहला पड़ाव प्रिंस्टन था जहाँ हमने प्रिंस्टन के अध्यक्ष का बाग, गिरजाघर और नासाऊ हॉल (Nassau Hall) देखा जहाँ क्रान्ति के समय सैनिकों के बैरक थे। हमने प्रिंस्टन के छात्रावास और कक्षाओं वाले भवन भी देखे। यहाँ से हम टैनेन्ट चर्च गए। बच्चों ने वहाँ 250 वर्ष पुराना बलूत का वृक्ष देखा और यह कल्पना करने की कोशिश की कि जब वह एक नन्हा पौधा रहा होगा तो वह स्थान कैसा दिखता होगा। हमने चर्च के पास स्थित मॉली पिचर (Molly Pitcher) के दोनों कुएँ भी देखे। कुछ आगे हम लताओं से घिरे एक भोजनालय में रुके, जहाँ हमने दूध खरीदा और घर से साथ लाए खाने को खाया।

दोपहर तीन बजे हम बारनेगाट (Barnegat) चट्टान-माला के पास से गुज़र रहे थे। समुद्र हमारे बाईं तरफ था और खाड़ी दाहिनी तरफ और बीच में थी मन्द बयार। बच्चे बड़ी मुश्किल से अपने आप को नियंत्रण में रखे हुए थे। तट पर

पहुँचते ही वे समुद्र में तैरने को छटपटाने लगे। श्रीमती कोलमार का एक बेटा, जो समुद्री मछली-सा है, ने हर बार समुद्र में उतरते बच्चों पर नज़र रखी।

स्वादिष्ट रात्रि भोज के बाद कुछ लड़कों ने बरतन साफ करने में मदद की और बाकी आग जलाने की लकड़ियाँ बीनने में जुटे। गोधूलि में बाहर अलाव जलाया गया। कुछ बच्चे रेत में कुश्ती लड़ने लगे तो कुछ रेत के ढेरों के बीच छुपम-छुपाई खेलने भागे। क्रमशः वे आग के चारों ओर आ बैठे और गीत गाने लगे। एल्बर्ट ने पूछा, "क्या हम आज रात जितनी देर चाहें जगे रह सकते हैं?" मेरा जवाब था, "जब तक तुम्हारी इच्छा हो।" "रात बारह बजे तक भी?" "रात बारह बजे तक भी।" "वाह!" सब बच्चे एक आवाज़ में चीखे। पर साढ़े नौ बजे रूथ ने सवाल किया, "क्या बारह बजे तक जगना ज़रूरी है?" हम सब खूब हँसे और सोने को तैयार होने लगे। लड़कों ने तय किया कि वे सुबह जल्दी उठेंगे ताकि मछुआरों की नौकाओं को आते देख सकें।

अगली सुबह साढ़े पाँच बजे मुझे टॉम का कण्ठ सुनाई पड़ा, "ओ वॉरेन, तू उठ गया है?" वॉरेन बोला, "हाँ, तुमने वह आवाज़ सुनी? लगता है मछुआरों की नावें आने लगी हैं। चलो देखने चलते हैं।" मिनट भर भी न हुआ कि मैंने सीढ़ियों पर उनकी पदचाप सुनी। तब दूसरे, तीसरे, चौथे बच्चे को उतरते सुना। छह बजे तक हम सब समुद्र तट पर थे। हमने देखा कि मछुआरे अपनी नावें समुद्र में ले जा रहे थे ताकि अपने जालों को सम्हाल सकें। बच्चे उनके लौटने की राह ताकने लगे और इस बीच उन्होंने ज़िन्दगी में पहली बार तेज़ पानी को रोकने के लिए रेत के किले बनाए। उन्हें रेत में कई केंकड़े दिखे। उन्हें तेज़ी से रेत खोद वापस दबने में जुटे देखने के लिए बच्चों ने उन्हें कई बार खोदकर बाहर निकाला।

लौटने पर मछुआरे मछलियों को छाँटने लगे। बच्चों ने देर तक उन्हें कई "अजीब-अजीब" सी मछलियाँ छाँटते देखा। मछुआरों का रवैया दोस्ताना था, उन्होंने बच्चों से बात की। वॉरेन जब नाश्ता करने लौटा तो बोला, "पता है मिस वेबर? वे बिल्कुल असली मछुआरों की तरह बातचीत करते हैं।" उसे इस बात से मज़ा आ रहा था कि उसने किताबों में जिस तरह के मछुआरों के बारे में पढ़ा था वैसे मछुआरे वास्तव में थे। नाश्ते का समय मौज-मस्ती का रहा। बच्चों ने ठूँस-ठूँसकर खाया। उन्होंने रेडीमेड और घर में बनाई चीज़ों का दूध के साथ

नाश्ता किया। इसके बाद सन्तरे का रस, अण्डा, मांस, टोस्ट और जितना वे पी सकते थे उतना दूध लिया। लॉयड, जो सोमवार को पहली बार हमारे स्कूल आया था, हमारे बीच बिल्कुल सहज था। नाश्ता पूरा होने के बाद उसने छाती फुलाई और अपने पेट को थपथपाते हुए हँसकर बोला, "श्रीमती कोलमार शायद चर्मप्रसाधक हैं, क्योंकि उन्होंने आज ढेरों जानवरों को ठूँसकर भर दिया है।"

बरतन साफ करने की इस बार लड़कियों की बारी थी। क्योंकि मैं बच्चों को कह चुकी थी कि नाश्ते के बाद दो घण्टों से पहले वे समुद्र में तैर नहीं सकते, उन्होंने समय बिताने के दूसरे रास्ते तलाशने शुरू किए। वॉरेन और एण्ड्रयू अपने स्केचपैड ले तट पर गए और दोनों ने दो-दो सुन्दर दृश्य आँके। बाकी लड़के आँगन में "चाइनीज़ चैकर" के बोर्ड के इर्द-गिर्द लोट गए। लड़कियाँ बरतन साफ करने के बाद तट पर लम्बी सैर को निकल गईं। कल सुबह भाटा था, सो बच्चों को तैरने में मज़ा आया।

दिन के एक और भारी-भरकम खाने के बाद श्रीमती कोलमार की माँ श्रीमती अटर ने लड़के-लड़कियों को गृह युद्ध की अपनी स्मृतियाँ सुनाईं और कैलिफोर्निया में आए भूकम्प के अपने अनुभव बताए। श्रीमती अटर बेहतरीन किस्सागो हैं और बच्चे मुग्ध हो उन्हें सुनते रहे।

जिस समय हम श्रीमती कोलमार से विदा ले रहे थे, उन्होंने मुझसे कहा कि उन्होंने कभी इतने शिष्ट बच्चों का समूह नहीं देखा था। किसी शिक्षक का इससे बड़ा इनाम भला और क्या होगा?

घर लौटते समय हम न्यू ब्रूनस्विक रुके ताकि बच्चे कृषि प्रयोग स्टेशन देख सकें। उसी इलाके में हमने न्यू जर्सी महिला महाविद्यालय और रूटगर्स विश्वविद्यालय के परिसरों को भी गाड़ी में घूमकर देखा। बाउन्ड ब्रुक के फूल बागान देखने को भी हम रुके। शाम सात बजे तक हम घर पहुँचे ही थे कि बरसात शुरू हो गई। पर हमें चिन्ता नहीं थी – हमें गुनगुनी धूप से भरपूर दो दिन मिल चुके थे।

शुक्रवार, 9 जून

आज हम अपनी सामान्य दिनचर्या पर लौट आए और पिछड़े कामों के बोझ तले हमने खुद को दबा पाया। हमें अपने अखबार का तीसरा अंक निकालना था। हमने उसकी ले-आउट को रोक लिया ताकि समुद्र तट की यात्रा सम्बन्धी

आलेखों को भी शामिल कर सकें।

हमें वसन्तोत्सव की योजना भी बनानी थी। सर्दियों में जब भी बाहर खेल पाना असम्भव हो जाता, मैं बच्चों को लोकनृत्य सिखाती रही। बच्चों को इसमें इतना मज़ा आया कि मौसम गर्माने के बाद भी हमने बाहर नाचना जारी रखा। स्कूल में बिजली आने के कुछ दिनों बाद मार्था एक शाम अपने भाई के साथ युवा मंच की बैठक में आई। जब उसने पोर्च की बत्ती से जगमग खेल मैदान देखा तो उसे एक विचार सूझा, "कितना अच्छा रहे अगर हम बिजली आने का जश्न मना सकें? हम बाहर लोकनृत्य कर सकते हैं और मेरे पास फ्लड लाइटें आदि भी हैं।" यह बात तय हुई, और युवा मंच के सदस्यों ने मदद करने का वादा किया। हमारे अच्छे दोस्तों, ब्रीड दम्पत्ति ने हमें फ्लड लाइटें और लम्बे तार उधार देने का आश्वासन दिया।

आज हमने तय किया कि उत्सव में कौन-कौन से नृत्य शामिल किए जाएँगे। हेनरी को समुदाय में उत्सव का प्रचार-प्रसार करने की समिति का अध्यक्ष चुना गया। यह सामुदायिक उत्सव ही होगा और कोई शुल्क नहीं रहेगा। सोफिया जलपान व्यवस्था समिति में अन्य सदस्यों को खुद चुनेगी। रूथ देखेगी कि कार्यक्रम सुचारू रूप से चले, और उत्सव के अन्त में सामाजिक नृत्य के लिए रेडियो चालू रहे। एडवर्ड और जॉर्ज नैपकिन और कागज़ के कपों को फेंकने के लिए कूड़ेदानों को लगाने का जिम्मा उठाएँगे। डॉरिस और मे ने स्वेच्छा से कहा कि हमारी रसोई से लिए गए बरतनों और रसोईघर की सफाई की ज़िम्मेदारी वे लेंगी।

हमने दिन का काफी समय नृत्यों की समीक्षा करने में बिताया, पहले प्राथमिक बच्चों के साथ और तब बड़े बच्चों के साथ। अब सन्तोषजनक ढंग से कार्यक्रम तय हो गया है।

गुरुवार, 15 जून

सोफिया, रूथ, डॉरिस और मे ने आते ही रसोई की सफाई शुरू कर दी। शेष लोग आसपास कल रात के सफल उत्सव की चर्चा करने लगे। रंगीन रोशनी में नृत्य सच में बड़े अच्छे लगे थे। हमारा कार्यक्रम यह था:

1. यूरोपीय लोक-नृत्य – बड़े बच्चों द्वारा:

बच्चों का पोल्का नृत्य
रोवेनॉका – बोहिमियन नृत्य
सेबोगार – हंगेरियन नृत्य
आओ खुशी मनाएँ – जर्मन नृत्य
पर्वत मार्च – नोर्वेजियन नृत्य
रित्श, रैत्श

2. प्राथमिक समूह के बच्चों के नृत्य:
हम चले शिकार पर
जूते बनाने वालों का नृत्य
ओ मेरा नन्हा कुत्ता कहाँ गया?

3. बड़े बच्चों द्वारा अमरीकी लोक नृत्य:
कैप्टन जिंक्स
पीछे छूट गई जो लड़की
लपक पड़ा लकड़बग्घा
वर्जिनिया रील

4. सामाजिक नृत्य

युवा लड़कों ने जाने से पहले पियानो को बाहर लाने, और कार्यक्रम की समाप्ति पर उसे वापिस अन्दर ले जाने में मदद की। सभी किशोर-किशोरियाँ नाचे और उनके अभिभावकों को अच्छा लगा। बाद में वे तसल्ली से बैठे रहे और आपस में बतियाते रहे। बच्चे उनके बीच शिकंजी और अंगूर के रस के गिलास और घर में बनाए बिस्कुटों की ट्रे घुमाते रहे। कल से छुट्टियाँ शुरू हैं, इसलिए हमने आज स्कूल को गर्मियों के सत्र के लिए तैयार करने से अधिक कुछ नहीं किया।

चौथा वर्ष

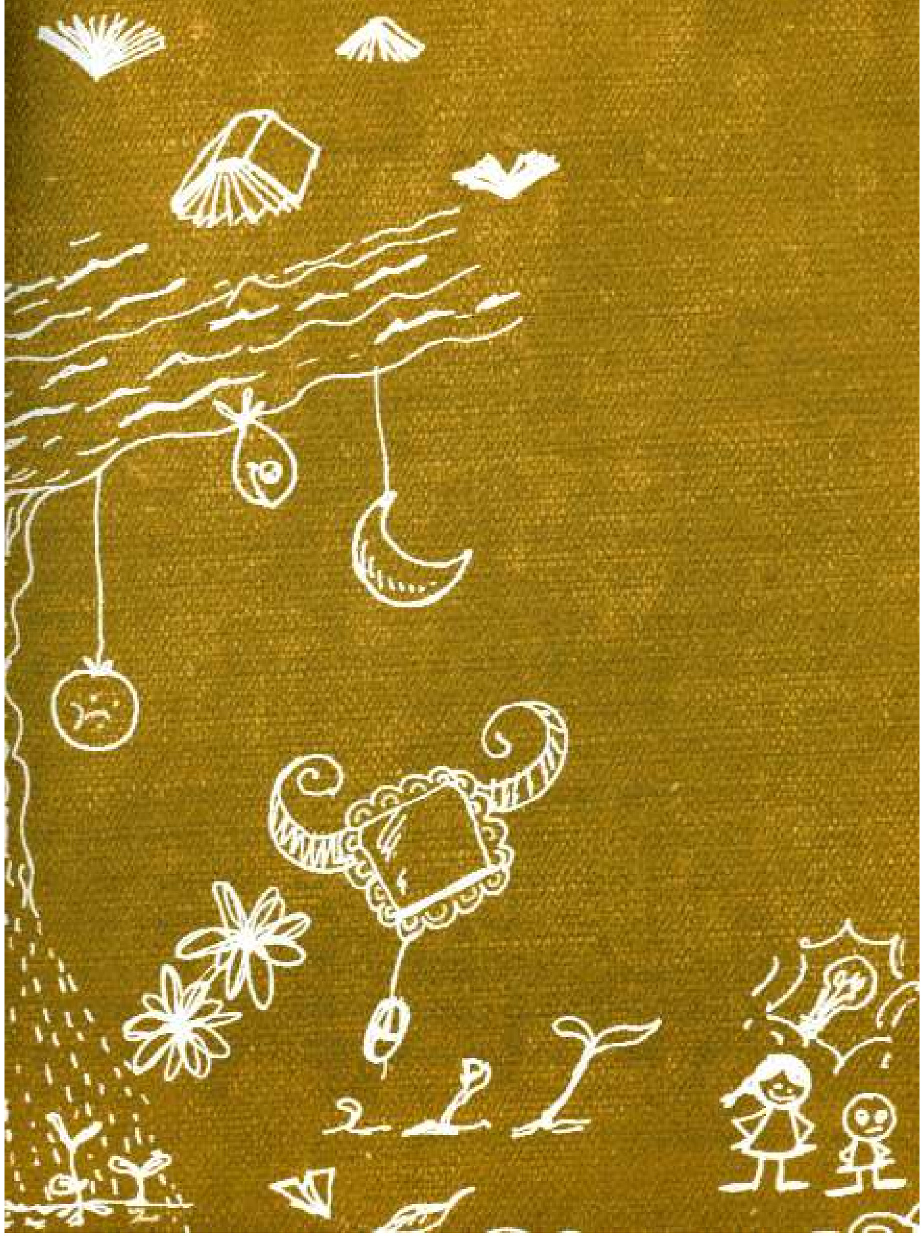

9

हमने लोकतंत्र में जीना सीखा

रविवार, 3 सितम्बर 1939

इस वर्ष की गर्मियाँ सुकून देने वाली रहीं। मैंने अपना अधिकांश समय बाहर लम्बी सैरों पर जाते और तैरते बिताया और अब मैं स्वस्थ और तरोताज़ा महसूस कर रही हूँ। मैंने कई शान्त घण्टे पहाड़ की चोटी पर अपने पसन्दीदा सेब के पेड़ तले बैठ घुमावदार नदी को बहते देखते हुए बिताए। अक्सर मेरी आँखें पढ़ते-पढ़ते थक जातीं, तब मैं घास पर पीठ के बल पसर सेब की आँकी-बाँकी शाखाओं के बीच से आसमान को ताकती, जहाँ बादल अलस गति से गुज़रते। मैं खुद के बारे में सोचती, उन सब अद्‌भुत चीज़ों के बारे में जो मेरे साथ घट रही हैं। वे सभी चीज़ें जो मैं चाहती हूँ कि उन लड़के-लड़कियों के साथ हों जिन्हें मैं पढ़ाती हूँ, वे मेरे साथ भी हो रही हैं। मैं अपनी क्षमताओं, इस दुनिया में अपने स्थान को लेकर सचेत हो चली हूँ। मैं खूब मेहनत से पढ़ रही हूँ और उन सबकी बातें ध्यान से सुनती हूँ जिन्हें मुझसे भिन्न और अधिक अनुभव हुए हैं और मुझे लगता है कि जो कुछ वे कहते हैं उसका हरेक शब्द मैं समझ पा रही हूँ। मैं अक्सर काफी कठिनाई उठा, हताशा झेलते हुए भी बार-बार उन शब्दों को परखने और अपने कर्म में उतारने की चेष्टा करती हूँ, और अचानक वे शब्द नए अर्थ ले लेते हैं। तब लगता है कि मैं पहले वह सब समझती और जानती ही न थी, पर अब जानने लगी हूँ। मैं यह भी महसूस करती हूँ कि कई ऐसी चीज़ें जिनको मैं मानती हूँ कि मैं समझ गई हूँ, वे चैतन्य अनुभव की चेष्टाओं के चलते किसी दिन अचानक ही एक नया और अधिक समग्र अर्थ ले लेंगी। मैंने पाया है कि मैं कई ऐसे काम करना सीख सकती हूँ जिन्हें पहले मैंने कभी नहीं किया है। मैं भी जीवन का सामना रचनात्मक तरीके से कर

सकती हूँ और इसे अपने और दूसरे लोगों के लिए एक बेहतर स्थान बना सकती हूँ। यह एहसास अद्‌भुत है, उत्साहवर्धक है और नई आशा जगाता है! लगता है कि आज मैं यह बेहतर तरीके से समझ पाई हूँ कि वॉल्ट व्हिटमैन क्यों हमेशा हरेक चीज़ के विषय में गाना चाहते थे।

और मैं स्कूल के आगामी सत्र और उसमें हमारे लिए विकास की नई सम्भावनाओं के बारे में भी सोचती रही हूँ। मैंने बारी-बारी हरेक बच्चे के बारे में सोचा। एक और साल उनके साथ बिताना अच्छा लगेगा। हम साथ-साथ काम करेंगे और अपने साझा जीवन को बेहतर बना सकेंगे। क्योंकि रास्ता कितना भी असम्भव क्यों न लगे, अगर हम उतना-सा कर लें जितना हमें समझ आ रहा हो, तो अगला चरण अधिक साफ हो जाता है।

जब वे जीवन शुरू करते हैं तो नन्हे बच्चे जिज्ञासु, खोजी इन्सान होते हैं। वे अपनी समस्त इन्द्रियों की मदद से दुनिया की अनूठी-अनोखी चीज़ें तलाशते हैं। वे समग्रता में जीकर सीखते हैं। पर केवल इतना ही नहीं है। उन्होंने जो कुछ सीखा होता है उसे वे अपने कर्म में उतारते हैं। जो सीखा होता है उसका उपयोग वे पहले जैसी या नई स्थितियों में करते हैं। तब बच्चे स्कूल आते हैं और स्कूल उनकी इन्द्रियों को "बाँध देता" है। उन्हें कुछ बोलना नहीं है। उन्हें चलना-फिरना नहीं है। उन्हें महसूस नहीं करना है। उन्हें केवल वही देखना है जो शिक्षक चाहते हैं कि वे देखें। गत तीन वर्षों से मैंने बच्चों की सीखने की सहज-नैसर्गिक इच्छा को वापस लाने की कोशिश की है, जैसी वृत्ति उनके जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में होती है और जिसे उनके माता-पिता व शिक्षकों, जिनमें मैं भी शामिल हूँ, ने व्यवस्थित रूप से उनसे छीना है। क्योंकि मुझे पुराने तौर-तरीकों से पढ़ाया गया था, इसलिए अगर मैं हर पल चौकन्नी न रहूँ तो बड़ी आसानी से उन्हीं विधियों पर लौट जाती हूँ। मुझे लगता है कि मैंने क्रमशः बच्चों में सीखते रहने की इच्छा जगाई है। इस दृष्टिकोण को बनाना सबसे ज़रूरी है, क्योंकि इसके अभाव में बच्चे न केवल तैयारी करना बन्द कर देते हैं बल्कि वे उन नैसर्गिक क्षमताओं को भी खो देते हैं जो उन्हें जीवन की स्थितियों से निपटने में मदद करती हैं। अब जबकि बच्चे सीखना चाहते हैं, उन्हें सिखाने का, उन्हें भविष्य के लिए तैयार करने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि मैं हरेक मौजूदा अनुभव से उपयोगी अर्थ निकालने में उनकी मदद करूँ। वर्तमान में समग्रता से जी पाना ही उन्हें भावी गहरे और व्यापक अनुभवों के लिए तैयार करेगा।

सोमवार, 4 सितम्बर

आज आठ माताएँ और छह हाई स्कूल छात्राएँ शाला भवन में एकत्रित हुईं ताकि मिस मोरान से सब्जियों को सही तरह से डिब्बाबन्द करना सीख सकें। श्रीमती प्रिन्लैक तो अपने नन्हे शिशु को अपने पति की देख-रेख में छोड़कर आईं जिन्होंने उन्हें खुशी-खुशी आने दिया ताकि उनकी पत्नी सब्ज़ियों को डिब्बाबन्द करने के बारे में कुछ नए विचार लेकर लौटे। लगता है श्री प्रिन्लैक शिक्षा के बारे में अपने विचार बदल रहे हैं, खासकर जब उनमें प्रौढ़ शिक्षा भी शामिल हो रही हो!

पिछले बसन्त के समय कुछ अभिभावकों ने यह इच्छा जताई थी कि वे अपने बाग-बगीचे का बेहतर उपयोग करना सीखना चाहते हैं। मैंने मिस मोरान व श्री लोरेंज़ो से मदद माँगी। उन्होंने राज्य कृषि महाविद्यालय की खाद्य विशेषज्ञ मिस डोएरमैन और उद्यान विशेषज्ञ श्री निसले की सेवाएँ हासिल कीं। 28 अप्रैल को हुई एक बैठक में चौदह माता-पिता, युवा व बच्चे, जो इलाके में बसे आधे परिवारों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, शाला भवन में एकत्रित हुए ताकि राज्य स्तरीय विशेषज्ञों व काउंटी के कृषि विस्तार कर्मियों के मार्गदर्शन में बसन्त में अपने बागों की योजना बना सकें। हमने अपनी समस्याओं पर चर्चा की, उनसे सलाह ली और उपयोगी छपी सामग्री पाई। दो भावी बैठकों की योजना भी बनी, पहली जिसमें डिब्बाबन्दी के बेहतर तरीके सीखने थे और दूसरी जिसमें भारी मात्रा में उगने वाली सब्ज़ियों के भण्डारण के गुर सीखे जाने थे।

बुधवार, 6 सितम्बर

आज सभी बच्चों ने उत्साह से एक-दूसरे का और अपनी शिक्षिका का अभिवादन किया। श्रीमती लैनिक ने बताया कि सैली से नाश्ता तक नहीं खाया जा रहा था क्योंकि वह स्कूल आने को बेताब थी। नए साल के प्रारम्भ में अमूमन जो झिझक बच्चों में दिखती रही है, लगता है उसे ये बच्चे भूल चुके हैं।

इस साल स्कूल में तीस बच्चे हैं। डण्डर परिवार गत क्रिसमस के बाद शहर रहने चला गया और जोसेफ को मनोचिकित्सा संस्था में भर्ती करवा दिया गया है। बर्था श्मिट भी स्कूल छोड़ गई क्योंकि उसकी माँ वापस शहर चली गईं। ओल्सेउस्की परिवार विलियम्स के घर के पास जा बसा ताकि प्रिन्लैक परिवार

से दूर रह सके। इससे दोनों ही परिवार गर्मियों भर शान्ति से रहे। पिछले बसन्त दो नए लड़के स्कूल में दाखिल हुए। डेनियल कोल के माता-पिता ने अप्रैल में ओल्सेउस्की परिवार का खेत खरीद लिया। श्री कोल पहले शहर में कार मैकेनिक थे, पर गिरते स्वास्थ्य के कारण उन्हें अपना काम छोड़ना पड़ा। श्रीमती कोल दोस्ताना महिला हैं और उनके कारण सोमवार को डिब्बाबन्दी सीखने के सत्र में मज़ा आया।

लॉयड मैथ्यूस जून में आया था। जब हमने सुना कि पड़ोस में एक नया लड़का आ बसा है, हमने उसे सत्र के अन्तिम दिनों के लिए स्कूल आने का न्यौता दिया। उसकी माँ तब से कई बार धन्यवाद दे चुकी हैं। उनका कहना है कि लॉयड बड़ा घबराता है और अगर वह हम सबसे पहले न मिल लेता तो पूरी गर्मियाँ इसी चिन्ता में घुलता रहता कि नया स्कूल कैसा होगा और कि वह हमें और हम उसे पसन्द करेंगे या नहीं। लॉयड हमारे साथ समुद्र तट के भ्रमण पर भी गया था, जहाँ उसे बेहद मज़ा आया था। इस पतझड़ वह नया लड़का रहा ही नहीं; वह तो हममें से एक बन चुका है। उसके पिता श्री मैथ्यूस लैण्डस्केप बागबान हैं जो खेती के लिए ज़मीन तलाश रहे हैं। श्रीमती मैथ्यूस को सोमवार के डिब्बाबन्दी के सत्र में आकर अच्छा लगा था।

श्री रेमसे कुछ लॉग केबिन बना रहे हैं जिन्हें वे गर्मियों में सैलानियों को किराए पर देंगे। इनमें से एक केबिन में मूडी परिवार गर्मियों के दौरान वैली व्यू में रहा। उन्होंने तय किया कि वे सर्दियाँ भी यहीं बिताएँगे ताकि उनका छह वर्षीय बेटा आर्थर हमारे स्कूल में पढ़ने का अनुभव ले सके। श्रीमती रेमसे को लगता है कि स्कूल ने उनकी बेटी आईरीन को इतनी मदद दी है कि श्रीमती मूडी को भी उम्मीद है कि उनके बेटे आर्थर को भी मदद मिलेगी। आर्थर के पिता इंश्योरेंस एजेंट हैं, सो उन्हें हर रोज़ न्यू यॉर्क जाना-आना पड़ेगा।

तीन शुरुआती बच्चे भी आ जुड़े हैं – एक और प्रिन्लैक, एक और मान, तथा रॉबर्ट लिन्डन। लिन्डन परिवार लड़कों के एक शिविर की देखभाल करता है। हमने पहले दिन की शुरुआत व्यवस्थित रूप से क्लब बैठक के साथ की ताकि उसे नए सत्र के लिए पुनर्गठित किया जा सके। हमने तीन समितियाँ बनाईं, जिनके काम होंगेः गत वर्ष की बैठकों की समीक्षा करना तथा आगामी वर्ष के लिए सुझाव देना, स्कूली व्यवस्था सम्बन्धी ज़िम्मेदारियों के विषय में क्या-क्या

करना है उसकी योजना बनाना, और क्लब के संविधान को जाँचना ताकि उसमें नई बातें जोड़ी जा सकें या पिछली बातें संशोधित की जा सकें।

जब हम खेल-कूद से लौटे, मैंने बच्चों के समक्ष वे पुस्तकें रखीं जिन्हें मैं पुस्तकालय से लाई थी। मैंने प्रत्येक पुस्तक के बारे में कुछ रोचक बातें बताईं। बच्चों ने उनमें से अपनी पसन्द की किताबें चुन लीं और शान्ति से पढ़ने के लिए बैठ गए। जब बाकी बच्चे पढ़ रहे थे, पाँच-छह साल वाले बच्चे मुझे बताने लगे कि उन्होंने गर्मी की छुट्टियों में क्या-क्या मस्ती की। उन्हें स्कूल के लिए सिले गए नए कपड़े खास तौर पर अच्छे लग रहे थे और पहले दिन के लिए हुई तैयारी उन्हें लुभा रही थी। उन्होंने इस सबके बारे में एक कहानी बनाई जो मैंने चार्ट पर लिख दी। हरेक बच्चे ने नए कपड़ों में स्कूल आते खुद का एक-एक चित्र बनाया। साढ़े ग्यारह बजे तक समूह दो, तीन और चार के पठन सत्र बारी-बारी हुए। छोटे बच्चों ने जैसे ही अपना पठन सत्र समाप्त किया, वे बड़ी गेंदें लेकर बाहर खेलने चले गए।

कहानी सुनाने के कालांश में समूचा स्कूल बाहर आ गया। मैंने छोटे बच्चों को "तीन सूअर" नामक कहानी सुनाई और उन्होंने उसका नाट्य रूपान्तर किया। मार्था भी हमारे साथ थी क्योंकि कल वह छोटे बच्चों को सम्हालेगी। शेष बच्चे अलग-अलग पेड़ों की छाया में अपनी-अपनी समितियों में बैठे। खाने के पहले विलियम ने हाथ धोने में छोटे बच्चों की मदद की। मार्था और विलियम ने खाना भी उनके साथ ही खाया। समिति अध्यक्षों ने मेरे साथ खाना खाया ताकि समितियों की प्रगति के बारे में बता सकें।

विश्राम का पीरियड सच में आरामदेह रहा। छोटे बच्चे गर्म घास पर पसर गए और पर्ल उन पर नज़र रखे हुए चुपचाप पढ़ती रही। बड़े बच्चों ने आराम से बैठकर वॉल्ट व्हिटमैन की कविता "द कॉमनप्लेस" सुनी। हमने धीमे स्वरों में कविता के भावार्थ पर बात की, और यहाँ पहाड़ों में हमें जीवन की तमाम अद्भुत वस्तुएँ निःशुल्क उपलब्ध हैं यह सोच हम कृतज्ञता से भर उठे।

इसके बाद प्राथमिक समूह के बच्चों ने मेरे साथ वर्तनी और संख्या पर काम किया, जबकि विभिन्न समितियों ने सुबह जो काम प्रारम्भ किए थे उन्हें निपटाया।

दिन समाप्त हुआ तो क्लब बैठक फिर बुलाई गई। मार्था अन्तरिम सभापति रही और उसने सभा का अच्छा संचालन किया। उसने सबसे पहले संविधान समिति को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा। वॉरेन ने सूचना दी कि समिति मौजूदा संविधान से सन्तुष्ट है, परन्तु एक संशोधन चाहती है। समिति सदस्यों का मानना था कि स्कूल के कोष में जो राशि है उसे कैसे खर्च किया जाए यह समूह को तय करना चाहिए। उसने संशोधित संविधान पढ़कर सुनाया जिसका सदन ने अनुमोदन किया।

हेलेन ने रख-रखाव समिति का प्रतिवेदन रखा। इस समिति के सदस्यों ने तय किया था कि हरेक काम का विस्तृत वर्णन कार्डों पर लिखा जाए ताकि सबको पता हो कि उसके तहत क्या-क्या करना है। जैसे:

झाड़ना (1)

- समूचे कमरे को झाड़ना।
- दरवाज़ों को झाड़ना।
- पायों को झाड़ना।
- चूल्हे को झाड़ना।
- दोनों छोटी अलमारियों को झाड़ना।
- यह सब सुबह स्कूल से पहले करना है।

झाड़ना (2)

- मेज़-कुर्सियों को झाड़ना।
- काम की बड़ी मेज़ को झाड़ना।
- पियानो को झाड़ना।
- पुस्तकालय की मेज़-कुर्सियों को झाड़ना।
- यह सब सुबह स्कूल से पहले करना है।

पुस्तकालय प्रभारी

- सुबह पुस्तकालय को झाड़ना।
- काम में आ रही किताबों के कार्ड डिब्बे में रखना।
- किताब लौटने पर कार्ड पर लिखे नाम को काटना, कार्ड पुस्तक में रखना और पुस्तक को वापिस अलमारी में रखना।

- पूरा दिन सभी किताबों को यथास्थान रखना।
- घर ले जाने वाली पुस्तकों को दर्ज करने के लिए दिन के अन्त में समय तय करना।
- नई पुस्तकें आने पर उनके कार्ड बनाना।

अगर उपरोक्त व्यवस्था हो तो जिसकी भी काम करने की बारी आए उसे पता होगा कि क्या-क्या काम होते हैं। समूह ने समिति को अनुमति दी कि वह उपरोक्त कार्ड बना डाले।

एल्बर्ट की समिति इस नतीजे पर पहुँची कि क्लब की बैठकें महत्वपूर्ण हैं और उन्हें गम्भीरता से लेना चाहिए। उन्हें लगा कि अध्यक्ष का चुनाव सोच-समझकर करना चाहिए और ऐसे ही छात्र या छात्रा को अध्यक्ष बनाना चाहिए जिसने पिछले अध्यक्षों को पूरा सहयोग दिया हो। समिति को यह भी लगा कि वे स्कूली व्यवस्था की पूरी ज़िम्मेदारियाँ तब बेहतर समझेंगे और सीखेंगे जब मैं उनमें कोई हिस्सा न लूँ। वे क्लब की समूची व्यवस्था स्वयं चलाने की कोशिश करना चाहते हैं और केवल आवश्यकता पड़ने पर ही मेरी मदद लेना चाहते हैं। इस प्रस्ताव पर मतदान हुआ और प्रस्ताव पारित हो गया।

अगला काम था नए पदाधिकारियों का चुनाव। वॉरेन को अध्यक्ष, हेलेन को उपाध्यक्ष, एडवर्ड को सचिव व एन्ड्रयू को कोषाध्यक्ष चुना गया। सदस्यों ने यह निर्णय लिया कि अलमारियों के पर्दों, खेलघर और उसकी मेज़-कुर्सियों को रँगने के लिए रंग, दुनिया का नया नक्शा बनाने के लिए मोमजामे और पुस्तकालय की मेज़ बनाने के लिए लकड़ी पर कुछ राशि खर्च की जाए। शाम घर लौटते समय मैं रास्ते भर गुनगुनाती रही। नया साल अद्‌भुत होने वाला है!

गुरुवार, 7 सितम्बर

आज का दिन कल से भी अधिक सहजता से बीता और शाला का वातावरण खुशनुमा रहा। आर्थर मूडी का आनन्द छलकता रहता है। वह अपनी मेज़ पर बैठा था चमचमाते नए जूतों में, जिन्हें वह सर्दियों के लिए बचा नहीं सका। वह अपना चित्र बना रहा था और बुदबुदाता जा रहा था, "मुझे यह स्कूल अच्छा लग रहा है! मुझे इस स्कूल से प्यार है!"

हर साल नए सत्र के पहले माह हम कुछ समय सीने, रँगने, मरम्मत करने में बिताते हैं ताकि स्कूल और मैदान का रख-रखाव हो सके। आज हमने इसी काम की शुरुआत की। हमें अपने मैदान की चिन्ता अभी भी है, क्योंकि पिछले साल जिस परियोजना के तहत उसे सुधारा जाना था वह परियोजना वैली व्यू से हटा ली गई थी।

शुक्रवार, 8 सितम्बर

आज सबको यों लगा मानो हम छुट्टियों के लिए भी स्कूल से दूर हुए ही न हों। जैसे ही बच्चे शाला पहुँचे, सभी कल शुरू की गई गतिविधियों में पुनः जुट गए। सफाई करने का समय आया ही था कि कोई मेहमान आ पहुँचा। मैं उसे लेकर व्यस्त थी, इधर वॉरेन और हेलेन ने सफाई करवा डाली, समूह के लिए खेल की योजना बनाई, खेल शुरू करवाए और समय समाप्त होने पर पढ़ाई-लिखाई के काम भी शुरू करवा डाले। बच्चों ने आगामी बीस मिनट तक अपना काम शान्ति से किया। मार्था ने पूरे आत्मविश्वास के साथ प्राथमिक समूह के साथ पठन कार्य शुरू किया। नए सत्र के तीसरे दिन यह सब आश्चर्यजनक लगा। यह स्पष्ट था कि बच्चों ने पिछले साल जो सीखा था, वे उसका भरपूर उपयोग कर रहे थे।

इस सबका काफी श्रेय श्रीमती मान को जाता है। वे गर्मी की छुट्टियों में इच्छुक लड़कों को इकट्ठा कर तैरने ले जाती रहीं। हिल बच्चों को गर्मी बिताने आने वाले परिवारों के बच्चों में अच्छे दोस्त मिले। श्री प्रिन्लैक ने झरना रोककर पानी भर लिया ताकि उनके बच्चों को तैरने की जगह मिले। एक और बात है जो महत्वपूर्ण है। मैंने चार बड़े लड़कों का आत्म-सम्मान बढ़ाने में काफी मेहनत लगाई है। उनके काम में इस कारण क्रमशः काफी सुधार हुआ है। पिछले बसन्त वे इतने उत्साहित हुए कि अगले साल हाई स्कूल जाने की बात उन्हें असम्भव नहीं लग रही है। वे लगातार ऐसे सवाल पूछकर इस साल की पूर्वानुभूति करते रहे: "क्या आप कुछ लेखन अभ्यास देंगी ताकि हमारी लिखावट सुधरे?" "क्या आप हमें वर्तनी के अभ्यास के लिए कुछ अतिरिक्त समय देंगी?" "हमें पढ़ाई करने के बेहतर तरीकों के बारे में बताइए ना?" ऐसे में क्या आश्चर्य कि वे काम शुरू करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

बुधवार, 13 सितम्बर

चित्रकारी करते नन्हे बच्चों के साथ एण्ड्रयू को देखना मुझे सच में अच्छा लगता है। वह उनके हाथों पर लगे रंग के धब्बे पोंछता है और उन्हें कोमल, धीमे स्वर में अपने कपड़ों का ख़्याल रखने को कहता है। वह उनके एप्रन (apron) बाँधता है और उतारने के बाद उन्हें तह करके रखना सिखाता है।

हेलेन और एलिस ने मेरी खूब मदद की है। वे नन्ही लड़कियों को सीना और सुई में खुद धागा पिरोना और गाँठ लगाना सिखा रही हैं। वर्ना तो एक नन्ही माँ ही बन गई है; वह पढ़ाती है, सलाह देती है और उनकी रक्षा करती है।

काउंटी पुस्तकालय के प्रभारी तब आए जब हम गा रहे थे। जब बड़े बच्चे अपनी किताबें चुनने लगे, हेलेन और मार्था ने नन्हों को व्यस्त रखने के लिए अन्ताक्षरी खिलवाई। बड़े बच्चे अपनी-अपनी किताबें चुनने के बाद कोई छायादार कोना खोज अपनी दुनिया में खो गए। यह पूरा दृश्य इतना शान्त व सौम्य था कि उसे छेड़ना मुझे अच्छा नहीं लगा, सो कला का पाठ मैंने मुल्तवी कर दिया।

शुक्रवार, 15 सितम्बर

चूँकि बच्चे आजकल ताज़ा घटनाओं में बेहद रुचि ले रहे हैं, मुझे लगा कि मुझे सामाजिक अध्ययन कक्षाओं में उन्हें यह सिखाना चाहिए कि जो कुछ वे पढ़ते या सुनते हैं उसका मूल्यांकन कैसे किया जाए। वे जो कुछ अखबारों में पढ़ते हैं या रेडियो पर सुनते हैं, उनमें उस सबको सच मान लेने की प्रवृत्ति है। आज काफी देर हमने पोलिश कॉरिडॉर (Polish Corridor) की समस्या पर बात की।

आज की बड़ी घटना थी सैंडबॉक्स यानी रेत का डिब्बा। लड़कों ने खेलघर के पास कल गड्ढा तैयार कर उसमें एक बड़ा खोखा लगा दिया था। आज उन्होंने उसमें वह रेत भर दी जो हम समुद्र तट के भ्रमण के समय लेते आए थे जब नन्हे बच्चे साथ नहीं जा सके थे। छोटे बच्चे बेसब्री से रेत में खेलने की अपनी बारी का इन्तज़ार करते रहे, क्योंकि सैंडबॉक्स इतना बड़ा नहीं है कि सब बच्चे एक साथ उसमें खेल सकें।

सोमवार, 18 सितम्बर

खेलघर का रंग आज पूरी तरह सूख चुका था। प्राथमिक बच्चों ने उसे सलीके

से सजाया और खुशी-खुशी खेले। जिस समय शारीरिक शिक्षा का पीरियड शुरू हुआ, उन्होंने अपने अलाव में "केक" पकने रख दिया था, और क्योंकि उसे जलने नहीं छोड़ा जा सकता था, नन्हे बच्चे वहीं खेलते रहे। अपने नाटकीय खेलों से उन्होंने बहुत कुछ सीखा है। उनका शब्द ज्ञान बढ़ा है, वे ज़्यादा आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बने हैं, और उनकी कल्पनाशीलता में इज़ाफा हुआ है। उन्हें झिझक की दीवारें बनाने का मौका ही नहीं मिला है। हमारे खेलघर का मूल्य उसकी वास्तविक लागत से कई गुना है। समूह की यूरोप की स्थिति में रुचि है। हम स्कूल प्रारम्भ होने से पहले हर दिन रेडियो पर खबरें सुनते हैं और तब दोपहर के घण्टे में सुने हुए पर चर्चा करते हैं।

मंगलवार, 19 सितम्बर

आदतें बनने में लम्बा समय लगता है और प्रतीत यह होता है कि वे पक्की हुई हैं या नहीं इसकी सुनिश्चितता कभी नहीं होती। हमें लगातार जाँचते रहना पड़ता है। छेड़छाड़ करने और समय बर्बाद करने की कुछ वृत्तियाँ नज़र आने लगी हैं। ये हद से आगे बढ़ें उससे पहले ही विशेषाधिकारों पर लगाम कसनी होगी। आज मज़ाक ही मज़ाक में पर्ल ने वर्ना का गणित का पन्ना फाड़ डाला जो वर्ना ने बड़ी सावधानी से सुन्दर अक्षरों में लिखा था। पर्ल ने सोचा कि वर्ना को अपना काम फिर से करते देखना एक बढ़िया मज़ाक था। यह ओछी वृत्ति पर्ल में कभी-कभार सिर उठाती रहती है।

आज हेलेन भी अपनी एक पुरानी आदत पर लौट आई। दूसरों के साथ हुए हादसों का उसने इतना सुख लिया कि सब घबरा उठे। दोपहर को खेल के दौरान थॉमस ने हेलेन की ओर गेंद फेंकी, पर वह उसे पकड़ न पाई। थॉमस हेलेन को चिढ़ाने से बाज़ नहीं आया। उसने कहा, "तुम तो खेल में उस्ताद हो, फिर क्यों नहीं पकड़ सकीं!" इस पर हेलेन ने गेंद पलटकर थॉमस की ओर कुछ यों फेंकी कि अगर वह झुका न होता तो उसे ज़ोर से लगती। थॉमस बिना नाराज़ हुए हँसा और बोला, "अरे भई, मार डालने की तो ज़रूरत नहीं है।" हेलेन यह बड़बड़ाती चली गई कि वह उसके दाँत तोड़ देगी। दूसरे बच्चों ने खेल जारी रखा और मुझे लगा कि बात खत्म हो गई है और सब झगड़ा भूल चुके हैं। पर दोपहर को जब मैं छोटे बच्चों के साथ काम कर रही थी और बड़े खुद बाहर पढ़ रहे थे तो हेलेन ने थॉमस से खूब झगड़ा किया। मुझे कुछ पता चलता इससे पहले ही वह

घर को निकल गई। किसी बच्चे ने बीच में हस्तक्षेप नहीं किया क्योंकि उनका कहना था, "अगर उसका मिज़ाज इतना गर्म है तो वह घर में ही ठीक है।" मैंने थॉमस को बुलाया और बाहर पढ़ाई करने का उसका विशेषाधिकार उस सप्ताह के लिए वापस ले लिया। शेष बच्चों का मिज़ाज अच्छा था। उन्होंने मुझे समूचे घटनाक्रम का सन्तुलित ब्यौरा दिया और उनके बयानों में साम्य था। बच्चों की राय थी कि "वे दोनों गर्म मिज़ाज के हैं और खूब शान बघारते हैं।" मामला कुछ हास्यास्पद-सा था, पर इससे अब तक के शान्त वातावरण का रिकॉर्ड गड़बड़ा गया।

हम लोग हर वर्ष क्रिसमस के समय विभिन्न देशों में क्रिसमस त्यौहार की नाट्य प्रस्तुति करते रहे हैं: जर्मनी, फ्रांस और इंग्लैण्ड। इस साल श्रीमती रैमसे ने वादा किया है कि वे हमें क्रिसमस की एक कथा के रूसी रूप को प्रस्तुत करने में मदद करेंगी। आज उन्होंने वह कथा मुझे सुनाई और वह सुन्दर है। उसे नाटक में रूपान्तरित करने से समूह के सभी बच्चों को उसमें भाग लेने का मौका मिलेगा, खासकर बड़े लड़कों को। कथा में नाटकीय गुण हैं, पृष्ठभूमि के लिए सुन्दर रूसी दृश्य बनाने के अवसर मिलेंगे और हम रूसी क्रिसमस संगीत को भी पिरो सकेंगे।

बुधवार, 20 सितम्बर

आज का दिन कल के विपरीत रहा। मैं जब छोटे बच्चों को प्रकृति अध्ययन के लिए घुमाने ले गई तो वॉरेन ने स्कूल की ज़िम्मेदारी सम्हाली। बच्चों ने कल की घटना के बावजूद मुझे उन पर भरोसा जताते देख राहत की साँस ली। हेलेन और थॉमस दोनों ने वादा किया कि वे स्वयं को काबू में रखेंगे।

भ्रमण के दौरान रिचर्ड को हरे रंग का एक झींगुर मिला। हमें उसे "बोलते" सुनने और उसके स्पर्शकों की गुदगुदी को महसूस करने में बड़ा मज़ा आया। रिचर्ड और क्लैरेंस, जो पहले बड़े बेजान से थे, अब काफी जीवन्त लगने लगे हैं। आइरीन और सैली के साथ खेलना उनके लिए अच्छा रहा है। फ्लोरेंस और रिचर्ड रास्ते भर समूह का ध्यान उन खूबसूरत वस्तुओं की ओर आकर्षित करते रहे जो उन्हें नज़र आईं – एक नन्हा मेपल वृक्ष, गद्दीदार और चमकीली हरी काई – और वे इन्हीं शब्दों में इनका वर्णन भी करते जा रहे थे। लौटकर हमने एक टेरेरियम (terrarium) बनाया, यानी ज़मीन पर उगने वाली वस्तुओं को

पारदर्शी काँच से बने जार में प्रदर्शित किया। उसे सील बन्द करते ही बच्चों ने जानना चाहा कि उसे कैसे सींचेंगे। मैंने कहा कि हम कल तक रुकेंगे और शायद तब वे खुद ही मुझे बता सकेंगे। पर हमें ज़्यादा देर रुकना ही नहीं पड़ा। दोपहर को जार के ऊपरी भाग में ओस की जमावट नज़र आने लगी। रिचर्ड बोला, "मुझे पता चल गया। अन्दर खुद ब खुद पानी बरसेगा।"

कहानी कहने के पीरियड में छोटे बच्चों के बीच जाकर मैंने घोषणा की, "मुझे एक कहानी पता है।" वे सब चीखे, "तो हमें सुनाइए।" सो मैंने उन्हें "चूहा और सॉसेज" (चूहा और कबाब) कहानी सुनाई। कहानी खत्म होने पर मैंने पूछा, "अब बताओ कि कौन-कौन कहानी जानता है?" सैली ने "तीन सूअर" कहानी खूब रस लेते हुए सुनाई और नन्हे श्रोताओं को बाँधे रखा। फ्लोरेंस ने भी "शेर और चूहा" वाली कथा बखूबी सुनाई। आइरीन ने रूसी लोक कथाओं वाली पुस्तक में पढ़ी एक रूसी कहानी सुनाई। इन बच्चों ने कहानी कहना बखूबी सीख लिया है।

गुरुवार, 21 सितम्बर

आज तीन बजे काम बन्द कर हमने राष्ट्रपति रूज़वेल्ट को अमरीकी कांग्रेस के समक्ष "प्रतिरोध कानून" (Embargo Act) पर वक्तव्य देते सुना। मुझे आशंका थी कि शायद भाषण बच्चों को बेहद कठिन लगे, पर वे ध्यान से सुनते रहे। डेनियल मेज़ पर रखी अपनी चीज़ों से खेलता रहा और एल्बर्ट ने फुसफुसाकर कुछ दूसरा करने की अनुमति चाही क्योंकि उसे भाषण समझ नहीं आ रहा था। वॉरेन और हेलेन छुट्टी के बाद भी बैठे रहे ताकि पूरा भाषण सुन सकें। नन्हों ने खेलघर में खेलने की अपनी-अपनी कहानियाँ पूरी कर डालीं। प्राथमिक समूह के बड़े बच्चे बड़ी अच्छी मौलिक कहानियाँ लिखते हैं। एरिक को अब भी कुछ दिक्कत होती है। आइरीन, एलिज़ाबेथ और फ्लोरेंस नौ-दस वाक्यों की कहानियाँ लिखती हैं।

शुक्रवार, 29 सितम्बर

यह व्यस्त और फलदायी माह रहा है। मैं सभी बच्चों के घर जा सकी हूँ और अभ्यास के पीरियड में प्रत्येक बड़े बच्चे से व्यक्तिगत बातचीत कर पाई हूँ। बच्चों और उनके माता-पिता की सहयोग की वृत्ति पर मैंने खास तौर से गौर

किया है। बच्चों ने अपनी कॉपियों के विभिन्न भागों को छोटे-छोटे टैब लगाकर अलग-अलग दर्शाया है। फिलहाल उनकी कॉपियों में निम्नोक्त भाग हैं:

1. जो काम मुझे करने हैं
2. मेरी खास आवश्यकताएँ
   (क) लेखन में मेरी गलतियाँ
   (ख) बोलने में मेरी गलतियाँ
   (ग) मेरी वर्तनी की भूलें
   (घ) मेरी गणित सम्बन्धी समस्याएँ
   (च) मेरी पठन सम्बन्धी समस्याएँ
   (छ) मुझे जो स्वस्थ आदतें डालनी चाहिए
   (ज) स्वास्थ्य सम्बन्धी जिन कमियों को मुझे सुधारना है
   (झ) सफाई की दैनिक जाँच सूची
   (ट) मैं इस वर्ष अपने आप में कैसे सुधार लाना चाहती/चाहता हूँ
3. मेरी खास उपलब्धियाँ
   (क) मैंने जो पुस्तकें पढ़ीं
   (ख) कविताएँ जो मुझे पसन्द हैं
   (ग) मैंने जो कविताएँ और कहानियाँ लिखीं
   (घ) मैंने जो रपटें बनाई हैं
   (च) जिन समितियों में मैंने सेवाएँ दीं
   (छ) जिन पदों पर मैं रही/रहा
   (ज) मैंने जो चीज़ें बनाईं
   (झ) जो काम मैं खुद कर पाई/पाया
   (ट) मैं जो करना चाहती/चाहता हूँ
4. सामाजिक अध्ययन
5. विज्ञान
6. स्वास्थ्य
7. ताज़ा घटनाएँ
8. 4-एच क्लब के काम

हर नया वर्ष हमें जीवन जीने की एक अधिक ऊँची पायदान पर ले जाता है। इस वर्ष आए मेहमानों ने शाला कक्ष और बच्चों की साफ-सफाई पर टिप्पणियाँ कीं। बच्चों में एक-दूसरे के प्रति और अपने परिवारों के प्रति सम्मान की भावना बढ़ी है। थॉमस और उसकी सौतेली माँ के बीच रिश्ते सुधरे हैं। हेलेन की बहनों को उसकी खूबियाँ नज़र आने लगी हैं। शायद हेलेन अब खुद भी यह सीख ले कि हर बार अपनी बात को बलपूर्वक रेखांकित करने की ज़रूरत नहीं है। बच्चों में सफाई जैसे कामों को आपस में बाँट लेने की तथा स्वशासन को चलाने के लिए आपसी तालमेल व समझौते करने की वृत्ति नज़र आती है। साथ ही उनमें मूल्यों के प्रति सम्मान भी जग रहा है, जिसे हमारे समूह के गरीब बच्चों के प्रति उनके नज़रिए में साफ देखा जा सकता है। उनके काम का स्तर पहले से बहुत ऊँचा उठा है।

बच्चों को लोक कथाओं, गीत-संगीत व नृत्य को सीखने-जानने के तमाम अवसर मिले हैं, जो प्रत्येक बच्चे की विरासत का हिस्सा होते हैं। उन्हें कहानियाँ सुनाने और उन्हें नाटकों के रूप में प्रस्तुत करने के अवसर मिले हैं जिससे उनकी झिझक खुली है और भाषा पर उनकी पकड़ गहराई है। चित्रकला, मिट्टी से खिलौने बनाना, स्केच बनाना और कविताएँ-कहानियाँ लिखना उनकी अभिव्यक्ति के अन्य माध्यम बने। उनका लेखन ईमानदार बना है और अब वे जो जानते या महसूस करते हैं उसे बखूबी लिख सकते हैं। दूसरों के लेखन में उनकी रुचि लगातार बढ़ी है। हमें अपना पुस्तकालय का पीरियड अच्छा लगता है जिसमें हम एक-दूसरे को उन किताबों के बारे में अनौपचारिक तरीके से बताते हैं जिन्हें हम उस वक्त पढ़ रहे होते हैं। बच्चे पुस्तकों को चुनने में उच्च कोटि की अभिरुचि दर्शा रहे हैं। इस पर लाइब्रेरियन ने भी टिप्पणी की थी। पिछली बार वे यहाँ आई थीं।

दुनिया और हमारे साथ उसके रिश्ते में उनकी रुचि बढ़ रही है।

इस माह हमने समस्याओं का भी सामना किया। मैंने उन्हें एक नई दृष्टि से देखना सीखा है। मैंने बच्चों के साथ ये जितने भी वर्ष बिताए हैं, मैंने पाया है कि हमेशा नई-नई समस्याएँ सिर उठाती रहती हैं और लगता है ऐसी समस्याएँ हमेशा ही तब तक आती रहेंगी जब तक लोग साथ-साथ रहेंगे। हमें इन समस्याओं से परेशान नहीं होना चाहिए, उन्हें असुविधाजनक नहीं मानना

चाहिए, बल्कि उनका सामना कर उनके समाधान तलाशने चाहिए। इस दृष्टिकोण को अपनाने पर हम बच्चों को टोकना, उन्हें दोष देना बन्द कर देंगे और उनके साथ मिल-जुलकर समस्या का मूल कारण तलाशेंगे और समाधान की दिशा में काम करेंगे। बच्चे भी इस बीच यह पहचानने लगे हैं कि जब कभी मुझे प्रत्यक्ष नियंत्रण करना होता है तो मैं ऐसा सिर्फ अपनी सत्ता या धौंस जमाने के लिए नहीं करती, बल्कि समूचे समूह के हित में करती हूँ, और वे भी मेरे साथ सहयोग करते हैं।

सोमवार, 2 अक्तूबर

आज दोपहर राजकीय कृषि प्रयोग स्टेशन के उद्यान विशेषज्ञ श्री निसले माता-पिताओं, कुछ नौजवानों और स्कूली बच्चों को सब्ज़ियों के भण्डारण के बारे में बताने आए। इस नमी भरे दिन हम हिल परिवार के घर उनके अलाव के सामने घण्टे भर से भी ज़्यादा बैठे और सब्ज़ियों को रसोई घर या तहखाने (cellar) में खोखों व पीपों में सहेजकर रखने के गुर सीखते रहे। इसके बाद हम बाहर गए और श्री निसले ने खुले गड्ढे के लिए एक सही कोना चुना और हमें समझाया कि उसे कैसे खोदा जाए ताकि सर्दी भर उसमें सब्ज़ियाँ ताज़ा रहें। कोल परिवार, मैथ्यू परिवार और मान परिवार हाल ही में शहर से आकर खेती करने लगे हैं, सो उन्होंने सीखने की उत्सुकता में कई सवाल पूछे। बच्चों ने भी प्रश्न पूछे और चर्चा में योगदान किया। बच्चों और वयस्कों के उत्सुक-जिज्ञासु चेहरे देख, उन्हें साथ-साथ सीखता देख मुझे बेहद रोमांच हुआ। एक ऐसे समूह का हिस्सा बनना मुझे सच में अच्छा लगा जो अपने सदस्यों के बेहतर जीवन की योजना बनाने की दिशा में एक छोटी-सी पहल कर रहा था।

गुरुवार, 5 अक्तूबर

आज सुबह जब मैं छोटे बच्चों को प्रकृति अध्ययन के वास्ते बाहर ले गई तो बड़े बच्चों ने चालीस मिनट तक स्वयं काम किया। जब शारीरिक शिक्षा के पीरियड का समय आया तो एण्ड्रयू ने, जो अध्यक्ष है, कुछ समय खेल योजना बनाने में समूह की मदद की। इस बीच कुछ बच्चे अपने लंच में से फल निकाल उन्हें खाते रहे। तब एण्ड्रयू ने उन्हें खेलने की छूट दी और स्वयं खेल की निगहबानी की, और खेल समय खत्म होने पर सबको काम करने वापस ले

आया। इस बीच मिस एवरेट आ पहुँचीं। एण्ड्रयू ने उन्हें हमारे अखबार का ताज़ा अंक पढ़ने को पकड़ाया और उन्हें कहा कि वे आराम से बैठें और कि मैं कुछ ही देर में लौट आऊँगी। अखबार की आड़ से मिस एवरेट कक्षा में चल रही गतिविधियाँ देखती रहीं। हमारी भरसक कोशिशों के बावजूद जब भी गड़बड़ होती है तो उसके लिए मैं और मिस एवरेट एक जुमले का प्रयोग करते हैं। हम कहते हैं, "लोकतंत्र खड़खड़ाया।" लौटने पर मुझे अपनी मेज़ पर उनकी लिखी एक पंक्ति मिली। लिखा था, "आज लोकतंत्र नहीं खड़खड़ाया!"

लोकतांत्रिक नियंत्रण केवल उसी स्थिति में आ सकता है जिसमें बच्चों को अपनी समस्याओं के समाधान स्वयं खोजने की आज़ादी हो। बाह्य कृत्यों को करने की आज़ादी से इसमें मदद मिली है, पर मैंने बड़ी मेहनत से यह कोशिश भी की है कि इस आज़ादी को अपने आप में एक लक्ष्य न बनने दिया जाए क्योंकि तब यह आज़ादी नहीं रहती बल्कि व्यक्तिगत मनमर्ज़ी की गुलामी में तब्दील हो जाती है। पर जिस तरह का स्वानुशासन ये बच्चे दर्शा रहे हैं, उसने उन्हें बढ़ने, विकसित होने के लिए आज़ाद कर दिया है।

लोकतंत्र दूसरे अर्थों में भी नहीं खड़खड़ा रहा। इस साल बच्चे अपनी क्लब बैठकें पूरी तरह खुद संचालित कर रहे हैं। पिछले सालों के दौरान मुझे हमेशा सचिव को याद दिलाना पड़ता था कि वह बैठक की गतिविधि को लिख डाले। अब समूह के दबाव के कारण ये सूचनाएँ नियमित रूप से दर्ज कर दी जाती हैं। आज की बैठक में चर्चा के वास्ते कई मसले थे। अपने कोष का हिसाब-किताब देख लेने के बाद उन्होंने निर्णय लिया कि नए पर्दे खरीदने से पहले वे कुछ समय इन्तज़ार करेंगे। उन्होंने दोपहर के खेल की चर्चा भी की और तय किया कि खेल के दौरान जो कोई दूसरों का मज़ा खराब करे उसे समूह से निकलने को कहा जाना चाहिए। अगर वह बाहर निकलने से इन्कार कर दे या दूसरों को सताता रहे तो कुछ बच्चों की समिति सलाह के लिए मेरे पास आएगी। बैठक के अन्त में किसी को याद आया कि नए खेलों और नई टीमों का चयन अब तक नहीं हुआ है। यह रोचक था। पिछले सालों में नई टीमें और नए खेल चुनना ही सबसे महत्वपूर्ण मसला हुआ करता था जिसे सबसे पहले उठाया जाता था। तब दूसरे मुद्दों को घसीटकर लाया जाता था, अक्सर सिर्फ इसलिए ताकि चर्चा करने के लिए कोई मसला हो। क्रमशः बच्चे उन मसलों पर

बात करने लगे हैं जिनके बारे में वे सच में कुछ करना चाहते हैं। और अब हाल यह है कि वे महत्वपूर्ण मसलों पर पहले बात करते हैं और सामान्य मसलों को अन्त के लिए छोड़ देते हैं।

घर लौटते समय मैं इस सब पर सोचती रही। आजकल लोकतंत्र संरक्षण पर बड़ी बातें सुनाई पड़ती हैं। इसका मतलब क्या है और हम इस दिशा में क्या और कैसे कर सकते हैं? मुझे लगता है कि लोकतंत्र के फायदे और उसकी ज़िम्मेदारियों के प्रति पूर्णतः सचेत होना हो, उसकी चाहत जगानी हो, तो बच्चों को शाला में लोकतांत्रिक जीवन जीने का अभ्यास करने देना होगा। पर सिर्फ इतना करना भर काफी नहीं होगा। क्योंकि शाला का जीवन समूचे जीवन का केवल एक हिस्सा मात्र है, सो हमें समुदाय के लोकतांत्रिक जीवन में भी उन्हें उस स्तर की हिस्सेदारी करने देनी होगी जितनी बच्चों की परिपक्वता हो। परन्तु अगर हम केवल उपरोक्त दो अभ्यास ही करते रहे तो हम लोकतंत्र की संकीर्ण समझ तक ही पहुँच सकेंगे। आज हम एक परस्पर निर्भर दुनिया में जी रहे हैं जिसमें यह निर्भरता बढ़ती जा रही है। अतः बच्चों को स्वयं को इस दुनिया में अपने स्थान व काल के सन्दर्भ में समझना होगा।

इस निष्कर्ष के सन्दर्भ में जब मैं पिछले तीन सालों के अपने अनुभव को देखती हूँ तो लगता है कि एक क्षेत्र बच्चों के अनुभव से छूट रहा है। उनके मानस में विभिन्न युगों में मानव के क्रमिक विकास की कोई संयोजित छवि नहीं है। उन्हें अपने आपको देश व काल में अभिमुख करना ज़रूरी है।

स्कूल के प्रारम्भिक सप्ताहों में सामाजिक अध्ययन के पीरियड का उपयोग कक्षा को ठीक-ठाक करने में लगाना मुझे एक अच्छी नीति लगती है। इससे हमें जमने का समय मिलता है और सत्र के प्रारम्भ में आने वाली कठिनाइयों को भी हम दूर कर पाते हैं। साथ ही मुझे बच्चों, उनकी रुचियों व उनकी आवश्यकताओं का और अध्ययन करने का अवसर भी मिल जाता है। सामाजिक अध्ययन तथा इसी तरह अन्य विषयों के दौरान हम शाला में जो कुछ करें, उसे उन समस्याओं से उपजना चाहिए जो बच्चों के रोज़मर्रा के जीवन के अनुभवों से निकलती हों। इस साल इनकी रुचि काफी हद तक युद्ध में है। हम इतिहास में पीछे जाकर इसके कुछ पक्षों को समझने की चेष्टा करते रहे हैं, ठीक उसी तरह जैसे हम ताज़ा घटनाओं को समझने के लिए हमेशा इतिहास का उपयोग करते रहे हैं।

उनके सवालों को सुनते समय मुझे लगता है कि मुझे उन प्रश्नों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए जो हमें अतीत में ले जाएँ ताकि बच्चे स्वयं को काल में अभिमुख कर सकें।

सोमवार, 16 अक्तूबर

आज नन्हे बच्चे पतझड़ का अध्ययन करने सैर पर निकले। हम सड़क पर मुड़े ही थे कि वे कहने लगे कि सूरज की किरणें पत्तों को कैसे सुन्दर ढंग से चमका देती हैं, और यह भी कि सूरज पत्तों का "खनन" करता है। रिचर्ड ने पूछा, "आखिर पत्तियाँ पेड़ से अलग क्यों हो जाती हैं?" हम सड़क के किनारे बैठ गए और मैंने बच्चों को समझाने की कोशिश की कि पेड़ सर्दियों की तैयारी किस प्रकार करते हैं। हमने टहनियों को गौर से देखा, और हमने देखा कि पत्तों के झड़ने से बने ज़ख्म अपने आप ठीक हो जाते हैं। सभी बच्चों ने कई ऐसे पेड़ों को पहचानना सीखा जिनसे वे पहले अपरिचित थे। इन बच्चों को चीज़ों को सूँघना पसन्द है। उन्होंने भूर्ज और सैसाफरैस की जड़ों को सूँघा और उन्हें इनकी गन्ध इतनी अच्छी लगी कि वे जो कुछ भी नज़र आया उसे ही सूँघने लगे। जब भी वे सैर पर निकलते हैं तो अपनी सभी इन्द्रियों का उपयोग करते हैं। उनका ध्यान वैसे तो पेड़ों पर था पर उनकी नज़र बीजों पर भी पड़ रही थी। शुक्रवार को जब हम अपनी प्रकृति अध्ययन की कहानियों की कॉपियों को तैयार कर रहे थे तो लगा था कि वे लगभग तैयार हैं। आज सैर से लौटने के बाद बच्चों को लगा कि उन्हें एक पन्ना रंगीन पत्तियों पर भी जोड़ना चाहिए। आर्थर बोला, "मेरी कहानी का शीर्षक होगा, 'ये हैं कुछ सुन्दर पत्तियाँ'।" उसने मुझसे कहा कि मैं शीर्षक को बोर्ड पर लिख दूँ ताकि वह उसे लिखने का अभ्यास कर सके। इन बच्चों को लिखना सीखना ज़रा भी कठिन नहीं लगता। लिखने के पीछे उनका एक ठोस मकसद जो है।

मंगलवार, 17 अक्तूबर

इस सप्ताह के *करेन्ट इवेन्ट्स* के अंक में एक लेख था, "हमारी आज़ाद प्रेस ने जन्मदिन मनाया।" अपनी चर्चा में हम लेख से भटक गए क्योंकि कई रोचक सवाल उठ खड़े हुए:

1. अमरीका में पहली आज़ाद प्रेस कैसे और कब स्थापित हुई?

2. पादरी ग्लोवर की प्रेस अमरीका में सेंसरशिप से क्यों नहीं बच सकी?
3. प्रेस को आज़ादी कैसे मिली?

हमने सेंसरशिप के अर्थ और मौजूदा युद्ध में उसके स्थान पर बात की। थॉमस ने सबको आगाह किया कि शेष सब सच भी हो पर कुछ बातें छोड़ दी जाएँ, तो भी वास्तविकता की एक भ्रामक छवि रची जा सकती है। तीसरे सवाल पर बातचीत करते समय हमने जाना कि संविधान के पहले संशोधन की घोषणा द्वारा प्रेस को आज़ादी मिली। कई दूसरे सवाल भी उठे। हमें संविधान की ज़रूरत क्यों पड़ी? 1791 से पहले हमारा संविधान क्यों नहीं था? क्रान्ति युद्ध से अमरीका को आज़ादी कैसे मिली? अमरीका जैसा छोटा-सा देश इंग्लैण्ड जैसे विशाल व सशक्त साम्राज्य के खिलाफ लड़ाई कैसे जीत सका?

आज एण्ड्रयू हमें छोड़ गया। उसके पिता ने अन्ततः वह खेत खरीद लिया जिसके लिए उन्होंने इतनी मशक्कत की थी। समूह को अपने अध्यक्ष को खोने का दुख था और मैं उस घुँघराले बालों वाले लड़के को खोने को लेकर तरह-तरह से अफसोस महसूस कर रही थी। उसे हमारे जैसे स्कूल में ही होना चाहिए जहाँ जिस तरह की योग्यता उसमें है उसकी कद्र हो।

इस वर्ष मैं बच्चों को काउंटी पुस्तकालय से वाकिफ करवाना चाहती हूँ। आज स्कूल के बाद मैं प्रथम समूह के बच्चों को काउंटी मुख्यालय ले गई ताकि वे शेष बच्चों के लिए किताबें ला सकें। फ्लोरेंस, एलिज़ाबेथ, एलिस और मे को किताबों के संग बड़ा अच्छा लगा। उनकी टिप्पणियाँ थीं, "एल्बर्ट को यह अच्छी लगेगी।" "नन्हों के लिए यह चित्रों वाली किताब सही होगी।" "इस किताब के शब्द एलेक्स के लिए पढ़ना आसान होंगे।" "बड़े बच्चे इस पुस्तक से संविधान के बारे में पढ़ सकेंगे।"

लौटते समय सूरज ढल चला था। बादलों का रंग लगातार बदल रहा था और पहाड़ बारी-बारी लाल व बैंजनी नज़र आने लगे थे। हमने इस नज़ारे के शब्द-चित्र बनाए। हम सबका समय खूब अच्छा गुज़रा! बच्चों की बातें मानो उफन रही थीं, जबकि साल भर पहले तक यही समूह बिल्कुल मौन रहता। थॉमस आज मदद करने की भावना से ओत-प्रोत था। उसका अहम् सच में बुलन्द है। आजकल वह हरेक चीज़ को अपने से ज़ोड़कर ही सोचता है। उसकी अपनी

ताज़ा छवि "पूरी तरह लापरवाह" किस्म की है, सो वह अपने बालों को कंघी तक नहीं करता। मुझे ये बातें तभी पता चलती हैं जब वह मदद करने वाले मूड में होता है, क्योंकि तब वह बातचीत करता है, अमूमन खुद के बारे में। इस सबके बावजूद उसकी हर नई मुद्रा के पीछे छिपे एक संवेदनशील और बुद्धिमान लड़के की झलक आप देख सकते हैं जिसका चेहरा सुन्दर है और जो वाकपटु है। आप उसे पसन्द करने पर मजबूर होते हैं।

बुधवार, 18 अक्तूबर

हमने सेंसरशिप पर कल वाली चर्चा जारी रखी। *करेन्ट इवेन्ट्स* में एक फ्रांसीसी अखबार का चित्र छपा है जिसके पृष्ठ पर एक हिस्सा काला किया हुआ है। इस काले स्थान पर लिखा हुआ है "सेंसर"। मैंने बच्चों से सवाल किया कि क्या उन्होंने कभी कोई अमरीकी अखबार देखा है जिसमें इस तरह के खाली स्थान हों? किसी बच्चे ने ऐसा अखबार कभी नहीं देखा था। "क्या इसका मतलब यह है कि हमारे अखबार सब कुछ छापते हैं?" मैंने पूछा। यों हम एक बार फिर "प्रोपगैण्डा" और "तथ्य" व "राय" में अन्तर पर बातचीत करने लगे। वॉरेन ने इस चर्चा में काफी योगदान किया। उसने सम्पादकीयों के बारे में बताया। उसने बताया कि अगर विभिन्न विषयों पर किसी अखबार का नज़रिया जानना हो तो सम्पादकीय पढ़े जा सकते हैं और उनके सन्दर्भ में लेखों को आँका जा सकता है। मैंने बच्चों से पूछा कि उनके घरों में कौन-कौन से अखबार आते हैं और वे उन्हें कैसे पढ़ते हैं। हमें पता चला कि:

8 परिवारों के पास सप्ताह में एक बार न्यू यॉर्क का *डेली न्यूज़* आता है।
1 परिवार के पास इतवार को *न्यू यॉर्क अमेरिकन* आता है।
2 परिवार इतवार को *न्यू यॉर्क टाइम्स* मँगवाते हैं।
2 परिवार इतवार को *न्यू यॉर्क हैराल्ड ट्रिब्यून* लेते हैं।
1 परिवार के पास *नेवार्क सण्डे कॉल* आता है।
सभी परिवार स्थानीय साप्ताहिक अखबार भी लेते हैं।

वॉरेन सबसे पहले मुखपृष्ठ की सुर्खियाँ और दाहिनी ओर छपने वाला स्तम्भ देखता है। एडवर्ड भी पहले सुर्खियाँ देखता है। एल्बर्ट सबसे पहले "हँसी-मज़ाक" वाली चीज़ें पढ़ता है और तब मुखपृष्ठ की खबरें पढ़ता है। समूह में

दस बच्चे सबसे पहले "हँसी-मज़ाक" पढ़ते हैं। पाँच बच्चे सिर्फ कार्टून पढ़ते हैं और यदि स्कूल के लिए अखबार से कुछ देखना-पढ़ना ज़रूरी ना हो तो और कुछ भी नहीं पढ़ते।

क्योंकि अब हमारा अध्ययन महत्वपूर्ण दिशा में बढ़ चला है, हमने दो सचिव चुने जो हमारी चर्चाओं को दर्ज कर सकें। वे दो अलग-अलग कॉपियों में नोट लिखेंगे ताकि भविष्य में उनसे मदद ली जा सके। हर दिन दो नए बच्चे सचिव की भूमिका निभाएँगे।

गुरुवार, 19 अक्तूबर

आज मैं सात अलग-अलग अखबार स्कूल में लाई, जो सब बुधवार, 18 अक्तूबर के थे। हमने बोर्ड पर एक सूची बनाई जिसमें यह दर्ज किया गया कि किस अखबार ने किस खबर को सबसे अधिक महत्व दिया था, और जल्दी ही साफ हो गया कि सबसे महत्वपूर्ण क्या है इस पर अखबारों में सहमति नहीं थी, न ही तथ्यों पर उनमें कोई सहमति थी। एल्बर्ट ने पूछा, "हर अखबार में तथ्य अलग-अलग क्यों हैं?" सचिवों ने सवाल दर्ज कर लिया क्योंकि इसका जवाब हम अब तक तलाश नहीं सके थे। बच्चों ने इस बात पर भी गौर किया कि सबसे महत्वपूर्ण खबर को दाहिनी ओर के स्तम्भ में छापा जाता है।

शुक्रवार, 20 अक्तूबर

जब हम महत्व के तौर पर दूसरी बड़ी खबरों की सूची बना चुके तो बच्चों ने कुछ बातों पर गौर किया। कौन सी खबर सबसे महत्वपूर्ण है इस पर अखबार सहमत नहीं होते हैं। एक अखबार में जिस खबर को सबसे महत्वपूर्ण बताया गया हो वह किसी दूसरे अखबार में दूसरा स्थान भी पा सकती है। स्थानीय खबरें महत्वपूर्ण होती हैं। युद्ध, जो समूची दुनिया को प्रभावित करता है, स्थानीय खबरों से भी अधिक महत्वपूर्ण है। सभी अखबारों में युद्ध से जुड़ी खबरों को सबसे ज़्यादा महत्व दिया गया था, परन्तु न्यू यॉर्क के दो अखबारों व फिलेडेल्फिया के अखबारों में स्थानीय खबरों को दूसरा स्थान मिला था। थॉमस ने टिप्पणी की, "लगी शर्त, अगर युद्ध न हो रहा होता तो ये अखबार स्थानीय खबरों को ही सबसे महत्वपूर्ण स्थान देते, क्योंकि अधिकांश लोगों की रुचि उसी जगह में होती है जहाँ वे रहते हों।"

रिचर्ड हमारे अजायबघर के लिए ईंट भट्टे से तीन ईंटें लाया है। उनमें से एक गीली मिट्टी की थी, दूसरी धूप में सुखाई हुई, और तीसरी जो पकाई गई थी। कल वह एक छोटा जंगली चूहा लाया था और उसने अपना सारा खाली वक्त उसके लिए एक पिंजरा बनाने में लगाया। स्कूल खत्म होने पर वह चूहे व पिंजरे को अपनी बाँह के नीचे दाब, सम्हालकर घर लेता गया ताकि शनि व इतवार को उसका ख्याल रख सके। छोटे बच्चों की अजायबघर में खूब रुचि है क्योंकि उनका अपना एक कोना है। वे काफी समय वहाँ चीज़ों को देखते बिताते हैं। काँच की शीशी में रखी स्टील की कतरनें और चुम्बक उन्हें मोहते हैं। फ्लोरेंस और क्लैरेंस ने आज चुम्बक को कमरे की हरेक वस्तु पर लगाकर देखा, अपने बालों पर भी। आर्थर दस मिनट तक चर्खे के बड़े पहिए को घुमाता रहा, और छोटे पहिए को घूमते हुए देखता रहा। बड़े लड़कों ने पिछले साल ही इसे बनाया था। तब उसने विस्तार से मुझे बताया कि वह काम कैसे करता है, मानो उसी ने चर्खे का आविष्कार किया हो।

आज थॉमस मेरे पास आया और बोला, "मिस वेबर, क्या आप हमारी क्लब बैठक में हमारे साथ बैठेंगी? हमें कुछ सलाह चाहिए।" बच्चे अध्यक्ष और सचिव के इर्द-गिर्द एक अनौपचारिक घेरे में बैठे थे। वॉरेन मेरे लिए एक कुर्सी लाया, उसने शिष्टता से मुझे बैठने को कहा और तब बड़ी कामकाजी शैली में समझाया कि वे एक हैलोईन (Halloween) पार्टी करना चाहते हैं जिसकी योजना बनाने में वे मेरी मदद चाहते थे। कार्यक्रम और नाश्ते की समितियाँ वे बना चुके थे। इन समितियों के अध्यक्ष के रूप में हेलेन व मार्था बैठक के बाद मेरे पास आईं और बोलीं कि मैं सोमवार को दोपहर का खाना उनके साथ खाऊँ और योजना बनाने में उनकी मदद करूँ। बच्चों को दोपहर के खाने के दौरान मीटिंग करना बेहद पसन्द आता है। इससे उन्हें लगता है मानो वे वयस्क और व्यवहार-कुशल हैं।

सोमवार, 23 अक्तूबर

आज सुबह स्कूल जाते समय मैं धरती की खूबसूरती से डर-सी गई। पहाड़ पार करने पर मैंने पाया कि छोटी-सी यह वादी प्रकाश और रंगों में डूबी है। आकाश भारी और काला और अशान्त था। आकाश की छाया दूर पहाड़ों पर पड़ रही थी और वे गहरे नीले दिख रहे थे। घाटी पर पड़ने वाली रोशनी मेरे पीछे से फूट-

फूटकर पड़ रही थी। मैं यह अनुभव बच्चों के साथ बाँटना चाहती थी। मैंने जो कुछ देखा था वह बच्चों को बताया और सुझाया कि हम सब टहलने जाएँ और साथ-साथ दृश्य का आनन्द लें। आज के लिए जो कार्यक्रम तय था उस पर चलना गुस्ताखी होती क्योंकि बाहर देखने-सीखने को इतना कुछ था, जो शायद सिर्फ आज ही तक रहने वाला था। चलते-चलते हम उस सब चीज़ों के बारे में बातें करते रहे जो हमें दिख रही थीं, दूर पहाड़ों के रंगों के बारे में, उन पर पड़ती बादलों की छाया के बारे में, सर्दियों में उगने वाले गेहूँ और जौ के चमकदार हरे खेतों के बारे में, आकाश में नज़र आ रहे नीले, स्लेटी और सफेद रंगों के अनन्त रूपों के बारे में, विभिन्न पेड़ों के रंगों के बारे में, इस मौसम में पेड़ों में नज़र आते खुलेपन के बारे में, झरनों के गहरे रंगों के बारे में। आर्थर कुछ देर मेरे साथ चल रहा था और एकटक आगे की ओर देख रहा था। "तुम देख क्या रहे हो, आर्थर?" मैंने पूछा। "आप ठीक ही कह रही थीं, मिस वेबर," उसने जवाब दिया, "पहाड़ सच में नीले हैं।"

लौटने पर हम दसेक मिनट सिर्फ बतियाते रहे। बातचीत आनन्दायक और ताज़गी भरी थी। वॉरेन उन कुछ चीज़ों की ओर ध्यान बँटाना चाहता था जो हमने देखी थीं। क्योंकि कई बच्चे ठीक यही करना चाहते थे, हमने सुबह का नियमित कार्यक्रम ताक पर रख दिया। हेलेन और मार्था ने चित्रकारी नहीं की। इसकी बजाय, सैर के समय जो कुछ रेखाचित्र उन्होंने बनाए थे उन्हें ही पूरा किया। मैं बच्चों को ठीक यही करने को प्रोत्साहित करती रही हूँ।

मंगलवार, 24 अक्तूबर

बच्चों ने कल जो कुछ देखा था उस पर कुछ बेहद सुन्दर कविताएँ उन्होंने लिखीं। उनमें जो सबसे अच्छी हैं वे हमारे अखबार में छपेंगी। बच्चे आजकल इतना कुछ लिखते हैं कि हम उसमें से चुनकर अपना स्तर बढ़ा सकते हैं।

बच्चों को अपने द्वारा रचे एक गीत की हैक्टोग्राफ की गई प्रतियाँ इतनी अच्छी लगीं कि अब वे और गीत रचना चाहते हैं और उन्हें एक पुस्तिका में संकलित कर क्रिसमस पर अपनी माताओं को भेंट करना चाहते हैं। आइरीन, एलिज़ाबेथ, फ्लोरेंस और सैली भी जिन कविताओं को याद कर रही हैं उनका एक संकलन अपनी माँओं के लिए बनाना चाहती हैं और उन्हें चित्रित करना चाहती हैं। नन्हों के कहानी वाले पीरियड में मैंने उन्हें "विवेकवान हान्स" और "बूबी" की

कहानियाँ सुनाईं। मेरी कहानी खत्म करने पर उन्होंने जानना चाहा कि "विवेकवान" का मतलब क्या होता है। जब मैंने अर्थ बताया तो सैली हँसकर बोली, "बूबी बड़ा समझदार था और विवेकवान हान्स कतई विवेकवान नहीं था।" सात वर्षीय सैली ने इन कहानियों में प्रयुक्त शब्दों के अर्थों को बखूबी पकड़ लिया था!

गुरुवार, 2 नवम्बर

बड़े बच्चे अखबारों के अध्ययन पर लौटकर खुश हुए। हमने मुख्य रास्ते को छोड़कर कई रोज़ यह जानने में लगाए कि विश्व युद्ध में जर्मनी ने क्या खोया और हिटलर जैसा कोई इन्सान जर्मन लोगों को क्योंकर आकर्षित कर सका। आज हमने अखबार देखे और उनमें सम्पादकीय तलाशे। बच्चों ने मुझे बताया कि किन अखबारों ने किन-किन विषयों पर सम्पादकीय छापे थे और मैंने बोर्ड पर उनकी सूची बनाई। तब हरेक बच्चे ने एक-एक सम्पादकीय और एक खबर चुनी ताकि वे उनकी तुलना करें और उनमें अन्तर तलाश सकें।

सोमवार, 6 नवम्बर

कल बच्चों को अखबार की सामग्री पढ़ने में इतनी परेशानी हुई थी कि मैंने तय किया कि मैं ही उन्हें पढ़ कर सुना दूँ। क्योंकि मकसद तो यही है कि वे एक सम्पादकीय और एक लेख में अन्तर समझ सकें। पर अगर पठन सामग्री बेहद कठिन हो तो वे अपना उद्देश्य ही भूल सकते हैं। मैंने *न्यू यॉर्क टाइम्स* में रूस व तुर्की के बीच असफल रही प्रस्तावित सन्धि के बारे में छपे लेख को पढ़ा। तब मैंने उसी विषय पर सम्पादकीय को भी पढ़ा और दोनों की तर्ज़ में अन्तर साफ दिखाई देने लगा।

मंगलवार, 7 नवम्बर

मैंने *ईस्टन एक्सप्रेस* में रक्तदान करने वालों के बारे में एक लेख पढ़ा और तब इसी विषय पर लिखा सम्पादकीय भी पढ़ा और बच्चों ने तत्काल उनमें अन्तर को पकड़ लिया। वॉरेन को लगा कि स्कापा फ्लो (Scapa Flow) की घटना पर सभी अखबारों में छपी खबर पढ़ना रुचिकर होगा। बच्चे घटनाक्रम के वर्णन में अन्तर देख कौतुक से भर उठे। *न्यू यॉर्क टाइम्स* ने साधारण आकार के शब्दों में खबर को पृष्ठ के बीच में छापा था। खबर में सूचना के सभी स्रोतों का उल्लेख था, जैसे "नौसेना के अनुसार" या "जर्मन समाचार पत्र के अनुसार"। इधर *न्यू यॉर्क न्यूज़* ने इस खबर को सबसे महत्वपूर्ण खबर मानते हुए मुखपृष्ठ पर मोटे-मोटे अक्षरों में छापा था। तीसरे पृष्ठ पर उस खबर का लम्बा विवरण था जिसमें बताए गए स्रोत थे: "एक चश्मदीद ने कहा..." या "माना यह गया...।" लेख की भाषा इतनी नाटकीय थी कि बच्चों को लगा मानो समूचा स्कॉटलैण्ड या तो लड़ रहा था या आश्रय स्थलों में दुबकने के लिए भागा जा रहा था। जबकि *टाइम्स* में हवाई हमलों के बारे में एक ही पंक्ति थी और समाचार के शेष भाग का रिश्ता चेम्बरलेन की उस रपट से था जो उसने संसद में पेश की थी।

बुधवार, 8 नवम्बर

आज मैंने अन्य अखबारों में स्कापा फ्लो घटना से सम्बन्धित समाचार को पढ़ा और उनमें नज़र आ रहा अन्तर एक बार फिर से रेखांकित हुआ। बच्चों को तथ्यों और मतों के बीच अन्तर नज़र आने लगा है। *न्यू यॉर्क जर्नल अमेरिकन* में इस घटना पर कोई लेख नहीं था, पर एक सम्पादकीय ज़रूर था। सम्पादकीय में घटना के वर्णन से प्रारम्भ कर ब्रितानी नौसेना की कमज़ोरियों को रेखांकित किया गया था और सारा दोष रूज़वेल्ट पर थोपा गया था। थॉमस को इनमें कोई जुड़ाव नज़र नहीं आया और उसने कहा, "वह रूज़वेल्ट को नापसन्द करता है, है ना? लगता है कि वह स्कापा फ्लो की घटना की आड़ में उससे बदला ले रहा है।" तब हमने इस बात पर विचार किया कि कोई अच्छा अखबार अपने लेखों में क्या करने की कोशिश करता है। उसकी कोशिश यह रहती है कि तथ्यों को सही-सही सामने रखा जाए जिससे लोग एक सच्ची छवि बना सकें। ऐसा अखबार सूचनाओं के स्रोतों का उल्लेख करता है और भावनाओं के बदले तर्क पर बल देता है।

शुक्रवार, 10 नवम्बर

बच्चों के किसी समूह को खुद अपनी देखभाल करते देखना कितना सन्तोष देता है। लगता है मेरे ये बच्चे अपने रोज़मर्रा के अनुभवों से खुद को सिखा-पढ़ा रहे हैं। अपने इर्द-गिर्द जो चीज़ें वे देखते या सुनते हैं उनके बारे में उनकी जिज्ञासा बढ़ रही है। मार्था सम्भवतः सबसे ज़्यादा जिज्ञासु और सक्रिय है। वह

अपना रोज़ का काम जल्दी खत्म कर लेती है और तब काफी शोध या प्रयोग करती है, खूब कविताएँ लिखती है और फिर भी नन्हों को कहानी सुनाने का समय निकाल लेती है। ऐसा समय भी आता है जब वह बेवकूफी भरी हरकतें करती है और खिझाती है। अक्सर हम उस समय तक उस पर कोई ध्यान नहीं देते जब तक वह फितूर खत्म न हो जाए। उसे धीरे-धीरे यह समझ आने लगा है कि जब वह सहयोग और योगदान करती है तो लोग उस पर ज़्यादा ध्यान देते हैं।

एलिस और पर्ल में कुछ कलात्मक क्षमताएँ हैं। दोनों लड़कियाँ इस दिशा में कुछ इस प्रकार बढ़ रही हैं जिसकी मुझे कोई सम्भावना पहले नहीं दिखती थी। जब तक किसी बच्चे में निहित योग्यताओं को उजागर करने, उन्हें विकसित करने के बहुत सारे अवसर न उपलब्ध हों, तब तक पता भी नहीं चल पाता है कि उस बच्चे में किस-किस तरह की योग्यताएँ दबी पड़ी हैं। सभी प्रिन्लैक बच्चों में ऐसा कुछ खास तो है जिसे सहेजा जाना चाहिए। स्टैनली सुबह जब आता है तो कुछ शर्माता है, पर हमेशा मुस्कुराकर "मस्ते" कहता है। धीरे-धीरे वह कुछ खुलने लगता है और हरेक गतिविधि का आनन्द लेने लगता है। एलिज़ाबेथ फ्लोरेंस की अच्छी दोस्त है। फ्लोरेंस कहती है, "मुझे एलिज़ाबेथ पसन्द है, वह बड़ी अच्छी है।"

वॉल्टर डैमरॉश आज फिर से रेडियो पर था और हमने उसका कार्यक्रम सुना। मार्था इस बात से बेहद खुश हुई कि उसने बीथोवन की धुनें पहचान लीं, जिन्हें हमने पिछले साल गाया था। कई बच्चों ने उन गीतों को रेडियो पर सुना है जिन्हें हम स्कूल में गाते हैं।

सोमवार, 13 नवम्बर

हमने अखबारों का अध्ययन जारी रखा। खबरें कैसे एकत्रित की जाती हैं यह जानने के लिए हमने उनकी तारीखों को देखा। बच्चों को पता चला कि एपी, यूपी, आईएनएस जैसी समाचार एजेंसियाँ हैं जो उन छोटे अखबारों को भी विदेशों के समाचार उपलब्ध करवाती हैं जो खुद अपने संवाददाता यूरोप आदि नहीं भेज सकतीं। *न्यू यॉर्क टाइम्स* व *हैराल्ड ट्रिब्यून* में कई समाचारों के साथ "विशेष फोन द्वारा" या "विशेष केबल द्वारा" लिखा हुआ था। बच्चे यह समझ सके कि ऐसा केवल बड़े अखबार ही कर सकते हैं।

अब तक हमने लेखों व सम्पादकीयों में जितने अन्तर जाने थे उनको संक्षेप में दोहराया। एक अच्छा लेख सही तथ्य प्रस्तुत करता है, विश्वसनीय स्रोतों से सूचना लेता है, सभी पक्षों को सामने रखता है तथा समाचार को सनसनीखेज़ नहीं बनाता। एक अच्छा सम्पादकीय अखबार के सम्पादक का मत सामने रखता है, तथ्यों का सही उपयोग करता है और ओछापन नहीं दर्शाता। बच्चे अपने अखबार के लिए लेख व सम्पादकीय लिखने को अब तैयार हैं। अब तक वे जिस तरह स्कूल का अखबार निकालते रहे हैं, उससे बच्चों का असन्तोष दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है।

पठन के पीरियड के बाद मैंने समूह को वह रूसी क्रिसमस कथा सुनाई जो श्रीमती रेमसे ने हमारे लिए उपलब्ध करवाई थी। बच्चों को कहानी बेहद पसन्द आई और वे उसका नाट्य रूपान्तर करने को आतुर हैं।

लॉयड ने कहा कि वह अपनी सीट बदलना चाहता है। उसका कहना था कि वॉरेन और वह इतने अच्छे दोस्त हैं कि बातचीत का लालच बरबस ही होता है। उसे पता था कि अगर वह अपनी जगह बदलता है तो इससे उसकी इच्छाशक्ति मज़बूत होगी और उसका काम भी बेहतर होगा। समूह के बच्चे कुछ देर उसकी बात पर सहानुभूति से हँसे, तब कुछ स्थान बदले गए और लॉयड गम्भीरता से काम करने जुट गया।

मंगलवार, 14 नवम्बर

नाट्य रूपान्तर का पीरियड रोचक रहा। सभी बच्चे योगदान करने को आतुर रहते हैं और बड़े विश्वास से हिस्सा लेते हैं, पर लॉयड और डेनियल दोनों नए बच्चे अपवाद हैं। तीन साल पहले नाटकों की शुरुआत करते समय पुराने बच्चे जैसी बेवकूफी भरी हरकतें करते थे, ठीक वैसी ही हरकतें ये बच्चे भी कर रहे हैं। डेनियल ने आखिरकार चन्द पंक्तियों का योगदान किया, यद्यपि ऐसा करते समय उसका चेहरा लाल हो उठा था। दूसरे बच्चों ने सहानुभूति दर्शाई और उसे सहज करने की सभी सम्भव कोशिशें कीं। उन्होंने उसे दिशा देने के लिए उससे कई सवाल पूछे और अपनी ओर से कुछ जोड़ा भी।

शुक्रवार, 17 नवम्बर

हम मौजूदा घटनाओं के अध्ययन के साथ-साथ समाचार पत्रों का अध्ययन भी

जारी रखे हुए हैं। मार्था ने विल्सन के चौदह सूत्रीय कार्यक्रम पर एक रपट पेश की और उसका पक्का विश्वास था कि अगर इस कार्यक्रम पर पूरी तरह अमल किया जाता तो शायद आज हम युद्ध में न फँसे होते। उसने अपनी बातों के लिए तर्क दिए।

वॉल्टर डेमरॉश ने आज सरल व मिश्रित कठिन धुनों की चर्चा की। बच्चों को मिश्रित धुनों को सुन उन्हें पहचानने में बड़ा मज़ा आया।

सोमवार, 20 नवम्बर

बड़े समूह के बच्चे आज एक फिल्म देखने गए। फिल्म का नाम था "मिस्टर स्मिथ गोज़ टू वॉशिंगटन" (श्री स्मिथ वॉशिंगटन में)। उन्हें खूब मज़ा आया। मार्था तो वापस लौटने तक को तैयार न थी।

मंगलवार, 21 नवम्बर

कल रात जो फिल्म देखी थी, आज उस पर बात हुई। यह चर्चा भी हुई कि कोई प्रस्तावित बिल कानून कैसे बनता है, बिलों को पेश कैसे किया जाता है, संसदीय प्रक्रियाएँ कैसी होती हैं और उनमें बाधा कैसे डाली जाती है, बोलने व मत प्रकट करने की आज़ादी क्या है तथा प्रमुख अखबारों पर ताकतवर लोगों का नियत्रंण का क्या मतलब है। इन बच्चों के लिए अखबारों व सेंसरशिप ने नए अर्थ ले लिए हैं।

बुधवार, 22 नवम्बर

पिछले कुछ दिनों से नन्हे मुझे अचरज में डालने की कोई योजना बनाते रहे हैं। वे अपनी योजना को छुपाए रखने में सफल भी रहे हैं। आज उन्होंने मुझे कहानी वाले पीरियड में ख़ास तौर पर बुलाया। फ्लोरेंस ने घोषणा की, "मिस वेबर, आपके लिए जो नाटक तैयार किया गया है उसका नाम है *रिकैटी रैकेटी मुर्गा*। हम यह नाटक इसलिए कर रहे हैं क्योंकि हमें कहानियों का पीरियड बेहद पसन्द है।" इसके बाद जो प्रस्तुति उन्होंने दी उससे मैं इतनी खुश हुई कि लगभग मेरे आँसू ही निकल आए। उन्होंने मंचन को जिस भावना के साथ प्रकट किया काश मैं शब्दों में उसका बयान कर पाती। मार्था, जिसने इसका निर्देशन किया था, मंचन के दौरान मेरे पास ही बैठी थी। वह फुसफुसाई, "कुछ गलतियाँ हों तो उन

पर ध्यान न दीजिएगा, मिस वेबर। ये कुछ शर्मा और घबरा रहे हैं।" मेरा धन्यवाद पर्व (Thanksgiving) तो इस प्रस्तुति से धन्य हो गया।

सोमवार, 27 नवम्बर

बच्चों ने अपने अखबार को नया रूप देने पर विचार प्रारम्भ कर दिया है। आज हमने व्यावसायिक समाचार पत्रों को देख उन खण्डों की सूची बनाई जिनमें अखबार सामान्यतः विभाजित होते हैं। हमने वे हिस्से हटा दिए जो हमारे अखबार में शामिल नहीं हो सकते थे, जैसे वित्त सम्बन्धी पृष्ठ। तब हमने फिर से व्यावसायिक अखबारों को देख उनके नामों की उपयुक्तता पर ध्यान दिया। बच्चों ने गौर किया कि कुछ अखबारों के दो नाम हैं। वॉरेन को सम्पादकीय पृष्ठ के कोने में यह सूचना मिली कि *हैराल्ड ट्रिब्यून* किसी समय दो अखबारों के रूप में छपता था, पर बाद में दोनों मिला दिए गए। अखबारों के संयुक्त होने की तिथि भी दी गई थी। मैंने बच्चों से सवाल किया कि दोनों अखबारों की दृष्टि से उनका यों जुड़ जाना अच्छा क्यों रहा होगा। बच्चों ने आसानी से तार्किक उत्तर दिए, कि इससे उनकी पाठक संख्या बढ़ती है, उनके पास उपलब्ध राशि बढ़ती है, और वे अपने संवाददाताओं को अधिक मेहनताना दे सकते हैं और उनके उपकरण बेहतर हो सकते हैं।

आज क्लब बैठक के बाद जब मैं कमरे में घुसी तो मुझे सभी बच्चों ने कहा, "यह अब तक की सबसे अच्छी क्लब बैठक रही है।" बाद में वॉरेन ने बताया कि उन्होंने "मिस्टर स्मिथ गोज़ टू वॉशिंगटन" से काफी कुछ सीखा था।

मंगलवार, 28 नवम्बर

कितना व्यस्त दिन था! हमने वे सारे विभाग तय कर लिए थे जिनमें हम अपने अखबार को बाँटना चाहते थे और हमने प्रत्येक विभाग के लिए एक-एक सम्पादक चुना। बच्चों को लगा कि अगर उन्हें वास्तव में लोकतांत्रिक होना है तो उनका भी एक प्रतिनिधि स्टाफ में होना चाहिए और नन्हे बच्चों को भी अपने विभाग के लिए खुद अपना सम्पादक चुनना चाहिए। बाल पृष्ठ का सम्पादक फ्लोरेंस को चुना गया। इसके बाद संवाददाताओं को लिखने के लिए लेख बाँट दिए गए। लेख तैयार होने के बाद सम्बन्धित सम्पादक को सौंपे जाएँगे जो उन्हें स्वीकार या अस्वीकार कर सकेगा या फिर सुधार के सुझाव देगा। जब

शारीरिक शिक्षा का पीरियड आया तो बच्चों ने अपने लेख समाप्त करने के लिए समय चाहा क्योंकि वे अपने विचारों के ताने-बाने को तोड़ना नहीं चाहते थे। पर ग्यारह बजे वे खेलने को उठ गए क्योंकि वे काफी देर कुर्सियों से चिपके रहे थे।

बुधवार, 29 नवम्बर

हवा में क्रिसमस की भावना तैर रही है और बच्चे ताबड़तोड़ कई काम खत्म करने की कोशिशों में जुटे हैं। नाटक प्रगति पर है। क्रिसमस के उपहार तैयार करने की होड़ के कारण दिन के कुछ समय हमारी शाला कार्यशाला में तब्दील हो जाती है। इस आपाधापी के दौरान भी सभी सम्पादक कुछ समय लेखों को जाँचने और सुस्त लेखकों को उकसाने के वास्ते निकाल लेते हैं। लड़कों ने क्रिसमस के लिए सजावट की मालाएँ आदि बनाने की सामग्री जुटा ली है। नन्हे अपनी कविताओं और कहानियों की पुस्तिकाएँ बना रहे हैं। वे अपने मौलिक गीतों की संगीत पुस्तिकाएँ और इस अध्ययन की पुस्तिकाएँ भी बना रहे हैं कि प्रकृति सर्दियों की तैयारी कैसे करती है। इसके अलावा, वे अपने माता-पिता के लिए क्रिसमस उपहार भी बना रहे हैं। और इस सबके बीच वे कुछ समय रोज़मर्रा के पठन, वर्तनी और गणित के लिए भी बचा लेते हैं।

सोमवार, 4 दिसम्बर

हवाई द्वीपों और फिलिपीन्स के कुछ मेहमान आज आए और बच्चों ने फिर से यह दर्शा दिया कि उन्होंने अपने दैनिक जीवन के अनुभवों से शुरुआत करते हुए अपने अध्ययन को गहरा कर कितनी तथ्यात्मक सामग्री जुटा ली है। मेहमानों को अचरज हुआ कि बच्चों को फिलिपीन्स के राष्ट्रपति का नाम मालूम था और वे हवाई द्वीपों की कुछ समस्याओं से भी परिचित थे। बच्चों ने मेहमानों से जानना चाहा कि क्या फिलिपीन्स के लोग सच में संयुक्त राज्य अमरीका से स्वतन्त्र होना चाहते हैं। उन्होंने वहाँ के स्कूलों के बारे में भी सवाल पूछे और जानना चाहा कि उनका देश कैसा है। मेहमानों ने अपनी जुबान में गीत गाए और बातचीत की। बदले में हमने अमरीकी लोकगीत गाए और अमरीकी लोकनृत्य प्रस्तुत किए।

बुधवार, 6 दिसम्बर

अखबार के सम्पादक मण्डल ने स्कूल के बाद अखबार की तैयारी के लिए बैठक की। हमने अखबार के प्रत्येक पृष्ठ के लिए भूरे कागज़ की बड़ी शीटें काटीं। तब सबसे पहले उसके ले-आउट पर सोचना शुरू किया गया। सम्पादकों ने तय किया कि सामग्री तीन स्तम्भों में पेश की जाएगी, क्योंकि उससे कम में वह अखबार नहीं कहलाएगा और उससे अधिक के लिए जगह ही नहीं बचती थी। उन्होंने अखबार का नाम बदला, नगर उद्घोषक को अपना प्रतीक चुना और अपना नारा चुना, "सब कुछ सुने - सब कुछ बताए"। उन्होंने तय किया कि चूँकि सबसे महत्वपूर्ण काम जो हम कर रहे हैं वह अखबारों का अध्ययन है, सो इस विषय पर लिखा लेख दाहिनी ओर के स्तम्भ में होना चाहिए और उसका शीर्षक सबसे मोटे अक्षरों में छपना चाहिए। तब उन्होंने भूरे कागज़ पर उन जगहों पर लेख चिपकाने शुरू किए जो उनके अनुसार सबसे उपयुक्त जगहें थीं। पाँच बजे तक काम सलटा नहीं था और समूह की घर जाने की इच्छा भी नहीं थी।

गुरुवार, 7 दिसम्बर

आज सुबह मैंने तय किया कि शेष बच्चों को भी यह अनुभव मिलना चाहिए क्योंकि यह इस समूह के लिए इतना आनन्ददायक व कीमती रहा है। जो बच्चे कल रात बैठक में शामिल हुए थे, वे आलेखों के प्रूफ पढ़ने और उन्हें फिर से लिखने में जुटे और बाकी बच्चे ले-आउट में मदद करने लगे। बच्चे जिस लगन से काम कर रहे थे उसे देखना बड़ा सन्तोषजनक था। लॉयड एक बढ़िया सम्पादक है और लेखों में गुणवत्ता पर बल देता है। उसकी पेंसिल निरर्थक शब्दों को हटाने में तथा उन वाक्यों के सामने सवालिया निशान लगाने में व्यस्त रहती है जो स्पष्ट नहीं हैं।

बुधवार, 13 दिसम्बर

अखबार का पहला संस्करण निकल चुका है। हमने उसे साथ-साथ पढ़ने में करीब घण्टा भर लगाया और हमें विश्वास है कि हमारे अब तक के सभी प्रयासों में यह श्रेष्ठतम है। एल्बर्ट बोल उठा, "वाह! हम सच में बढ़िया हैं।" वे अपने हर परिचित व्यक्ति को अखबार की प्रति देना चाहते हैं। उन्हें गर्व करने का

वास्तव में हक है! थॉमस ने आज एक महत्वपूर्ण टिप्पणी की जिसने मुझे आगामी चरणों के बारे में दिशा दी। उसने कहा, "हमें बारह पन्नों की अखबार जुटाने में महीने भर की कड़ी मेहनत करनी पड़ी है। बड़े अखबार इतना सारा काम हर रोज़ भला कैसे कर लेते होंगे?" मैंने बच्चों को सुझाया कि हम क्रिसमस के बाद किसी अखबार के कार्यालय और छापाखाने को देखने जा सकते हैं।

मंगलवार, 26 दिसम्बर

पिछले दो सप्ताह इस कदर व्यस्त रहे कि डायरी में कुछ भी दर्ज करने का समय न मिला। पर मैं इस समय की कुछ छवियाँ ज़रूर दर्ज कर लेना चाहती हूँ। बच्चों द्वारा प्रस्तुत नाटक काफी सफल रहा, यद्यपि कुछ समय तक मुझे यह डर था कि ऐसा नहीं हो सकेगा। लॉयड, जिसे एक महत्वपूर्ण किरदार निभाना था, पगला गया और उसने पर्दे के पीछे काफी बातचीत और गड़बड़ी की। कार्यक्रम शुरू होने से पहले वह पूछता रहा, "मुझे घबराहट हो रही है, मिस वेबर। क्या मैं ठीक लग रहा हूँ? मैं अपनी भूमिका ठीक से निभा लूँगा न?" मानो उसके अलावा नाटक में कोई दूसरा बच्चा महत्वपूर्ण ही न हो।

अगले दिन समूह कमरे की सफाई करने और उसे फिर से कक्षा की शक्ल देने के लिए इकट्ठा हुआ। इस काम के दौरान बच्चों ने नाटक की चर्चा की। उन्हें लॉयड का नज़रिया पसन्द नहीं आया था, सो यह बात उन्होंने लॉयड से कही। विलियम को भी लॉयड की बातों में आकर बहक जाने पर कुछ सुनाया गया। हेनरी और डेनियल के बेहतरीन काम की प्रशंसा हुई। बच्चे अपने प्रदर्शन से सन्तुष्ट नहीं थे और उन्हें लगा कि पिछले सालों जैसा प्रदर्शन वे इस बार नहीं दे पाए थे। उनकी मुख्य आलोचना यह थी कि कलाकारों ने संवाद साफ-साफ नहीं बोले और न ही वे भावनाओं को ठीक से अभिव्यक्त कर पाए।

दर्शकों को नाटक पसन्द आया और उन्होंने बच्चों की खूब तारीफ की। सफाई के समय बच्चों की बातचीत से मुझे लगा कि वे दर्शकों की प्रशंसा से फूलकर कुप्पा नहीं हुए थे। उनकी स्वयं से ऊँची अपेक्षाएँ हैं और वे अपनी गलतियों को बखूबी पकड़ लेते हैं।

जो लड़कियाँ हाई स्कूल में जाने लगी हैं वे चाहती हैं कि वे संगीत के लिए स्टोनी

ग्रोव में आती रहें। हम अक्तूबर से सप्ताह में एक बार मिलते रहे हैं। क्रिसमस के कार्यक्रम में इन लड़कियों को गाने का अवसर मिला। उन्होंने माइकेल प्रेटोरियस द्वारा संगीतबद्ध की गई धुन पर सोलहवीं शताब्दी का गीत "लो, हाउ अ रोज़", एक अँग्रेज़ी स्तुति गीत "द् हॉली एण्ड द् आइवि", व "साइलेन्ट नाइट", एक जर्मन स्तुति गीत गाया। सभी गीत तीनों सप्तकों में गाए गए और बेहद अच्छे थे। लड़कियों के कण्ठ सुरीले हैं और अभिव्यक्ति बढ़िया है। इस माह बच्चों ने कई कविताएँ रचीं और वे सब उनके अनुभवों को सामने रखती थीं। बच्चों को बर्फ पसन्द आई और सिर से पैर तक उससे ढक जाने पर उन्हें मज़ा आया। उनके अवलोकन पैने हैं जैसा कि बर्फ सम्बन्धी उनकी कविताओं में झलकता है।

1940 की गर्मियाँ

साल के बचे हुए महीनों में मैं डायरी में पूरी टिप्पणियाँ दर्ज नहीं कर पाई। पर इस दौरान कई ऐसी घटनाएँ घटीं जिन्हें दर्ज कर लेना चाहिए। इनमें सबसे महत्वपूर्ण घटना थी एक अध्ययन जो अखबारों में बच्चों की रुचि से जन्मा था।

दिसम्बर माह में मैंने बच्चों को *जिम ऑफ द प्रेस* नामक पुस्तक पढ़कर सुनाई थी। यद्यपि यह पुस्तक हाई स्कूल स्तर के बच्चों के लिए लिखी गई थी, पर अखबारों की समझ की पृष्ठभूमि पहले से मौजूद होने के कारण बच्चे उससे काफी कुछ सीख सके। अखबारों के अध्ययन और इस पुस्तक को पढ़ने से उपजी समझ से लैस ये बच्चे 6 जनवरी को *ईस्टन एक्सप्रेस* के भवन में अखबार का कामकाज देखने-समझने गए। उन्होंने अखबार का कम्पोज़िंग कक्ष, लिनोटाइप बैटरी (Linotype battery) और अखबार बनाने व छापने की पूरी प्रक्रिया देखी। उनकी रुचि इतनी गहरी थी और उन्होंने इतने सारे सवाल पूछे कि हमारे गाइड ने टिप्पणी की, "इन्होंने कुछ भी नहीं छोड़ा, है ना?"

लौटते समय उनकी बातचीत लगातार जारी रही। बच्चों को सभी कामों की रफ्तार पर अचरज हो रहा था। उन्हें लिनोटाइप मशीन सबसे आकर्षक लगी। एक-एक अक्षर हाथों से कम्पोज़ करने से यह प्रक्रिया कितनी अलग थी। श्री मैथ्यूज़, जो हमें अखबार के दफ्तर ले गए थे, ने बताया कि जब वे चीन में थे तब वे वहाँ एक छोटा अखबार छापते थे। उस वक्त उन्हें अक्षर-अक्षर जोड़कर

शब्द बनाने पड़ते थे। ऐसा करना आँखों, हाथों और स्नायुओं पर ज़ोर डालता था। लॉयड ने कहा कि जिस व्यक्ति ने लिनोटाइप मशीन ईजाद की वह ज़रूर बड़ा चतुर रहा होगा। "यह मशीन भला किसने बनाई और इसे बनाने का विचार उसे कैसे आया!" उसने पूछा। वॉरेन ने पूछा, "छपाई की खोज कितने साल पहले हुई? मैंने पुरानी छपाई मशीनों के चित्र देखे हैं। वे उन मशीनों से बिलकुल अलग लगती हैं जो आज हमने देखी हैं।" एल्बर्ट की खास रुचि चित्रों की छपाई में थी। उसने चित्रों के ब्लॉक और उन पर उभरे नन्हे बिन्दुओं को बड़े ध्यान से देखा था। "ये बिन्दु उन्होंने कैसे बनाए?" वह जानना चाहता था। लौटते समय हम काउंटी पुस्तकालय में रुके और वहाँ छपाई से सम्बन्धित सभी किताबें इकट्ठी कीं और राज्य पुस्तकालय से कुछ दूसरी पुस्तकें मँगवाने का आवेदन भी दिया।

अगले दिन हमने इसी यात्रा पर और बातें कीं। पहले कुछ समय तो हमने यही चर्चा की कि अखबारों का कितना प्रभाव है। एल्बर्ट का कहना था कि सम्प्रेषण के कई दूसरे साधन भी हैं – रेडियो, फोन, टेलीग्राफ आदि। थॉमस ने कहा कि अखबारों की अपनी ही विशेषताएँ होती हैं जो दूसरे साधनों में नहीं हैं। उन्हें जब मर्ज़ी उठाकर पढ़ा जा सकता है और जितनी बार चाहे पढ़ा जा सकता है जब तक सारे तथ्य दिमाग में न आ जाएँ। इसी समय समूह ने तय किया कि सत्र के शेष दिनों में अगर हर सुबह एक अखबार स्कूल में आए तो अच्छा रहे। मुझे स्कूल कोष से कुछ पैसे खर्चने की अनुमति दी गई और एक अखबार लगवा ली गई। बच्चों ने पूरे साल अखबार में रुचि दिखाई और अकेले या समूह में उसको पढ़ने में काफी समय बिताया। जैसे ही सुबह अखबार पहुँचता, कुछ बच्चे उस पर नज़र दौड़ाने झुण्ड-सा बना लेते। उसकी खबरें दोपहर के वार्तालाप का विषय बन जातीं। खासकर पर्ल को इसमें खूब मज़ा आता रहा।

जब बच्चों ने पुस्तकालय से लाई गई पुस्तकों में छपाई के विषय में पढ़ना शुरू किया तो उन्हें इसमें इतना मज़ा आने लगा कि वे अक्सर दूसरों को कुछ हिस्से पढ़कर सुनाने लगे। "ज़रा सुनो तो सही," कोई कहता, और दूसरे उसे सुनने को थम जाते। एक किताब में लिखा था कि जॉन गुटनबर्ग ने छपाई मशीन का आविष्कार किया था। एक दूसरी किताब में लिखा था कि इसके आविष्कारक गुटनबर्ग नहीं बल्कि चीनी लोग थे। बच्चों ने कुछ बातें दर्ज कीं ताकि वे बाद

में चर्चा कर सकें। लॉयड ने पुस्तकें पढ़कर उनमें से नोट लिख लेने का काम पहले कभी नहीं किया था, सो उसे यह सिखाने में मैंने कुछ समय लगाया।

बाद में हुई चर्चा के दौरान बच्चों ने तय किया कि उन्हें कुछ विषयों पर अधिक जानकारी तलाशनी होगी। ये विषय थे:

- गुटनबर्ग
- सचल टाइप (movable type) का आविष्कार
- गुटनबर्ग से पहले छपाई का स्वरूप
- प्रिंटिंग प्रेस में हुए सुधार
- यूरोप तथा अमरीका में छपाई का प्रसार
- लिनोटाइप
- कॉस्टर (Coster), फुस्ट (Fust) व कैक्सटन (Caxton)
- चित्रों की छपाई।

हरेक बच्चे ने अपनी रुचि का विषय चुना और उस पर शोध में जुट गया। वॉरेन शहर के समाचार पत्र के छापाखाने में गया ताकि लिनोटाइप पर जानकारी ले सके। क्योंकि यह अखबार साप्ताहिक है, वहाँ काम करने वाले लोग अधिक व्यस्त नहीं थे और उसके लिए समय निकाल सके। वॉरेन ने कॉम्पटन के एन्साइक्लोपीडिया (Compton's Encyclopedia) में पढ़ रखा था कि लिनोटाइप कैसे काम करता है, सो वह उनको मशीन के बारे में बताने लगा। छापाखाने में काम करने वाले उससे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उसे लिनोटाइप चलाने व अपना नाम व पता छापने की अनुमति दी। वॉरेन ने समूह को सगर्व अपना छपा हुआ नाम व पता दिखाया और कहा कि वह कुछ रोज़ उसे हमारे अजायबघर में रखेगा।

दो दिन तक इस विषय पर पढ़ने के बाद हमने छपाई के आविष्कार पर चर्चा की। हमने जाना कि सचल टाइप का आविष्कार तो वाकई चीनी लोगों ने किया था, पर उनकी वर्णमाला नहीं थी, सो यह उनके लिए व्यावहारिक नहीं रहा। चालीस हज़ार चित्र संकेतों को व्यवस्थित रखना कठिन काम था। एडवर्ड ने पूछा, "वे कोई वर्णमाला क्यों नहीं अपना लेते? जो व्यवस्था वे काम में लेते हैं, वह कैसे विकसित हुई?" डेनियल ने जानना चाहा कि हमें हमारी वर्णमाला कैसे

मिली? बच्चों ने पढ़ा कि गुटनबर्ग को सचल टाइप द्वारा छापने का विचार चीन से आए ताश के पत्तों से मिला था। इस पर उन्हें यह जानने की इच्छा हुई कि यूरोपवासियों को ताश के पत्ते चीन से कैसे मिले? मार्था ने पढ़ा कि यह कागज़ बनाने की खोज थी जिसने छपाई को व्यावहारिक बनाया। हेनरी ने जानना चाहा कि कागज़ से पहले लोग क्या काम में लेते थे। कागज़ आखिर बनता कैसे है? हेनरी की रुचि मार्को पोलो में भी है, और वह इतनी ज़्यादा है कि वह पढ़ते समय लगातार समूह के दूसरे बच्चों को कुछ न कुछ बताता रहता है, फलतः कई बच्चे उसके कन्धों पर झुके नज़र आते हैं। उसने यह पता लगाया कि मार्को पोलो ने पूर्व के विषय में यूरोपवासियों की रुचि जगाई थी, इसलिए ही यह सम्भव हो सका कि गुटनबर्ग चीनी ताश पत्तों से खेल रहा था। हमने उन विषयों की सूची बनाई जिनके बारे में हमें और जानकारी एकत्रित करनी थी:

- वर्णमाला की खोज
- कागज़ बनाने की खोज
- कागज़ के आविष्कार के पहले की लेखन सामग्री
- मार्को पोलो
- धर्मयुद्ध (Crusades)
- मार्को पोलो के समय का चीन
- गुटनबर्ग के समय का यूरोप

अब विषयों की संख्या इतनी हो चुकी थी कि हरेक बच्चे ने अपना एक निजी विषय चुन लिया। तब शोध घण्टों, रिपोर्टों, चर्चा सत्रों और फिर से शोध का सिलसिला शुरू हुआ। उन्होंने अपना योगदान दिया और सवाल पूछे, जिससे रिपोर्ट प्रस्तुत करने वालों को फिर से अपनी पुस्तकों पर लौटना पड़ा। जैसे-जैसे रिपोर्टें लिखी जाने लगीं, उनके विषय उप-विषयों में बँटने लगे। उदाहरण के लिए, गुटनबर्ग के काल में यूरोप को निम्न उप-भागों में बाँटा गया:

- मठवासी साधु व मठ
- महलों का जीवन व युद्ध
- नगर व शिल्पी संघ

"वर्णाक्षरों की खोज" के विषय से निम्न उप-विषय उपजे:

- इन्का संस्कृति के लोग व उनका लेखन
- अमरीकी इण्डियन लोगों का लेखन
- रोलैण्ड की गाथाएँ व गीत
- मिस्रवासी
- फोनेशियावासी
- यूनानी
- रोमवासी

इधर हम पढ़ते और समूह के सामने अपने पढ़े हुए को प्रस्तुत करते जा रहे थे, उधर हमने जो बातें दर्ज कीं उनकी मात्रा बढ़ती जा रही थी। बच्चों ने शोध कर टिप्पणियाँ दर्ज की थीं। उसके अलावा वे टिप्पणियाँ भी थीं जो उन्होंने एक-दूसरे की प्रस्तुतियों के दौरान ली थीं। इस सारी सामग्री का क्या करना है, यह एक समस्या बन गया। फेंक देने के लिए यह सामग्री बेहद मूल्यवान थी, पर बेतरतीब व अव्यवस्थित रूप में उसकी कोई खास कीमत भी न थी। थॉमस ने मज़ाक में कहा, "हमें एक किताब लिख डालनी चाहिए, हमारे पास इतनी सामग्री है।" मैंने उसे चौंकाते हुए कहा, "क्यों नहीं?" इस पर हमने जितना सोचा, उतना ही ऐसा करना हमें समझदारी का काम लगा। तब हम सच में इस काम में जुट गए, और हमने अपनी टिप्पणियाँ दर्ज करने में पूरी सावधानी बरती ताकि वे सही व पूरी हों। बच्चों को अपने शोध के दौरान अगर किसी ऐसे विषय पर कोई जानकारी मिलती जिस पर कोई दूसरा बच्चा काम कर रहा हो, तो एक सन्दर्भ कार्ड बनाकर उस बच्चे को थमा दिया जाता। जब बच्चे अपनी-अपनी रिपोर्ट तैयार कर लेते, तो वे किसी तयशुदा दिन उसे प्रस्तुत करने के लिए अपना नाम लिखवा लेते। तब समूचा समूह ध्यान से सुनता, सुझाव देता और आलोचना करता।

थॉमस ने एक दिन धर्मयुद्धों पर रिपोर्ट सामने रखी। उसे बड़ी परेशानी हुई, क्योंकि वह किताब में इस्तेमाल किए गए शब्दों को काम में लेने की कोशिश कर रहा था। मैंने उसे सुझाव दिया, "जो लिखा है उसे भूल जाओ और अपने शब्दों में बात कह डालो।" तब धर्मयुद्धों की रोमांचकारी कथाएँ व युद्ध के दौरान खून-खराबे का उसने धुआँधार वर्णन किया। उसने बच्चों के धर्मयुद्ध (Children's Crusade) का नाम लिया भर था और हेलेन ने सुझाया कि उसे उसके

लिए *बॉय ऑफ द लॉस्ट क्रूसेड* नामक पुस्तक से सामग्री मिल सकती है।

जब एल्बर्ट ने साधुओं पर अपनी रिपोर्ट रखी तो मार्था ने उससे पूछा, "तुमने *गैब्रियल एण्ड द आवर बुक* पढ़ी है? वह बेहद खूबसूरत पुस्तक है। मिस वेबर आपको वह हमें पढ़कर सुनानी चाहिए।"

कुछ रिपोर्टें बेहद तरतीब से तैयार की गई थीं। लॉयड ने पुस्तकों के विकास पर रिपोर्ट तैयार की। उसके सामने मेज़ पर वे सारे नमूने रखे थे जिनसे गुज़रते हुए पुस्तकों का मौजूदा स्वरूप विकसित हुआ था। वह बात करते हुए नमूने दिखाता जा रहा था। उसने बताया कि चर्मपत्र (parchment) का चीरक (scroll), जो पुस्तक का प्राचीनतम रूप था, अक्सर सोलह से अठारह फुट तक लम्बा हुआ करता था। चीरक पर एक सिरे से दूसरे सिरे तक लिखा जाता था और वह ऊपर से नीचे की ओर खुलता था। उसने बताया कि बौद्ध ग्रन्थ चीरक की पूरी लम्बाई में लिखे होते थे और उन्हें उसी तरह खोला जाता था। पर चूँकि इन्हें पढ़ा नहीं जाता था, इससे असुविधा नहीं होती थी। हिब्रू में लिखे कानून सम्बन्धी चीरकों में लेखन अलग-अलग स्तम्भों में होता था। ऐसे चीरकों के पृष्ठाकार लेखन ने किसी के मन में यह विचार जगाया होगा कि उन्हें अकॉर्डियन की तरह मोड़ दिया जाए और लकड़ी के टुकड़ों के बीच दबा दिया जाए। इससे पुस्तकों को रखना आसान बन गया। लॉयड ने एक-एक कर अपने चीरकों को उठाकर दिखाया कि उसका क्या मतलब था। उसने हिब्रू चीरक को समूह के सामने तह किया। फिर उसने कैंची उठाई और तह किए हुए चीरक को तहों से काट डाला, जिससे अगला चरण साफ हो गया। अब पृष्ठ के दोनों तरफ लिखना सम्भव हो गया और हमारी आधुनिक पुस्तकों का रूप सामने आया। उसने नमूनों को अजायबघर में रख दिया।

एडवर्ड और जॉर्ज को शोध करना बेहद कठिन लग रहा था और उनकी रुचि भी तब तक जगी नहीं थी जब तक हमने कागज़ बनाने के प्रयोग नहीं शुरू कर दिए। इन लड़कों ने बॉन्सर व मॉसमैन की पुस्तक *इन्डस्ट्रियल आर्टस् इन द् एलीमेन्टरी स्कूल* ("प्रारम्भिक शाला में औद्योगिक कलाएँ") के निर्देश पढ़ कागज़ बनाने का एक साँचा तैयार किया। हमने पुस्तक के निर्देशों के अनुसार अखबारी कागज़ भी बनाया। इसमें हम सफल रहे। पर चर्मपत्र बनाने की हमारी कोशिश अधिक सफल नहीं रही, क्योंकि हम भेड़ की खाल को ठीक से तान

नहीं सके। हम पैपायरस (papyrus) से भी कागज़ बनाना चाहते थे और हमने औद्योगिक कला सहकारी सेवा को अपना ऑर्डर भी भेजा। वे फ्लोरिडा से पैपायरस मँगवाते हैं। पर इस साल वहाँ इतनी ठण्ड पड़ी कि पैपायरस की तीनों फसलें बर्बाद हो गईं।

बच्चे हमारे अजायबघर में लगातार चीज़ें जोड़ते रहे। उन्होंने लकड़ी का गूदा, व्यावसायिक चर्मपत्र का टुकड़ा, खुद का बनाया चर्मपत्र, खुद का बनाया कागज़, *ईस्टन एक्सप्रेस* के दफ्तर से लाया गया कार्डबोर्ड का साँचा, खुदे हुए ताम्रपत्र, उपनिवेशकाल की मोम की टिकियाएँ, बेबिलोनिया की मिट्टी की टिकियाओं का प्रतिचित्र, हिब्रू कानून संहिता का प्लास्तर से बना प्रतिरूप तथा *ईस्टन एक्सप्रेस* में हमारे दौरे के बाद अगले सोमवार को छपी हमारे समूह की तस्वीर प्रदर्शन के वास्ते रखे। हमने पुस्तकालय में भी नई पुस्तकें जोड़ीं जिससे ताकें ठसाठस भर गईं। सप्ताह के अन्त में एक दिन लड़कों ने मिलकर हमारे कक्ष के एक तरफ खिड़कियों के नीचे दीवार की पूरी लम्बाई में नई ताकें बना डालीं। पुस्तकों और अजायबघर की चीज़ों को ज़रा फैलाकर रख दिया गया। इस व्यवस्था से हमारा कमरा सजीला भी लगने लगा और सुविधाजनक भी। एक दिन वॉरेन ने टिप्पणी की कि हमारा कमरा अब स्कूल जैसा नहीं लगता।

बच्चे समूहों में जा काउंटी पुस्तकालय से किताबें लाते रहे हैं। उन्होंने किताबों से प्यार करना सीख लिया है और वे उनकी अच्छी देखभाल भी करते हैं। यद्यपि इस साल हमने कई सौ किताबें काम में लीं, बच्चों ने एक भी किताब को नुकसान नहीं पहुँचाया है।

जब सारी सामग्री इकट्ठी हो चुकी तो समूह एक सम्पादकीय मण्डल में बदल गया। हमने बोर्ड पर उन सभी विषयों की सूची बनाई जिन पर हमने जानकारी जुटाई थी। हमने सूची का गौर से अध्ययन किया और तब विभिन्न विषयों को समेटते हुए निम्नलिखित शीर्षक बनाए:

अखबारों से सम्बन्धित:

- अखबार की छपाई
- लिनोटाइप मशीन
- चित्रों की छपाई
- छापा मशीनें (प्रेस)

छपाई की खोज के विषय में:

- सचल टाइप की खोज
- गुटनबर्ग की जीवनी
- गुटनबर्ग से पहले छपाई
- धर्मयुद्ध
- मार्को पोलो: मध्ययुगीन जीवन
- महलों का जीवन
- नगर
- साधु व मठ

वर्णमाला के विषय में:

- लिपि की खोज
- इन्का लोग
- अमरीकी इण्डियनों का लेखन
- रोलैण्ड का गीत
- गुफा लेखन
- मिस्र की चित्रलिपियाँ
- फोनेशियावासियों द्वारा लिपि का प्रसार
- रोमवासियों द्वारा लिपि का प्रसार

लेखन सामग्री से सम्बन्धित:

- मिस्र के अभिलेख
- गड़ेरियों द्वारा प्रयुक्त चमड़ा
- बेबिलोनिया की मिट्टी की टिकियाओं पर लेखन
- चीन का अखबारी कागज़
- पुस्तकों के स्वरूप का विकास
- पैपायरस के चीरक

प्राचीन सभ्यताओं के विषय में:

- मिस्र
- यूनान

- रोम
- बेबिलोनिया
- सुमेरिया
- एसिरिया
- चैल्डिया
- फोनेशिया

आधुनिक लेखन सामग्री से सम्बन्धित:

- पेन
- पेंसिलें
- कागज़
- पुस्तक बनाना

बड़े बच्चों के समूह में पन्द्रह बच्चे थे। (कार्टराइट बच्चे क्रिसमस के बाद स्कूल से चले गए थे।) मैंने पाँच सबसे सक्षम बच्चों को प्रथम सम्पादन समिति में लिया: वॉरेन, हेलेन, मार्था, लॉयड व थॉमस। शेष बच्चे अन्य पाँच समितियों में बँट गए। पहले दिन मैं प्रथम समिति से मिली और उन्हें सामग्री का सम्पादन करना समझने में मदद की। हमने यह प्रक्रिया अपनाई:

1. सभी लेखों को पढ़कर उनकी विषय-वस्तु से परिचित होना।
2. सामग्री को व्यवस्थित कर अध्यायों में बाँटना।
3. अध्यायों को परस्पर जोड़ने के लिए कुछ अनुच्छेद लिखना ताकि वे अलग-थलग न रहकर एक निरन्तर कथा का रूप ले लें।
4. अगर आवश्यक लगे तो अध्यायों में शामिल लेखों में फेरबदल करना ताकि अनुच्छेदों में उभारे गए बिन्दुओं को रेखांकित किया जा सके।
5. समूची सामग्री को भाषा व वर्तनी की अशुद्धियाँ सुधारने के लिए पढ़ना।

मैंने समूह को स्वयं काम करने के लिए छोड़ दिया। जब वे तैयार थे, मार्था ने समूह के सामने रिपोर्ट पेश की। उसने बताया कि उन्होंने किस तरीके से काम किया और तब विभिन्न विषयों पर लिखे अनुच्छेद पढ़े व उन पर आलोचनात्मक टिप्पणी आमन्त्रित की।

इस समिति ने समूची सामग्री को क्रम से चार अध्यायों में बाँटा था। यह क्रम था:

- एक अखबार की छपाई
- लिनोटाइप
- छपाई मशीनें
- चित्रों की छपाई

उन्होंने अपने पहले अध्याय के प्रारम्भ में लिखा: "ताज़ा घटनाओं की जानकारी हम तक पहुँचाने का एक फुर्तीला उपाय है अखबार। कोई अखबार यह कैसे करता है इसकी कहानी बड़ी रोचक है।"

पहले अध्याय को दूसरे से जोड़ने के क्रम में उन्होंने लिखा: "अगर लिनोटाइप न होता तो अखबारों की छपाई की प्रक्रिया बेहद सुस्त रहती। चतुर व कुशाग्र ऑटमार मार्गेनथालर के कारण, जिन्होंने लिनोटाइप मशीन का आविष्कार किया, हमें घटनाओं की जानकारी लगभग उनके घटते ही मिल जाती है।"

तीसरा अध्याय उन्होंने इन शब्दों से शुरू किया: "छपाई प्रेस हमेशा इतनी कुशल नहीं हुआ करती थी जितनी आज है। प्रारम्भिक प्रेस काफी सरल और अनगढ़-सी थी।"

चौथा अध्याय इस तरह शुरू किया गया था: "चित्र अखबारों का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। छपाई के लिए उन्हें बड़े रोचक तरीके से तैयार किया जाता है।"

इसके बाद इस समिति का हरेक सदस्य अन्य समितियों का अध्यक्ष बना ताकि वह सम्पादन में उन समितियों को दिशा दे सके। जब एक समिति का काम खत्म हो जाता, उसके सदस्य सुझावों व आलोचनात्मक टिप्पणियों के लिए समूह के सामने रिपोर्ट पेश करते। उन सुझावों पर विचार करके वे आलेखों में बदलाव करते। काम की कमी नहीं थी, क्योंकि संशोधनों के बाद भाषा व वर्तनी सुधारने का बहुतेरा काम होता था। बच्चों ने अपने आलेखों को बारम्बार लिखा। हरेक आलेख समूह के लगभग हरेक सदस्य द्वारा पढ़ा गया। हमारी कई मुख्य कठिनाइयों पर चर्चा अँग्रेज़ी के पीरियड में होती। अन्तिम नतीजे में न केवल अद्‌भुत तथ्यपरकता थी बल्कि अभिव्यक्ति का सौन्दर्य भी। काम में कई महीने लगाने पड़े, पर सच कहें तो इस काम पर बिताया हरेक पल सार्थक रहा।

समूह संख्या दो ने अपनी सामग्री को छह अध्यायों में बाँटा:

- सचल टाइप की खोज
- गुटनबर्ग से पूर्व छपाई
- धर्मयुद्ध व छपाई
- मार्को पोलो
- छपाई का प्रसार
- मध्यकाल में पुस्तकें

उन्होंने जो विषय अनुच्छेद लिखे, वे थे: "पाँचवाँ अध्याय: लकड़ी पर खोदे गए ब्लॉकों के द्वारा छपाई करना धीमी और कठिन प्रक्रिया थी। जब सचल टाइप की खोज हुई तब जाकर छपी हुई सामग्री चुनिन्दा लोगों के दायरे से निकलकर अधिक लोगों को उपलब्ध हो सकी। सचल टाइप खोजने का श्रेय हम जॉन गुटनबर्ग को देते हैं।"

इस प्रकार यह खण्ड पिछले खण्ड से जुड़ा और उसमें गुटनबर्ग की जीवनी व उनके आविष्कार का वर्णन दिया गया।

"छठा अध्याय: जैसा हम कह चुके हैं, गुटनबर्ग से काफी पहले ही चीन के निवासी एक प्रकार की छपाई की खोज कर चुके थे।"

"सातवाँ अध्याय: अगर धर्मयुद्ध न होते तो सचल टाइप व छपाई का आविष्कार सम्भवत: काफी समय बाद होता। धर्मयुद्धों के कारण यूरोपवासियों के समक्ष एक नई दुनिया ही खुल गई।"

यह अध्याय इन शब्दों के साथ समाप्त हुआ: "कुछ धर्मयोद्धा लौटते हुए अपने साथ ताश के पत्ते लेते आए। ऐसे ही ताश के पत्तों से गुटनबर्ग को सचल टाइप का विचार आया। छपाई प्रक्रिया की खोज के कारण ही यह सम्भव हुआ कि मार्को पोलो व अन्य साहसी यात्रियों की यात्राओं के वृत्तान्त छप सके। इन यात्रा वृत्तान्तों के साथ यह विचार अन्य लोगों तक पहुँचा कि वे पूर्व तक पहुँचने के लिए अज्ञात व खतरनाक समुद्री मार्गों को तलाशें।"

और अगला अध्याय उन्होंने इस तरह से शुरू किया: "पूर्व में रुचि जगाने वालों की सूची में केवल धर्मयोद्धाओं का नहीं बल्कि मार्को पोलो का उल्लेख भी

ज़रूरी है। इसी रुचि के चलते कई वस्तुओं की खोज सम्भव हुई।"

इस अध्याय का आखिरी अनुच्छेद पहले अनुच्छेद का अर्थ स्पष्ट करता है: "जब तुर्कों ने कुस्तुनतुनिया पर कब्ज़ा कर लिया और पूर्व में काफी अशान्ति फैली हुई थी, तो अब तक के ज्ञात व्यापार मार्ग अवरुद्ध हो गए जहाँ से विलास-प्रेमियों को अपनी वस्तुएँ मिलती थीं। तब कोलम्बस को यह सूझा कि वह पूर्व दिशा तक पहुँचने के लिए पहले पश्चिम की ओर जाए। धर्मयुद्धों और मार्को पोलो ने न केवल यूरोप में छपाई का द्वार खोला बल्कि एक नई सभ्यता का मार्ग भी खुल गया।"

"नवाँ अध्याय: सचल टाइप की खोज के बाद यूरोपीय देशों में तेज़ी से छपाई का प्रसार हुआ।"

इस अध्याय में आगे चलकर यह बताया गया है कि किस प्रकार यूरोप भर में तेज़ी से किताबें छपने लगीं। अध्याय के अन्त में लिखा गया है: "जब यूरोप की विभिन्न भाषाओं में पुस्तकें उपलब्ध हो चलीं तो पढ़ने में व शिक्षा प्राप्त करने में लोगों की रुचि भी बढ़ी। इससे दुनिया में कई बदलाव आए। इस तथ्य का कि अब कुछ लोग पढ़-लिख सकते थे प्रोटेस्टेंट धर्म के प्रचार-प्रसार में बड़ा भारी हाथ था।"

"दसवाँ अध्याय: पुस्तकों की छपाई से पहले पढ़ने-सीखने में रुचि कम थी। उस दौरान एक समूह था जिसने ज्ञान को जीवित रखा था। यह समूह प्राचीन दुनिया की पुस्तकों की हस्तलिखित प्रतियाँ बनाता था। यह समूह था मठवासी संन्यासियों का।"

यह अध्याय मठवासी साधुओं के जीवन का वर्णन करता है और उसकी तुलना नगरों व कस्बों में रहने वाले अन्य लोगों से करता है, और यह कहते हुए बात खत्म करता है: "ऐसी ही दुनिया में जॉन गुटनबर्ग का जन्म हुआ था और इसी प्रकार की दुनिया ने छपाई का आविष्कार किया।"

शेष समितियों ने भी अपनी सामग्री को ठीक इसी तरह सुव्यवस्थित किया। पाँच अन्य अध्याय पुस्तक में जोड़े गए:

- वर्णाक्षरों का आविष्कार
- लेखन सामग्री

- प्रारम्भिक सभ्यताएँ
- आधुनिक लेखन सामग्री
- पुस्तक निर्माण

सूचना एकत्रण के दौरान ज़रूरत पड़ने पर हम प्राचीन पृष्ठभूमियों तक खोदते रहे और तब वापस वर्तमान तक आते रहे। कालक्रम का हम सबको बोध रहे इस वास्ते हमने कालक्रम (time line) की मदद ली। अध्ययन समाप्त हुआ तब हमने तय किया कि इस कालक्रम को भी हमें अपनी पुस्तक में शामिल कर लेना चाहिए। हमने अपनी किताब में सन्दर्भ पुस्तक सूची (bibliography) भी जोड़ी।

बच्चों ने किताब के लिए निम्नलिखित चित्र भी बनाए:

- पुरानी लकड़ी की छपाई मशीन
- ठप्पा व छापा (Punch and Matrix)
- एक धर्मयोद्धा
- पाण्डुलिपि का एक प्रभासित पृष्ठ
- प्राचीन काल में रिकॉर्ड रखने की विभिन्न विधियाँ
- पेरूवियन क्विपू* (Peruvian Quipu)
- खाँचेदार छड़ (Notched Stick)
- भूर्ज वृक्ष की छाल
- मिस्र की चित्रलिपियाँ
- चीनी अक्षराकृतियाँ
- हम एबीसी तक कैसे पहुँचे
- लेखन सामग्री
- मिस्र का पैपायरस
- बेबिलोन की कीलाक्षर लिपि
- यूनान की मोम की तख्तियाँ
- पुस्तकाकार किताबें कैसे आईं
- एक आधुनिक किताब कैसे तैयार होती है

* रंग-बिरंगे धागों से विभिन्न तरह की गाँठें लगाकर प्राचीन इन्का लोगों का रिकॉर्ड रखने का तरीका।

क्योंकि हम सत्र के अन्तिम दिन तक सम्पादन का काम करते रहे थे, यह आवश्यक हो गया कि बच्चे गर्मियों की छुट्टियों में भी कुछ दिन स्कूल आएँ। इन दिनों में बच्चों ने पन्ने मोड़कर उन्हें पृष्ठों की शक्ल दी, उन पर चित्रों को ट्रेस किया। मैंने समूची किताब टाइप की। बच्चों ने फर्मों को जोड़ा और हम सबने मिलकर बोर्ड व चर्मपत्र से उसकी जिल्द तैयार की। हेलेन ने लाइनोलियम का एक ठप्पा तैयार किया जिससे चीरक की आकृति छापी जा सकती थी; अन्तिम पृष्ठ इसी से छापे गए। यों हमारी मेहनत से एक बेहद खूबसूरत किताब तैयार हुई जो हमारे लिए बेशकीमती थी। मेरे एक मित्र ने उसकी उसी तरह की प्रतियाँ बनाने का प्रस्ताव रखा जैसे हमने उसे बनाया था। इसके लिए उसने किताब के हर एक पन्ने के फोटोग्राफ लिए और तब उसकी इतनी प्रतियाँ बना दीं कि हरेक बच्चे के पास इसकी निजी प्रति हो। हमने काउंटी पुस्तकालय को और कुछ अन्य मित्रों को भी उसकी प्रतियाँ भेंट कीं।

इस अध्ययन का एक अन्य रोचक अनुभव भी रहा। 25 मई को हम न्यू यॉर्क शहर के मेट्रोपॉलिटन आर्ट म्यूज़ियम को देखने गए थे। वॉरेन ने म्यूज़ियम के साथ पत्राचार किया था और हमारे लिए एक गाइड की व्यवस्था करवा दी थी। श्री ग्रीयर ने हमें दौरा करवाया और प्राचीन सभ्यताओं के लेखों के प्रामाणिक प्रतिरूप दिखाए। उन्होंने बच्चों को मिस्र की चित्रलिपियों के प्रतीक पढ़ना भी सिखाया। मिस्र, क्रीट, यूनान व रोम की सभ्यताओं की लेखनी व लेखन सामग्री के उदाहरण भी दिखाए। बच्चों ने बेबिलोनिया की मिट्टी की तख्तियाँ, यूनान की मोम से बनी पट्टियाँ व मिस्र के पैपायरस के चीरक देखे। बच्चों को प्रभासित पाण्डुलिपियाँ सबसे आकर्षक लगीं। श्री ग्रीयर पुस्तकालय से चर्मपत्र की पाण्डुलिपियाँ लाए और उन्होंने सावधानी से उसके पृष्ठ पलटे। बच्चे उन पृष्ठों को अचम्भे और सराहना से भरे देखते रहे।

बच्चों ने म्यूज़ियम में ममियाँ और उनके ताबूत, प्राचीन मिस्र के आभूषण, काम करने के औज़ार और अस्त्र-शस्त्र भी देखे। उन्होंने पिरामिड, प्राचीन रोम के आवास और एक मठ की आकृतियाँ देखीं। उन्होंने सामन्ती कवच देखा। यहाँ तक कि उन्होंने आधे घण्टे का एक चलचित्र भी देखा जिसमें बताया गया था कि म्यूज़ियम के गवेषक मिस्र में खुदाई कर किसी कब्र को कैसे तलाशते हैं और ममी पर लिपटी पट्टियाँ कैसे हटाई जाती हैं। इस तरह बच्चों को कई ऐसी

बातें समझ आईं जिन्हें वे अध्ययन के दौरान साफ-साफ समझ नहीं सके थे।

इस अध्ययन के अनुभव पर नज़र दौड़ाने पर पाती हूँ कि मैं अपना उद्देश्य हासिल कर पाई हूँ। बच्चे खुद सोचने लगे हैं, जो समझ व आदर्शों के विकास के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। उनका सोचना लगातार तात्कालिक अनुभवों से जुड़ा रहा अन्यथा वे विचार बच्चों के लिए बंजर और बेमानी ही रहते। अब दुनिया में अपने स्थान की बेहतर समझ उनमें पनपी है। स्कूली सत्र के शेष दिन भी इतने ही सार्थक व समृद्ध रहे जितने इस अध्ययन के दौरान थे। यह अध्ययन इतना फलदायी व सार्थक न होता अगर वह वातावरण ही नामौजूद होता जिसमें बच्चों को लगातार समृद्ध अनुभवों को जीने का स्थान मिल सके और जिसमें रोज़मर्रा के जीवन की समस्याओं को समझने और उनके समाधान तलाशने में उन्हें लगातार मदद मिले। दो अन्य घटनाओं को भी यहाँ दर्ज करना आवश्यक लगता है क्योंकि ये दोनों इस तथ्य की पुष्टि करती हैं कि जहाँ कहीं शिक्षण में समान अवसर उपलब्ध होते हैं, वहाँ कुशाग्र बच्चे उत्पीड़ित हो मध्यम दर्जे के नहीं बन जाते, बल्कि वे अपनी क्षमताएँ अधिकतम सीमा तक विकसित कर पाते हैं।

बसन्त के एक दिन मैंने बड़े बच्चों की मानक उपलब्धि परीक्षा ली। क्योंकि परीक्षा लेने में सारा दिन लगा, इस दौरान छोटे बच्चों के करने के लिए कोई काम तलाशने में मुझे परेशानी हुई। तब मार्था ने मदद का प्रस्ताव रखा। वह परीक्षा की पूर्व संध्या को कुछ किताबें घर ले गई और उसने उनके लिए पाठ तैयार किए। अगली सुबह उसने पाठ योजनाएँ मुझे दिखाईं। ये योजनाएँ बड़ी सावधानी से सोच-विचारकर तैयार की गई थीं, उतनी ही सावधानी से जितनी शायद मैं बरतती। यहाँ तक कि उसने प्रत्येक पाठ के उद्देश्य का भी उल्लेख किया था। मार्था ने उनके खेलघर के आसपास बागबानी करने में नन्हों की मदद की। वे सैर को गए और लौटने पर जो कुछ उन्होंने देखा था उसकी कथा लिखने में मार्था ने उनकी मदद की। उन्होंने अपना पठन सत्र जारी रखा और कहानी सत्र के समय स्वतःस्फूर्त मंचन भी किया। मार्था ने हाथ-मुँह धोने और दोपहर को आराम करने के समय उनका ध्यान रखा। वे खेले, उन्होंने गीत गाए, कुछ छपाई की और मिट्टी की आकृतियाँ बनाईं। उनके घर लौटने से पहले मार्था ने उन्हें वर्तनी और गिनती में भी मदद की। अगर कोई बारह साल की बच्ची

नन्हों के एक समूह को पूरे दिन न केवल सम्हालती है बल्कि उन्हें गतिविधियों द्वारा खुश व व्यस्त भी रख पाती है, तो वह शब्द के समग्र अर्थों में "शिक्षित" हो रही होती है।

दूसरी घटना भी मार्था से ही जुड़ी है। हमेशा की तरह इस बसन्त को भी हमने एक कठपुतली प्रदर्शन किया। शाला भवन में यह कार्यक्रम तीन बार हुआ और हमें आमंत्रण मिला कि हम कस्बे के हाई स्कूल व ब्लेयर अकादमी में भी इस कार्यक्रम को प्रस्तुत करें। प्राथमिक कक्षा के बच्चों ने "नन्हा काला सैम्बो" कहानी का मंचन किया। इसे पूरी तरह मार्था ने तैयार करवाया था। उसने कठपुतलियाँ तैयार करने में और कहानी को नाटक का रूप देने में नन्हों की मदद की। मार्था ने उन बच्चों को चुनने में मदद की जिन्हें प्रदर्शन में भूमिकाएँ निभानी थीं। एरिक नन्हा सैम्बो बना। मार्था इस शर्मीले बच्चे की ऐसी छुपी क्षमताएँ उभार सकी, जिन तक मैं पहुँच ही नहीं पाई थी। उसने हर बच्चे की ज़िम्मेदारी उसे कुछ ऐसे समझा दी कि वह मंचन के समय आराम से दर्शकों के बीच बैठ सकी और अपनी मेहनत के नतीजे का लुत्फ़ उठा सकी। कार्यक्रम खत्म हुआ तो मेरी नज़रें मार्था की नज़रों से टकराईं और हम दोनों शिक्षिकाओं को पता था कि हमने अपना काम बखूबी किया है।

उपसंहार

इस चौथे साल की समाप्ति पर मैंने स्टोनी ग्रोव छोड़ दिया। अगर मैं इन पृष्ठों में इन बच्चों को ज़रा भी जीवन्त बना सकी हूँ तो आपके मन में यह सवाल उठ रहा होगा, "आखिर इन बच्चों का आगे क्या हुआ? वे अब क्या कर रहे हैं?" इन प्रश्नों के जवाब इतने अहम हैं कि उनके बिना इस किताब का उद्देश्य पूरा नहीं होगा।

एना ओल्सेउस्की और ओल्गा प्रिन्लैक ने हमारे स्कूल को सबसे पहले छोड़ा था। एना कस्बे के हाई स्कूल में दाखिल हुई और उसने ऑनर्स के साथ पढ़ाई खत्म की। फिर वह हमारे समुदाय से निकल गई और एक बड़े शहर में सेक्रेटरी पद पर काम करने लगी।

ओल्गा को हाई स्कूल में पढ़ने की अनुमति नहीं मिली, क्योंकि उस वक्त उसके पिता का शिक्षा में भरोसा नहीं था, खासकर लड़कियों के लिए। ओल्गा को न्यू यॉर्क में घरेलू कामकाज करने भेजा गया। अपनी पहली बचत से उसने अपने दाँतों का इलाज करवाया। उसके बाद से वह नियमित रूप से घर पर पैसे भेजती रही है ताकि उसके छोटे भाई-बहनों के लिए कपड़े खरीदने में परिवार को मदद मिले। अपने माता-पिता को अपनी छोटी बहनों की पढ़ाई जारी रखने को मनवाने में उसकी काफी भूमिका रही है।

फ्रैंक प्रिन्लेक, रैल्फ जोन्स और कैथरीन सामेटिस ने जून 1938 में स्टोनी ग्रोव छोड़ा।

फ्रैंक कुछ समय तक एक बड़े फल-बागान में काम करता रहा। एक दिन जब मैं काउंटी के दौरे पर थी तो मैं दोपहर का खाना खाने एक ढाबे में रुकी। अन्दर एक कर्मचारी किसी पुरुष से कह रही थी, "शर्त लगाती हूँ कि फ्रैंक को खोने का तुम्हें बड़ा दुख हो रहा होगा।" "दुख!" वह बोल उठा, "वह अब तक का

मेरा सबसे उम्दा वर्कर रहा है। अगर वह अंकल सैम (अमरीकी सरकार) के लिए काम करने न जा रहा होता, तो मैं किसी को उस पर हाथ न धरने देता!" ये लोग फ्रैंक प्रिन्लैक के बारे में बतिया रहे थे। फ्रैंक अब नौसेना में है।

रैल्फ नौसेना के हवाई दस्ते के ज़मीनी दल में है। हाई स्कूल से निकलने के बाद उसने कुछ समय तक एक गैराज में काम किया और तब युद्ध से सम्बन्धित कार्य में लगा रहा। रैल्फ हाई स्कूल में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाया था। उसकी एकमात्र रुचि मशीनों में थी। अब वह वही काम कर रहा है जो उसे सच में पसन्द है, उसके हाल के खुशनुमा खत से यह साफ नज़र आता है।

इस बसन्त एक रात मुझे कैथरीन और सोफिया ने रात के खाने पर बुलाया। उनका घर आठ साल पूर्व के उस दिन से विपरीत बिलकुल साफ-सुथरा था जब मैं पहली बार उसमें घुसी थी। लड़कियों ने खाना पकाया था। भुनी मुर्गी; आलू का भरता; मटर की साबुत फलियाँ; सेब, मूली और हरी पत्तियों का सलाद; वैनिला पुडिंग; और श्रीमती सामेटिस और मेरे लिए कॉफी व बाकी सबके लिए दूध। सलाद बनाने की विधि कैथरीन ने मिस मोरान के प्रदर्शन के दौरान सीखी थी। मैंने कैथरीन को सधे हाथों से सेब काटते और दक्षता से सलाद में नमक-कालीमिर्च आदि डाल, पलटते देखा। यह स्पष्ट था कि वह यह सब केवल मेहमान की मौजूदगी के कारण नहीं कर रही थी, बल्कि उसे ऐसा करने का काफी अभ्यास था।

दोनों लड़कियाँ खुद सिले हुए लिबास पहने थीं। सोफिया ने मुझे अपने नए, बसन्त के कपड़े दिखाए जो उसने बड़ी सूझबूझ के साथ खरीदे और सिले थे। कैथरीन ने मुझे वह सुन्दर छींटदार कपड़ा भी दिखाया जो उन्होंने अपनी बैठक के दीवान का कवर बनाने के लिए खरीदा था।

उस शाम मुख्य बातचीत इसी के इर्द-गिर्द रही कि लड़कियों के लिए युद्ध सम्बन्धी कार्य बेहतर होगा या निजी सचिवों के रूप में काम करने न्यू यॉर्क जाना, जिसके लिए उन्होंने अब तक तैयारी की थी। हाई स्कूल की पढ़ाई खत्म करने के बाद कैथरीन पास के एक शहर में एक डॉक्टर की सचिव व सहायिका के रूप में काम करती रही थी। सोफिया ने पिछले साल हाई स्कूल खत्म किया था। समस्या के सभी पहलुओं पर विचार करने के बाद लड़कियों ने तय किया कि गर्मियाँ खत्म होने के बाद वे न्यू यॉर्क जाएँगी। वे वहाँ अपनी मौसी-मौसा के साथ तब तक रहेंगी जब तक उन्हें वह काम नहीं मिल जाता जो वे करना चाहती हैं।

उस शाम कुछ समय बाद श्रीमती सामेटिस ने मुझसे कहा, "पता है, मैं कभी नहीं सोचती थी कि मैं अपने बच्चों पर गर्व महसूस करूँगी, पर सच में मुझे उन पर नाज़ है।"

सन् 1939 की पतझड़ से सोफिया सामेटिस, डॉरिस एण्ड्रयूस, मेरी ओल्सेउस्की व रूथ थॉमसन हाई स्कूल में दाखिल हुईं। वार्षिक सत्र खत्म होने पर हाई स्कूल ने बच्चों को अच्छी पढ़ाई व श्रेष्ठ नागरिकता के लिए प्रशस्ति पत्र दिए। यह निचली कक्षाओं के हर कक्षा में से तीन छात्र/छात्राओं को दिए गए। इसे पाने वाले जूनियर छात्रों में एक थी एना। जिन तीन नई छात्राओं को प्रशस्ति पत्र मिला वे थीं रूथ, सोफिया तथा मेरी। स्टोनी ग्रोव से जाने वाले बच्चे हाई स्कूल में दाखिल होने वाले कुल छात्र-छात्राओं का मात्र 4 प्रतिशत हैं। फिर भी पुरस्कार पाने वाले बच्चों में लगभग 50 प्रतिशत बच्चे स्टोनी ग्रोव के पूर्व छात्र थे।

डॉरिस और मे उस साल समुदाय से बाहर निकलीं और उनसे सम्पर्क टूट गया। मेरी शहर में सेक्रेटरी के पद पर काम कर रही है। रूथ गत वर्ष हाई स्कूल से उत्तीर्ण हुई और अब उसका विवाह एक विमान चालक से हो गया है। वह अपने सपनों का घर-संसार बसाने को उत्सुक है। रूथ निश्चय ही एक अच्छी पत्नी और माँ बनेगी। उसमें असामान्य मात्रा में अच्छी व्यावहारिक बुद्धि है।

थॉमस लैनिक, एडवर्ड वेनिस्की, जॉर्ज प्रिन्लैक व वॉरेन हिल 1940 की बसन्त में स्टोनी ग्रोव से निकले। हमने हेलेन ओल्सेउस्की को भी हाई स्कूल भेज दिया क्योंकि वह तेज़ी से परिपक्व होती जा रही थी और उसे अपने हमउम्र बच्चों की दोस्ती और चुनौती की आवश्यकता थी।

दो महीने की अवधि में ही वॉरेन ने अपने से ज़्यादा संस्कारित कस्बाई बच्चों को इतना प्रभावित कर लिया था कि उन्होंने उसे नवागन्तुक छात्र-छात्राओं की कक्षा का अध्यक्ष चुन लिया। अगले साल हेलेन द्वितीय वर्ष की कक्षा की अध्यक्षा बनी। जब हेलेन और वॉरेन जूनियर कक्षा में पहुँचे तो उन्होंने कठपुतलियों में अपनी रुचि को फिर से जगाया और अपने कला शिक्षक की

मदद से अपने सहपाठियों को उनका प्रदर्शन करना सिखाया। इस साल जब बसन्त में उनका अन्तिम सत्र समाप्त हुआ तो विदाई समारोह में सर्वश्रेष्ठ वक्ता होने के नाते हेलेन ने ही छात्र-छात्राओं की ओर से विदाई भाषण दिया था।

जॉर्ज हाई स्कूल नहीं गया। उसने कुछ समय नागरिक संरक्षण दल के सदस्य के रूप में बिताया और उम्दा रिकॉर्ड के साथ वहाँ से विदा ली। अब वह नौसेना में है।

एडवर्ड ने सोलह वर्ष की आयु तक हाई स्कूल में पढ़ाई की और तब, क्योंकि हाई स्कूल में सीखने लायक उसे कुछ नहीं मिला, उसने फार्म पर काम करने के पक्ष में पढ़ाई छोड़ी। उसने निश्चित रूप से अपने लिए सही विषय चुना – व्यावसायिक कृषि। कृषि प्रयोगशाला में वह खुश था पर व्यावसायिक पाठ्यक्रम इन सुस्त रफ्तार बच्चों के लिए समग्र विकल्प नहीं है।

अगर हाई स्कूल उस स्तर से शुरू करने को प्रस्तुत होता जहाँ एडवर्ड था, तो स्कूल उसे बहुत कुछ सिखा सकता था। बढ़ती परिपक्वता के हर स्तर पर एडवर्ड छपी सामग्री का पूरा-पूरा अर्थ समझ सकता था – अखबारों से, पत्रिकाओं से, किताबों से व कृषि सम्बन्धी सामग्री से। वह स्वयं को बेहतर तरीके से अभिव्यक्त करना सीख सकता था। वह नए व्यापक समाज में अपना अधिकतम योगदान दे सके, ऐसी तैयारी में स्कूल उसकी मदद कर सकता था। दूसरे शब्दों में, एडवर्ड उस दिशा में विकसित हो सकता था जिस दिशा का बयान इस पुस्तक में किया गया है।

शिक्षा को हमें विकास के रूप में देखना चाहिए और इस विकास को एक ऐसी सतत प्रक्रिया के रूप में जो उतनी ही लम्बी होती है जितना लम्बा हमारा जीवन। पर एडवर्ड के लिए बढ़ने की यह प्रक्रिया हाई स्कूल में ही थम गई, और न जाने इस देश के कितने ही दूसरे बच्चों के लिए! सीखने और बढ़ने के बदले ऐसे बच्चे धीरज धर स्कूलों में बैठे उस दिन की राह ताकते हैं जब वे "कानूनन" स्कूल "छोड़" सकते हैं। हमारे लोकतंत्र के मानव संसाधनों का कितना भारी अपव्यय है यह!

थॉमस भारी उम्मीदों के साथ हाई स्कूल गया था। वह सच में कुछ बनना चाहता था। वह अपनी सौतेली माँ को यह बता देना चाहता था कि उसमें भी कुछ

"खासियत" है। वह हाई स्कूल में छह महीने ही टिक सका। एक रोज़ वह मेरे पास आया और बोला, "मैंने स्कूल छोड़ दिया है, मिस वेबर। मुझे सभी टीचरों की झाड़ सुननी पड़ती है क्योंकि मैं किताबों की बातें सीख नहीं सकता। लगता है मैं अपना समय ज़ाया कर रहा हूँ।" मैंने उससे देर तक बातचीत की, कोशिश यह की कि उसका खुद पर भरोसा फिर से जगा सकूँ, समझा सकूँ कि अगर वह पढ़ाई में सार्थकता नहीं खोज पाता तो इसमें गलती सिर्फ उसकी नहीं है। थॉमस ने एक छोटी फैक्टरी की फोटोग्राफी लैब में काम करना शुरू किया। जल्दी ही उसने इतने पैसे बचा लिए कि वह एक दुरुस्त हाल पुरानी कार खरीद सके। तब से वह अक्सर मुझसे मिलने आने लगा। उसके चुस्त-दुरुस्त कपड़ों व आत्मविश्वास से भरे आचरण से मुझे लगा कि वह बिलकुल ठीक-ठाक है। एक दिन उसने मुझे बताया कि उसने कितनी बचत कर ली है। जब मैंने पूछा कि वह बचत आखिर कर क्यों रहा है, तो उसका जवाब था, "ज़ाहिर है आगे कभी मेरी इच्छा किसी से शादी करने की होगी, आपको तो पता है कि गृहस्थी शुरू करने के लिए काफी पैसों की दरकार होती है।"

थॉमस नियमित रूप से अखबार पढ़ता और हम सरकार और दुनिया के बारे में लम्बी चर्चाएँ करते। उसका मत हमेशा तथ्यों पर आधारित होता और वह अन्धी भावनाओं के बहाव में कभी नहीं बहता। थॉमस भी अब नौसेना में है। सशस्त्र बलों में वह एक ऐसा सदस्य है जो वास्तव में यह समझता है कि हम युद्ध किसलिए लड़ रहे हैं!

एण्ड्रयू डूलियो और कार्टराइट बच्चों ने 1939-1940 की सर्दियों में स्टोनी ग्रोव स्कूल छोड़ा और लॉयड मैथ्यूस ने उसी साल के अन्त में। कार्टराइट परिवार इस इलाके से ही चला गया, सो उनसे मेरा सम्पर्क टूट गया।

एण्ड्रयू ने नए स्कूल में पढ़ाई तो पूरी की पर वह काफी पीछे रहा और तब अपने पिता के खेत में काम करने लगा। कुछ समय पहले जब वह अभी स्टोनी ग्रोव में ही था, और मैं एक रोज़ उससे मिलने गई हुई थी, उसने मुझे अपने पिता के पशु दिखाए। उस वक्त उसने कहा था कि वह किसी दूसरे काम के बनिस्बत खेतीबाड़ी ही करना चाहता है। वह अपने हाथों से एक गाय के गले को आलिंगन में लिए हुए था और अपनी गाल गाय की गाल से रगड़ रहा था। "यह गाय बेहद अच्छी है, मिस वेबर" कहते समय उसकी आँखें चमक रही थीं।

लॉयड इसलिए चला गया क्योंकि उसके माता-पिता ने किसी दूसरे राज्य में खेत खरीद लिया। श्रीमती मैथ्यूज़ ने मुझसे कहा कि साल भर स्टोनी ग्रोव में बिताना लॉयड के लिए बहुत फायदेमन्द रहा था। एक आत्म-केन्द्रित बच्चे से, जिसने हमारे क्रिसमस नाटक को लगभग बरबाद ही कर दिया था, वह क्रमशः काफी परिपक्व हो गया और स्कूल के सबसे कुशल अध्यक्ष व हमारे अखबार के सबसे सक्षम सम्पादक के रूप में उभरा।

सितम्बर 1942 में पर्ल प्रिन्लैक, एल्बर्ट हिल और डेनियल कोल ने हाई स्कूल में दाखिला लिया। पर्ल वहाँ एक व्यापारिक (commercial) पाठ्यक्रम कर रही है जबकि एल्बर्ट और डेनियल व्यावसायिक (vocational) कृषि। डेनियल बेहतरीन पढ़ाई कर रहा है और उसमें एक अच्छा किसान बनने के सभी लक्षण हैं।

मार्था भी उस साल हाई स्कूल में दाखिल हुई। चार वर्ष पहले रैल्फ व मार्था को छोड़ जोन्स परिवार के अन्य सभी बच्चों का विवाह हो चुका था। तब उनकी दादी ने तय किया कि वे कामकाज से फारिग हो कुछ आराम के साल बिताएँगी। श्री जोन्स और रैल्फ कस्बे में रहने चले गए और मार्था अपनी एक विवाहित बहन के साथ रहने लगी।

मार्था ने कस्बे की शाला में सातवीं कक्षा में दाखिला लिया, और उसके लिए अगले दो वर्ष दुखदायी सिद्ध हुए। उसने स्वयं को एक ऐसी अनियंत्रित कक्षा में पाया जिसकी शिक्षिका भी कमज़ोर थी। वह स्थिति से असन्तुष्ट थी और नित नई कारगुज़ारियों को नेतृत्व देने लगी। जब बातचीत के दौरान मैंने सुझाया कि वह स्थानीय 4-एच क्लब व गर्ल स्काउट क्लब की सदस्य बन जाए तो उसने कहा, "वे कुछ नहीं करते। बेहद बेवकूफ हैं सब।" जब मैंने उसे याद दिलाने की कोशिश की कि वह स्वयं भी स्थिति को बदलने की कोई चेष्टा नहीं कर रही है, तो उसने जो कहा उसमें मुझे कुछ वर्ष पूर्व के रैल्फ के दृष्टिकोण की प्रतिध्वनि सुनाई दी। वह बोली, "क्या फायदा!" मार्था किशोरावस्था के कठिन दौर से गुज़र रही थी और उसकी मदद के लिए कोई नहीं था। मैं उसकी स्थिति से काफी दूर थी, सो कोई वास्तविक मदद नहीं कर पाई।

अब जब मार्था हाई स्कूल में है, स्थिति जस की तस है। वह जितना कुछ कर सकती है उतना नहीं कर रही है और अपनी तमाम खूबियों को ज़ाया कर रही है। हाई स्कूल कैसे एक उम्दा अवसर को गँवा रहा है!

और स्टोनी ग्रोव स्कूल? मेरे छोड़ने के चार वर्षों पश्चात् उसका भला क्या हुआ?

यद्यपि वेतन कम था और आधुनिक सुविधाओं की आदी किसी युवती के लिए यहाँ रहने की अच्छी जगह और मनोरंजन की कोई सुविधाएँ न थीं, एक नौजवान युवती ने स्कूल की ज़िम्मेदारी सम्हाली। उसकी बड़ी तारीफ थी और कई लोगों ने उसका नाम सुझाया था। यह पढ़ाने का उसका पहला साल था। हमें लगा कि जो कुछ कमी अनुभवहीनता के कारण होगी, वह उसकी ऊँची योग्यताओं से पूरी हो सकेगी। वह संगीत, कला व साहित्य से परिचित थी। वह बेहद अच्छी छात्रा रही थी और कॉलेज के जूनियर वर्ष में श्रेष्ठ छात्रा चुनी गई थी।

क्योंकि हम स्थिति से वाकिफ थे, सो हमने इस युवा शिक्षिका की खूब मदद की। जब मैंने बच्चों को समझाया कि मैंने सहायक शिक्षिका का पद स्वीकार लिया है, तो उन्हें यह भी बताया कि एक नई शिक्षिका का आना उनके लिए अच्छा रहेगा, कि नई शिक्षिका समुदाय के बीच नए विचार लाएगी, ठीक वैसे जैसे नए छात्र व नए परिवार लाते हैं। मैंने यह सब इतनी अच्छी तरह समझाया कि बच्चे नई शिक्षिका का बेताबी से इन्तज़ार करने लगे। यहाँ तक कि आखिरी दिनों में, मुझे स्वीकारना होगा, मुझे कुछ अटपटा-सा अकेलापन महसूस होने लगा। सामान्यतः जिस तरह स्नेह से विदाई दी जाती है वैसा कुछ मेरे साथ इन बच्चों ने नहीं किया। मेरे छोड़ने के सप्ताह भर बाद ही उन्हें याद आया कि उन्हें मुझे कोई विदाई भेंट व पार्टी देनी चाहिए।

तीन दिनों तक नई शिक्षिका मुझे बच्चों के साथ काम करते देखती रही और यथासम्भव मेरी मदद करती रही। इस दौरान मैंने उसे स्कूल व बच्चों के रिकॉर्डों से परिचित करवाया, और पहले सप्ताह की योजना भी हमने मिलकर बनाई।

उस पहले सप्ताह नई शिक्षिका ने बच्चों को स्वयं अपनी गतिविधियों को निर्देशित करने दिया, सो स्कूल सामान्य रूप से चला। शिक्षिका ने भी इस दौरान बच्चों से बहुत कुछ सीखा। परन्तु अगले शनिवार, उसे दी गई तमाम सलाहों के बावजूद, उसने मेज़-कुर्सियों की व्यवस्था को और बुलेटिन बोर्डों पर लगी चार्टों को खुद ही, बच्चों से बिना पूछे बदल डाला।

सोमवार की सुबह जब बच्चे स्कूल पहुँचे तो वे विद्रोह में उठ खड़े हुए। सबसे पहले तो बच्चों का भरोसा जीते बिना ही शिक्षिका ने एक बाहरी व्यक्ति की हैसियत से बच्चों के मसलों में दखलन्दाज़ी की, और यह भी तब जब बच्चे अब तक अपने से सम्बन्धित सभी मामलों के निर्णयों में भागीदारी निभाते आए थे। बच्चों को यह नागवार गुज़रा। यह नाराज़गी भी शायद वे भुला देते बशर्ते कि बदलाव अच्छे होते। बच्चों ने अपने अनुभव से कक्षा में प्राकृतिक रोशनी का अपनी विविध गतिविधियों के लिए सबसे बढ़िया उपयोग करना सीखा था, ताकि उनकी आँखों पर ज़ोर न पड़े। अब उन्होंने पाया कि सारी की सारी मेज़ें खिड़कियों की दिशा में जमा दी गई हैं। इसी प्रकार बच्चे बुलेटिन बोर्ड का बेहतर उपयोग सीख चुके थे, वे उसे विभिन्न प्रकार की सूचनाओं, ज़िम्मेदारियों की सूचियों या चार्टों के लिए काम में लेते थे जो उन्हें बार-बार देखने होते थे। अब बच्चों ने पाया कि उनके चार्ट उनकी पहुँच से बाहर, शिक्षिका की मेज़ के पीछे लगे बोर्ड पर लग गए हैं, और बुलेटिन बोर्ड पर पालतू जानवरों के चित्र लगे हुए हैं जो उस छोटे कमरे के किसी भी हिस्से में लटकाए जाने पर आराम से देखे जा सकते थे। ज़ाहिर है कि शिक्षिका को यह सिखाया गया था, जैसा मुझे भी सिखाया गया था, कि अध्ययन की किसी नई इकाई की शुरुआत से पहले उससे सम्बन्धित आकर्षक चित्र बुलेटिन बोर्ड पर लगाना शुरुआत करने का एक अच्छा तरीका है। पर सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की भागीदारी के बारे में उसने क्या सीखा था? परिस्थिति को भाँपकर अनुकूल निर्णय लेने के बारे में उसने क्या सीखा था? हमारे इस सुसभ्य समाज के अधिकांश लोगों की तरह उसने किसी दूसरे के विचारों और कार्यों के बारे में जानने-सीखने में इतना समय बिताया था कि उसके पास मौलिक व आलोचनात्मक चिन्तन के लिए कोई वक्त ही नहीं बचा था।

इन और ऐसी ही अन्य घटनाओं के चलते बच्चों का उस शिक्षिका में विश्वास नहीं रहा और वह उन्हें दिशा देने की योग्यता खो बैठी।

बच्चों के माता-पिता भी सोच में पड़ गए। क्या उसे बच्चों की और उनकी कोई फिक्र ही नहीं है? उसने उन्हें मिलने की कोशिश ही नहीं की। उन्हें यह तो पता था कि वह काम में इतना नहीं डूबी है कि वह उनसे मिलने की फुर्सत नहीं निकाल पाती, क्योंकि वह अक्सर अपने साथियों के साथ घूमती-फिरती नज़र

आती थी। उनके अनुसार उसने अपनी मित्र-मण्डली को चुनने में भी अक्लमन्दी नहीं दर्शाई थी। वह ग्रामीण रीति-रिवाज़ और शिष्टाचार के बारे में कुछ नहीं जानती थी और न ही जानने-सीखने की उसने कोई कोशिश ही की।

धीरे-धीरे वह स्वयं अपने और कक्षा के रख-रखाव के बारे में बेध्यान हो चली, और कुछ समय बाद बच्चे भी लापरवाह व उदासीन हो गए। वे स्कूल की साफ-सफाई की ज़िम्मेदारियाँ निभाने या "शिक्षिका के लिए काम करने" से इन्कार करने लगे।

स्थिति बद से बदतर होती गई। शुरू में बच्चों ने शिक्षिका से बातचीत कर मसले सुलझाने की चेष्टा की, पर जल्दी ही उनके साझे सत्र शिकायत करने और झगड़ने के सत्रों में तब्दील होने लगे। अन्ततः बच्चों ने कहा, "भई, अगर वे ही सब कुछ जानती हैं, तो उन्हें ही अपनी तरह से सब करने दो।" और तब यह ब्रह्मास्त्र हर ज़िम्मेदारी से पिण्ड छुड़ाने के काम आने लगा।

ऐसा पहली बार नहीं हुआ है कि जो बच्चे आत्म-नियंत्रण के शिखर तक पहुँचे हों वे अगले ही साल किसी दूसरी शिक्षिका के साथ इस कदर अनुशासनहीन बन जाएँ। जिन स्थितियों का मैंने ऊपर बयान किया है, उन स्थितियों में बच्चे अगर आलोचना नहीं करते, चुपचाप वह सब कुछ स्वीकारते जाते जो उनका विवेक गलत ठहरा रहा होता, तो वास्तव में जो कुछ पिछले चार सालों में उन्होंने सीखा था उसका उद्देश्य भी परास्त हो जाता।

लेकिन बच्चों को अपरिपक्व होने के कारण एक मार्गदर्शक की दरकार होती है। इस तथ्य को उसी समय स्वीकार लिया गया था जब इन्सान ने दूसरे लोगों के साथ जीना प्रारम्भ किया था। अगर इसमें सच्चाई न होती तो समाज में शिक्षकों की कोई ज़रूरत ही न होती। परन्तु जब बच्चों का उस व्यक्ति पर से विश्वास उठ जाता है जिसे उन्हें मार्ग दिखाना हो, तो वे भ्रमित हो जाते हैं। अपनी अपरिपक्वता के कारण जिन मसलों को वे स्वयं नहीं सुलझा सकते, उन्हें सुलझाने में उनकी मदद करने वाला कोई व्यक्ति उन्हें तब नज़र नहीं आता।

अगले साल बच्चों को एक परिपक्व व अनुभवी शिक्षिका मिलीं, जिनकी मदद से कुछ हद तक उनकी आदतें फिर सुधर सकीं। दुर्भाग्य से, स्वास्थ्य खराब होने के कारण वे साल भर में ही स्कूल छोड़ने पर मजबूर हो गईं।

इसके बाद युद्ध के कारण पैदा हुई किल्लत के चलते शिक्षक मिलना ही असम्भव हो गया और समुदाय से ही एक महिला ने, जिन्हें पढ़ाने का कुछ अनुभव था, बच्चों को पढ़ाने की ज़िम्मेदारी ली। वे अपनी सीमाएँ जानती थीं और उन्होंने बच्चों से ईमानदारी बरती। बच्चों को उनका ईमानदार नज़रिया पसन्द आया, सो उन्होंने स्थिति का फायदा उठा ज़िम्मेदारियों से बचने के बदले अधिक से अधिक ज़िम्मेदारियाँ स्वीकारीं।

उन गर्मियों में एलिस ने मुझे कहा था, "पता है आपको, मिस वेबर, हमें अब कौन पढ़ाएगा? हमें खुद ही अपने आपको पढ़ाना होगा न!" और ठीक यही बड़े बच्चों ने किया भी। अगर पाठ के किसी बिन्दु पर वे असहमत होते तो उस पर देर तक चर्चा करते, जब तक वे सहमत न हो जाते। वे ऐसे बिन्दुओं की एक सूची बना लेते और उन पर कभी-कभी आने वाली सहायक शिक्षिका से चर्चा करते। वे सभी तरह की किताबें पढ़ते रहे। उनकी पाठ्यपुस्तकों में जिन गतिविधियों को सुझाया गया था उन्हें वे करते रहे। साल के अन्त में उनकी उपलब्धियों की परीक्षा हुई तो उन्हें अपनी कक्षा के औसत स्तर से कहीं अधिक आँका गया।

बच्चे अपने आप जो कुछ कर सकते थे वह सब उन्होंने किया। परन्तु अपरिपक्व बच्चों से यह उम्मीद तो नहीं रखी जा सकती कि वे समूचा काम कर सकेंगे। इस पुस्तक में चौथे साल का जो वर्णन है उसमें ये बच्चे दूसरी, तीसरी और पाँचवीं जमात में थे। उसके बाद के तीन सालों तक उनको सही मार्गदर्शन भी नहीं मिला था। इसके बावजूद उन्होंने जिस आत्मनिर्भरता का परिचय दिया, वह सिद्ध करता है कि अगर शिक्षा की सही अवधारणा को हस्तान्तरित किया जा सके तो वह कितनी असरकार हो सकती है। अगर कुछ ही साल बच्चों पर इतना असर छोड़ सकते हैं तो ज़रा सोचिए कि अगर बच्चों को रचनात्मक व लोकतांत्रिक जीवन का प्रशिक्षण उन बारह वर्षों तक मिलता रहे जो वे सार्वजनिक स्कूलों में बिताते हैं, तो कैसे अद्भुत नागरिक तैयार हो सकेंगे!

शाला भवन क्रमशः बिना रख-रखाव के खस्ताहाल हो चला। दरवाज़े और दीवारें गन्दी उँगलियों के स्पर्श से कीचट हो चलीं। चित्रों के फ्रेमों व किताबों आदि पर धूल की तहें नज़र आने लगीं। खेलघर का दरवाज़ा कब्जों से झूल गया और हवा में भड़भड़ाने लगा। जंगली फूलों का रॉक गार्डन खरपतवार से

इतना भर गया कि शेष सब उसके नीचे ही दब गया। यदा-कदा कोई जीवट वाला फूल उस झुरमुट से लड़ सिर उठाता ज़रूर नज़र आ जाता था। वह भी शाला के बच्चों की ही तरह उनके नियंत्रण के बाहर की तमाम विपरीत ताकतों से संघर्ष कर रहा होता था।

हमारा स्कूल भी देश की एक लाख एकल-शिक्षक शालाओं की तरह बनने लगा था और उसका हश्र भी उन जैसा होता लगता था। गत बसन्त शिक्षा बोर्ड को लगने लगा कि शायद स्कूल को बन्द कर बच्चों को कस्बे के स्कूल में भेज देना ही बेहतर होगा। उन्होंने इस मसले पर समुदाय से चर्चा की। पर समुदाय ने एकमत हो इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। केवल दो परिवारों ने, जो हाल ही में बाहर से आकर बसे थे, प्रस्ताव के पक्ष में मत डाला। बच्चों के माता-पिताओं ने मुझसे कहा, "युद्ध हमेशा थोड़े ही चलता रहेगा। शायद किसी दिन हमें फिर से कोई अच्छी शिक्षिका मिलेगी। स्कूल ही तो है जिसने हम सबको परस्पर बाँधे रखा है।" ये लोग जानते हैं कि कोई छोटा-सा स्कूल किसी समुदाय के लिए कितना असरकारी हो सकता है, और वे उसे खत्म नहीं होने देना चाहते हैं।

पिछले सप्ताह मैं फिर से शाला भवन गई। इन गर्मियों में उसकी अन्दर-बाहर से पूरी मरम्मत व पुताई करवाई गई है। गाड़ी में वहाँ से निकलते हुए मैंने अन्तिम बार उसे देखा। वह नन्हा-सा सफेद डिब्बानुमा भवन धूप में मेरी आँखों के सामने चमक रहा था, आठ साल पहले के उस दिन की तरह जब मैंने उसमें अपना विश्वास जताया था। मेरा दिल तेज़ी से धड़कने लगा। "किसी दिन इन्हें एक अच्छा शिक्षक ज़रूर मिलेगा," मैंने सोचा। किसी दिन सभी बच्चों को अच्छे शिक्षक मिलेंगे। यही लोकतंत्र की मुख्य आशा है!

एकलव्य

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल में व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे से व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी, रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें तथा पत्रिकाएँ इन साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स) तथा *शैक्षणिक संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान एवं बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्रियाँ आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्य प्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, हरदा, देवास, इन्दौर, उज्जैन, शाहपुर (बैतूल) व परासिया (छिन्दवाड़ा) में स्थित कार्यालयों के माध्यम से कार्यरत है।

इस किताब की सामग्री एवं सज्जा पर आपके सुझावों का स्वागत है। इससे आगामी किताबों को अधिक आकर्षक, रुचिकर एवं उपयोगी बनाने में हमें मदद मिलेगी।

सम्पर्क: books@eklavya.in
ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल-462016